देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115

अप्रैल 2024

Vol.-19, Issue-4(2)

Impact Factor 7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. विकास शर्मा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 19 ISSUE-4(2) (अप्रैल 2024) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. विकास शर्मा', संस्थापक
गुरू विद्यापीठ, रोहतक

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

<u>नोट :-</u> उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अप्रेल 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. विकास शर्मा	10–10
2.	विज्ञान आणि अंधश्रध्दा	श्री. अे. आर. महाजन	11–15
3.	मानव विकास, धर्म और विज्ञान	डॉ. अजयपाल सिंह	16–21
4.	भारतीय ज्ञान परम्परा में योग और उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण (नाथ साहित्य के संदर्भ में)	डॉ. अरूण प्रसाद रजक	22–26
5.	भारतीय धर्म ग्रंथो में विज्ञान	डॉ. अतुल चंद	27–30
6.	अध्यात्म आणि मनःशांती	डॉ.बी.एन. रावण	31–35
7.	देवराई संवर्धनातील वैज्ञानिक दृष्टिकोन	डॉ. श्रीमती भारती संतोष शिंदे	36–40
8.	भारतीय प्राचीन आयुर्वेदिक उपचार पद्धती आणिविज्ञान	श्री. दत्तात्रय हरी नाईक	41–45
9.	भारत में सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं व रीति रिवाजों का वैज्ञानिक आधार	Dr. Deepak Kumar, Dr Amit Kumar	46-53
10.	सामाजिक धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिकता का समन्वय	दीपिका पंत पांडे	54–57
11.	आध्यात्मिकता और मानव स्वस्थ्य	डॉ. ई नागरत्ना	58–61
12.	सामाजिक और धार्मिक मान्यताएं	डॉ. दुर्गेश कुमार शर्मा	62–65
13.	धर्म–विज्ञान और भारतीय सामाजिक परम्पराएं	डॉ. गोपीराम शर्मा	66–70
14.	रीति रिवाज और उनका वैज्ञानिक परिपेक्ष्य	डॉ. जे. सेन्दामरै	71–73
15.	भारतीय रीति रिवाज और उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण	Jyotsna	74-77
16.	भारतीय संस्कृति और रीति रिवाज – दक्षिण भारत के परिदृश्य में	Dr. K. Priya Naidu	78-82
17.	संजीव के उपन्यासों में सामाजिक मान्यताओं का वैज्ञानिक अध्ययन	किरण	83–87
18.	भारतीय सणांचा शास्त्रीय दृष्टिकोन	प्रा.एम.वाय. पोवार	88–92
19.	महाराष्ट्रातील सण आणि विज्ञान	डॉ. मनिषा हिंदुराव पाटील	93–98
20.	उराँव जनजाति – रीतिरिवाज, चुनौतियाँ एवं भावी रणनीति	डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप	99–103
21.	भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान	प्रा. नाझीया खतीब	104–106
22.	सनातन धार्मिक प्रतीकों की वैज्ञानिकता	डॉ. नेहा प्रधान	107–111
23.	बौद्ध धर्माचे तत्वज्ञान विज्ञाननिष्ठ	प्रा. पी. डी. माने	112–115
24.	सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं एवम् रीति रिवाज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ''धर्म विज्ञान के बीच संबंध''	PADMA HADA	116-119

25.	धार्मिक रीति रिवाज और तकनीकी प्रगति	डॉ. पूजा शर्मा	120-122
26.	प्रचलित रीति और रिवाज : संघर्ष बीच विज्ञान की प्रगति	डॉ. पूजा त्रिपाठी	123-126
27.	भारतीय परिपेक्ष में धार्मिक मान्यताओं एवं रीति-रिवाजों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण	पूजा नेगी	127-131
28.	भारतीय पारिवारिक जीवन की मान्यताएं और उनके वैज्ञानिक आधार	राज कुमार डॉ. गोपीराम शर्मा	132-134
29.	राजस्थानी रीति-रिवाज़ - विज्ञान का दर्पण	रेणु शर्मा	135-137
30.	सामाजिक मान्यता और विज्ञान	Saimeera Joshi	138-141
31.	मॅक्स वेबरचा धर्म विषयक वैज्ञानिक दृष्टिकोण	डॉ. संभाजी एस. कुरलीकर	142-145
32.	सोलह श्रृंगार और उनका धार्मिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण	श्री. संचित भगवान कांबळे, डॉ. वंदनापी. पाटील	146-150
33.	महाराष्ट्रीयन धार्मिक त्योहारों में विज्ञान	प्रा. (डॉ.) सविता कृ. पाटील	151-154
34.	सामाजिक मान्यताएँ एवं धार्मिक विश्वासों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक व्यापक समीक्षा	Dr. Shefali Mendiratta	155-158
35.	भारतीय त्योहारों का वैज्ञानिक दृष्टीकोन	सुश्री. स्नेहलता गौतम कांबळे	159-162
36.	भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान	डॉ. यु. एन. लाड	163-165
37.	सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं एवं रीति रिवाजों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण	उमा बंजारे	166-169
38.	नवरात्री सण : भारतीय सामाजिक, धार्मिक संस्कृती आणि विज्ञान	डॉ. उमा उत्तम पाटील	170-173
39.	भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता	डॉ. वंदना प्र. पाटील	174-177
40.	भारतीय संस्कृति और विज्ञान	डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाधव	178-182
41.	The Basic function of Mechanics reveals the meaning of human life	Shri Vilas Shamrao Patil	183-191
42.	Long tradition of protecting, worshipping the nature and legal control of 'Dharma' for the protection the environment in ancient days in India	Smt. Manisha Vilasrao Patil	192-198
43.	Buddhism and Mental Health	Shri. Jagdish Appassheb Sardesai	199-203
44.	Indian Culture and Tradition : A Unique Treasure House of Knowledge	Dr. Homesh Rani Gaur	204-209
45.	SCIENTIFIC REASONS BEHIND THE HINDU TRADITIONS	Shri. Harichand Sugriv Shirsat	210-214
46.	Superstitious Beliefs : In the context of social, Psychological and Religious revolution	Dr. Gayatriba A. Sodha	215-221

संपादकीय

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 11-15
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विज्ञान आणि अंधश्रध्दा

श्री. अे. आर. महाजन
मराठी विभाग प्रमुख, श्रीपतराव चौगुले आर्टस् ॲण्ड सायन्स् कॉलेज, माळवाडी – कोतोली, ता. पन्हाळा।

प्रस्तावना :

अनुभवावर आधारीत विज्ञान आहे तसेच विज्ञान अनुमानालाही अधिक महत्त्व देते। आज आपण विज्ञान व तंत्रज्ञानात प्रगती केली असूनही शतकानुशतके अंधश्रध्दा मानवी संस्कृतीचा एक भाग बनली आहे। विज्ञानात नैसर्गिक घटनांना तार्किक स्पष्टीकरण देता येते। पण सांस्कृतिक, सामाजिक आणि मानसिक कारणांमुळे अंधश्रध्दा समाजात कायम टिकून आहेत। जे अंधश्रध्दाळू लोक आहेत त्यांच्या अनिश्चित घटनांची जाणीव करून देण्यासाठी, त्यांच्या जीवनावर नियंत्रणाची भावना अनुभवण्यासाठीची यंत्रणा म्हणून अंधश्रध्दा काम करते। यावर मात करण्यासाठी समाजातील सर्व घटकांना शिक्षणाशिवाय पर्याय नाही। जर समाजातील एक पिढी सुशिक्षित झाली तर येणा–या सर्व पिढयांना अंधश्रध्दांच्या पाठीमागील वैज्ञानिक दृष्टिकोन समजावून देईल व समाजात पसरलेली अंधश्रध्दा आपोआपच कमी होण्यास हातभार लागेल। शिक्षण लोकांना माहितीचे गंभीर मूल्यांकन करण्यासाठी आणि माहितीपूर्ण निर्णय घेण्यासाठी आवश्यक असलेली साधने प्रदान करते। वैज्ञानिक माहिती आणि शिक्षणात प्रवेश वाढवून आम्ही अंधश्रध्देचा प्रभाव कमी करण्यास आणि लोकांना जगाकडे अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोन स्विकारण्यास प्रोत्साहित करू शकतो। आपल्याा समजुती आणि वृत्तींना आकार देण्यातही शिक्षणाची भूमिका महत्त्वाची असते। विज्ञानाबद्दल आणि जगाला समजून घेण्याची त्याची पध्द्त जितकी जास्त लोकांना माहिती असेल तितकी अंधश्रध्दा बाळगण्याची शक्यता कमी असते।

शैक्षणिक प्रगती ही विज्ञानवादी असते व ती अधंश्रध्दा खतपाणी घालत नाही।

अंधश्रध्दा ही एक अशी श्रध्दा आहे जी वैज्ञानिक ज्ञानावर आधारित नाही। पारंपारिक उपचार करणारे सामान्यतः मानवी आरोग्य समस्या आणि रोगांचे व्यवस्थापन करण्यासाठी त्यांच्या पध्द्तीमध्ये अंधश्रध्देचा वापर करतात। वेगवेगळया संस्कृतीमध्ये अनेक लोकांचा असा विश्वास आहे की, एखादया विशिष्ट अंधश्रध्देने आपले चांगले नशीब निर्माण होवू शकते। सांस्कृतिक, सामाजिक आणि मानसिक कारणांमुळे विज्ञानाच्या युगात अंधश्रध्दा कायम टिकून आहेत। वैज्ञानिक ज्ञानाची वाढ असूनही, अंधश्रध्दा लोकांच्या जीवनात, विशेषतः ग्रामीण किंवा कमी विकसित भागात भूमिका बजावताना दिसतात। अंधश्रध्दा टिकून राहणे विज्ञान आणि संस्कृती यांच्यातील गुंतागुंतीचे नाते आणि शिक्षणाचे महत्त्व आणि विश्वास या वृत्तींना आकार देण्यासाठी माहितीच्या प्रवेशावर प्रकाश टाकते। विज्ञान आणि अंधश्रध्दा या जगाला समजून घेण्याच्या दोन वेगवेगळया पध्द्ती आहेत। वैज्ञानिक ज्ञानाच्या वाढीसह, अनेक अंधश्रध्दांनी समाजावर, विशेषतः विकसति देशांमध्ये आपले नियंत्रण गमावले आहे। लोक

आता त्यांच्या सभोवतालचे जग समजून घेण्यासाठी अंधश्रध्देपेक्षा वैज्ञानिक स्पष्टीकरणांवर अवलंबून राहण्याची शक्यता अधिक असते। असे जरी असले तरी जगाच्या अनेक भागांमध्ये, विशेषतः ग्रामीण किंवा कमी विकसित भागात, ज्याठिकाणी शिक्षण आणि वैज्ञानिक माहितीचा प्रवेश मर्यादित असतो अशा ठिकाणी अंधश्रध्दा पिढयानपिढया जोपासल्या जातात व त्या मानवी मनावर, पारंपारिक प्रथांमध्ये खोलवर रूजल्या जातात। या क्षेत्रांमध्ये, अंधश्रध्दा मानवी मनाचे सांत्वन आणि सुरक्षिततेचा स्त्रोत म्हणून काम करताना दिसतात. काही समुदायांमध्ये असे मानले जाते की, दुश्काळ किंवा भूकंप यासारख्या घटना अलौकिक शक्तीव्दारे घटतात। त्यामुळे त्या मानवी समुदयाच्या नियंत्रणाबाहेरच्या असतात. समाजात अंधश्रध्दा टिकून राहिली तर गुंतागुंत निर्माण होते। लोक ज्या पध्द्तीने जगाला समजून घेतात आणि त्यांच्या श्रध्द्रांना आकार देतात त्यावर संस्कृतीचा प्रभाव पडतो। पण दुसरीकडे, विज्ञान सांस्कृतिक सिमेच्या पलिकडे असणारे जग समजून घेण्यासाठी एक सार्वत्रिक फ्रेमवर्क प्रदान करते।

विज्ञानाने जगाचे स्पष्टीकरण देण्यात लक्षणीय प्रगती केली आहे, तरीही अंधश्रध्दा कायम आहेत आणि लोकांच्या जीवनात भूमिका बजावत आहेत। अंधश्रध्दा टिकून राहणे विज्ञान आणि संस्कृती यांच्यातील गुंतागुंतीचे नाते शिक्षणाचे महत्त्व, विश्वास व वृत्तींना आकार देण्यासाठी माहितीच्या प्रवेशावर प्रकाश टाकते. अंधश्रध्दा शतकानुशतके मानवी संस्कृतीचा एक भाग आहेत। जरी विज्ञानाने नैसर्गिक घटनांचे तार्किक स्पष्टीकरण दिले असले तरी सांस्कृतिक, सामाजिक आणि मानसिक कारणांमुळे अंधश्रध्दा कायम आहेत। प्रस्तुतचा शोधनिबंध हा आधुनिक जगात अंधश्रध्दा आणि विज्ञान यांच्यातील संबंध व वैज्ञानिक ज्ञानाच्या वाढीनंतरही अंधश्रध्दा टिकून राहण्याची कारणे कोणती आहेत हे शोधून काढण्यासाठी मदत करेल।

अंधश्रध्दा हा एक प्रकारचा लोकांनी एखादया क्रियेवर ठेवलेला विश्वास आहे। हा विश्वास विज्ञान आणि तर्काच्या पलिकडे जातो। हा सहसा अंतर्ज्ञान, भीती आणि परंपरांच्यावर आधारित असतो। तो एका पिढीकडून दुस—या पिढीकडे परंपरेने संक्रमण करतो। अशा अनेक अंधश्रध्दा जगाला समजून घेण्याचा मार्ग म्हणून काम करतात। उदा. लोकांचा असा विश्वास असतो की, मांजर आडवे गेले की, काहीतरी अपशकून घडतो. विधवा स्त्री समोरून गेली की, काम होत नाही किंवा आरसा तर फुटला तर वाईट गोष्ट घडते। अशा गोष्टीची पुष्टी वैज्ञानिक पुराव्यांव्दारे होवू शकत नाही। परंतु अनिश्चित जीवनाचा सामना करण्यासाठी आणि स्वतःच्या समाधानासाठी लोकांनी त्या अंगिकारल्या आहेत। परंतु वैज्ञानिक ज्ञानाच्या वाढीने अंधश्रध्देच्या वैधतेला आव्हान दिले आहे। विज्ञानात अदृश्याचे अस्तित्व गृहित धरतात। त्यांच्या वर्तणूकीचे काही सिध्दुत मांडले जातात। त्यातमन अनुमान काढले जाते। शेवटी तपासण्यायोग्य परिणाम मिळविला जातो। विज्ञानाची गृहिते हया श्रध्दा नव्हेत। श्रध्दा तपासायची नसते असे श्रध्दावादी म्हणतात पण विज्ञानाचा आग्रह असतो श्रध्दा तपासण्याचा। गृहितावरून काढलेले अनुमान वा निष्कर्ष चुकीचा ठरला तर गृहित नाकारले जाते। विज्ञान विश्वासावर आधारित आहे। बटण दाबले की दिवा लागतो ही विश्वास म्हणजे विज्ञान।

विज्ञानाने नैसर्गिक घटनांसाठी स्पष्टीकरण दिले आहे। तंत्रज्ञानातील प्रगतीमुळे जगाला नवीन आणि रोमांचक मार्गांनी समजून घेण्याची परवानगी मिळाली आहे। या प्रबळ पध्दतीने अंधश्रध्देचा बराचसा पगडा कमी होण्यास हातभार लागला आहे। विज्ञानाने लोकांच्या श्रध्दा तपासून मानवी दुःखाचा परिहार करण्यात अनमोल कामगिरी बजावली आहे। एके काळी देवीच्या कोपामुळे देवीचा आजार होतो ही श्रध्दा होती। पण विज्ञानाने देवी, कांजिण्या, गोवर, मलेरिया, कॉलरा इ. संसर्गजन्य आजार विशाणू व जंतुमूळे होतात हे तपासले आणि देवीवर

श्रध्द्‌ा नसली की, तिचा कोप होवून असे रोग होतात हे खोडून काढले। लोकांचा विश्वास बसावा म्हणून सरकारने 'देवीचा रोगी कळवा व एक हजार रूपये मिळवा' अशी घोषणा केली होती। कोपर्निकस आणि गॅलिलिओनीं पृथ्वी ही स्थिर आहे व सूर्य पृथ्वी भोवती फिरतो हे संशोधनातून सिंध्द केले। पण त्यापूर्वी ही लोकांच्या मनामध्ये श्रध्द्‌ा होती व ती इतकी प्रचंड प्रमाणात होती की त्यासाठी या लोकांना ते मृत्यूदंडाची शिक्षाही देण्यास मागेपुढे पहात नव्हते। अशा विविध भ्रमांचे निराकरण विज्ञान करीत आले आहे। आजही करीत आहे। एखादी गोष्ट पहावी, ती तपासावी, तिच्यावर प्रयोग करावेत, काही कल्पना लढवाव्यात व पुन्हा त्या तपासून घ्याव्यात व शेवटी एका निष्कर्षाला यावे। अशा पध्द्‌तीने निसर्गाची असंख्य गुपिते विज्ञानवादी दृष्टीकोनातून उलगडलेली पहावयास मिळतात। हे करत असताना अनेक वैज्ञानिकांना नाहक त्रास सहन करावा लागला। तरीदेखील त्यांनी आपले जीवितकार्य चालूच ठेवले। अशा वैज्ञानिकांनाच आपण खरे आध्यात्मिक म्हणावयास हरकत नाही। अध्यात्म, अध्यात्म म्हणजे काय? तर अध्यात्माचा अगदी साधा आणि सोपा आशय आहे। एखादया गोष्टीवर निरंतर चिंतन करणे, मनन करणे आणि त्याच्यातून मानवी मनाला शांती लाभेल असे फलित शोधून काढणे। अध्यात्माचा एक मात्र निकश आहे तो म्हणजे प्रेम, परोपकार, करूणा, बंधुता, सहनशीलता अशा मूल्यांची जोपासना करणे म्हणजे खरे अध्यात्म। आज विविध आजारावर विज्ञानाने केलेली मात, भौतिक गरजा भागविण्यासाठी निर्माण केलेल्या विविध वस्तू, विश्वाच्या रचनेचे उलगडत ठेवलेले रहस्य, यातून सौंदर्य, कला व समृध्दी यांचा लाभ आपणास होतो। अन्न, वस्त्र, निवारा व शिक्षण या मूलभूत गरजा ज्यावेळी भागविल्या जातात त्यावेळी ख–या अर्थाने अध्यात्माचेच कार्य होते। जगाच्या वाढत्या लोकसंख्येच्या ज्या गरजा आहेत त्या प्रवचनांनी भागणार नाहीत। जे अध्यात्म गुरू आहेत त्यांनी संगणक, कार, ध्वनीयंत्रणा, दूरदर्शनसारखी विविध चॅनेल्स यांचा वापर करतात त्या सर्व गोष्टी या विज्ञानातील संशोधनातून निर्माण झाल्या आहेत। वास्तविकपणे अध्यात्मवादयांनी विज्ञानाचे आभारच मानले पाहिजेत आणि जर तसे त्यांनी केले नाही तर तो एक प्रकारचा कृतघ्नपणाच होईल। तात्पर्य काय की, वैज्ञानिक दृष्टिकोन हा ज्ञानाचा पाया असावा। अंधश्रध्द्‌ा निर्मूलन हे दिशाभूलीपासून समाजाला वाचविण्याचे साधन आहे। एखादी श्रध्दा तपासून ती चुकीची आहे त्या श्रध्देचा त्याग करा असे सांगण्यात काहीच गैर नाही। त्यामुळे अंधश्रध्दा निर्मूलन समिती जे काम करते ते विज्ञाननिष्ठ आहे असे मानन्यास काहीच हरकत नाही। अशी काही उदाहरणे आपल्याला पहाता येतील। मांजर आडवे गेले की अशुभ मानले जाते।

प्राचीन काळी मनुष्य प्राणी दळणवळणासाठी बैलगाडी किंवा घोडागाडी यांचा वापर करायचा। रात्रीच्या वेळी जंगलातून मार्गक्रमण करताना वाघ, बिबटया, रानमांजरे असे मार्जार वर्गातील हिंस्त्र प्राणी गाडीसमोर यायचे त्यामुळे गाडी हाकणारे बैल किंवा घोडे बिचकून जायचे आणि जागच्या जागी थबकायचे, अनेकवेळा त्यांच्यावर हल्ला देखील केला जायचा त्यामुळे गाडीमालक इतर लोकांनाही असे प्राणी समोर आल्यास एकाच ठिकाणी थांबायला सांगायचे। यातुनच पुढे असा प्रघात पडला की, मांजर आडवे गेले तर ते अशुभ असते। त्याचबरोबर प्राचीन काळात इजिप्त या देशात काळे मांजर शुभ मानले जायचे। ब्रिटनमधील एका राजाला मांजर खूप प्रिय होते। ते मेल्यानंतर त्याचा शाही इतमामात अंत्यसंस्कार केला पण मांजराच्या मृत्यूच्या दुस–याच दिवशी राजाला कैद झाली व त्याला राजद्रोहाच्या गुन्हयाखाली देहदंडाची शिक्षा देण्यात आली। या घटनेला लोकांनी त्या आवडत्या मांजरालाच कारणीभूत ठरविले व तद्‌नंतर मांजराना अशुभ मानले जावू लागले।

फुटलेल्या आरश्यात आपली प्रतिमा पाहू नये, अशुभ असते।

पुर्वी आरसा तयार करायला लागणा–या वस्तू महाग व नाजूक असत। थोडासा जरी हलगर्जीपणा झाला तरी तो फुटत असे। लोकांनी तो व्यवस्थित हाताळावा म्हणून जर आरसा फुटला तर 7 वर्षे वाईट जातील अशी भिती घालण्यात आली। या भितीपोटी तसेच आरश्यात आपला आत्मा असतो अशी प्राचीन लोकांची धारणा होती। जर फुटलेल्या आरश्यात आपण आपली प्रतिमा बघितली तर आपल्या आत्म्याला हानी पोहोचते व ती भरून काढायला पुढील सात वर्षे लागतात म्हणून फुटलेल्या आरश्यात आपली प्रतिमा पहायची नाही असा प्रघात पडला। तलावात नाणी टाकल्याने दिवस चांगले येतात।

आज आपण आवडीने आरोग्यवर्धक म्हणून तांब्यांच्या भांडयातून पाणी पितो। पूर्वी मातीच्या भांडयाबरोबर तांब्याचीही भांडी होती। त्याचबरोबर तांब्यांची नाणी होती ती पाण्यात टाकल्यांने तांब्याचा काही अंश पाण्यात उतरत होता। त्याचबरोबर पाण्यातील किटकांना मारण्यासाठी तांबे या धातूची मदत होत होती त्यातून तलावात नाणी टाकण्याचा प्रघात पडला। पण आपण आज मात्र अल्युमिनियम, स्टिलचीही नाणी टाकतो ती पाणी प्रदुषण करतात, पूर्वीची परंपरा म्हणूण ती पध्द्त आजही रूढ आहे।

आपल्या आजूबाजूने कोणी शिंकल्यास गॉड ब्लेस यु असे म्हणणे।

काही शतकांपूर्वी इटलीमध्ये शिंकण्याचा एक रोग होता। या रोगामध्ये एका पाठोपाठ एक अशा असंख्य शिंका यायच्या। व्यक्ती शिंकून शिंकून हतबल व्हायची व त्यातच त्याचा प्राण जायचा। असे शेकडो लाकांचे बळी गेले त्यामुळे तेथील पोपने असा हुकुम काढला की, आपल्या आजूबाजूला कोणी शिंकले तर त्याच्या स्वास्थ्यासाठी आपण प्रार्थना करावी व 'मे यु एन्जॉय गुड हेल्थ' तुला चांगले आरोग्य लाभू दे असे म्हणावे आणि जर ती व्यक्ती एकटी असेल तर त्याने 'गॉड हेल्प मी' असे म्हणावे. त्यानंतर पुढील काळात पहिले वाक्य छोटे करून त्याचे 'गॉड ब्लेस यु' देव तुझयावर कृपा करो असे बोलले जावू लागले व ती एक अंधश्रध्द्ा पसरली।

13 अंक अशुभ मानला जातो

नॉर्स पुराणामध्ये असे सांगितले जाते की, 12 नॉर्स देवांना ऍसगार्ड म्हणजेच देवलाकामध्ये मेजवानीसाठी आमंत्रित करण्यात आले होते। याच्यात दुष्ट देव म्हणून प्रसिध्द असणा–या लोकी या देवाने मेजवानीला आगंतुकपणे 13 वा देव म्हणून हजेरी लावून रंगाचा बेरंग केला। तिथे उपस्थित असणा–या इतर 12 देवांनी त्याला तेथून हाकलून लावले। त्यावेळी प्रचंड युध्द् झाले व या युध्दात प्रसिध्द असणारा व सगळयांचा आवडता देव बाल्डर मारला गेला। तेव्हांपासून 13 हा आकडा अशुभ मानला जावू लागला। त्याचबरोबर ख्रिस्ती धर्मामध्ये लास्ट सपरच्या वेळेला ज्या अनुयायाने येशू ख्रिस्त यांचा विश्वासघात केला त्याचा पण नंबर 13 वाच होता।

आकाशात तारा तुटताना दिसला की आपण मागितलेले मागणे पूर्ण होते।

आपल्याकडे देव आणि दानव अशा पुराणात कल्पना योजिलेल्या आहेत। देवांचे वास्तव्य स्वर्गात म्हणजेच आकाशात तर दानवांचे वास्तव्य नरकात म्हणजे पाताळात या संकल्पना होत्या। त्यामुळे देव आकाशातून आपल्यावर लक्ष ठेवून असतात ही भ्रामक कल्पना होती, आहे। असे तुटणारे तारे देवांकडून वापरले जातात त्यामुळे अशा ता–यांना पाहून जो प्रथम आपले मागणे मागतो किंवा इच्छा व्यक्त करतो ती देवांपर्यंत प्रथम पोहोचते व लागलीच पूर्ण होते म्हणून तुटणारे तारे पाहून व्यक्ती इच्छित वर मागतो।

समारोप –

आज शिक्षणाने कितीही आपण प्रगल्भ झालो तरी आपल्या घरात अत्याधुनिक एखादी वस्तू आणल्यास

आपण त्याची पुजा करतो, विज्ञानाने आम्हांला डोळस बनविले परंतु आपण दैंनदिन जीवनात मात्र अंधश्रध्द्‌ेला बळी जातोच। जेवताना ठसका लागला की आपल्याला वाटते की कुणीतरी आपली आठवण काढत असेल पण कळत नकळत श्वासनलिकेत अन्नाचाएखादा कण गेला असणार हे माणायलाच आपण तयार होत नाही। उजवा किंवा डावा डोळा फडफडला की काहीतरी अघटित होणार असे वाटते पण त्या ठिकाणी रक्तपुरवठा व्यवस्थित होत नाही हे साधं सोपं कारण आपण गृहित धरत नाही।

संदर्भ सूची :

1. आर्डे प. रा. : विज्ञान आणि अंधश्रध्दा, नीहारा प्रकाशन।
2. आर्डे प. रा. : फसवे विज्ञान : नीव बुवाबाजी।
3. गद्रे अरूण : उत्कांती एक वैज्ञानिक अंधश्रध्दा।
4. दाभोळकर नरेंद्र : विज्ञान आणि समाज।
5. आर्डे प. रा. व दाभोळकरनरेंद्र : अंधश्रध्दा : प्रश्नचिन्ह आणि पूर्णविरामए राजहंस प्रकाशन।

ईमेल : aouduanil29@gmail.com

मोबाईल नं. — 9420454635

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 16-21
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मानव विकास, धर्म और विज्ञान

डॉ. अजयपाल सिंह
भूगोल विभाग, किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली, हापुड।

अमूर्त :

मानव विकास, धर्मऔर विज्ञान तीन ऐसे क्षेत्र हैं जिन्होंने पूरे इतिहास में मानव समाज और संस्कृतियों को बहुत प्रभावित किया है। इस पेपर का उद्देश्य इनडोमेन के बीच जटिल अंतःक्रिया में गहराई से उतरना है, यह जांच करना है कि प्रत्येक ने दूसरे को कैसे आकार दिया है और कैसे आकार दिया है। यह धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं की विकासवादी उत्पत्ति, प्रारंभिक मानव समाज में धर्म की भूमिका और उन तरीकों की पड़ताल करता है जिनसे वैज्ञानिक खोजों ने धार्मिक विश्व दृष्टि को चुनौती दी है। इसके अतिरिक्त, पेपर धर्म और विज्ञान के बीच चल रहे संवाद की जांच करता है, संघर्ष और अभिसरण के क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है, और समकालीन समाज के लिए इस संवाद के निहितार्थ पर चर्चा करता है।

परिचय :–

मानव विकास, धर्म और विज्ञान मानव अस्तित्व और जांच के मूलभूत पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक दुनिया की हमारी समझ और उसके भीतर हमारे स्थान को आकार देते हैं। इनडोमेन का प्रतिच्छेदन पूरे इतिहास में आकर्षण और विवाद का विषय रहा है, जो अर्थ, सत्य और उद्देश्य के लिए मानवता की चल रही खोज को दर्शाता है। होमोसेपियन्स की विकासवादी यात्रा धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं के विकास को समझने के लिए एक मूलभूत संदर्भ प्रदान करती है। विकासवादी मनोविज्ञान सुझाव देता है कि अस्तित्व संबंधी चिंताओं को दूर करने और प्रारंभिक मानव समुदायों के भीतर सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए धर्म एक अनुकूली तंत्र के रूप में उभरा हो सकता है। धार्मिक विश्वास प्रणालियों के संज्ञानात्मक आधारों की खोज करके, शोधकर्ताओं ने मनोवैज्ञानिक तंत्र पर प्रकाश डाला है जो मनुष्यों को प्राकृतिक घटनाओं के लिए अलौकिक स्पष्टीकरण खोजने और सामाजिक बंधनों को मजबूत करने वाले अनुष्ठानों और सांप्रदायिक गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित करता है।

इसके अलावा, धर्म और विज्ञान के बीच ऐतिहासिक अंतःक्रियाओं को संघर्ष, सहयोग और सह–अस्तित्व की अवधियों की विशेषता रही है। गैलीलियो मामले से लेकर विकासवाद और सृजनवाद पर समकालीन बहस तक, धार्मिक सिद्धांतों और वैज्ञानिक खोजों के बीच संबंध अक्सर तनाव से भरा रहा है। हालाँकि, सहयोग के उदाहरण भी हैं, जैसे वैज्ञानिक ज्ञान के विकास में धार्मिक विद्वानों का योगदान और धार्मिक ढांचे के भीतर वैज्ञानिक निष्कर्षों का समायोजन।

आधुनिक समाज में, धर्म और विज्ञान के बीच संबंध गहन बहस और जांच का विषय बना हुआ है। जबकि विज्ञान में प्रगति ने प्राकृतिक दुनिया के बारे में हमारी समझ का विस्तार किया है, उन्होंने मानव उत्पत्ति, ब्रह्मांड की प्रकृति और दैवीय हस्तक्षेप की भूमिका के बारे में पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं को भी चुनौती दी है। नतीजतन, अनुकूलता, संघर्ष और सह–अस्तित्व के प्रश्न सार्वजनिक चर्चा को आकार देते रहते हैं और शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और पर्यावरण प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

इस संदर्भ में, यह शोध पत्र इन जटिल घटनाओं और समकालीन समाज के लिए उनके निहितार्थों की गहरी समझ को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मानव विकास, धर्म और विज्ञान के बीच बहुमुखी बातचीत का पता लगाने का प्रयास करता है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि और मामले के अध्ययन की जांच करके, हम मानव अनुभव के इन मूलभूत पहलुओं के बीच सह–अस्तित्व, संघर्ष और तालमेल को रेखांकित करने वाली गतिशीलता को उजागर करने की उम्मीद करते हैं।

मानव विकास और धार्मिक विश्वास :–

मानव विकास ने पूरे इतिहास में धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकासवादी सिद्धांतों का प्रस्ताव है कि धार्मिक अनुभवों और विश्वासों के प्रति मानव प्रवृत्ति में विकासवादी जड़ें हो सकती हैं, जो प्रारंभिक मानव समाजों के लिए अनुकूली कार्य करती हैं। विकासवादी मनोविज्ञान के भीतर एक प्रमुख परिप्रेक्ष्य से पता चलता है कि धार्मिक मान्यताएं संज्ञानात्मक तंत्र के उपोत्पाद के रूप में उभरीं जो मौलिक अस्तित्व संबंधी चिंताओं, जैसे मृत्यु दर, सामाजिक एकजुटता और अर्थ और उद्देश्य की आवश्यकता को संबोधित करने के लिए विकसित हुईं। उदाहरण के लिए, एजेंसी का पता लगाने का सिद्धांत मानता है कि मनुष्यों में एजेंसी के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता विकसित हो गई है, जिससे प्राकृतिक घटनाओं के पीछे अलौकिक प्राणियों या ताकतों की धारणा पैदा हो गई है। इस प्रवृत्ति ने प्रारंभिक मनुष्यों को अपने पर्यावरण पर नियंत्रण की भावना प्रदान की होगी और उनकी दुनिया के अप्रत्याशित और अक्सर खतरनाक पहलुओं के लिए स्पष्टीकरण प्रदान किया होगा।

इसके अलावा, सामाजिक एकजुटता परिकल्पना का प्रस्ताव है कि धार्मिक अनुष्ठानों और सांप्रदायिक गतिविधियों ने प्रारंभिक मानव समूहों के बीच सहयोग और समन्वय की सुविधा प्रदान की, जिससे उनके अस्तित्व और प्रजनन सफलता में वृद्धि हुई। साझा पहचान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों की भावना को बढ़ावा देकर, धर्म ने प्रारंभिक समाजों की एकजुटता और स्थिरता में योगदान दिया हो सकता है, जिससे धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं का पालन करने वालों को विकासवादी लाभ मिल सके।

धर्म का संज्ञानात्मक विज्ञान धार्मिक विश्वास प्रणालियों के अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक तंत्र में अतिरिक्त अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इस क्षेत्र में अनुसंधान इस बात की जांच करता है कि कैसे संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह और अनुमान, जैसे कि टेलीलॉजिकल तर्क और सहज द्वैतवाद, संस्कृतियों और समाजों में धार्मिक विश्वासों के गठन और प्रसारण को प्रभावित करते हैं। ये संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं व्यक्तियों को अलौकिक शब्दों में अस्पष्ट या अनिश्चित घटनाओं की व्याख्या करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं, जिससे धार्मिक कथाओं और परंपराओं का विकास और प्रसार हो सकता है।

धर्म और विज्ञान के बीच ऐतिहासिक सहभागिता :–

धर्म और विज्ञान के बीच ऐतिहासिक संबंध को सहयोग, संघर्ष और सह–अस्तित्व की जटिल परस्पर क्रिया द्वारा चित्रित किया गया है। सदियों से, धार्मिक संस्थानों और वैज्ञानिक जांच ने विभिन्न तरीकों से एक–दूसरे को प्रभावित किया है, जिससे प्राकृतिक दुनिया, ब्रह्मांड और मानव स्थिति की मानवीय समझ को आकार मिला है। धर्म और विज्ञान के बीच तनाव को दर्शाने वाले सबसे प्रसिद्ध प्रसंगों में से एक 17वीं शताब्दी में गैलीलियो मामला है। सौरमंडल के हेलियो सेंट्रिक मॉडल के लिए गैलीलियो गैलीली का समर्थन, जिसने कैथोलिक चर्च द्वारा समर्थित भूकेंद्रित दृष्टिकोण का खंडन किया, चर्च के अधिकारियों द्वारा उनकी निंदा की गई। इस संघर्ष को अक्सर धार्मिक हठधर्मिता और वैज्ञानिक प्रगति के बीच कथित विरोध के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है, जिससे 'संघर्ष थीसिस' लोकप्रिय हो गई – यह धारणा कि धर्म और विज्ञान स्वाभाविक रूप से एक–दूसरे के विरोधी हैं। हालाँकि, संघर्ष थीसिस धर्म और विज्ञान के बीच ऐतिहासिक अंतःक्रियाओं को अधिक सरल बना देती है। जबकि गैलीलियो प्रकरण जैसे संघर्ष हुए हैं, धार्मिक और वैज्ञानिक संस्थानों के बीच सहयोग और पारस्परिक प्रभाव के भी कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, आइजैक न्यूटन और जो हान्स केपलर जैसे कई प्रारंभिक वैज्ञानिक, श्रद्धालु थे, जिन्होंने अपनी वैज्ञानिक खोज को ब्रह्मांड की दिव्य व्यवस्था को उजागर करने के साधन के रूप में देखा। इसी तरह, मध्ययुगीन यूरोप में विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना धार्मिक संगठनों के संरक्षण के कारण हुई, जिन्होंने भगवान की रचना को समझने के साधन के रूप में प्राकृतिक दर्शन (आधुनिक विज्ञान के अग्रदूत) के अध्ययन को बढ़ावा दिया।

इसके अलावा, धार्मिक परंपराओं ने अक्सर वैचारिक रूपरेखा और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान किया है जिसने वैज्ञानिक जांच को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक दुनिया पर मानव प्रबंधन में यहूदी–ईसाई विश्वास ने पर्यावरणीय नैतिकता और संरक्षण पर बहस को सूचित किया है। इसी तरह, अनुभव जन्य अवलोकन और प्रयोग पर इस्लामी परंपरा के जोर ने इस्लामी स्वर्ण युग के दौरान खगोल विज्ञान, चिकित्सा और गणित जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति में योगदान दिया।

आधुनिक युग में, धर्म और विज्ञान के बीच संबंध बहस और बातचीत का विषय बना हुआ है। 19वीं शताब्दी में विकासवादी सिद्धांत के उद्भव, विशेष रूप से चार्ल्स डार्विन के प्राकृतिक चयन के सिद्धांत ने, धार्मिक समुदायों के भीतर विवादों को जन्म दिया, विशेष रूप से सृजन कथाओं की शाब्दिक व्याख्याओं का पालन करने वाले समुदायों में। विकासवाद बनाम सृजनवाद/बुद्धिमान डिजाइन पर बहस कई समाजों में विवादास्पद बनी हुई है, सार्वजनिक स्कूलों में विकासवाद की शिक्षा पर कानूनी लड़ाई धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक सहमति के बीच चल रहे तनाव को उजागर करती है। हालाँकि, इन संघर्षों के साथ–साथ, धार्मिक और वैज्ञानिक समुदायों के बीच सहयोग और संवाद के उदाहरण भी हैं। टेम्पलटन फाउंडेशन जैसी इंटरफेथ पहल, ऐसे शोध का समर्थन करती है जो विज्ञान और आध्यात्मिकता के अंतर्संबंध का पता लगाता है, धार्मिक अंतर्दृष्टि और वैज्ञानिक खोजों के बीच आम जमीन की तलाश करता है। इसी तरह, धर्मशास्त्री और वैज्ञानिक वैज्ञानिक प्रगति के आलोक में अर्थ, उद्देश्य और नैतिकता के सवालों का पता लगाने के लिए अंतः विषय संवाद में संलग्न होते हैं।

आधुनिक समाज में विज्ञान और धर्म :–

समकालीन समाज में, विज्ञान और धर्म के बीच संबंध एक गतिशील और बहुआयामी घटना बनी हुई है,

जो दोनों क्षेत्रों के बीच बहस, विवादों और चल रही बातचीत की विशेषता है। जबकि वैज्ञानिक प्रगति ने प्राकृतिक दुनिया के बारे में हमारी समझ का विस्तार किया है और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में क्रांति ला दी है, उन्होंने पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं और सिद्धांतों को भी चुनौती दी है, जिससे कुछ क्षेत्रों में तनाव और संघर्ष पैदा हुआ है। विवाद के सबसे प्रमुख क्षेत्रों में से एक विकासवाद बनाम सृजनवाद/बुद्धिमान डिजाइन पर बहस है। जीवाश्म विज्ञान, आनुवंशिकी और तुलनात्मक शरीर रचना जैसे क्षेत्रों के व्यापक अनुभव जन्य साक्ष्य के आधार पर विकासवादी सिद्धांत, पृथ्वी पर जीवन की विविधता और समय के साथ प्रजातियों के विकसित होने की प्रक्रियाओं को समझने के लिए एक मजबूत रूपरेखा प्रदान करता है। हालाँकि, कुछ धार्मिक परंपराएँ, विशेष रूप से पवित्र ग्रंथों में पाए जाने वाले सृजन आख्यानों की शाब्दिक व्याख्याओं का पालन करने वाली, विकास को अपने विश्वास के साथ असंगत मानती हैं।

इस तनाव के कारण पब्लिक स्कूलों में विकासवाद की शिक्षा पर कानूनी लड़ाई छिड़ गई है, सृजनवाद और बुद्धिमान डिजाइन के समर्थकों ने विकासवादी सिद्धांत के साथ या इसके बजाय विज्ञान पाठ्यक्रम में उन्हें शामिल करने की वकालत की है। ये बहसें अक्सर अकादमिक स्वतंत्रता, चर्च और राज्य के अलगाव और वैज्ञानिक जांच की प्रकृति के सवालों के इर्द–गिर्द घूमती हैं, जो आधुनिक समाज में धार्मिक मान्यताओं और शैक्षिक नीति की जटिल परस्पर क्रिया को उजागर करती हैं।

इन संघर्षों के बावजूद, गंभीर सामाजिक चुनौतियों से निपटने में धार्मिक और वैज्ञानिक समुदायों के बीच सहयोग और सहयोग के उदाहरण भी हैं। उदाहरण के लिए, धार्मिक संगठन मानवीय सहायता प्रदान करने, सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल को बढ़ावा देने और गरीबी, बीमारी और पर्यावरणीय गिरावट जैसे मुद्दों का समाधान करने के लिए वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के साथ साझेदारी कर सकते हैं। इसी तरह, अंतःविषय अनुसंधान पहल, जैसे बायोएथिक्स समितियां और अनुसंधान संस्थान, वैज्ञानिक प्रगति के नैतिक निहितार्थों का पता लगाने और विश्वास–आधारित और साक्ष्य–आधारित दृष्टिकोणों के बीच संवाद को बढ़ावा देने के लिए विविध धार्मिक और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के विद्वानों को एक साथ लाते हैं। इसके अलावा, ऐसे व्यक्ति और संगठन भी हैं जो धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक समझ के बीच अनुकूलता और एकीकरण की वकालत करते हैं। उदाहरण के लिए, आस्तिक विकासवाद का मानना है कि विकास एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से एक दिव्य निर्माता पृथ्वी पर जीवन लाता है, जो वैज्ञानिक निष्कर्षों को सृष्टि के बारे में धार्मिक मान्यताओं के साथ जोड़ता है। इसी तरह, धार्मिक और वैज्ञानिक समुदायों के बीच संवाद और जुड़ाव के समर्थक आस्था और तर्क के जटिल क्षेत्र को पार करने में आपसी सम्मान, खुले दिमाग और विनम्रता के महत्व पर जोर देते हैं।

धर्म और विज्ञान में सामंजस्य :–

धर्म और विज्ञान को लेकर चल रही बहस में, दोनों क्षेत्रों में सामंजस्य बिठाने के प्रयास स्पष्ट संघर्षों को संबोधित करने और आपसी समझ को बढ़ावा देने के साधन के रूप में उभरे हैं। विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तावित किए गए हैं, जिनमें समायोजनवादी दृष्टिकोण शामिल हैं जो वैज्ञानिक निष्कर्षों के साथ धार्मिक मान्यताओं को सुसंगत बनाने की कोशिश करते हैं, एकीकरणवादी दृष्टिकोण तक जिसका उद्देश्य एक व्यापक विश्व दृष्टि में धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों अंतर्दृष्टि को शामिल करना है।

समायोजनवादी दृष्टिकोण धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक समझ की अनुकूलता की वकालत करते हुए तर्क

देते हैं कि वे विभिन्न डोमेन में काम करते हैं और बिना किसी संघर्ष के सह–अस्तित्व में रह सकते हैं। इस दृष्टिकोण के समर्थक धार्मिक ग्रंथों की रूपक या प्रतीकात्मक व्याख्या पर जोर देते हैं, जिससे धार्मिक मान्यताओं से समझौता किए बिना वैज्ञानिक खोजों को समायोजित करने की अनुमति मिलती है। उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्री सृजन कथाओं की व्याख्या अलंकारिक रूप से कर सकते हैं, उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं के शाब्दिक विवरण के बजाय गहरी सच्चाइयों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देख सकते हैं। इसी तरह, धार्मिक विश्वासी प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संचालित होने वाले एक उत्कृष्ट निर्माता में अपना विश्वास बनाए रखते हुए विकास जैसे वैज्ञानिक सिद्धांतों की पुष्टि कर सकते हैं। दूसरी ओर, एकीकरणवादी दृष्टिकोण, दोनों क्षेत्रों की अंतर्दृष्टि को एक एकीकृत विश्वदृष्टि में शामिल करके धर्म और विज्ञान के बीच की खाई को पाटना चाहते हैं। इस दृष्टिकोण के समर्थकों का तर्क है कि धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वास्तविकता को समझने, मानवीय अनुभव और पूछताछ के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करने के पूरक तरीके प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्री ब्रह्मांड की प्रकृति पर अपने विचारों को सूचित करने के लिए वैज्ञानिक ब्रह्मांड विज्ञान का सहारा ले सकते हैं, जबकि वैज्ञानिक अंतिम अर्थ और उद्देश्य के प्रश्नों को संबोधित करने में अनुभव जन्य जांच की सीमाओं को स्वीकार कर सकते हैं। धार्मिक और वैज्ञानिक समुदायों के बीच अंतः विषय संवाद और सहयोग सुलह प्रयासों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शैक्षणिक संस्थानों और धार्मिक संगठनों द्वारा प्रायोजित विज्ञान और धर्म संवाद जैसी पहल, विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्वानों और अभ्यासकर्ताओं को आस्था और तर्क के अंत र्संबंधों के बारे में रचनात्मक बातचीत में शामिल होने के लिए मंच प्रदान करती है। ये संवाद अक्सर नैतिकता, तत्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा से संबंधित प्रश्नों का पता लगाते हैं, अनुशासनात्मक सीमाओं के पार सामान्य आधार और पारस्परिक संवर्धन की तलाश करते हैं।

इसके अलावा, धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों दृष्टिकोणों की समझ और सराहना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शैक्षिक रणनीतियाँ सुलह प्रयासों में योगदान कर सकती हैं। धार्मिक अध्ययन, दर्शन और प्राकृतिक विज्ञान की अंतर्दृष्टि को शामिल करने वाला एकीकृत पाठ्यक्रम छात्रों को मानव अस्तित्व और जांच की जटिलताओं की समग्र समझ प्रदान करता है। आलोचनात्मक सोच, बौद्धिक विनम्रता और विविध विश्व दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करके, ऐसे शैक्षिक दृष्टिकोण व्यक्तियों को आधुनिक दुनिया की जटिलताओं को बारीकियों और संवेदनशीलता के साथ ने विगेट करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

भविष्य की दिशा और निहितार्थ :–

जैसे–जैसे हम भविष्य की ओर देखते हैं, धर्म और विज्ञान के बीच चल रहे संवाद में कई प्रमुख रुझान और निहितार्थ सामने आते हैं। एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों समुदायों का बढ़ता वैश्वीकरण और विविधीकरण है, जिससे अधिक अंतर सांस्कृतिक और अंतः विषय आदान–प्रदान हो रहा है। यह प्रवृत्ति अंतर–सांस्कृतिक सीखने और सहयोग के अवसरों के साथ–साथ विज्ञान, धर्म और उनकी बातचीत के प्रति दृष्टिकोण में सांस्कृतिक अंतर से संबंधित चुनौतियां प्रस्तुत करती है।

इसके अलावा, प्रौद्योगिकी और संचार में प्रगति ने सूचना और विचारों के प्रसार को सुविधाजनक बनाया है, जिससे वैज्ञानिक ज्ञान और धार्मिक शिक्षाओं तक अधिक पहुंच संभव हो सकी है। हालाँकि, यही प्रौद्योगिकियाँ गलत सूचनाओं के प्रसार और ध्रुवीकरण कथाओं को भी बढ़ाती हैं, जिससे संभावित रूप से धार्मिक और वैज्ञानिक

समुदायों के बीच संघर्ष और गलत फहमियाँ बढ़ जाती हैं।

इन रुझानों के आलोक में, जलवायु परिवर्तन, सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और उभरती प्रौद्योगिकियों द्वारा उत्पन्न नैतिक दुविधाओं जैसी गंभीर वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए धार्मिक और वैज्ञानिक समुदायों के बीच संवाद, समझ और सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक होगा। विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्वानों और अभ्यास कर्ताओं को एक साथ लाने वाली अंतःविषय अनुसंधान पहल समग्र समाधानों के विकास में योगदान कर सकती है जो वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि को नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विचारों के साथ एकीकृत करती है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः, धर्म और विज्ञान के बीच का जटिल संबंध अंतः क्रियाओं, संघर्षों और सहक्रियाओं की एक समृद्ध श्रृंखला को समाहित करता है, जिसने दुनिया और उसमें हमारे स्थान के बारे में मानवीय समझ को आकार दिया है। पूरे इतिहास में, धार्मिक मान्यताएँ और वैज्ञानिक जाँच विविध तरीकों से एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जो अर्थ, सत्य और उद्देश्य के लिए मानवता की चल रही खोज को दर्शाती हैं।

जबकि धर्म और विज्ञान के बीच संघर्ष और तनाव को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है, दोनों क्षेत्रों के बीच सहयोग, संवाद और पारस्परिक संवर्धन के कई उदाहरण भी हैं। वैज्ञानिक ज्ञान के विकास में धार्मिक विद्वानों के योगदान से लेकर वैज्ञानिक प्रगति से प्रेरित नैतिक चिंतन तक, धर्म और विज्ञान के बीच परस्पर क्रिया ने मानव बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन को असंख्य तरीकों से समृद्ध किया है।

आगे बढ़ते हुए, यह जरूरी है कि हम खुलेपन, सम्मान और बौद्धिक कठोरता के साथ धर्म और विज्ञान के अंतर्संबंधों का पता लगाना जारी रखें। अपने ज्ञान की सीमाओं और मानवीय दृष्टिकोण की विविधता को स्वीकार करके, हम संवाद, सहानुभूति और पारस्परिक सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं जो अनुशासनात्मक सीमाओं से परे है और अपने सभी रूपों में सत्य और ज्ञान की खोज को बढ़ावा देता है। इस भावना में, धर्म और विज्ञान के बीच चल रहा संवाद मानव बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध करने, मानव अनुभव की जटिलताओं के लिए अधिक समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देने और ज्ञान की उन्नति और सामाजिक न्याय और मानव को बढ़ावा देने में योगदान देने का वादा करता है। फल–फूल रहा है।

संदर्भ :–

1. धर्म और विज्ञान के बीच संबंध : एक विवेचना – डॉ. राजीव भट्ट।
2. मानव विकास और धार्मिक विश्वास – डॉ. अशोक कुमार।
3. धर्म और वैज्ञान : आधुनिक समाज में संघर्ष और समान्यान्तर – डॉ. सुनील जैन।
4. धर्म, विज्ञान और बिचौलिया : एक विवेचना – डॉ. अनिल शर्मा।
5. मानव विकास और वैज्ञानिक अनुसंधान : धर्मिक परिप्रेक्ष्य – डॉ. मोहन लाल।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
April 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 22-26
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय ज्ञान परम्परा में योग और उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण (नाथ साहित्य के संदर्भ में)

डॉ. अरुण प्रसाद रजक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गोरुबथान गवर्नमेंट कॉलेज, कलिम्पोंग।

शोध-सार :-

भारतीय ज्ञान परंपरा के योग दर्शन को एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप देने का श्रेय महर्षि पतंजलि को जाता है। पर योग को जन–जन से जोड़ने का श्रेय नाथ पंथ के गुरु गोरखनाथ को जाता है। उनके बाद के नाथ योगियों ने शरीर को स्वस्थ, मन स्थिर एवं आत्मा को परमात्मा में प्रतिष्ठित करने वाली इस विधा को लोक तक पहुचांया। भारतीय दर्शन एवं साधना से जुड़े संप्रदायों में नाथ पंथ का महत्वपूर्ण स्थान है। नाथ संप्रदाय भगवान शिव को ही प्रथम नाथ या आदिनाथ मानते हैं। आदिनाथ शिव से मिले तत्त्वज्ञान को मत्स्येंद्रनाथ ने अपने शिष्य गोरक्षनाथ को दिया। गोरखनाथ ने भारतवर्ष समेत एशिया के बड़े भूभाग को अपने योग ज्ञान से कृतार्थ किया। आज योग जाति, धर्म, मजहब, लिंग और भौगोलिक सीमाओं से परे सबके लिए उपयोगी सिद्ध हो चूका है। आज पूरी दुनिया योग को स्वीकार कर रही है। 'अंतराष्ट्रीय योग दिवस' (21 जून) इसका प्रमाण है।

बीज शब्द :- आध्यात्म, वैज्ञानिकता, दर्शन, ज्ञान परम्परा, नैतिक मूल्य।

भूमिका :-

भारत आध्यात्म विद्याओं की धरती रही है। विचार और चिंतन प्रधान इस देश में दार्शनिक चिन्तन प्रारम्भ काल से लेकर आज तक जारी है। इस चिन्तन के पीछे संसार के व्यावहारिक जीवन की समस्याएँ रही हैं। समस्याओं को सरल और सहज करने का तरीका उनके सम्यक निरीक्षण से प्राप्त होता है। दर्शन का प्रयोजन है– दुःखसामान्य की निवृत्ति और सुखसामान्य की प्राप्ति। इसी अभिलाषा से दर्शन की आवश्यकता हुई। दरअसल भारत में दर्शन का उद्‌भव जीवन में नैतिक एवं भौतिक बुराई की उपस्थिति से पैदा होने वाली व्यावहारिक आवश्यकताओं से हुआ। प्राचीन भारतीय विचारकों को सबसे अधिक अशांति जिससे हुई, वह थी इस बुराई को दूर करने की समस्या तथा सभी प्राचीन चिन्तनों में 'मोक्ष' उस अवस्था का नाम है। प्राचीन दर्शन– चिंतन का मुख्य लक्ष्य जीवन के क्लेशों को दूर करने एवं मोक्ष प्राप्ति का उपाय ढूँढना मात्र था और तात्त्विक प्रशनों पर विचार करना अनुषांगिक बात मात्र था। योग–दर्शन भी भारतीय ज्ञान परम्परा का एक प्रमुख दर्शन है जिसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज सिद्ध हो चूका है। पतंजलि इसके जनक माने जाते हैं। बाद में इस परम्परा को आगे

बढ़ाने का श्रेय गुरु गोरखनाथ को है। पतंजलि के अष्टांग योग जहां समाप्त होता है उसके आगे से गोरखनाथ के हठयोग की प्रक्रिया शुरू होती है।

शोध–विस्तार :–

गोरखनाथ की रचनाओं में अद्वैत वेदांत के साथ योग का समन्वय है। नाथ संप्रदाय को भारतीय योग–दर्शन ने अत्यधिक प्रभावित किया है। भारतीय परंपरा में योग का संबंध शारीरिक तथा मानसिक अनुशासन से माना गया है तथा ज्ञान, कर्म, उपासना और भक्ति सभी मार्गों में योग की उपादेयता स्वीकार की गयी है। योग मनुष्य की चित्तवृत्तियों को उर्ध्वमुखी बनाकर उस समाधि की उच्चतम अवस्था तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करता है। इस दृष्टि से योग भारतीय वांग्मय का महत्त्वपूर्ण विषय रहा है, जिसका पूरा–पूरा प्रभाव नाथ योगियों पर पड़ा है। नाथ योगियों में गोरखनाथ प्रमुख आचार्य हुएँ, जिन्होंने नाथ संप्रदाय को अपनी प्रतिभा से पुष्ट किया। गोरखनाथ की रचनाएँ योग–दर्शन की परंपरा से पूर्णरूपेण प्रभावित है। वे जिस आत्म से एक होने की बात करते हैं वह योगदर्शन के अनुरूप है। गोरखनाथ ने जिस निश्चल एवं निष्काम साधना का प्रतिपादन किया है तथा चित्त की दृढ़ता पर बल दिया है, वह योग–दर्शन का सन्देश देता है। उनकी रचनाओं में योगपरक उक्तियों की संख्या अत्यधिक है। महर्षि पतंजलि ने चित्तवृत्तियों के निरोध पर बल दिया है। चंचल चित्त ही मनुष्य की समस्याओं का मूल कारण है। इनके निवारणार्थ योगांगों का वर्णन नाथ साहित्य में भी मिलता है।

ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों में एक ही तत्त्व है। अंतर मात्र विस्तार का है। अतः ब्रह्माण्ड के सत्य से साक्षात्कार का सर्वोत्तम साधन पिण्ड अर्थात् मानव शरीर है। शरीर को आध्यात्मिक साधना का यंत्र बनाने में हठयोग के सिद्धांत प्रयुक्त हुए। साधक ने उपस्थ से लेकर ब्रह्म रंध्र तक छह चक्रों की कल्पना की। सबसे नीचे मूलाधार है, जहाँ शक्ति का निवास है और सबसे ऊपर सहस्रार है जहाँ शिव रहते हैं। योगाभ्यास द्वारा योग साधक शक्ति को जगाकर चक्रों को भेदते हुए उसे शिव से मिलाता है और अद्वैत स्थिति में ले जाता है– यही नाथ सिद्धों की सिद्धि है। संसार में रहते हुए विरक्त हो जाना तथा देह के रहते हुए विदेह की स्थिति को प्राप्त करना योग का परम लक्ष्य है। नाथ पंथ के लोग योग के प्रयोग से कायसाधना करते थे और कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत कर काय को दिव्य बना लेते थे। कोई काया को शत्रु समझकर विभिन्न तरह के कष्ट देता है और कोई विषयवासना में लिप्त होकर उसे अनियंत्रित छोड़ देता है। परन्तु नाथ योगी काया को परमात्मा का आवास मानकर उसकी योग साधना करते हैं। काया उसके लिए वह यन्त्र है, जिसके द्वारा वह इसी जीवन में मोक्षानुभूति कर लेता है। कुंडलिनी तत्त्व तंत्र योग साधना की असाधारण विशेषता है जो किसी न किसी रूप में सर्वत्र सभी रहस्यवादी सम्प्रदायों में पाया जाता है। कुंडलिनी तत्त्व वह शक्ति है जिसे शिव से समरस करने के लिए साधना की जाती है। इस प्रकार योगी मत को शैव मत भी कहा जाता है। दरअसल 'शैव– प्रत्यभिज्ञा दर्शन' ने भी नाथ संप्रदाय की भावभूमि को प्रभावित किया है।

प्राग्वैदिक काल से शिव और योग का संबंध चला आ रहा है। इसके प्रवर्तक आदिनाथ स्वयं शिव समझे जाते हैं। नाथ शैव थे परन्तु वे शैवों की तरह न तो लिंगार्चन करते थे और न ही शिवोपासना के अन्य अंगों का निर्वाह करते थे। यह शैव मत का शुद्ध योग सम्प्रदाय है। तात्पर्य यह है कि नाथ मत का आविष्कार शैव मत एवं योग दर्शन के समवेत् सम्मेलन से हुआ, हाँलाकि नाथों के यहाँ मुक्ति या मोक्ष की अवधारणा महायानी है। गोरखनाथ में शैव और बौद्ध मत का अद्भुत मिलन को लक्षित करते हुए देवीप्रसाद मौर्य लिखते हैं– "वे चित्त

के बौद्ध विचार को मान्य करते हुए अनहद नाद में विश्वचित्त (शिव) को देखते हैं जिसमें व्यक्ति चित्त विलीन हो जाता है।"[1]

वेदान्त दर्शन के प्रवक्ता स्वामी शंकराचार्य थे। उनका वेदान्तवाद अथवा अद्वैतवाद व्यावहारिक क्षेत्र में आकर शिवत्त्व धारण कर लेता है। इसीलिए उनका सम्प्रदाय शैव माना जाता है। भगवान शिव की मूर्ति जहाँ गम्भीर ज्ञानमयी है, वहीं विविधा वैचित्र्यमयी भी। इसलिए उनमें यदि निर्गुण उपासकों के लिए विशेष विभूति विद्यमान है तो सगुणवादियों के लिए भी आकर्षण एवं ऐश्वर्य मौजूद है। गोरखनाथ की संस्कृत और देशी भाषा की रचनाओं में वेदान्तवाद की विशेष विभूतियाँ जहाँ दृष्टिगत होती हैं, वहीं शिव के उपासना की ऐसी प्रणालियाँ भी उपलब्ध होती हैं, जो सर्वसाधारण को उनकी ओर आकर्षित करती हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण गोरखनाथ ने शैव धर्म का आश्रय लेकर उस समय योग को स्थापित करने का भगीरथ प्रयत्न किया। नाथ दर्शन की विचारधारा से अनुमान किया जा सकता है कि इनके दार्शनिक सिद्धांत शैव दर्शन से साम्यता रखते हैं। शैव दर्शन के मूल सिद्धांतों को मानते हुए उन्होंने योग दर्शन को एक नवीन आयाम एक नवीन व्याख्या देने का प्रयत्न किया। गोरखनाथ ने अपने प्रेम संबंधी उपदेशों का प्रचार–प्रसार करते हुए देश के विभिन्न भागों में व्यापक रूप से भ्रमण किया था। इस व्यापकता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने देश के भिन्न–भिन्न भागों में उनके द्वारा स्थापित संस्थायें आज भी विद्यमान हैं।

गोरखनाथ देह कष्ट साधना के विरोधी थे। अतरू वे वाह्य साधनों की अपेक्षा अंतरूकरण के शुद्धि पर विशेष बल देते हैं। वे साधना हेतु गुरु की महत्ता निरूपित करते हैं। गोरखनाथ के विचारों में सबसे महत्त्वपूर्ण है– उनके द्वारा निर्दिष्ट हठयोग साधना। गोरखनाथ का हठयोग प्राचीन योग प्रणाली का ही नूतन परिष्कृत रूप है। नाथों ने योग के क्षेत्र में अनेक अभिनव सिद्धांतों का सूत्रपात किया है– हठयोग में सांसारिक हठों या इच्छाओं से परे होना सिखाया जाता है। नाथ संप्रदाय में शिव से शक्ति का योग ही 'हठयोग' कहलाया। हठयोग में 'ह' का अर्थ सूर्य शरीर में इड़ा तथा 'ठ' का अर्थ चंद्र शरीर में पिंगला नाड़ी माना। इनकी एकता अथवा समन्वय ही हठयोग की चरम उपलब्धि मानी जाती है। हठयोग का अपना आचार– विचार है, परन्तु इसमें वाह्याडंबर, वैदिक और धार्मिक व्रत–उपवास आदि कर्मकांडों का खंडन किया गया है। गोरखनाथ हठयोग की साधना करते थे, लेकिन इसे दिखावे की चीज नहीं मानते थे। बालक के मन और निच्छल स्वभाव को वे अपना आदर्श मानते थे, इसलिए ज्ञान का अहंकार या किसी भी प्रकार के ढोंग को वे स्वीकार नहीं करते थे। गोरखनाथ के दर्शन पर डॉ० रामविलास शर्मा की टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है– "योग साधना उनके (नाथों के) पहले से प्रचलित थी। उसमें उन्होंने सुधार किया। सबसे बड़ा काम यह किया कि उन्होंने सदाचार पर ज़ोर दिया, मन को साधने की बात कहीं, शरीर को अनावश्यक कष्टों से बचाने पर जोर दिया। उनका वेदान्त धर्म नहीं है, वह ऐसा दर्शन है जो हर तरह के धार्मिक भेदभाव का खंडन करने वाला है। जहाँ तक सदाचार का संबंध है, उनमें और संतों में बहुत कम भेद है। इसके अतिरिक्त उनका योग कहीं– कहीं भक्ति के बहुत नजदीक पहुँच जाता है। गुरु के प्रति गोरख जिस श्रद्धा की बात करते हैं, वह लगभग वैसी ही है जैसी भक्तों में इष्टदेव के प्रति देखी जाती है।"[2]

गोरखनाथ के अनुसार हठयोग का लक्ष्य समाधि प्राप्ति और जीवन में नैतिकता स्थापित करने के लिए है। गोरखनाथ और नाथ पंथ के लोग समाज में हठयोग का उपदेश देते थे और अपने शरीर तथा मन के साथ नए–नए प्रयोग करते थे। उन्होंने तो कई कठिन आड़े–तिरछे आसनों का आविष्कार भी किया। उनके अजूबे

आसनों को देख लोग अचम्भित हो जाते थे। लेकिन आश्चर्य की बात है प्रचीन समय में योग को उतना महत्त्व और सम्मान नहीं दिया गया, जितना आज के समय में उसे हासिल है। योग को निकृष्ट एवं बेकार का काम माना जाता रहा। जब भी कोई उल्टे–सीधे कार्य करता तो कहा जाने लगा कि 'यह क्या गोरखधंधा लगा रखा है।'

'गोरखधंधा' शब्द तथा कहावत का प्रचलन भी योग को हेय दृष्टि से देखने के सिलसिले में हुआ है। यहाँ तक की महाकवि तुलसीदास ने कहा कि श्गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोगश्3 अर्थात् गोरख ने योग को जागृत कर भक्ति से लोगों को विमुख कर दिया। तुलसीदास की दृष्टि में गोरखनाथ का सबसे बड़ा अपराध था कि उन्होंने योग के माध्यम से लोगों को शास्त्र विमुख करने का प्रयास किया। हिन्दी साहित्य के महान इतिहासकार एवं आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में योग को भक्ति के प्रतिस्पर्धा के रूप में देखते हुए योग की आलोचना की है। योग बनाम भक्ति के समीकरण को हल करने के सिलसिले में आरम्भ से ही योग के मर्म को न समझकर उसे ठण्डे बस्ते में डाल दिया जाता रहा।

जबकि सच्चाई यह है कि भक्ति को अपदस्त करने वाली वस्तु के रूप में योग को नहीं देखा जा सकता। योग का फलक काफी व्यापक है। भक्ति में नैतिक मूल्य समाहित रहता है और साथ में कर्मकाण्ड भी नत्थी रहता है। यह भी सही है कि पवित्र नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए ही भक्तिमूलक कर्मकाण्डों का आयोजन किया जाता है। लेकिन योग में नैतिक मूल्यों के साथ मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक मूल्यों का वास होता है। चित की एकग्रता से आत्मा का शुद्धीकरण योग में होता है। यह सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के शुद्धिकरण से भी जुड़ा हुआ है। स्वस्थ व्यक्ति से ही स्वस्थ समाज बनता है। जीवन में नीति, आचार–विचार, विश्वास अतिआवश्यक है। लेकिन हमें यह भी नही भूलना चाहिए कि स्वास्थ्य मानव जीवन का मूलधन है। योग इन्सान को शारीरिक एवं मानसिक तुष्टी देकर नैतिक मूल्यों के प्रित उसका विश्वास कमजोर नहीं करता, वरन् और दृढ़ करता है। योग 'गोरखधंधा' का पर्याय नहीं है। यह विभिन्न प्रकार की सामाजिक शारीरिक समस्याओंसे मुक्ति दिलाने में सक्षम है। इसलिए आज योग की प्रसंगिकता है।

निष्कर्ष :–

बहरहाल, वैश्वीकरण के युग में स्वास्थ्य पर सबसे अधिक हमले हो रहे हैं, लेकिन आज यह सर्वविदित है कि स्वास्थ्य को चुस्त एवं दुरूस्त रखने के लिए योग की अहम भूमिका है। जीवन में योग की महत्ता साबित हुई है। वर्तमान और भावी पीढ़ी की सुरक्षा तथा विकास हेतु अपने परिवेश में सुधार लाने के लिए योग एक कारगर कदम है। योग की परम्परा काफी पुरानी है। योगाभ्यास आज के समय में दवाईयों से ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्ध हो चुका है। भारत में ही नहीं पूरे विश्व में योग एक क्रांतिकारी परिवर्तन कर चुका है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि योग की सांस्कृतिक परम्परा को पूरे विश्व में स्थापित करने का श्रेय भारतवर्ष को है। नाथ योगियों के योग साधनाओं के अनेक आसन करने के लिए योगगुरु रामदेव भी स्वास्थ्य रक्षा के लिए आम आदमी को प्रेरित करते हैं। निर्मय जीवन के लिए योग एक कारगर हथियार है। हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (International Yoga Day) पूरी दुनिया में मनाया जाता है। योग हमारे भारतवर्ष की पहचान है, जो कई सदियों से भारत में किया जाता रहा है। भारतवर्ष की पहल के बाद योग को अंतरराष्ट्रीय दर्जा मिला और इसे पूरी दुनिया ने अपनाया।

सन्दर्भ-सूची :-

1. मौर्य, देवीप्रसाद, 'सहज समागम', रोशनाई प्रकाशन, काँचरापाड़ा, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ– 87
2. शर्मा, रामविलास, 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश', खंड– 2, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2008, पृ०–176
3. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, 'हिंदी साहित्य का इतिहास', अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ– 36

पता (पत्राचार के लिए)

20, पी. बी. एम. रोड

चांपदानी, पोस्ट– बैद्यबाटी

हुगली (पं बंगाल), पिन– 712222

मो.– 7003098240

ईमेल– arunrajak28@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 27-30

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय धर्म ग्रंथो में विज्ञान

डॉ. अतुल चंद
प्रभारी प्रचार्य, राजकीय महाविद्यालय बलुवाकोट, पिथौरागढ़ उत्तराखंड।

शोध सार :-

हमारे पुराने धर्म ग्रंथ उन्नत तकनीकी के ज्ञान का भंडार हैं। जिस पर विदेश में भी शोध हो रहे हैं चाहे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीकी हो या कंप्यूटर पासवर्ड की तकनीकी हो, परमाणु बम एटम बम मिसाइल आदि की तकनीकी हो या फिर आंखों देखा हाल सुनाने की तकनीकी हो या फिर पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी नापने की स्थिति हो या फिर सूचना युद्ध कर्म का प्रयोग हो सभी का उल्लेख हमारे धर्म ग्रंथो में प्राप्त होता है। रामायण और महाभारत बहुत से ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जो कि वर्तमान समय की विज्ञान और तकनीकी से बहुत आगे होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इन्हीं सब तथ्यों का विवेचन इस शोध लेख में में संक्षिप्त रूप में किया गया है।

कुंजी शब्द – सूचना युद्धकर्म, संचार तकनीकी, हनुमान चालीसा, रामायण, महाभारत, गूगल चश्मा, योजन, भीष्म पर्व, मरीचि, पुष्पक विमान, संचार तंत्र।

वर्तमान स्वयं में हम विज्ञान और तकनीकी के नए विकास क्रम की ओर अग्रसर हैं। नित प्रतिदिन नए–नए अविष्कार होते जा रहे हैं। नई तकनीकी उभर कर सामने आ रही है। युद्ध लड़ने के लिए नए हथियार और स्त्रातेजी का विकास हो रहा है। कभी हम केवल कल्पना करते थे कि हजारों किलोमीटर दूर क्रिकेट मैच हो रहा हो और हम उसे घर से देख लेंगे किंतु आज हम लाइव प्रसारण टीवी और मोबाइल पर देख पा रहे हैं। युद्ध में सूचना को भी हथियार के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है लेकिन क्या यह वर्तमान सदी की देन है। यह पूर्व में भी यह तकनीकी उपलब्ध थी। यदि हम अपने प्राचीन धर्म ग्रंथो का अध्ययन करते हैं तो ऐसे बहुत सारे तथ्य मिल जा रहे हैं जो यह प्रमाण दे रहे हैं कि यह तकनीकी कोई नयी नहीं है। भारत में हजारों सालों पहले भी मौजूद थे।

भारतीय धर्म ग्रंथो में आधुनिक तकनीकी के कुछ उदाहरण :-

लगभग सभी भारतीय हिंदू परिवार हनुमान चालीसा पढ़ता है। हनुमान चालीसा में हनुमान चालीसा पढ़ने समय एक स्थान पर आता है कि 'जुग सहस्त्र जोजन पर भानु लिल्यो ताहि मधुर फल जानू'।

अर्थात् हनुमान जी ने सूर्य देव को मीठा और स्वादिष्ट फल समझकर खाने के लिए सूर्य देव की ओर चल पड़े और उन्हें मुंह में ले लिया। अब इसी दोहे में पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी दी गई है जैसे जुग सहस्त्र जोजन पर भानु का अर्थ यदि हम निकलते हैं तो पूरी दूरी निकाल कर आ जाती है। प्राचीन काल में जो मापक

प्रयोग किया जाता था उसमें योजन दूरी नापने वाली इकाई इकाई थी युग भी दूरी मापने का इकाई था एक युग का अर्थ होता है। 12000 वर्ष और एक सहस्त्र का अर्थ होता है 1000 और एक योजन 8 मील के बराबर होता है और एक मील में 1.6 किलोमीटर होते हैं। अब यदि हम एक योजन को युग और सहस्त्र से से गुणा करते हैं तो पाते हैं 15 करोड़ 36 लाख किलोमीटर (8 x 1.6 x 12000 x 1000=15,36,00000) जो कि पृथ्वी और सूर्य की वर्तमान समय में वैज्ञानिकों द्वारा निकल गई दूरी के लगभग बराबर आती है। पृथ्वी और सूर्य के बीच दूरी बदलती रहती है क्योंकि पृथ्वी घूमती है अधिकतम दूरी जुलाई माह में होती है जो की लगभग 15 करोड़ 21 लाख किलोमीटर दूर होता है जो की हनुमान चालीसा में बताई गई दूरी के 15 करोड़ 36 लाख के लगभग बराबर ही आ रहा है। अर्थात उसे समय का विज्ञान भी इतना आगे था कि वह सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी का अंदाजा लगा सकता था।

आधुनिक संचार तंत्र :-

आज विज्ञान और तकनीकी ने हजारों किलोमीटर दूर हो रही घटनाओं को घर बैठने देखना सुलभ बना दिया है। चाहे आज के दौर का लोकप्रिय क्रिकेट मैच हो या फिर गल्फवार का सजीव प्रसारण आप सभी लोगो ने हजारों किलोमीटर दूर हो रहे खेल क्रिकेट मैच युद्ध एवं अन्य कार्यक्रम का सजीव प्रसारण लाइव अपने टीवी, मोबाइल, कंप्यूटर आदि पर देख पा रहे हैं। और यह कहा जा रहा है कि यह वर्तमान समय की तकनीकी क्रांति की देन है किंतु यदि हम हजारों साल पूर्व महाभारत काल में जाते हैं तो हमें इस तरह की वृतांत प्राप्त होते हैं। जिसमें संजय कुरुक्षेत्र में हो रहे युद्ध का आंखों देखा हाल धृतराष्ट्र को सुनाते हैं। अर्थात कोई ऐसी तकनीकी वर्तमान के युग की तरह ही थी जिसके द्वारा वह युद्ध के मैदान का आंखों देखा हाल का सजीव प्रसारण धृतराष्ट्र को सुनाते रहते हैं। वर्तमान समय में भी ऐसी तकनीकी का विकास करने की प्रयास किया जा रहा है जिसके द्वारा बायो चिप्स के माध्यम से कोई व्यक्ति हजारों मील दूर से किसी स्थान का लाइव टेलीकास्ट अपनी आंखों से देख सकता है। गूगल चश्मा आदि का निर्माण भी किया जा रहा है। संजय का वृतांत महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय 2 में यह वर्णन आता है कि महर्षि वेदव्यास धृतराष्ट्र से कहते हैं कि मैं तुम्हें दिव्य दृष्टि देता हूं और तुम यहीं से युद्ध को देख सकते हो किंतु धृतराष्ट्र ने इन्कार कर दिया।

यदि चेच्छसि संग्रामे दृष्टमेतान विशाम्पते।
चक्षुर्ददानि ते पुत्र युद्धं तत्र निशामय।।[2]

किंतु धृतराष्ट्र ने इनकार करते हुए कहा कि

न रोचये ज्ञातिवधं द्रस्टुं ब्रम्हर्षिसत्तम।
युद्धमेतत्वशेषेण श्रुणुयां तव तेजसा।।[3]

कि मुझे अपनी जान पहचान वाले सगे संबंधियों और अपनों को युद्ध में मरते हुए देखना नहीं पसंद करूंगा इसलिए मैं केवल युद्ध का आंखों देखा हाल ही सुनना चाहता हूं। तब महर्षि व्यास ने संजय को दिव्या दृष्टि प्रदान की :-

चक्षुषा संजयो राजन् दिव्यनैव समन्वितः।
कथयिष्यति ते युद्धं सर्वज्ञश्च भविष्यति।।[4]

अर्थात् संजय युद्ध भूमि में हो रही सभी घटनाओं का का आंखों देखा हाल वर्णन आपको सुना सकेगा

संजय को दिव्या दृष्टि प्राप्त हो गई है। उसे सर्वज्ञता प्राप्त होगी और वह सभी घटनाओं को अक्षरसः से वर्णन कर सकेगा।

अर्थात उपरोक्त तथ्य यह प्रदर्शित कर रहे हैं। वर्तमान समय की तरह ही कोई ऐसी तकनीक थी जो हजारों किलोमीटर दूर हो रहे घटनाओं का आंखों देखा हाल या लाइव टेलीकास्ट कर सकती थी।

पुष्पक विमान[5] का वर्णन :–

रामायण काल में पुष्पक विमान का वर्णन प्राप्त होता है इसके बारे में यह कहा जाता है कि वह मन की गति से चलता था[5] और आवश्यकता अनुसार छोटा या बड़ा हो सकता[6] था विमान का स्वामी जहां जाने के लिए सोचता या इच्छा रखता था वहां वह उसे गंतव्य स्थान पर जाने के लिए चल पड़ता था।

मनः समाधाय तु शीघ्रगामिनं दुरावरं मारुततुल्यगामिनम्।
श्महात्मनां पुण्यकृतां मनस्विनां यशखिनामर्ग्यमुदामिवालयम्।[7]

वर्तमान समय में भी ऐसे वायुयान और कार बनाने के प्रयास किया जा रहे हैं जो सोचने मात्र से ही इच्छित स्थान पर पहुंचा दें। ऐसी कारों का निर्माण भी किया जा रहा है जो बिना ड्राइवर के ऑटोमेटिक सबसे कम ट्राफिक के रास्ते से आपकी गंतव्य और इच्छित स्थान पर पहुंच सकेगा। अर्थात जो तकनीकी वर्तमान में विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। उससे भी अधिक उन्नत तकनीकी रामायण काल में भी उपलब्ध थी।

राजा मुचकुंद[8] का उदाहरण :–

एक प्राचीन उल्लेख प्राप्त होता है कि प्रभु श्री राम के वंशज इच्छवाकु वंशी राजा मांधाता के पुत्र राजा मुचकुंद अत्यंत वीर और शक्तिशाली राजा थे। एक बार देवों का असुरों के साथ संग्राम हो रहा था। उसे देवासुर युद्ध में देवता हारने लगे तो उन्होंने राजा मुचकुंद से सहायता मांगी राजा मुचकुद स्वर्ग में इंद्र की ओर से लड़ने के लिए गए थे। युद्ध के समाप्ति के बाद जब राजा मुचकुंद ने पृथ्वी पर जाने की आज्ञा मांगी तो इंद्र ने कहा पृथ्वी के हजारों साल बीत गए हैं क्योंकि स्वर्ग में समय की गति और पृथ्वी में समय की गति अलग–अलग है। पृथ्वी में समय की गति बहुत तेज है। यहां पर धीमा है इस तत्व को हम ऐसे समझ सकते हैं। अभी हाल ही में हमारा चंद्रयान 3 चंद्रमा[9] पर गया था वहां पर प्रज्ञान रोवर और विक्रम लैंडर ने चंद्रमा पर एक दिन अर्थात पृथ्वी के 14 दिन के बराबर कार्य किया[10] क्योंकि चंद्रमा पर पृथ्वी के 14 दिन के बराबर एक दिन और 14 दिन के बराबर एक रात होती है। अर्थात वहां का एक पूरा रात दिन पृथ्वी की 28 दिन के बराबर होता है। अब उपरोक्त किवदंती में भी यही तथ्य बताया गया है कि स्वर्ग पृथ्वी जैसी कोई दूसरी आकाशगंगा है। जहां का एक दिन पृथ्वी के कई हजार वर्षों के बराबर होता है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक यह सिद्ध भी कर रहे हैं कि कई ऐसे ग्रह और आकाशगंगा है। जिनका एक दिन पृथ्वी के हजारों दिनों के बराबर या हजारों वर्षों के बराबर होता है। ऐसे ही बहुत सारे तथ्य हैं जो यह स्पष्ट कर रहे हैं कि हमारा प्राचीन विज्ञान वर्तमान विज्ञान से बहुत अधिक उन्नत था इसरो के सोमनाथ नाथ ने भी कहा कि विज्ञान वेदों से निकला है।

निष्कर्ष :–

हम यह कह सकते हैं कि वैदिक विज्ञान वर्तमान विज्ञान से कहीं अधिक उन्नत था किंतु इसकी तकनीकी का संहिताबद्ध ज्ञान प्राप्त न होने कारण हम उसे पूर्ण रूप से समझ नहीं पा रहे हैं। किंतु हमारे धर्म ग्रंथो पर

विदेश में भी शोध हो रहा है और जो तकनीकी उसमें वर्णित की गई है। वह वर्तमान की तकनीकी से अधिक उन्नत सिद्ध हो रही है। उपरोक्त में किया गया विवेचन एक छोटा सा उदाहरण भर है। यदि हम सभी धर्म ग्रंथो का अध्ययन करें और उसे पर शोध करें तो और बहुत सी नई चीज उभर कर बाहर आएंगे आवश्यकता है। हमारे धर्म ग्रंथो में वर्णित विभिन्न तथ्यों को डिकोड करने की इसके लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :–

1. तुलसीदास कृत हनुमान चालीसा, पृष्ठ स० 7, चौपाई संख्या 18, गीता प्रेस गोरखपुर।
2. भीष्म पर्व, अध्याय 2, श्लोक 6
3. भीष्म पर्व, अध्याय 2, श्लोक 7
4. भीष्म पर्व, अध्याय 2, श्लोक 10
5. चंद डॉ. अतुल 'रामायण काल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साक्ष्य', पेज संख्या 133 शोध धारा, आईएसएसएन : 0975–3664, यूजीसी केयर लिस्टेड।
6. वही, पेज संख्या 134
7. चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा सुंदरकांड, पेज संख्या 105–106, सप्तम और अष्टम सर्ग सचित्र वाल्मीकि रामायण पब्लिशर, राम नारायण लाल, इलाहाबाद, 1927
8. राजा मुचुकुन्द की कथा डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट भक्ति भारत डॉट कॉम।
9. चंद्रयान–3 : चांद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचकर भारत ने रचा इतिहास अगस्त 23, 2023 डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट बीबीसी डॉट कॉम।
10. चंद्रयान–3 : चांद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचकर भारत ने रचा इतिहास मिश्रा ऋचीक, अगस्त 23 2023 डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट आजतक डॉट कॉम।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 31-35
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अध्यात्म आणि मनरूशांती

डॉ.बी.एन. रावण
प्राध्यापक, इंग्रजी विभाग प्रमुख, श्रीपतराव चौगुले आर्टस् अण्डर सायन्स कॉलेज, माळवाडी, कोतोली, ता. पन्हाळा, जि. कोल्हापूर।

प्रस्तावना :-

संपूर्ण जगाला कोरोनाने हादरवून सोडले। त्या भयानक परिस्थितीत प्रचंड गोंधळलेलीअवस्था समाजाची झाली होती। जीव वाचविण्यासाठी प्रत्येकजण वेगवेगळ्या गोष्टी करू लागला। लोकांना प्रचंड वेळ मिळला अन् वैयक्तीक/सामूहीक वदसपदम स्वरुपात प्रचंड अध्यात्मिक सेवा लोकांच्याकडून घडली। त्या परिस्थितीत अध्यात्माने माणसास एक आधार, विश्वास दिला अन् संपूर्ण कुटुंबाचे अन समाजाचे मनस्वास्थ्य टिकण्यास मदत झाली।

सध्याच्या धावपळीच्या जगात प्रचंड पैसा काहीजणांच्याकडे आहेपरंतू मनरूशांती नाही। तर दुसऱ्या बाजूला जगण्यासाठी प्रचंड संघर्ष करावा लागतोय, येथे मनरूशांती कशी मिळवायची हा प्रश्न आहे। एकवेळ पैसा मिळेल परंतू मनरूशांती साठी कोणतंही औषध नाही। जिथं शास्त्रथांबतं तिथं अध्यात्म सुरू होतं। अन् तेच मनाला शांती मिळवून देतं अन् जीवन समृध्द बनवतं।

बीजशब्द – मनशांती, अध्यात्म, संत वाडरूमय, विज्ञान।

सध्याच्या धावपळीच्या जगात प्रत्येक गोष्टीमध्ये स्पर्धा आलेली आहे। ज्या गोष्टी आपण सरळ, हसत खेळत अनुभवत होतो त्यातून आपणाला प्रचंड आनंद, समाधान मिळत होता अन्हाच आनंद समाधान आपले मानसिकस्वास्थ चांगले ठेवत होता। साध्या गोष्टी सरळ होत्या. त्यामध्ये, आपल्या विचाराने आपण स्पर्धा आणली अन् नको तेवढे आपण चौकस व आग्रही राहू लागलो। त्यामुळे हळू हळू आपण आपले स्वास्थ्य हरवू लागलो, ते आज इतके हरवलंय की आपणांस त्या स्वास्थ्यासाठी विशेष प्रयत्न करावे लागत आहेत।

मानसिक स्वास्थ्य हे शारिरीक स्वास्थ्यापासून वेगळे करू शकत नाही. समाधानी मन, स्थिर, चित्त आणि बुध्दी तसेच प्रेमळ अंतरूकरण या गोष्टी असणे म्हणजे मानसिक स्वास्थ्य असणे असे आपण म्हणू शकतो। अर्थात या सर्व गोष्टीचा अभाव असणे म्हणजे मानसिक स्वास्थ्य नसणे हे होय। आजची सामाजिक स्थिती पाहिली तर प्रत्येकाला कोणता ना कोणतातरी विचार सतत भेडसावत असतो। आपण जेथे काम करतो तेथील वातावरण, चूकीच्या अपेक्षा मानहानीचे प्रसंग, आर्थिक मागणी, काम करून कसलेच समाधान नसणे, प्रचंड द्यावा लागणारा वेळ या सर्वगोष्टीमुळे आपले मनस्वास्थ्य व आरोग्य दोन्हीही बिघडतेय। प्रत्येक गोष्ट चांगली झाली पाहिजे व माझी प्रशंसा झाली पाहिजे अशी चूकीची अपेक्षा/धारणा आपण करून बसतो व निराश होतो। ती निराशा इतकी वाढते की त्याचा आपल्या कौटुंबिक जीवनावर विपरीत परिणाम होतो। एखादी गोष्ट आपल्याकडे नाही परंतू ती

दुस—याकडे आहे अशा तुलनात्मक विचारानेही मनस्वास्थ हरवते। आपल्या आर्थिक क्षमतेपेक्षा जास्त अशा वस्तू आवश्यकता नसताना खरेदी करणे चूकीची पत जोपसण्याचा प्रयत्न करणे त्यातून तणाव निर्माण होतो। पैसा, प्रतिष्ठा, प्रसिध्दी ही क्षितीजे असतात। ती पाहायला फार मजेदार असतात। तिथे पोहोचण्याचा प्रयत्न केला की पुन्हा ती लांबवरच जातात, हे प्रत्येकाने अनुभवास येईपर्यंत करून पाहण्यासारखे आहे। मानसिक स्वास्थ हे उपचाराने मिळत नाही त्यासाठी आपणाला आपणच एक वेगळा मार्ग निवडावा लागतो।

अध्यात्म हे काळ आणि जड विश्व यांच्या पलीकडे असलेल्या आत्मतत्वाचा अभ्यास करणारे शास्त्र, अध्यात्म या संबोधात आद्य + आत्मन अशी दोन पदे आलेली दिसतात। यातील "आद्य" म्हणजे आधीचा व "आत्मन" म्हणजे आत्मा। अध्यात्म या शब्दाची फोड आर्ध म्हणजे शरीर व त्यात वास असणा—याचे अयन करणे म्हणजे शिकणे ते अध्यात्म। अध्यात्म म्हणजे आपल्या आत्म्याचे ध्यान करणे माणसातलं माणूसपण जागं करणे, रोजच्या जीवनात होणा—या कष्टापासून मुक्ती करून आनंदमयी जीवनाचा आरंभ करणे हे अध्यात्माचे उदिष्ट आहे।

अध्यात्माविषयी जाणून घेताना आजही समाजातील लोकांची धर्म, कर्मकांडे व अध्यात्म यांमध्ये गफलत होते। आपल्या मनातील गोंधळ दूर करण्यासाठी आपण या संकल्पना अभ्यासपूर्वक समजावून घ्यायला हव्यात। विचारवंतांनी धर्माच्या अनेक भाषा सांगितलेल्या आहेत। तरीसुध्दा कमी शब्दात धर्म सांगावयाचा झाल्यास 'धारयति इति धर्म' म्हणजे जो धारण केला जातो तो धर्म इतकी सरळ व्याख्या आहे। रोजच्या जीवनामध्ये मनुष्यास आई, वडील, पती, पत्नी, मुलगा, भाऊ, शिक्षक इ. अशा अनेक भूमिका धारण कराव्या लागतात। तसेच त्या धारण केल्यानंतर त्याला त्याची कर्तव्ये पार पाडावी लागतात म्हणजेच त्याला त्या धर्माचे पालन करावे लागते। अध्यात्म हे धर्म व कर्मकांड यापेक्षा वेगळे आहे। मानवास भौतिक जगाशी संबंध जोपासण्यासाठी धर्म आणि कर्मकांड अत्यंत महत्वाचे आहे। मनुष्याच्या जीवनामध्ये नैतिकता फार महत्वाची आहे। अध्यात्माचा संबंध हा नौतिकतेशी आहे। नैतिकता ही माणसाला स्वाभिमाने जगण्यासाठी अत्यंत मौलिक आहे। माणसाच्या जीवनाला परिपूर्ण अर्थ प्राप्त होण्यासाठी अध्यात्म अत्यंत महत्वाचे आहे। शांत, संयमी, जीवन जगण्यासाठी तसेच सध्याच्या धावपळीच्या जगात मनस्वास्थ्य टिकविण्यासाठी अध्यात्मअत्यंत गरजेचे आहे। जसे आजारी माणसास डॉक्टरांची व औषधांची गरज असते। तसेच अस्वस्थ, बेचौन, सुन्न, बेभान मनाला आवर घालून शांत करण्यासाठी अध्यात्माची व संताच्या विचारांची खास गरज असते। अध्यात्मामुळे आपणास ईश्वराचे ज्ञान होते। मनुष्य बारकाईने विचार करण्यास प्रवृत्त होतो। अध्यात्मामुळे तो आत्मपरिक्षण करू शकतो। तसेच त्याला न उलगडलेला जीवनाचा अर्थ कळू शकतो त्यामुळे त्याला जीवन अजून रंगतदार वाटू लागते।

अध्यात्म हा ईश्वराशी केलेला आंतरिक संवाद आहे। बाह्य पध्दतीने ईश्वराची पूजा करण्याऐवजी आंतरिक मार्गाने प्रार्थना, ध्यान करणे आणि त्याच्या आस्तित्वाची जाणीव करून घेणे म्हणजे अध्यात्म आहे। अध्यात्मात व्यक्ती भौतिक इच्छांच्या पलीकडे जाऊन आंतरिक शोधाचा प्रयत्न करतो। अध्यात्म म्हणजे ईश्वर आपल्या आतमध्ये आहे याचा साक्षात्कार होणे, अध्यात्म व्यक्तीस ईश्वर हा मंदिर, चर्च, मशिदीमध्ये नाही हे सांगते। ईश्वर हा निर्माता आहे व तो सर्वव्यापी आहे। योगा आणि ध्यान धारणेविषयीच्या तंत्राच्या मदतीने आपले मन स्वच्छ करणे आणि आत्मपरिक्षण करण्याची कला आणि विज्ञान म्हणजे अध्यात्म होय। आपले हृद्य हे साधेसुधे नसून तेथे ईश्वराचे आधिष्ठान आहे हे आपणांस माहित होणे गरजेचे आहे। या अत्यंत महत्वाच्या सत्याची जाणीव झाल्यानंतर

आपले मन हे सर्वांसाठी प्रेम, आनंद, शांती, स्थैर्य आणि तृप्ती यांनी भरून जाते। आपल्या अस्तित्वाचा खरा अर्थ कळल्याने मनामध्ये प्रचंड ऊर्जा निर्माण होते, अन ही उर्जा आपल्यामधील सर्व निराशा दूर करते अन जिवन तेजोमय होते।

सध्याच्या परिस्थितीतप्रत्येकजण काहीना काही मिळविण्यासाठी प्रचंडधावा—धावा करतोय, कोणी पैसा, प्रतिष्ठा, नोकरी, गाडी—बंगाला, इ. मिळविण्यासाठी जीवाच्या आकांताने पळतोय। हे सर्व करत असताना प्रचंड तणावातून धगधगीतूनत्याला जावे लागतेय। त्यामुळे त्याची मनशांती केव्हा हरवलेली आहे हे त्याला कळेनासे झालेले आहे। प्रचंड इच्छा, लालसा हे त्याच्या दुःखाचे मूळ झालेले आहे। थोरतत्वज्ञ भगवान गौतम बुद्धांनी हजारो वर्षापूर्वी सांगितले आहे की मानवी मेंदूत सतत कुठले ना कुठले विचार सुरू असतात। त्या विचारांना शांत करण्यासाठी आपणास अध्यात्माचा उपयोग करून घ्यावा लागेल। व्यक्तीला लोभापासून, लालसेपासून दूर ठेवण्यासाठी त्यासाठी जो विचार त्याने करायला हवा त्याला अध्यात्मातूनच मिळू शकतो। परंतू अध्यात्माचा शोध ही साधी बाब नाही। अध्यात्म म्हणजे स्वतारूच्या दुःखाचे अध्ययन करून दुरूखाचे /निराशेचे कारण शोधणे होय। भारताला हजारो वर्षापासूनची अध्यात्माची परंपरा आहे। आपल्या ऋषी—मुनींनीयाचा पाया घालून ठेवला आहे। नंतर हेच अध्यात्म त्या त्या काळातील संतांनी अत्यंत सोप्या, सरळ, सहज भाषेत, सोदाहरणासह सांगतिले आहे। अध्यात्माकडे जाण्यासाठी व्यक्तीला भक्तीमार्गहा महत्वाचा आहे। अध्यात्मात आनंद आणि समाधानाला फार मोठे महत्व आहे। प्रत्येक व्यक्ती आनंद मिळविण्यासाठी व मिळविलेला आनंद टिकविण्यासाठी धडपडत असतो परंतू आनंद हा विकत मिळत नाही। तो प्रत्येकाच्या मानण्यावर असतो. अध्यात्मातील व्यक्तीचे मन साध्या साध्या विचारांनी थकत नाही। सर्व इच्छा, आकांक्षा, दुरूख, व्देष इ. नी व्यक्ती सहजपणे विसरून जाते. व्यक्ती स्वतारूचा शोध स्वतारूच घेत असतो, अन् तो घेताना त्याला खरा आनंद मिळतो तोच आत्मानंद होय। परंतू हा आत्मानंद मिळाविण्यासाठी त्याला अध्यात्मात रममाण व्हावे लागते। अध्यात्मात मन, चित्त शांत असण्यालाही विशेष महत्व आहे। मानसाचे मन शुध्द असायला हवे त्यासाठी सकारात्मक उर्जा हवी। सकारात्मक उर्जा निर्माण करण्यासाठी चांगला विचार मनात रूजविणे गरजेचे आहे। चूकीचा मार्ग सोडणे व चांगल्या मार्गाचा ध्यास घेणे हेच अध्यात्म आहे।

अध्यात्म आणि विज्ञान हे एकमेकांना पूरक आहेत। ते समजावून घेणे गरजेचे आहे। भगवान श्रीकृष्णांनी गीतेच्या सातव्या अध्यायात ज्ञान—विज्ञान, अज्ञान काय आहे ते सांगितले आहे। भौतिक ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान यामधील फरकही आपण समजावून घेतला पाहीजे।

लाखो लोक पायी चालत संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर यांचे अभंग म्हणत विठ्ठलाच्या भेटीसाठी आषाढी वारीतून जातात। त्यावेळी ते राग, लोभ, इर्षा, स्वार्थ सर्व विसरून गावात परमेश्वराच्या नामस्मरणात रममाण होतात। जीवनाचे बरेचसे रहस्य वारीमध्ये उलघडलेले असते. वारीमध्ये ज्ञान अन् विज्ञान यांचा संगम दिसून येतो। वारकरी नाचतगात वारीची वाटचाल करतात। वारीतून जाताना एक वेगळा अनुभव प्रत्येकाला येतो। वारकरी सर्व दुरूख विसरून आनंदानं नाचतात। परमेश्वराला भेटण्याची आस मनात असते। त्यांचा एकच स्वार्थ म्हणजे परमेश्वर भेट, अन् परमेश्वर यांना त्या रूपाने त्याला भेटून गेलेला कळत देखील नाही। वारीतील निरनिराळे पैलू खूप काही शिकवून जातात। पंरतू आपली तशी दृष्टी हवी। परंतू ही दृष्टी शिक्षणाने येत नाही। बरेच निरक्षर लोक अभंग म्हणतात। त्यांचे ते ज्ञान पाहिले की अचंबित व्हायला होते। येथेच आपला अंहकार गळून पडतो। संत

तुकारामांनी आपल्या अभंगातूनतात्वीक जीवन कसे जगायचे हे सांगीतले आहे।

आपल्या देशाला खूप मोठा असा अध्यामिक वारसा लाभलेला आहे। भारत देश अध्यात्मिक क्षेत्रात इतर देशांच्या तुलनेत सर्वात पुढे आहे। संपूर्ण मानवजातीच्या सुखासाठी, कल्याणासाठी, विकासासाठी गेली अनेक शतके ऋषी मुनींनी अध्यात्मिक मार्गदर्शन करून मानवाच्या असंख्य समस्यांस मार्गदर्शन केले आहे। संत ही भारताची खरीखुरी राष्ट्रीय संपत्ती आहे। आपले संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत एकनाथ, संत रामदास, संत कबीर, संत चोखामेळा इ. या सारख्या ज्ञानश्रेष्ठ संतांनी आपल्या अमृतवाणीने अध्यात्माचे महत्व सांगितले आहे। अध्यात्माच्या प्रांतात सर्व व्यक्तींची प्रतिष्ठा समान, या आध्यात्मिक समता सूत्राला आध्यात्मिक स्वातंत्र्याचा अर्थ होता। ख–याखुऱ्या श्रध्देच्या प्रकाशात प्रत्येक व्यक्तीला आपले जीवन सार्थकी लावता येते हे प्रत्येकाला समजावून सांगण्याचा प्रयत्न संतानी केला।

संत ज्ञानदेव म्हणजे या पार्थिव जगात जन्माला आलेले अपार्थिव चौतन्य! अत्यंत अल्प आयुष्य लाभले परंतू शेकडो पिढ्यांना पुरेल एवढा प्रकाश त्यांनी दिला। सर्वसामान्य लोकांना जीवनाचा अर्थ समजावून सांगावा व खऱ्या सुखाकडे नेणारा मार्ग त्यांना दाखवावा, या तळमळीतून ज्ञानेश्वरी हा ग्रंथ त्यांनी लिहिला। जीवन गढूळ करणारे दोष कोणते आणि व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन सुखी होण्यासाठी आवश्यक गुण कोणते तेही त्यांनी सुस्पष्ट केले। सामान्य माणसाला सुख कशात वाटते, तसेच खरे सुख कोणते, या सुखप्राप्तीचा उपाय कोणता, त्याचेही त्यांनी सुंदर स्पष्टीकरण केले आहे। संपूर्ण मानव जातीच्या कल्याणासाठी संत ज्ञानेश्वरांनी ‘पसायदान’ रूपी प्रार्थनेतून परमेश्वराला भक्तीभावाने आर्जव केल्याचे दिसून येते। पसायदानात व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवन सुखी करण्यासाठी आवश्यक सर्व मूलतत्वांचा विचार झाला आहे। पसायदानात ज्ञानदेवांचे प्रशांत मन प्रकटले आहे। ज्ञानदेवांचे मन धर्मशील आहे। म्हणूनच त्यांनी विश्वकल्याणाची अपेक्षा केली। ”हे विश्वची माझे घर” अशी स्थिरमती असणारे हे मन आहे। हे मनच अत्यंत महत्वाचे आहे जे भरकटता कामा नये व ज्यावेळी शांत होईलत्याचवेळी प्रचंड समाधान मानवास मिळेल। ज्ञानेश्वरांनी कल्पिलेले मन आपणांस प्राप्त करावयाचे असेल तर अध्यात्माचे अधिष्ठान हवे, मग तेथे निराशेला, मोहोला, भयाला जागा राहणार नाही।

अध्यात्मामध्ये मन एकाग्र आणि शांत करण्याचे सामर्थ्य आहे. त्याचा योग्य विचार फक्त आपण केला पाहिजे। संत कबीर आपल्या दोह्यांमध्ये चंचल मनाची स्थिती अत्यंत मार्मिकतेने मांडतात।

मन लोभी मन लालची, मन चंचल मन चोर।
मन के मता न चालिए, मन पल पल में काही आरे।।

यामध्ये संत कबीर म्हणतात माणसाचे मन मोह, माया, लालसा यामध्ये अडकते। अन याच बाबी दुरूखाला, त्रासाला कारणीभूत ठरतात अन् व्यक्ती स्वास्थ्य हरवून बसते। अशा या चंचल मनालाएकाग्र करण्याचा एकमेव मार्ग म्हणजे अध्यात्म। अन तोच खरा व शाश्वत मार्ग आहे। संत रामदासांनी सुध्दा अत्यंत सुदंर शब्दात मनाला समजाविले आहे। ते मनाला भक्तिमार्गाने जाण्यास सांगतात जेथे समाधान आहे तेथेच परमेश्वर आहे। जे निंदनीय आहे ते सोडून जे वंदनिय आहे ते स्वीकारण्यासाठी मनाला अध्यात्माची गरजाहे असे ते सांगतात।

मना सज्जना भक्ती पंथेची जावे,
तरी श्रीहरी पाविजे ते स्वभावे।
जनी निंद्य ते सर्व सोडून द्यावे

जनी वंदय ते सर्व भावे करावे।

आपण ज्यावेळी अध्यात्माच्या वातावरणात येतो त्यावेळी आपला आचार, विचार बदलतो सर्व वाईट गोष्टी, विचार आपण सोडून देतो व सुखी जीवनाच्या वाटेने चालायला लागतो।

संत एकनाथ देखील आपणास सकारात्मक विचार करण्यास शिकवतात। सकारात्मक विचारात खूप शक्ती असते असे ते सांगतात। आपण जसे विचार करतो, तसेच त्याचे फळ आपल्याला मिळते। जे कर्म आपण करतो ते करत असताना आपले मन जर जेव्हा परमेश्वर नामाशी एकरूप होते, त्यावेळेला आपल्या मनात कोणताही वाईट विचार येत नाही।

जगातील सर्व संत, सुफी, ऋषी, मुनी व 20 शतकातील सर्व शास्त्रज्ञ यांचे ध्येय एकच आहे आणि ते म्हणजे सर्व मानवजातीचे सुख, त्यांना शांती व समाधान मिळवून देण्यात मदत करणे.खरे म्हणजे संत व शास्त्रज्ञ दोघेही जीवनभर वेगवेगळ्या गोष्टींचा शोध घेत असतात। व समाजाचे प्रश्न सोडवत असतात। म्हणूनच, संत व शास्त्रज्ञ हे दोघेही फार महत्वाचे आहेत। संतांनी आपल्या परीने विज्ञान सांगितले आहे व त्यांच्या साहित्यात वैज्ञानिक दृष्टीकोन दिसून येतो।

21 व्या शतकाला सामोरे जाताना आपली अवस्था अत्यंत गोंधळाची आहे। आपण काय करतो, आहोत आणि काय करायला हवे याचा विवेक आपल्यापाशी उरलेलानाही। अश्या गोंधळलेल्या अवस्थेत व्यक्तीला मन स्वास्थ्य टिकविण्यासाठी अध्यात्माची नितांत गरज आहे।

संदर्भ :-

1. काळे कल्याण, डॉ. रा.शं. नगरकर (संपादक), संत साहित्य अभ्यासाच्या काही दिशा, स्नेहवर्धन प्रकाशन, प्रथम आवृत्ती, जून १९९२, पुणे।
2. खोले विलास, भक्तिशोभा, प्रतिमा प्रकाशन, प्रथमावृत्ती, मार्च २००७, पुणे।
3. खोले विलास, बाप ज्ञानेश्वर समाधिस्थ, प्रतिमा प्रकाशन १९९६, पुणे।
4. बावकर रमेश, परब्रम्ह ज्ञान विज्ञान संहिता, प्रकाशन बावकर, पुणे, प्रथमावृत्ती, माहे जून २००१.
5. दैनिक प्रहार, 'ज्ञानेश्वरीची वैज्ञानिकता' संपादक प्रियांका गायकवाड, दि. २६ जुलै, २०१६.

Email ID : ravanbaba52@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 36-40
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

देवराई संवर्धनातील वैज्ञानिक दृष्टिकोन

डॉ. श्रीमती भारती संतोष शिंदे
भूगोल विभाग, सहयोगी प्राध्यापक, श्रीपतराव चौगुले आर्ट्‌स – सायन्स कॉलेज, माळवाडी–कोतोली।

प्रस्तावना :–

'देवराई' म्हणजे देवाचे जंगल, देवाच्या नावाने राखलेली जमीन, त्या जमीनवरील जंगल त्या जमिनीवरील झाडे, दगड, माती, अगदी त्या ठिकाणच्या सर्व घटकांवर देवाचा वास असतो, अधिकार असतो। त्याच देवाच्या नावाने राखलेले जंगल सुरक्षित राहते। मनुष्यप्राणी इतर कोणाला नाही घाबरला पण देवाचे नाव घेतले तर मात्र तो किंचित का होईना आत मधून थोडासा घाबरतो। कारण त्याला वाटत असते की, आपण काही चुकीचे केल्यास त्याची शिक्षा आपणास देव देईल आणि याच भावनेतून देवाच्या नावाने राखलेले जंगल सुरक्षित राहते आणि त्यामुळे त्या जंगलातील वनस्पती, प्राणी, पक्षी देखील सुरक्षित राहतात। कोणीही देवाच्या भीतीपोटी कोणतेही झाड तोडत नाही, प्राण्या–पक्षांची शिकार करीत नाहीत। त्यामुळे त्या भागातील प्राणी वनस्पती सुरक्षित राहतात। जगभरात विविध ठिकाणी देवराई असलेल्या आपणास दिसून येतात। उदा. थायलंड, नायजेरिया, दक्षिण आफ्रिका, सैबेरिया, इंडोनेशिया, केनिया, ग्रीस, इजिप्त, पश्चिम आशिया इत्यादी देशांमध्ये देवराई मुबलक प्रमाणात आहेत।

अशा देवराया भारतात काश्मीर ते कन्याकुमारीपर्यंत १६,००० इतक्या पसरलेल्या आहेत. महाराष्ट्रात अंदाजे २,५०० देवराई आहेत। त्यामध्ये रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग या दोन जिल्ह्यांमध्ये सर्वात जास्त देवराई असलेल्या आपणास दिसून येतात। त्यातीलच कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये २५६ देवराई आहेत। देवराईला प्रत्येक राज्यांमध्ये विविध नावाने ओळखल्या जाते. आंध्रप्रदेश – पवित्र क्षेत्राळू, केरळ – सर्प काऊ, मध्यप्रदेश व बिहार– सरना, ओरिसामध्ये ठाकूर अम्मा काऊ तर आपल्या महाराष्ट्रात राई किंवा देवराई या नावाने ओळखले जातात। देवराईमुळे पर्यावरणाचे रक्षण होते। फार पूर्वीपासून आपल्या पूर्वजांच्या डोक्यातून आलेली ही एक सुंदर संकल्पना आहे मग त्यातील देववादी व बुद्धिवादी लोकांनी त्यांच्या कल्पनेला मूर्त स्वरूप दिले व देवराईची स्थापना केली। एक छोटासा शेंदूर लावलेला दगड व आजूबाजूला घनदाट जंगल अशी साधारणता देवराईची स्थिती असते। सध्या २०२२ मध्ये Amendment act नुसार सरकारने देवराई संरक्षणाचे कायद्यात तरतूद केली आहे।

उद्देश :–

१) देवराई संकल्पना समजून घेणे।
२) देवराई संवर्धनातील वैज्ञानिक दृष्टिकोन अभ्यासणे।
३) देवराई संवर्धनासाठी उपाय योजना सुचविणे।

माहिती संकलन :–

वरील सर्व माहिती प्राथमिक स्वरूपाची आहे, प्रत्यक्ष देवराईमध्ये जाऊन पहाणी केली। तेथील गुरव, पुजारी, गावातील माहितगार वयस्कर व्यक्तीकडून माहिती मिळवली तर काही प्रमाणात माहिती द्वितीय स्वरूपाची असून ती पुस्तक व इंटरनेटच्या माध्यमातून मिळवली आहे।

अभ्यास क्षेत्र :–

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी अभ्यास क्षेत्र कोल्हापूर जिल्हा निवड करण्यात आलेली आहे। महाराष्ट्राच्या दक्षिण भागात कोल्हापूर जिल्हा आहे। कोल्हापूर जिल्ह्याचे भौगोलिक स्थान १५ अंश ४३ मिनिटे ते १७ मिनिटे उत्तर अक्षांश व रेखावृत्तीय विस्तार ७३ अंश ४१ मिनिटे ते ७४ अंश ४२ मिनिटे पूर्व असा आहे। जिल्ह्यात प्रमुख ६ नद्या आहेत। जिल्ह्याचे एकूण क्षेत्रफळ ८०४७ चौ.कि.मी.आहे. कोल्हापूर जिल्ह्यात एकूण १२ तालुके असून त्यातील ७ तालुके डोंगराळ भागात म्हणजेच पश्चिम घाटात येतात। पश्चिम घाट हा जैवविविधतेने नटलेला आपणास दिसून येतो।

विवेचन :–

देवराई या संकल्पनेत फक्त देवपूजा ही बाब महत्त्वाची नव्हती तर आपणास अन्न, वस्त्र, निवारा, सूर्यप्रकाश, ऊर्जा, पाणी, हवा देणारा निसर्ग त्याच्याबद्दल कृतज्ञता व्यक्त करण्याचे साधन म्हणजे 'देवराई' मानवाने पर्यावरणाच्या रक्षणार्थ उचललेले एक प्रभावी पाऊल आणि त्याबरोबरच सांगड घातलेला भोळा देव भाववाद म्हणजे देवराई। देवराई संकल्पना साकारली गेली ती काही संशोधक तीच्या वैद्य व काही सुज्ञ नागरिकांच्या ज्यांना पर्यावरणाची हानी किती जलद गतीने होणार आहे हे फार पूर्वीच लक्षात आले। मग त्यात त्यातीलच काही दैववादी सुज्ञ बुद्धिवंत लोकांनी याच कल्पनेला मूर्त स्वरूप दिले। मग कोणत्या दृष्टिकोनातून देवराई संवर्धित केली जाते जाईल हा विचार करून देवराईची स्थापना करण्यात आली त्याचेच विवेचन आपण इथे करणार आहोत।

पर्यावरणीय/भौगोलिक दृष्टिकोन :–

भूतलावरील १७ देश जैवविविधतेने समृद्ध आहेत ७० प्रतिशत जैवविविधता उष्ण कटिबंधीय प्रदेशात सापडते। विकासाच्या नावाखाली सध्या विकसित देशाने संपूर्ण जैवविविधता नष्ट करीत आणली आहे। त्यामुळे तापमान वाढ, ओझोनचा क्षय अशा समस्यांना सामोरे जावे लागत आहे। पर्जन्याचे प्रमाण कमी होत आहे परंतु आपल्या पूर्वजांनी वैज्ञानिक दृष्टिकोन डोक्यात ठेवून देवराई ही संकल्पना पुढे आणली जेणेकरून पर्यावरणाचे जतन होईल। देवराई शक्यतो गावाला लागून, गावाच्या बाहेर, स्मशानभूमी जवळ असते काही वेळा उंच टेकडीवर असते त्यामुळे तेथे जाऊन कोणी तेथील कोणत्याही घटकांचे नुकसान करणार नाही म्हणजेच प्राणी, पक्षी, वनस्पती इत्यादी तसेच त्यामुळे तेथील हवामान, जलप्रणाली चांगली राहील अशाच परिसरात वातावरणात गारवा टिकून राहतो। जमिनीची धूप होत नाही। वनस्पती मोठ्या प्रमाणात वाढतात, त्याच वनस्पतींच्या वरती एक परिसंस्था विकसित होते त्यामुळे देवाच्या नावाने हे जंगल संवर्धित केले जाते।

जैवविविधता :– (प्राणी)

भारतात सर्वात मोठी जैवविविधतेने नटलेले दोन ठिकाणी आहेत म्हणजे हॉटस्पॉट आहेत ते म्हणजे हिमालय व पश्चिम घाट। याच पश्चिम घाटात या सर्व देवराईंचा समावेश होतो। प्रामुख्याने पश्चिम घाटात बहुसंख्या देवराई असलेल्या दिसून येतात। याच देवराईमध्ये विविध प्रकारचे प्राणी उदा. गवा रेडा, सांबर, भेकर,

ससा, बिबट्या अगदी हत्तीचा देखील समावेश असलेला दिसून येतो व पक्षी म्हणाल तर कोतवाल, दयाल, घुबड, खंड्या, गरुड, मलबारी, धनेश, होला असे अनेक प्रकारचे पक्षी अनेक प्रकारची फुलपाखरे सरी सर्पाच्या अनेक जाती चापडा नावाचा साप, केसाळ साप, ब्लूमेरोन नावाची फुलपाखरू अनेक उभयचर प्राणी अशा नाना विविध प्रकारचे प्राणी पक्षी आपणास याच देवराईमध्ये पहावयास मिळतात। त्यामुळेच तेथे एक जैवविविधता निर्माण होते। सध्या याच देवराईमधील बरेच वृक्ष नष्ट झाल्यामुळे तेथे असणाऱ्या प्राणी, पक्षी यांच्या परिसंस्थेचा प्रश्न निर्माण झालेला आहे। त्या कायमच्या नष्ट होत चाललेल्या आपणास दिसून येतात। त्यासाठी देवराई संवर्धित होणे आवश्यक आहे।

(वनस्पती)

पश्चिम घाट व हिमालयात जवळजवळ ६,००० प्रकारच्या वनस्पती आहेत। त्यातील ३,५०० प्रकारच्या वनस्पती फक्त हिमालयातच सापडतात। पश्चिम घाटात ४५०० सपुष्प वनस्पतींच्या प्रजाती आहेत। त्यापैकी ७२० प्रकारच्या वनस्पती फक्त पश्चिमघाटात सापडतात। ८,००० प्रकारच्या वनौषधी वनस्पती आहेत, त्यातील बहुसंख्य प्रकारच्या वनस्पती फक्त देवराईमध्येच सापडतात। उदा. नरक्या, इंडियन नोनी अशी फक्त दुर्मिळ झाडेच येथे सापडतात। नागकेशर नावाची वनस्पती देखील फक्त देवराईतच सापडते। कोल्हापूर जिल्ह्यातील ७ तालुके पश्चिम घाटात येतात। त्यामध्ये जास्तीत जास्त वनौषधी वनस्पती सापडतात। देवराईमध्ये वड, पिंपळ, हिरडा, बेहडा, सीता, अशोक, अमृता, करंज, गुळवेल, अनंतमूळ, अश्वगंधा, पिटगुळी, जांभूळ, कळलावी, शतावरी, उक्षी, मावशी, कुटकी इत्यादी अशा अनेक वनस्पती देवराईमध्ये सापडतात। आजही भारतात जवळजवळ ६० ते ७० टक्के लोक आयुर्वेदाचा वापर करतात आणि देवराईमधील वृक्षांचा वनस्पतींचा अनेक असाध्य रोगावर उपयोग होतो। त्यामुळे आजही अनेक लोक आयुर्वेदावर प्रचंड विश्वास ठेवतात। मात्र या देवराई संकल्पनेमुळे हाच आयुर्वेद आज टिकून आहे।

जल स्त्रोत :-

प्रत्येक देवराईत आपणास नैसर्गिक झरा हा आढळतोच। त्या झऱ्याचे पाणी त्या देवराईचे वैभव असते। ते पाणी सर्व गावात देवराईस वर्षभर पुरते। कोल्हापूर जिल्ह्यातील २५६ देवराईमधील १२५ देवराईमध्ये स्वतःचा असा बारमाही झरा आहे। तसेच बऱ्याच देवराई ह्या नदी, तलाव, विहिरीच्या बाजूस असलेल्या दिसून येतात। फक्त काही देवराईमध्ये पाण्याचे काही स्त्रोत नाहीत। बहुसंख्य देवराईमध्ये उंबर. कदंब ही झाडे असतात। त्या ठिकाणी नेहमीच भूमिगत पाण्याचे साठे सापडतात व ते साठे या झाडांच्या मुळेच वाढतात। देवराई प्रामुख्याने वड, उंबर, पिंपळ, चाफा, आंबा, हेळा, जांभूळ ही झाडे आढळतात। त्यामुळे तेथील जमिनीचे जतन तर केले जातेच तर आपोआप भूमिगत पाण्याचे झरेही वाढतात। बऱ्याच देवराईमध्ये प्राचीन विहिरी आहेत। तर काही लोकांनी झरे विहिरी बंद केलेल्या देखील दिसून येतात। पाण्याचे स्त्रोत दुर्लक्षित केले आहेत ते पुनर्जीवित करण्याची सध्या गरज असलेली आपणास दिसून येते।

ऐतिहासिक धार्मिक दृष्टिकोन :-

प्रत्येक देवराईला एक मर्म कथा/काल्पनिक कथा असते। ती कथा देवाची निगडित असते। त्यामुळे देवाच्या भीतीपोटी तेथील देवराई संवर्धित केली जाते। देवाच्या परवानगीशिवाय झाडाच्या पाना फुलाला देखील हात लावला जात नाही। कोणतेही शुभ कार्य केले जात नाही। देव कोपतो अशी प्रथा आहे। तसेच शेतात

कोणतेही पीक येऊ दे ते पहिले देवाला अर्पण केले जाते। आजरा येथिल कुरकंदेश्वर देवराईमध्ये तर जिवंत कोंबडे सोडण्याची प्रथा आहे। स्त्रियांना लहान मुलांना देवराईमध्ये प्रवेश दिला जात नाही। महिन्यातील काही दिवस देवराईमध्ये प्रवेशच बंद असतो असे असण्या मागचे कारण काय तर पूर्वजांनी देवराई संवर्धित रहावी यासाठी ह्या प्रथा केलेल्या आहेत/कुरकंदेश्वर देवराईमध्ये जिवंत कोंबडी सोडल्यामुळे तेथील जंगली प्राणी गावांमध्ये येत नाहीत हा उद्देश आहे। तर लहान मुले स्त्रिया देवराईत न सोडल्यामुळे तेथील लाकडांना तेथील झाडांना फुलांना कोणत्याही प्रकारची इजा होत नाहीत तोडली जात नाहीत हे त्यामागचे कारण आहे। तसेच कोल्हापूर जिल्ह्यातील 'आई' व 'बा' या नावाने संबोधले जाते जी दोन व्यक्ती आपल्या जीवनामध्ये अत्यंत महत्त्वाचे असतात। त्यामुळे बऱ्याच देवळांना वाघजाई, भूतोबा, शिदोबा, शीताई, रडवाई इ. अशी नावे असलेली आपणास दिसून येतात। प्रत्येक देवराईमध्ये अशा अनेक प्रथा असतात व त्या मागे एक विज्ञान दडलेले दिसून येते, त्यामागे देवराई संवर्धन हे एकच प्रयोजन आहे।

सामाजिक राजकीय दृष्टिकोन :–

कोल्हापूर जिल्ह्यातील बहुसंख्य देवराईमध्ये सण, उत्सव मोठ्या संख्येने साजरे केले जातात। प्रत्येक सणाच्या वेळी लोक आप–आपसातील वाद विसरून सामाजिक बांधिलकी जपून लोक एकत्र येतात। त्यामुळे तेथील तेथे सामाजिक बांधिलकी देखील जपण्याचे कार्य देवराई करत असे। राजकीय वादामुळे देवराई बऱ्याच वेळा संवर्धित होत नाही परंतु सण उत्सवामुळे गावातील लोकांमध्ये एकोपा सर्व धर्म समभावाची भावना तयार होते। देवराई म्हणजे नुसते जंगल नसून गावाचे सार्वभौम एकता व सहिष्णुता जपणारी स्वयंचलित संस्थाच असते। बऱ्याच ठिकाणी राजकीय वाद असले तरी देवराई संवर्धनासाठी काही लोकांनी काही महत्त्वाची पावले उचललेली आहेत। यातूनच त्यांचे देवराईवरील प्रेम दिसून येते।

आर्थिक दृष्टिकोन :–

आर्थिक दृष्टिकोनातून देखील देवराई महत्त्वाची आहे। पूर्वी देवाचे शेत असायचे, आजही आहे। प्रत्येक समाजाला जातीला जातीतील लोकांना देवाच्या नावाने शेत दिले जायचे। त्यातून निघणारे उत्पन्न आपण घ्यायचे व त्या बदल्यात देवाची देखभाल सेवा त्यांनी करायची। अशी त्यामागे प्रथा असायची कोल्हापूर जिल्ह्यातील काही देवराई ह्या देवस्थान समितीच्या ताब्यात आहेत। त्यातून देवाचे मूळ स्वरूप बदलून फक्त देवाला देवाच्या नावाने आर्थिक उत्पन्न मिळवणे हा एकच उद्देश राहिला आहे। त्यातून फक्त देव शिल्लक राहिले। राई जंगल मात्र नष्ट झाले उदाहरणात जोतिबा, काळभैरव, टेंबलाई अशा देवराईतील मिळणाऱ्या उत्पन्नामुळे मात्र गोरगरिबांचा उदरनिर्वाह होतो हेही नाकारता येत नाही।

निष्कर्ष व उपाययोजना :–

विकासाच्या नावाने देवराई नष्ट होत आहेत। आरसीसी बांधकामे, धरणे त्यातून देव पुन्हा स्थापन झाला। त्याला स्थान मिळाले परंतु झाडांचे काय हा प्रश्न उभा राहतोच? सध्या मोनोप्लांटेशन केले जात आहे। एकाच प्रकारची झाडे लावल्यामुळे जैवविविधता नष्ट होण्याच्या मार्गावर आहे। काही विदेशी झाडांचे प्रमाण उदा. वेडी बाभूळ, काँग्रेस गवत, रानमोडी, घाणेरीचे प्रमाण वाढले आहे। देवराईतील दुर्मिळ वनस्पतींच्या बिया संकलन करून पुन्हा रोपे तयार करणे आवश्यक आहे। नवीन वाण तयार केले तरच पुन्हा त्या वनस्पती संवर्धित होतील। देवराईतील रस्सा मंडळावर कडक कारवाई करणे, वनवे पेटवणे यांच्यावर कडक कारवाई करणे गरजेचे आहे,

लहानपणापासूनच लहान मुलांना इतर सर्वांना ही संकल्पना सांगावी, जेणेकरून देवराई संवर्धित होईल। तिचे जतन केले तरच जैवविविधता शाबूत राहील। नवीन पिढीला ही संकल्पना समजावून सांगणे, देवराईतील सर्व सण, उत्सव पर्यावरण पूरक करावेत। तरुण पिढीचा सहभाग वाढवावा। औषधी वनस्पती त्यांचे फायदे शेतकऱ्यांना सांगून त्यांच्यासाठी कृतीशील उपक्रम राबवावेत। भविष्यात देवराई संवर्धनासाठी स्थानिक लोक, ग्रामपंचायत, शासकीय विभाग, स्वयंसेवी संस्था, तरुण व महिला मंडळ, शिक्षण संस्था यांचाही सहभाग वाढविणे आवश्यक आहे। तरच ही आपल्या पूर्वजांनी ठेवलेली देणगी पुढे शाबूत ठेवायची असेल तर देवाच्या नावानेच शाबूत राहू शकते। तिचा उपयोग मात्र आपण आपल्यासाठी करतो। त्यातूनच आपल्या पूर्वजांचा उदात्त पर्यावरण विषयक असलेला हेतू येथे दिसून येतो। लोक आपल्या पूर्वजांनी ठेवलेला ठेवा विसरून त्यामागील वैज्ञानिक दृष्टिकोन विसरून नको असणाऱ्या गोष्टीकडे वळलेले आपणास दिसून येतात। म्हणूनच आपण अशाच आपल्या पुढील पिढीसाठी नवीन देवराई आपण स्थापन करू शकतो. त्यासाठी आपण आपला सक्रीय सहभाग नोंदविला पाहिजे।

संदर्भ :–

फोन.नंबर ९९६०१९८००६
मेल–bharatishinde79@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 41-45
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय प्राचीन आयुर्वेदिक उपचार पद्धती आणि विज्ञान

श्री. दत्तात्रय हरी नाईक

सहा. प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग, श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अँड सायन्स कॉलेज, माळवाडी– कोतोली।

प्रस्तावना:

रोग आणि आजार या गोष्टी सजीवांच्या जन्माबरोबरच निर्माण झाल्या. आजार आणि इजा झाल्यास त्यापासून संरक्षण करणे हे आलेच. बुद्धिमान मानवाने आरोग्याचे महत्त्व जाणून त्यासाठी कालसपेक्ष असे उपाय शोधले. त्यातून आयुर्वेद, होमिओपॅथी, युनानी आणि ॲलिओपॅथी या उपचार पद्धतींचा जन्म झाला. आयुर्वेद भारतीय संस्कृतीतील प्राचीन औषधी विज्ञान आणि चिकित्साविद्येची प्रणाली आहे. त्रिदोष हे वात, पित्त, आणि कफ या तीन प्रमुख शक्तियां आहेत ज्यांना संतुलित राखण्याची आवड आहे. आयुर्वेदातील औषधी, ज्योग, आहार, आणि विचारशीलता असे विविध उपायांमार्फत व्यक्ती स्वस्थ राहू शकतो.आयुर्वेदाचे अनुष्ठान आणि तत्त्वे प्राचीन भारतीय साहित्य, वेद, उपनिषद, संहिता यामध्ये पाहायला आणि अभ्यासायला मिळतात. आयुर्वेदात संशोधन करण्याचे अनेक मार्ग आहेत. हे या संशोधन पेपरच्या माध्यमातून मांडण्यात येत आहे.

उद्दिष्टे :

१) प्राचीन आयुर्वेदाचा इतिहास जाणून घेणे.

२) पारंपरिक आयुर्वेद औषध उपचार पद्धती समजून घेणे.

३) आधुनिक विज्ञान युगातील आयुर्वेदाचे महत्त्व समजून घेणे.

गृहीतके:

१) आयुर्वेद औषध उपचार पद्धती ही फार प्राचीन पद्धत आहे.

२) आयुर्वेदाच्या वापराने जुने (दीर्घकालीन) रोग पूर्णपणे बरे होण्यास मदत होते.

३) मानसिक व शारीरिक आरोग्य संवर्धन करण्यामध्ये आयुर्वेद उपयोगी पडते.

आयुर्वेद– व्याख्या:

"आयुर्वेद ही भारतातील एक पारंपारिक औषध प्रणाली आहे जी शरीर, मन आणि आत्मा यांच्या निरोगीपणाला प्रोत्साहन देते."

अर्थ–

संस्कृतमध्ये 'आयुर्वेद' या शब्दाचा सोपा अर्थ 'निरोगी दीर्घायुष्याचं ज्ञान'होय. आयुर्वेद हा शब्द आयुर् (जीवन) आणि वेद (विज्ञान किंवा ज्ञान) या संस्कृत शब्दांपासून बनला आहे. अशाप्रकारे, आयुर्वेद जीवनाच्या ज्ञानाचे भाषांतर करतो. डॉ. बालाजी तांबे यांच्या मतानुसार, असे म्हंटले जाते की "आयुर्वेद हा केवळ एक औषधाचा प्रकार नाही तर तो जीवनाचा मार्ग आणि निरोगी शरीर, मन आणि आत्मा यांचा मार्ग आहे".

आयुर्वेदाचा इतिहास:

आयुर्वेदातील काही वनस्पती औषधांचे संदर्भ हे मुख्य चार वेदांपैकी एक असलेल्या अथर्ववेद या इसवी सनपूर्व सुमारे १२०० मध्ये रचल्या गेलेल्या वेदामधून घेतले आहेत. अथर्ववेदात आयुर्वेद शास्त्राचे अधिक वर्णन आहे. म्हणून आयुर्वेदाला अथर्ववेदाचा उपवेद मानतात आणि त्यामुळे आयुर्वेद हा अथर्ववेदाचा एक घटक समजला जातो. १८८० साली दक्षिण भारतात भेलमुन्नी एका झाडाच्या पानावर संस्कृत भाषेत असलेल्या पण तेलगु लिपीत लिहिलेल्या 'भेल संहितेचा' पुरावा सापडलाआयुर्वेद हे प्राचीन शास्त्र असूनही आजच्या युगातही या शास्त्राच्या सिद्धान्तांवर आधारित चिकित्सा उपयुक्त व यशस्वी ठरते.

अष्टविध निदान पद्धती:

आयुर्वेदिक औषधामध्ये, अष्ट निदान पद्धत हा एक महत्त्वाचा भाग आहे ज्याद्वारे रोगाचे निदान केले जाते. ही आठ प्रमुख ओळखणारी लक्षणे आहेत जी रुग्णाच्या शरीराच्या, मनाच्या आणि आत्म्याच्या स्थितीचे मूल्यांकन करण्यात मदत करतात. १. नाडी २. मूत्र ३. मल ४. जिव्हा ५ . शब्द ६. स्पर्श ७. रस. ८. मनोबल

दोष: परिणाम आणि फायदे

सर्व शारीरिक प्रक्रिया तीन दोषांच्या संतुलनातून नियंत्रित केल्या जातात, असे आयुर्वेद मानते. आकाश आणि वायू मिळून वात बनतो, असे मानले जाते. वाताचे मुख्य काम 'माणसाची मानसिक आणि शारीरिक अवस्था नीट ठेवणं' हे असतं. उदाहरणार्थ उत्साह एकाग्रता, श्वसनक्रिया, दमछाक होणं, वगैरे सगळ्या गोष्टी वाताशी संबंधित असतात. जास्त वातामुळे वात प्रकृतीच्या लोकांना मल अवरोध, सांधेदुखी, अस्वस्थपणा काळजी, निद्रानाश, बद्धकोष्ठता, इत्यादी आजार होण्याची शक्यता असते. वात रक्त पुरवठा, श्वासोच्छ्वास, मनातील विचार इत्यादी

गोष्टींवर नियंत्रण ठेवतो. वातामुळे मज्जासंस्था, श्रवण, वाणी कार्यान्वित होतात. वातामुळे उत्साह आणि सर्जनक्षमता वाढतात. वाताचा पित्त आणि कफ यांच्यावरही परिणाम होतो. बऱ्याचवेळा वातदोष हे रोगाचे पहिले कारण असते. वाताला वायू असेही म्हणतात. वात प्रकृतीची माणसं सडसडीत अंगकाठीची, कमी वजनाची, सतत हालचाल करणारी, भरभर बोलणारी असतात.

जल आणि पृथ्वी मिळून कफ बनतो असं वाग्भटाने 'अष्टांग संग्रहात' म्हंटले आहे. कफ आपतत्त्वापासून बनतो असे मानले जाते. कफामुळे शरीरातील मूलद्रव्यांना मूर्त स्वरूप मिळते, प्रतिकारशक्ती वाढते. कफ सांध्यामधील स्नेहक(lubricant), जखम भरणे, ताकद, संतुलन, स्मरणशक्ती, हृदय व फुप्फुसे यांना नियंत्रित करतो. कफामुळे आपुलकी, प्रेम, शांतता, हाव, मत्सर हे गुण मिळतात. अतिकफामुळे स्थूलता, सुस्ती आणि प्रत्यूर्जता ((ॲलर्जी) allergy) इत्यादी त्रास होतात.कप प्रवृत्तीची माणसं जाडजूड, हळूहळू जेवणारी, आळशी, मंदपणे विचार करणारी आणि मस्तपैकी शांत झोप काढणारे असतात.

शरीरात तयार होणारी उष्णता, पचनक्रिया आणि अशा सगळ्या प्रक्रियांचा एकत्रित नीट काम चालवणं हे पित्ताचे काम असतं. पित्ताची निर्मिती आप आणि अग्नि या तत्त्वांपासून होते असे मानले जाते. पित्त शरीरातील उष्णता, चयापचय, मन आणि शरीर यांचे रूपांतरण, अन्नपचन, संवेदना, सदसदविवेकबुद्धी इत्यादी गोष्टींवर नियंत्रण ठेवते. संतुलित पित्ताने नेतृत्व गुण विकसित होतात.पित्त प्रकृतीच्या लोकांना जळजळ, रोगसंसर्ग,शरीराच्या आत व्रण पडणं हे विकार जडण्याचं प्रमाण जास्त असते.अति पित्तामुळे राग, आलोचना, व्रण, पुरळ, इत्यादी त्रास होतात.

आयुर्वेदिक परंपरेनुसार शारीरिक आणि मानसिक दोषांमधील असंतुलन हा रोगाचा प्रमुख एटिओलॉजिकल घटक आहे. एक आयुर्वेदिक मत असे आहे की, दोष जेव्हा एकमेकांशी समान असतात तेव्हा ते संतुलित असतात, तर दुसरे मत असे आहे की, प्रत्येक व्यक्तीमध्ये दोषांचे एक अद्वितीय संयोजन असते. जे या व्यक्तीचा स्वभाव आणि वैशिष्ट्ये दाखवतात. या दोन्ही मतांचा विचार करता असे म्हणता येईल की, प्रत्येक व्यक्तीने दोष वाढवण्यासाठी किंवा कमी करण्यासाठी आणि त्यांची नैसर्गिक स्थिती राखण्यासाठी त्यांचे वर्तन किंवा वातावरण सुधारले पाहिजे. आयुर्वेदाच्या अभ्यासकांनी एखाद्या व्यक्तीचा शारीरिक आणि मानसिक दोष निश्चित केला पाहिजे कारण, विशिष्ट प्रकृती एखाद्याला विशिष्ट रोग होण्याची शक्यता असते असे म्हटले जाते. उदाहरणार्थ, बारीक, लाजाळू, उत्साही, उच्चारलेले ॲडमचे सफरचंद, आणि गूढ ज्ञानाचा आनंद घेणारी व्यक्ती वात प्रकृती आहे. तर त्यामुळे पोट फुगणे, तोतरेपणा आणि संधिवात यांसारख्या परिस्थितींना अधिक संवेदनाक्षम आहे.

आयुर्वेदिक औषध उपचार पद्धती:

काढा:

ज्या पदार्थांचा काढा करावयाचा असेल ते घटकपदार्थ घेतात व त्यावर पदार्थांच्या वजनाच्या १६ पट पाणी घालून ते पाणी एक अष्टमांश (१/८) राहीपर्यंत मंदाग्नीवर उकळवतात, हे पाणी गाळून घेतल्यावर बनलेल्या द्रवपदार्थाला त्या घटकपदार्थातील मुख्य घटकाचा काढा म्हणतात. वेगवेगळ्या आजारांच्या स्वरूपावरून वेगवेगळ्या प्रकारचा काढा बनवला जातो. उदाहरणार्थ: सर्दी आल्यास, खोकला आल्यास आपण घरगुती उपचार म्हणून आले, तुळशीपत्रे व इतर औषधी वनस्पतींचा वापर करून काढा बनवतो व आजारी व्यक्तीला तो दिला जातो.

विविध प्रकारच्या आयुर्वेदिक तेलांचा वापर :

यामध्ये काही वनस्पती मोहरी, एरंड, तीळ इत्यादी तेलात मिसळून त्याला उकळून मग त्याचा वापर मालिश करणे, हळुवार चोळणे याकरिता करतात.

घृत:

घृत म्हणजे दुधापासून बनवलेले तूप होय.यात गाईच्या तुपात किंवा दुसऱ्या कोणत्याही तुपात रोगाच्या स्वरूपात आवश्यक ती औषधी मिसळतात. हे मिश्रण उकळून एकजीव केल्यावर त्याचा वापर करतात. विशेषता साध्या गायीच्या तुपाचा अनेक उपचारांमध्ये वापर केला जातो. कारण, यामध्ये औषधी गुण मोठ्या प्रमाणात आढळून आलेले आहेत. गाईचे तूप पौष्टिक असल्याने लहान मुलांपासून ते वयोवृद्धांपर्यंत गायीच्या तुपाचा आहारात वापर केला जातो. तसेच, विविध औषधांमध्ये गायीच्या तुपाचा वापर केला जातो.

इतर उपचार पद्धती:

प्राणायाम, योगासने, सूर्यनमस्कार, सात्विक आहार, विहार या सारख्या उपचार पद्धती आयुर्वेद दुर्मिळ रोग बरे करण्यासाठी वापरतात.

आयुर्वेदाचे महत्त्व:

आयुर्वेदिक औषधांमुळे कोणत्याही प्रकारची दुष्परिणामांची भीती नसल्यामुळे सौंदर्यप्रसाधनांमध्ये सध्या आयुर्वेद आपली महत्त्वाची भूमिका बजावताना दिसत आहे.आयुर्वेदाच्या उपचार पद्धती दोन सहस्राब्दींहून अधिक काळ बदलल्या आहेत आणि विकसित झाल्या आहेत. उपचारांमध्ये हर्बल औषधे, विशेष आहार, ध्यान, योग, मसाज, रेचक, एनीमा आणि वैद्यकीय तेले यांचा समावेश होतो. आयुर्वेदिक तयारी सामान्यत: जटिल हर्बल संयुगे, खनिजे आणि धातूच्या पदार्थांवर आधारित असतात (कदाचित सुरुवातीच्या भारतीय किमया किंवा रसशास्त्राच्या

प्रभावाखाली). प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथांमध्ये शस्त्रक्रियेची तंत्रे देखील शिकवली जातात ज्यात नासिकाशोथ आणि मूत्रपिंड दगड काढणे यांचा समावेश होतो. तसेच नैसर्गिक इच्छा दडपून टाकणे हे अस्वास्थ्यकर मानले असून ते आजारपणाला कारणीभूत असल्याचे आढळून आले आहे. उदाहरणार्थ: शिंकणे दडपल्याने खांदेदुखी होण्याची शक्यता असते. तरी, लोकांना समतोल मर्यादेत राहण्याची आणि निसर्गाच्या आग्रहाचे पालन करताना मोजमाप करण्याची देखील खबरदारी दिली जाते. उदाहरणार्थ: अन्न सेवन, झोप आणि लैंगिक संभोग यांवर भर दिला जातो. आयुर्वेदांच्या प्राचीन ग्रंथांत केवळ आहाराचाच विचार केला नाही तर,विविध ऋतूंमध्ये, कालानुसार हवापाण्यात बदल होत असताना आपण कसे राहावे, कसे राहू नये, याचा साधकबाधक विचार केलेला आहे. तर ग्रंथ आणि पोथ्यांमध्ये अगदी सर्वसामान्य विकारांपासून दुर्मीळ विकारांवर मात्रा आहेत. आयुर्वेदाच्या दुर्मीळ पोथ्यांचे संग्रहण अनेकांनी केले आहे, नाशिकचे दिनेश वैद्य हे त्यांपैकी एक आहेत. आयुर्वेदिक उपचारांचा आणखी एक भाग असे सांगतो की द्रव वाहून नेणाऱ्या वाहिन्या (स्रोटा) आहेत आणि तेल आणि स्वीडना (फॉमेंटेशन) वापरून मसाज उपचाराने वाहिन्या उघडल्या जाऊ शकतात.

निष्कर्ष:

१) प्राचीन आयुर्वेदाचा इतिहास जाणून घेण्यात आला.

२) प्राचीन आयुर्वेदिक औषध उपचार पद्धती यांची माहिती मिळण्यास मदत झाली.

३) विज्ञान संकल्पना समजून घेण्यात आली.

४) आधुनिक जगात आयुर्वेदाचे महत्त्व समजून घेण्यात आले.

संदर्भ:

–पटेल माणेकलाल म., १०० वर्ष निरोगी रहा, नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड

–डॉ.गाला ध.रा., डॉ.गाला धीरेन, डॉ. गाला संजय, निरोगी राहण्याची गुरुकिल्ली, नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड.

–डॉ.गाला धीरेन, ॲक्युप्रेशर, नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड.

–गोडबोले अच्युत, कहाते अतुल, देशपांडे अमृता (जाने.२०२३) “वैद्यकायन” मधुश्री पब्लिकेशन.

– https://www.lokmat.com/nagpur/everyone-needs-accept-science-ayurveda/

– https://www.hindawi.com/journals/ecam/2013/376327/

मो. नं. ७७७६६४६३६३

naikdattatray007@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 46-53

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत में सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं व रीति रिवाजों का वैज्ञानिक आधार

Dr. Deepak Kumar, Ph.D, Post Doctorate (Political Science)

Dr Amit Kumar, Research Associate (History)

K.M.Govt.Girls (P.G.) College, Badalpur, Gautambuddha Nagar, Uttar Pradesh

शोध-सार :-

समाज में रीति–रिवाजों, परंपराओं एवं मान्यताओं का विशेष महत्व है। अलग–अलग क्षेत्रों में इनका भिन्न स्वरूप देखने को मिलता है। भारत में प्राचीन काल से ही प्रातः काल से सांय काल तक कई अनुष्ठानों एवं परंपराओं का पालन किया जाता रहा है। इनमें से कुछ का उल्लेख वैदिक गंथों में भी मिलता है। भारतीय समाज में इन रीति–रिवाजों को अंधविश्वास की संज्ञा देकर धार्मिक रूप से माना जाता रहा है। वर्तमान पीढ़ी प्रत्येक क्रियाकलाप की पीछे वैज्ञानिक तथ्यों का खोज रही है। अब समय आ गया है कि हम यह साबित करें कि हमारी पूर्वज हमसे अधिक दूरदर्शी एवं बुद्धिमान थे। धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं है वरन् इनके मध्य गहरा संबंध है। विज्ञान एवं प्रौघोगिकी के आगमन के कारण ही हम इन रीति–रिवाजों एवं परंपराओं के पीछे वैज्ञानिक कारणों का खोज पाए हैं। जीवन के प्रांरभ से ही हमें इन रीति–रिवाजों एवं परंपराओं के अंतर्गत जीना सिखाया जाता है। ये रीति–रिवाज एवं अनुष्ठान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते रहते है। प्रस्तुत शोध पत्र इन रीति–रिवाजों एवं परंपराओं का संभावित वैज्ञानिक कारणों के साथ व्याख्यायित करने का एक छोटा सा प्रयास है।

प्रस्तावना :-

भारत में बड़ी संख्या में लोग रीति–रिवाजों में विश्वास रखतें हैं। अनेक लोगों का मानना है कि ये परांपराएँ केवल अंधविश्वास हैं जिनका कोई ठोस वैज्ञानिक आधार नहीं है। किंतु सत्य तो यही है कि इनमें से अनेक रीति–रिवाजों के पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं। गहन अध्ययन के उपरांत वैज्ञानिकों ने पाया कि हमारी रीति–रिवाज तर्क एवं विज्ञान के परिपूर्ण हैं। इन अनुष्ठानों एवं परंपराओं का मुख्य उद्देश्य शरीर, मन, एवं आत्मा के मध्य समग्र संतुलन स्थापित करना है। यह जानकर अत्यधिक आश्चर्य होता है कि हमारे पूर्वज कितने दूरदर्शी एवं ज्ञानवान थे। वे अनेक क्रियाकलापों के शारीरिक एवं मानसिक लाभों के विषय में उस समय इतना अधिक

जानते थे जिनसे हम अभी भी अनजान है।

भारतीय रीति–रिवाजों एवं परंपराओं की विरासत इतनी समृद्ध है कि समूचा विश्व इनकी ओर आकर्षित होता है। ये रीति–रिवाज एवं परंपराएँ जिनका कोई लेखा–जोखा नहीं मिलता भारतीय जनमानस में प्राचीन काल से ही रचे–बसे हुए हैं। यह परंपराएँ किसी कार्य विशेष को करने का ढंग है जिनका समाज के द्वारा लम्बे समय से अनुसरण किया जाता रहा है। इनके अतिरिक्त अनुष्ठान कुछ ऐसे क्रियाकलाप हैं जो निर्धारित नियमों के अनुसार किए जाते हैं। यह सब आज हमारी धरोहर बन चुके हैं। कुछ समय पहले तक इन्हें अंधविश्वास माना जाता था किन्तु आज विज्ञान के आगमन के साथ इन परंपराओं के पीछे निहित वैज्ञानिक कारणों को जानकर फिर से विचार करने की नितांत आवश्यकता है।

1. घंटी बजाने और शंख बजाने का महत्व :–

हिंदू धर्म के अंतर्गत पूजा प्रारंभ करने से पूर्व घंटी बजाने का प्रचलन है। माना जाता है कि ऐसा करने से मंदिर में स्थापित मूर्तियों में चेतना जागृत हो जाती है। घंटी की ध्वनि मनमोहक और ध्यान आकर्षित करने वाली होती है। भक्त आध्यात्मिक शांति का अनुभव करता है। मंदिर के द्वार पर घंटी लगाने का न केवल धार्मिक लाभ है वरन् विज्ञान भी इसे वातावरण के लिए लाभदायक मानता है। घंटी बजाने से वातावरण में उत्पन्न होने वाला कंपन, इसके क्षेत्र में आने वाले रोगाणु, विषाणु एवं हानिकारक सूक्ष्म जीवों का नष्ट कर देता है। इससे वातावरण शुद्ध होता है एवं नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है। नियमित रूप से शंख बजाने से वाणी की हकलाहट को दूर किया जा सकता है। यह हृदयघात को दूर करने में भी सहायक है। यह श्वसन प्रणाली को सुचारु रूप से चलाता है तथा शंख में रखे जल का उपयोग करने से त्वचा रोग नष्ट हो जाते है एवं पाचन क्रिया सुदृढ़ होती है।

2. रीति–रिवाज और शिष्टाचार :–

रीति–रिवाज और शिष्टाचार किसी समाज में नैतिकता और सामाजिक आचरण की अभिव्यक्ति हैं। भारतीय संस्कृति अपनी समृद्ध संस्कृति के कारण ही आज पूरे विश्व में छाई हुई है। पश्चिमी देश भारतीय परंपराओं को ग्रहण कर रहे हैं, जिसमें कई प्रकार के अभिवादन और घर में प्रवेश करने से पूर्व हाथ–पाँव धोना, घूंट–घूंट जल पीना (मुँह से संपर्क न करना) जैसे शिष्टाचार सम्मिलित हैं। उनमें से प्रत्येक को सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ स्वीकार किया गया था, जिसके पीछे वैज्ञानिक तर्क भी थे।

नमस्कार :–

भारतीय परंपरा में जब लोग मिलते हैं तो सीने के सामने हथेलियाँ जोड़कर एक–दूसरे का अभिवादन करते हैं। यह भाव सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान और एकता की भावना का भी प्रतीक है। इस रूप को "नमस्कार" कहा जाता है जो माता–पिता, बड़ों और बड़े भाई–बहनों को दिया जाता है। 'नमः' शब्द की उत्पत्ति 'नम' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'झुकना'। जब हम दूसरों के सामने झुकते हैं तो हम अपने अहंकार पर विजय पा लेते हैं। इस भाव के पीछे का विज्ञान यह है कि जब हम अपनी दोनों हथेलियाँ जोड़ते हैं तो यह

सुनिश्चित करता है कि हमारा दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक संपर्क न हो, जिससे हमें संपर्क या स्पर्श के माध्यम से विषाणु एवं रोगाणु के संचरण से बचने में मदद मिलती है।

साष्टांग नमस्कार :–

इस रूप में व्यक्ति पेट के बल लेट जाता है और शरीर के आठ अंग भूमि को स्पर्श करते हैं। निम्नलिखित श्लोक अभिवादन को परिभाषित करता है "उरासा शिरासा चौव मनसा वपुषा गिराद्य, पद्भ्यं जानुभ्यं कराभ्यां नमस्कारकारो स्तंग उच्यते" अर्थात यह व्यायाम छाती, सिर, मन, शरीर, वाणी, पाँव, घुटनों और हाथों से किया जाता है। जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो यह रक्त परिसंचरण और शारीरिक उत्साह को बढ़ावा देता है। इसलिए यह एक उपयोगी व्यायाम माना जाता है।

चरण स्पर्श (पैरों को छूना) :–

चरण स्पर्श का अर्थ है किसी के "पैर छूना"। अथर्ववेद इस प्रकार के अभिवादन को बहुत महत्व देता है। यहाँ एक व्यक्ति बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता है। चरण स्पर्श का वैज्ञानिक आधार यह है कि मानव शरीर कंपन छोड़ता है और निकट आने वाले व्यक्ति से उसे प्राप्त भी करता है। इससे शरीर में ऊर्जा के प्रवाह में सहायता मिलती है।

शिष्टाचार :–

वैश्विक महामारियाँ हमें संस्कृति और परंपरा की याद दिलाती है जो पश्चिमी संस्कृति के कारण पीछे छूट गई है। भारतीय मूल्य प्राचीन काल से कुछ अनुष्ठानों का पालन करते हैं जिनका अपना महत्व है। भोजन ग्रहण करने से पूर्व, घर में प्रवेश करने से पूर्व हाथ–पाँव धोने की प्रवृत्ति को जितनी सांस्कृतिक मान्यता माना जाता है, उससे कहीं अधिक इसके पीछे विज्ञान है। मानव शरीर ऊर्जा का भण्डार है। जब हम सो रहे होते हैं तो यह भाग ऊर्जा उत्पन्न करना बंद कर देता है इसलिए जब हम जागते हैं तो कुछ समय के लिए हम निष्क्रिय रहते हैं। यही कारण है कि हम अपना मुख धोते हैं और स्नान करते हैं जिससे हम इन चक्रों को ऊर्जा प्रदान कर सकें। जब हम एक स्थान से दूसरे स्थानों तक यात्रा करते हैं अनेक स्थानों पर विचरण करते कई कीटाणु हमारे हाथों और पैरों के द्वारा हमारे भारीर को रोग युक्त कर देते हैं। आयुर्वेद के अनुसार ऐसा माना जाता है कि पैर गंदे होने पर आँखों से संबंधित रोग हो जाते हैं। इसलिए भारतीय अपने जूते घर के बाहर छोड़ने और प्रवेश करने से पूर्व अपने हाथ और पैर धोने की परंपरा का पालन करते हैं जिससे घर में नकारात्मक ऊर्जा दूर रहे। जब हम अपने हाथ–पैर ठंडे जल से धोते हैं तो इससे हमारे शरीर को भाांति मिलती है और मानसिक उत्तेजना से मुक्ति मिलती है। अधिकांश भारतीय किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पीये गए गिलास या बोतल से जल गृहण नहीं करते हैं, इसका कारण यह सुनिश्चित करना है कि उनमें रोग फैलाने वाले कीटाणु न फैलें।

संस्कार :–

भारतीय संस्कृति में संस्कार कहे जाने वाले अनुष्ठानों का विशेष महत्व है। यह वैदिक परंपरा का अभिन्न अंग है। प्रत्येक संस्कार का एक निश्चित महत्व एवं उद्देश्य होता है। यह व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक चरण

में आगे बढ़ने में सहायता करता है। इन सभी संस्कारों में षोडश संस्कार (सोलह संस्कार) का प्रमुख स्थान है। इन षोडश संस्कारों में केवल धार्मिक प्रवृत्ति के उपदेश या शक्तिशाली मंत्र सम्मिलित नहीं हैं वरन् इन अनुष्ठानों में मानव चेतना के सूक्ष्म स्तर को प्रभावित करने वाली प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं। इसका मानव मनोविज्ञान के साथ अंतःस्रावी तंत्र और आनुवंशिक लक्षणों पर भी प्रभाव पड़ता है।

ये संस्कार सोलह प्रकार के होते हैं। और 'व्यासमृति' में वर्णित हैं।

'गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतो जातकर्म च।।
नामक्रिया निष्क्रमोन्नप्राशनन वपं क्रिया।।
कर्ण बेधो व्रतदेशो वेदारंभ क्रिया विधिः।।
केशांतः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्नि परिग्रहः।।
त्रेताग्निसां ग्रहश्चेति संस्कारः षोडशः स्मृतः।। (व्यासस्मृति 1/13–15)

गर्भाधान एक संस्कार है जो गर्भाधान को पवित्र करता है। इसके द्वारा भ्रूण स्वस्थ रूप से जन्म लेता है। चिकित्सा अनुसंधान ने पुष्टि की है कि शारीरिक अंतरंगता के समय दंपति की मानसिक स्थिति का असर शिशु पर पड़ता है। पुत्र प्राप्ति के लिए गर्भावस्था के तीसरे मास में पुंसवन संस्कार किया जाता है। यह संस्कार माँ को गर्भस्थ शिशु के प्रति भावनात्मक शक्ति के साथ उसके दायित्व के प्रति तैयार करने के लिए आयोजित किया जाता है। सीमन्तोन्नयन गर्भावस्था के छठे या आठवें मास में किया जाने वाला एक संस्कार है जो माँ और उसके गर्भ में पल रहे शिशु की भलाई के लिए होता है।

जातकर्म नवजात शिशु की शुद्धि के लिए जन्म के समय किया जाने वाला एक संस्कार है। इस संस्कार में घी में भिगोई हुई रुई शिशु के सिर पर रखी जाती है। इस अनुष्ठान के पीछे वैज्ञानिक कारण यह है कि यह शिशु के सिर से गर्मी को निकलने से रोकता है। इसमे शिशु को शहद और घी दिया जाता है जो शिशु को पोषण एवं प्रतिरक्षा दोनों प्रदान करता है।

नामकरण शिशु के जन्म के 11वें दिन किया जाने वाला संस्कार है। यह संस्कार 11 दिनों के बाद किया जाता है क्योंकि प्रारंभिक नवजात अवधि बीत जाती है और शिशु को संक्रमण का भय कम होता है। माता और शिशु को औषधीय जल से स्नान कराने से स्वच्छता बनाए रखने और संक्रमण को दूर रखने में सहायता मिलती है।

निष्क्रमण शिशु के जन्म के बाद तीसरे या चौथे महीने में किया जाने वाला संस्कार है। इसका अर्थ है 'घर से बाहर निकलना'। इस समय तक नवजात शिशु धूप, हवा और वातावरण की ध्वनियों का अभ्यस्त हो जाता है। शिशु में बाहरी वातावरण के प्रति पर्याप्त प्रतिरोधक क्षमता और सहनशीलता विकसित हो जाती है।

अन्नप्रासन छठे मास में आयोजित होने वाला एक संस्कार है जिसमें बच्चे को पहली बार ठोस आहार खिलाया जाता है। परंपरागत रूप से चावल, घी, दही और मधु का मिश्रण दिया जाता है। इसका अर्थ यह भी है कि शिशु ठीक प्रकार से भोजन ग्रहण करना सीखता है। इस समय शिशु के दांत निकलने प्रारंभ हो जाते हैं

और शिशु का पाचन तंत्र ठोस आहार ग्रहण करने के योग्य हो जाता है।

चूड़ाकरण संस्कार के अंतर्गत शिशु के सभी बाल मुंडवा दिए जाते हैं। बाल एक सुरक्षात्मक परत के रूप में काम करते हैं। इस संस्कार के द्वारा शिशु की खोपड़ी और बालों की वृद्धि की जाँच की जाती है और यह कपाल दोष प्रकट करने में भी सहायता करता है।

कर्णबेधन, जिसका अर्थ है वह क्रिया जिसमें कर्ण छेद किया जाता है। सोलह संस्कारों में इसका प्रमुख महत्व है। यह शिशु के जन्म के उपरांत पहले से तीसरे वर्ष के बीच किया जाता है। हमारे कान के बाहरी हिस्से में कई एक्यूपंक्चर और एक्यूप्रेशर बिंदु होते हैं जो अस्थमा के इलाज के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। महिलाओं द्वारा सोने की बालियाँ पहनने से मासिक धर्म नियमित होता है और हिस्टीरिया जैसी समस्याओं से राहत मिलती है। विवाह संस्कार में विवाह से संबंधित सभी संस्कार महत्वपूर्ण हैं। यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है जिसमें व्यक्ति जीवन के दूसरे चरण में प्रवेश करता है। विवाह समारोह में मेहंदी, सिन्दूर लगाने से लेकर पाँव में बिछुए पहनने एवं हाथ की अंगुली में अंगूठी पहनने तक कई विस्तृत प्रथाएँ होती हैं। ये सभी न केवल कन्या के वैवाहिक जीवन में प्रवेश के प्रतीक हैं वरन् इसके पीछे भी वैज्ञानिक तर्क हैं।

3. मेहंदी/हिना लगाने का महत्व :-

विवाह के समय वधु अपने हाथों और पैरों पर मेहंदी या मेंहदी केवल सजावट के लिए नहीं लगाती है वरन् इन सभी प्रथाओं के पीछे विज्ञान छिपा हुआ है। विवाह के समय वधु के हाथों और पैरों पर मेंहदी लगाई जाती है। यह प्रथा हमारे देश में वर्षों से चली आ रही है। मेहंदी/हिना जो न केवल हाथ–पैरों को सुंदर रंग देती है वरन् इसमें कई औषधीय गुण भी हैं। विवाह के समय वधु अधिक तनाव में रहती है और थकावट से गुजरती है। अपने शीतलन प्रभाव के कारण मेहंदी तंत्रिका तंत्र को शीतल बनाए रखने और आराम देने में सहायता करती है। यह सिरदर्द और तनाव को रोकने में भी मदद करती है और हाथों एवं नाखूनों को वायरल और फंगल संक्रमण से बचाता है।

4. तिलक/कुमकुम/सिंदूर का महत्व :-

भारतीय परंपरा के एक भाग के रूप में, पुरुष और महिला दोनों अपने माथे पर तिलक या बिंदिया लगाते हैं। इसे माथे के केंद्र पर लगाया जाता है। दोनों भौंहों के बीच भौंह केंद्र में एक स्थान जो पूरे शरीर का नियंत्रण बिंदु है, मानव शरीर में एक प्रमुख तंत्रिका बिंदु है। परंपरागत रूप से चंदन, लाल कुमकुम/तिलक, मिट्टी या यज्ञ की राख का उपयोग किया जाता है। माना जाता है कि भौंहों के बीच का यह विशेष स्थान मानव शरीर में ऊर्जा बनाए रखता है और इसे ठंडा करके गर्मी के अवशोषण के विभिन्न स्तरों को नियंत्रित करता है। यह सिरदर्द को दूर करने और हार्मोन को संतुलित करने में भी सहायता करता है और मुख की मांसपेशियों में रक्त की आपूर्ति को सुविधाजनक बनाता है कुमकुम और हल्दी का मिश्रण अच्छा कीटाणुनाशक होता है।

भारत में विवाह के समय वर द्वारा वधु के बालों के बीच में सिन्दूर (हल्दी, चूना और पारे का मिश्रण) लगाने की परंपरा है। माथे पर बालों के बीच में सिंदूर लगाया जाता है। वेदों में इसका महत्व बताया गया है,

जो हमारे स्वास्थ्य से संबंधित है। वास्तव में सिंदूर सीधे पिट्यूटरी ग्रंथि तक लगाया जाता है क्योंकि पुरुषों की तुलना में महिलाओं में यह भाग अधिक संवेदनशील होता है। लगाया हुआ सिंदूर औषधि का काम करता है। पारे की अधिकता के कारण मुखमंडल पर झुर्रियाँ नहीं पड़तीं। साथ ही साथ इससे महिला के शरीर में स्थित विद्युतीय उत्तेजना भी नियंत्रित रहती है। यह शरीर को ठंडक प्रदान करता है जिससे राहत का अनुभव होता है।

5. आभूषणों/गहनों का महत्व :–

भारतीय महिलाएँ वैदिक परंपरा में विवाहित महिलाएँ विवाह के प्रतीक के रूप में आभूषण पहनती है। आभूषणों के माध्यम से वे स्वयं को सजाने का कार्य भी करती हैं। इन आभूषणों का वैज्ञानिक महत्व भी है।

कंगन :– चूड़ी या कंगन एक गोलाकार आभूषण है जिसे महिलाएं हाथों में पहनती हैं। अधिकांश बीमारियों का निदान कलाई की धड़कन से होता है। जब महिलाएँ चूड़ियाँ पहनती हैं तो चूड़ियों के घर्षण से रक्त संचार का स्तर बढ़ जाता है। इसके अलावा, बाहय त्वचा से गुजरने वाली ऊर्जा एक गोलाकार चूड़ी के माध्यम से शरीर में वापस भेज दी जाती है। चूँकि हमारी कलाई में एक तंत्रिका होती है जो हमें दिल की धड़कन की दर बताती है। ये चूड़ियाँ शरीर के भीतर रक्त परिसंचरण को बढ़ाती हैं और काँच की चूड़ियों से उत्पन्न ध्वनि नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखती है।

मंगलसूत्र :– 'मंगलसूत्र' एक विवाहित महिला की पहचान है, जिसे महिला जीवन भर विवाहिता के प्रतीक के रूप में पहनती है। लेकिन इसके पीछे का विज्ञान यह है कि मंगलसूत्र हृदय के ऊपर पहना जाता है, जिसका खोखला भाग शरीर की ओर होता है ताकि सकारात्मकता बनी रहे और इससे महिला के शरीर में रक्त संचार को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है।

नथनी :– भारतीय परंपराओं और संस्कृति के अनुसार, नथनी को विवाह का प्रतीक माना जाता है, और यह पारंपरिक वधु के आभूषणों का एक अभिन्न अंग है। इसे नाक के बायीं ओर पहना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार नाक छिदवाने का संबंध महिला के प्रजनन अंगों से होता है। ऐसा माना जाता है कि जिस महिला की नाक में बायीं ओर छेद किया जाता है उसे प्रसव एवं मासिक धर्म की अवधि में कम पीड़ा होती है। यह सांस को भी नियंत्रित करता है और नाक संबंधी समस्याओं से भी बचाता है और खांसी–जुकाम से राहत दिलाता है।

पाजेब या पायल :– पायल भारतीय महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला पसंदीदा आभूषण है जो चाँदी से बना होता है। यह पैरों के तलवों की सूजन को रोकता है और रक्त परिसंचरण को नियंत्रित करके एड़ी की सूजन को ठीक करता है। यह मासिक धर्म की समस्याओं, बांझपन, हार्मोनल असंतुलन और प्रसूति की असामान्य स्थितियों को नियमित करने में भी मदद करता है, यौन इच्छा को बनाए रखने में सहायता करता है। चाँदी ऊर्जा का संवाहक होने के कारण, पृथ्वी और मानव शरीर के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करता है और पैरों के माध्यम से नकारात्मक ऊर्जा को पृथ्वी पर भेजकर महिला को अधिक ऊर्जावान बनाता है।

बिछिया या बिछुए :– बिछिया या बिछुओं को दोनों पैरों की दूसरी उंगली में पहना जाता है। इसे धारण करने से क्या–क्या स्वास्थ्यवर्धक गुण प्राप्त होते हैं, इसका विवरण वेदों और आयुर्वेद ग्रंथों में मिलता है। इसमें

बिछिया पहनने से स्त्री रोग संबंधी समस्याओं के उपचार का विवरण मिलता है, जिससे पैरों की उंगलियों की मालिश होती है। पैर की दूसरी उंगली महिला के गर्भाशय से जुड़ती है और यह गर्भाशय को मजबूत एवं हृदय से जोडे रखती है जिससे रक्त प्रवाह नियमित रहता है और मासिक धर्म चक्र नियंत्रित रहता है। एक्यूप्रेशर सर्वोत्तम माध्यम है।

6. खानपान आदतों का महत्व :–

भोजन प्रत्येक जीवित जीव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। शारीरिक आवश्यकता होने के साथ–साथ भावनात्मक स्तर पर भी इसका महत्व है। भोजन भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारतीय खान–पान की विशेषता किसी भी अन्य देश से अलग है। प्रत्येक राज्य में भिन्न–भिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं और उन्हें परोसने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता है। भारतीय भोजन में प्रयोग होने वाले सभी मसाले अच्छे स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये न केवल भोजन में सुगंध लाते हैं वरन् एंटीबायोटिक और एंटीसेप्टिक के रूप में भी काम करते हैं। हल्दी का नियमित उपयोग कोलेस्ट्रॉल, रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक है और हृदय रोगों को कम करता है। काली मिर्च एक डिटॉक्सिंग एजेंट है जो शरीर को अच्छी प्रतिरक्षा प्रणाली बनाने में सहायता करती है। इलायची, लौंग माउथ फ्रेशनर का काम करते हैं और भोजन को पचाने में सहायता करते हैं। करी पत्ता शर्करा के स्तर को बनाए रखने और लीवर के समुचित कार्य को बनाए रखने में मदद करता है।

हमारे भोजन में घी का उपयोग पेट में पाए जाने वाले अतिरिक्त एसिड को संतुलित करने में सहायता करता है और यह विटामिन ए और ई का समृद्ध स्रोत और एक अच्छा एंटीऑक्सीडेंट है। धरती पर सुखासन में बैठकर भोजन करने के अनेक लाभ हैं। जब हम इस आसन में धरती पर बैठते हैं तो यह मानसिक शांति के साथ–साथ हमारी पाचन शक्ति को बढ़ावा देता है और साथ ही रीढ़ की हड्डी की समस्या से भी छुटकारा दिलाता है।

भारतीय संस्कृति में पान, जिसे संस्कृत भाषा में ताम्बूल या पर्ण भी कहा जाता है, की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका उपयोग सभी शुभ अवसरों पर सभी पारंपरिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इसमें कई औषधीय गुण होते हैं इसलिए आयुर्वेदिक चिकित्सक इसका प्रयोग बड़ी मात्रा में करते हैं। इसकी प्रकृति बहुत उत्तम होती है इसलिए यह मुँह को ठंडा रखने में सहायक है। इसके अलावा पान के पत्ते का उपयोग खांसी को रोकने, यौन शक्ति को बढ़ाने, मधुमेह को कम करने, नसों की दुर्बलता, अपच आदि को रोकने के लिए किया जाता है।

निष्कर्ष :–

हमारे समाज में व्याप्त सभी परंपराएँ, रीति–रिवाज एवं अनुष्ठान केवल मान्यताएँ ही नहीं हैं वरन् किसी भी व्यक्ति में सकारात्मक ऊर्जा भरने वाले क्रियाकलाप भी हैं। इनका वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर इनमें हमारी आस्था और विश्वास ओर अधिक सुदृढ होते है। हमारे द्वारा दिन–प्रतिदिन अपनाए जाने वाले रीति–रिवाजों एवं परंपराओं का मुख्य उद्देश्य हमारे जीवन को सकारात्मकता प्रदान करके ऊर्जा एवं सांसारिक बंधनों का प्रवाह बनाए रखना है। ये रीति–रिवाज ही हमें जीने के वास्तविक ढंग का आभास कराते हैं। सफल एवं शांतिपूर्ण जीवन

के लिए परंपराओं की इस विरासत को भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करना हमारा कर्तव्य है। हमें अपने रीति–रिवाजों को विज्ञान के साथ जोड़कर पुनः आत्मसात् करने की आव यकता है। हमारी संस्कृति की जड़ें बेहद समृद्ध हैं। हमें अपनी परंपराओं को समस्त संसार में प्रसारित करना है। किन्तु ये सब तभी संभव हो सकेगा जब हम इन परंपराओं एवं रीति–रिवाजों का सही–सही वैज्ञानिक विश्लेषण करके प्रसारित करने में सफल होंगे।

संदर्भ सूची :-

1. रॉस. ओ. नोबर्ट, (2003), "कल्चर एंड कागनीशन इम्पलीकेशन फार थ्योरी एंड मैथेड", सागा प्रकाशन।
2. स्वामिनी प्रमाणदा, (2012) पूर्ण विद्या – हिंदू धर्म का एक दृष्टिकोण, पूर्ण विद्या प्रकाशन, चेन्नई।
3. शेट्टी, चेतना और मोइत्रयी साहा, इंडियन वूमैन टेडिशन : ज्वैलस एंड रिचुअल–ए रिव्यु, विशेष अंक–जुलाई, 2015
4. डॉ. खेदकर प्रियंका, वर्तमान युग में बचपन के संस्कारों की वैज्ञानिक पद्धति पर समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आयुर्वेदिक एंड हर्बल मेडिसिन, 8:1, 2018।
5. पी.वी. हेमलता, भारत में महिला परंपराओं के पीछे वैज्ञानिक कारण–एक संक्षिप्त समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज सोशल साइंसेज एंड एजुकेशन (आईजेएचएसएसई) खंड 4, अंक 4, अप्रैल 2017।
6. सिन्हा, एस. (2014)। मध्यकालीन बंगाली साहित्य में आभूषण– समकालीन समाज की एक छवि" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 3(4)।
7. पी. प्रेम, हिंदू संस्कार, अनुष्ठान, रीति–रिवाज और परंपराएं, पुस्तक महल, दिल्ली।
8. http://www.indiatimes.com/culture/who-we-are/15-scientific-reasons-behind-popular-hindu-traditions-228328.html
9. http://www.speakingtree.in/blog/science-behind-hindu-ornaments
10. https://www.speakingtree.in/blog/significance-benefits-of-shank-conch-shell-blowing
11. https://sites.google.com/a/gsbi.org/gvc1510/

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 54-57

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिकता का समन्वय

दीपिका पंत पांडे

सहायक प्राध्यापक, आम्रपाली ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, हल्द्वानी।

परिचय :–

समाज के संरचनात्मक तथा धार्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रभाव एक रोचक और महत्वपूर्ण विषय है। धार्मिक मान्यताएं और रीति–रिवाज समाज की संरचना, संगठन और व्यवहार को प्रभावित करती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथ्यों और प्रयोगों के आधार पर अपनाया जाता है। समाज में धार्मिक मान्यताएं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दो प्रमुख और महत्वपूर्ण पहलु हैं, जो समाज के संगठन में विभिन्न रूपों में प्रभाव डालते हैं। यह दोनों ही पहलु समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक, और नैतिक परिदृश्य को आकार देते हैं। यह लेख इस परिपेक्ष्य में समाज में धार्मिक मान्यताओं और रीतिरिवाजों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रभाव पर एक शोध प्रस्तुत करेगा।

मुख्य शब्द :– रीति, रिवाज, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रथा, परंपरा, समुदाय, संस्कृति, धार्मिक, अनुष्ठान, आचरण, परिवार।

धार्मिक मान्यताओं का प्रभाव :–

धार्मिक मान्यताओं ने समाज के रूपांतरण और संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न धार्मिक समुदायों की मान्यताएं और रीति–रिवाज समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं, जैसे कि विवाह, जन्म, मृत्यु, और सामाजिक समारोह। धार्मिक अनुष्ठानों का समर्थन समाज को एकता और सहयोग की भावना प्रदान करता है, लेकिन वे कई बार वैज्ञानिक तथ्यों के साथ असंगत होते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रभाव :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथ्यों और प्रयोगों के आधार पर समाज के प्रति अभिव्यक्त करता है। उत्तर प्रदेश में, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार स्वास्थ्य, शिक्षा, और तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हालांकि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अनुपालन धार्मिक मान्यताओं के साथ संघर्ष कर सकता है, जिससे समाज में विवाद और असमानता उत्पन्न हो सकता है।

सामाजिक समर्थन और विवाद :–

धार्मिक मान्यताएं समाज में समर्थन और एकता को प्रोत्साहित कर सकती हैं, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण कई बार विवाद और असमंजस्यता को उत्पन्न कर सकता है।

प्रौद्योगिकी और आधुनिकीकरण :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज को प्रौद्योगिकी और आधुनिकीकरण की दिशा में प्रेरित करता है, जबकि धार्मिक मान्यताएं कई बार पुराने और पारंपरिक तरीकों को प्राथमिकता देती हैं।

विश्वास और आत्मविश्वास :–

धार्मिक मान्यताएं विश्वास और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर विश्वास को बढ़ावा देता है।

सामाजिक सुधार और परिवर्तन :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामाजिक सुधार और परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है, जबकि धार्मिक मान्यताएं धार्मिक विश्वासों और परंपरागत विचारों को प्राथमिकता देती हैं।

मानवीय अधिकारों का समर्थन :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानवीय अधिकारों के समर्थन में मदद करता है, जबकि कई धार्मिक मान्यताएं व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा सकती हैं।

इतिहास का अध्ययन :–

पिछले धर्मीय और सामाजिक परंपराओं का अध्ययन करें और उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझें।

सामाजिक अनुसंधान :–

विभिन्न समुदायों और समाजों में धार्मिक मान्यताओं के रूप और उनके प्रभाव का अध्ययन करें।

वैज्ञानिक अध्ययन :–

धार्मिक और रीति–रिवाजों के साथ संबंधित वैज्ञानिक अध्ययनों को पढ़ें और उनका विश्लेषण करें।

तकनीकी उन्नति का प्रोत्साहन :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज को तकनीकी उन्नति और विज्ञान के अद्भुत क्षेत्रों की ओर प्रेरित करता है।

सामाजिक विविधता का समर्थन :–

वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामाजिक विविधता और विचारों का समर्थन करता है, जो कई बार धार्मिक मान्यताओं के साथ विरोधाभासी होता है।

सामाजिक आंकड़े और अध्ययन :–

समाज में धार्मिक और रीति–रिवाजों के प्रभाव को मापने और विश्लेषण करने के लिए अनुसंधान करें।

संवाद और चर्चा :–

संगठनों, समाजों और धार्मिक समुदायों के साथ चर्चा और संवाद को प्रोत्साहित करें ताकि विभिन्न

दृष्टिकोणों को समझने में मदद मिले।

संविधानिक विधाओं का अध्ययन :-

संविधानिक विधाओं और कानूनों का अध्ययन करें जो धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रभाव को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

प्रगति और विकास की संरचना :-

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज को प्रगति और विकास की दिशा में प्रेरित करता है, जो धार्मिक मान्यताओं के साथ विवादित हो सकता है।

जानकारी की ऊर्जा :-

धार्मिक मान्यताएं अक्सर ज्ञान और शिक्षा को प्रभावित करती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अधिक विज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को प्रोत्साहित करता है।

सामाजिक संरचना :-

धार्मिक मान्यताएं सामाजिक संरचना और व्यवस्था को प्रभावित कर सकती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञान की अधिकतम संभावनाओं पर आधारित होता है।

सामूहिक सोच :-

धार्मिक मान्यताएं अक्सर सामूहिक सोच और विचारधारा को प्रभावित करती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अनुसंधान और विचार के माध्यम से नई विचारधारा को प्रोत्साहित करता है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग :-

धार्मिक मान्यताएं अक्सर परंपरागत तकनीक और उपयोग को प्रभावित कर सकती हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण नवीनतम प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देता है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता :-

वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है, जबकि धार्मिक मान्यताएं कई बार संगठित तंत्रों और नियमों पर आधारित होती हैं।

संगतियाँ और विसंगतियाँ :-

समर्थन और विरोध : कुछ समाजों में धार्मिक मान्यताएं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन किया जाता है, जबकि कुछ में इनका विरोध होता है।

संघर्ष और समन्वय : समाज में धार्मिक मान्यताएं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संघर्ष और समन्वय की आवश्यकता होती है, ताकि समाज का संगठन समृद्ध हो सके।

धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संघर्ष का मुख्य कारण अलगाव हो सकता है।

समाज में संघर्ष को समन्वय में बदलने के लिए उपयुक्त दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :–

समाज में धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रभाव अद्वितीय होता है और विभिन्न सामाजिक पहलुओं को प्रभावित करता है। यह दोनों ही पहलु समाज में संतुलन और विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इन्हें संघर्ष और समन्वय की आवश्यकता होती है। समाज में धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संग्रह, संघर्ष और समन्वय की आवश्यकता होती है। ये दोनों ही पहलु समाज के संरचनात्मक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज में धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, और संघर्ष और समन्वय के माध्यम से उनका संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

REFERENCES :

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Relationship_between_religion_and_science
2. https://www.nationalacademies.org/evolution/science-and-religion
3. https://www.pewresearch.org/science/2015/10/22/perception-of-conflict-between-science-and-religion/
4. https://plato.stanford.edu/entries/religion-science/

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 58-61
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आध्यात्मिकता और मानव स्वस्थ्य

डॉ. ई नागरत्ना
सहायक प्राध्यापिका, सरकारी प्रथम स्तरीय कालेज, अलनावर, धारवाड़।

प्रस्तावना :–

हमारे शरीर में संपूर्ण सृष्टि समाई हुई है। इसमें मानव समाज की तरह भरा पूरा देहपुरुषों का समाज है। वे अद्वैत व अनासक्ति के साथ सभी मानवीय दायित्वों का निर्वहन करते हैं। स्थूल पुरुषों और देहपुरुषों में पूर्ण समानता है। केवल एक ही भिन्नता यह है कि स्थूल पुरुष द्वैतयुक्त व आसक्ति ग्रस्त है, जबकि देहपुरुष अद्वैतपूर्ण व अनासक्त है। देहपुरुष को सूक्ष्म पुरुष भी कह सकते हैं, क्योंकि वे नंगी आँखों से नहीं दिखाई देते। वे शरीर की कोशिकाओं व विभिन्न जैवरसायनों के रूप में हैं, जो शरीर को सुचारू रूप से चला रहे हैं। उनके स्मरण से आदमी में अद्वैत व अनासक्ति का भाव विकसित होता है।

अध्यात्म का अर्थ :–

अध्यात्म का अर्थ है अपनी आत्मा का अनुसंधान। यानी अपनी आत्मा को जानना, पहचानना, संवारना, संभालना और उन्नत बनाना। अब आपके मन में प्रश्न उठेगा की आत्मा पर इतनी मेहनत क्यों करें? तो जिस तरह शरीर का पोषण करके स्वास्थ्य का लाभ लेते हैं ,वैसे ही आत्मा को पहचान कर उसका पोषण करके ही आपके जीवन में आत्मिक शांति आएगी। आपने देखा होगा कई व्यक्ति अत्यंत धनवान होते हैं, लेकिन उनके जीवन में शांति नहीं होती। उसका कारण यही है कि संसारिकता और भौतिकता के पीछे भागते–भागते वह अपनी आत्मा को तवज्जो देना भूल जाते हैं। जिससे जीवन अशांत रहता है। अध्यात्म के द्वारा आत्मा का पोषण कर के ही, व्यक्ति को स्थाई शांति और आंतरिक आनंद प्राप्त हो सकता है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य :–

आध्यात्मिक स्वास्थ्य स्वयं का एक पहलू है जो व्यक्ति से कहीं बड़ी किसी चीज़ से जुड़ता है। आध्यात्मिकता का उपयोग करके, एक व्यक्ति शांति और आशा पाने के लिए किसी बड़ी चीज़ से जुड़ सकता है, जैसे कि देवता, ऊर्जा, या उससे परे। आध्यात्मिक स्वास्थ्य मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह तरीका है जिससे व्यक्ति दुनिया में अपनी जगह, अपने उद्देश्य और अस्तित्व के कारण को समझता है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य लोगों को तनाव से निपटने, मनोवैज्ञानिक कल्याण बनाए रखने और बदले में स्वस्थ शारीरिक प्रभाव पैदा करने में मदद कर सकता है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य के कुछ उदाहरण :–

आध्यात्मिक स्वास्थ्य को लागू करने के कई तरीके हैं, जैसे प्रार्थना, मंत्र और ध्यान। अन्य तरीकों में योग

और ताई ची जैसे शारीरिक अभ्यास, जर्नलिंग, जादू–टोना जैसे अनुष्ठान, उत्सव और पवित्र दिनों का सम्मान शामिल हैं।

आध्यात्मिक रूप से कैसे स्वस्थ रहना :–

आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रहने के कई तरीके हैं, लेकिन समग्र उद्देश्य स्थिरता है। सुबह/रात की प्रार्थना, दैनिक मंत्र, जर्नलिंग, ध्यान और शारीरिक गतिविधि (योग, ताई ची, आदि) जैसे दैनिक अनुष्ठान बनाना एक शानदार शुरुआत है। आप स्वयंसेवा, छुट्टियों/पवित्र दिनों का सम्मान करना, प्रकृति में समय बिताना, कक्षाएं लेना और एक समुदाय ढूंढना जैसी गतिविधियों को भी शामिल कर सकते हैं।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य क्या है?

स्वास्थ्य एक ऐसी चीज़ है जिसे अपनाने के लिए सबसे अधिक प्रयास किया जाता है। कुछ खाद्य पदार्थ खाने से लेकर व्यायाम करने के साथ–साथ भावनात्मक और मानसिक आत्म–देखभाल तक, स्वास्थ्य शब्द में यह सब शामिल है। हालाँकि, आध्यात्मिक स्वास्थ्य नाम की भी कोई चीज़ है जो उतनी ही महत्वपूर्ण है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य क्या है और यह किसी व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य से कैसे जुड़ता है?

आध्यात्मिक स्वास्थ्य वह सब कुछ है जो किसी व्यक्ति की आत्मा के स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित है। जबकि आत्मा को कई धर्मों और संस्कृतियों में कई तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है, यह अवधारणा किसी व्यक्ति के भीतर की किसी चीज़ से उत्पन्न होती है जिसे शरीर में नहीं देखा जा सकता है और यह दिमाग का हिस्सा नहीं है। बहुत से लोग मानते हैं कि आत्मा और आध्यात्मिक स्वास्थ्य स्वयं के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक पहलुओं को संतुलित करने की कुंजी हैं, उस आत्मा को किसी देवता, ब्रह्मांड की ऊर्जा, या किसी अन्य ग्रह/क्षेत्र/आयाम से जोड़कर, नाम दिया जा सकता है।

कुछ आध्यात्मिक स्वास्थ्य की परिभाषा एक व्यापक स्ट्रोक है, और इसमें बड़ी विश्वास प्रणालियाँ शामिल हैं जो आम तौर पर किसी व्यक्ति की स्वयं और/या ब्रह्मांड की धार्मिक या आध्यात्मिक समझ से जुड़ती हैं। हालाँकि, यह परिभाषा आध्यात्मिक कल्याण परिभाषा से जुड़ती है, जिसमें व्यक्ति की मान्यताएँ, और आत्मा से संबंध उन्हें शारीरिक और भावनात्मक कल्याण बनाए रखने में मदद करते हैं।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य और इसकी विभिन्न परिभाषाओं की शुरुआत के बाद से पाँच दशक बीत चुके हैं। आध्यात्मिक स्वास्थ्य स्वयं (व्यक्तिगत आयाम), दूसरों (सामाजिक आयाम), प्रकृति (पर्यावरण) और भगवान (पारलौकिक आयाम) के साथ संबंध के बारे में है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य की बुनियादी विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

उचित जीवन शैली, दूसरों के साथ संबंध।

धरती पर हमारे जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

सदियों से रहस्यवादियों, सन्तों, ऋषियों और योगीजनों ने हमें एक ही उत्तर दिया है– ईश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध विकसित करना–वह जो हमारे रोजमर्रा जीवन को ब्रह्म के साथ जोड़ता है। आध्यात्मिक जीवन उस सम्बंध को विकसित करने का व्यवहारिक तरीका है। श्री श्री परमहंस योगानन्दजी की कहना है कि;

"आत्मसाक्षात्कार– शरीर, मन एवं आत्मा में– यह जानना है कि हम ईश्वर की सर्वव्यापकता के साथ एक हैं; कि हमें यह प्रार्थना नहीं करनी है कि वे हमारे पास आएँ, कि हम न केवल सदैव उनके समीप हैं, अपितु

ईश्वर की सर्वव्यापकता हमारी सर्वव्यापकता है; यह कि हम उनके अब भी उतने ही अंश हैं जितने कि हम सदैव रहेंगे। हमें केवल इतना ही करना है कि हम अपनी जानकारी सुधारें।"

परमहंस योगानन्द ने दिखाया है कि हम जिस ज्ञान, रचनात्मकता, खुशी और सुरक्षा की तलाश कर रहे हैं, वह हमारे भीतर है, हमारे अस्तित्व का बहुत सार है। इसे पूरी तरह अनुभव करने के लिए– एक बौधिक दर्शनशास्त्र की तरह नहीं बल्कि वास्तविक अनुभव के द्वारा जो हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समझदारी और शक्ति प्रदान करता है।

शरीर, मन और आत्मा में संतुलन और सामंजस्य :–

The Art of Spiritual Living संतुलित जीवनशैली और ध्यान का अभ्यास, जो यहाँ सिखाया जाता है, वह शरीर, मन व आत्मा की अन्तःसम्बन्ध की समझ पर आधारित है। यह एक विस्तृत प्रणाली है जो हमारे स्वभाव के इन सभी पहलुओं को शक्तिशाली, संतुलित और स्वस्थ रखने के लिए बनाई गयी है। हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है – यह शिक्षाऐं हमें उसमें विजयी होने का साधन–प्रत्येक व्यक्ति के अभ्यास की गहराई के अनुपात के अनुसार–और साथ में गहन समझ और परम सत्य का अनुभव प्रदान करती हैं।

आध्यात्मिक होने के फायदे :–

1. यह आपको संतोष और सुरक्षा देता है। अध्यात्म व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। इससे व्यक्ति को सुरक्षा और अपनेपन की अनुभूति होती है।
2. यह शरीर को अंदर और बाहर से हील करता है।

आध्यात्मिक कार्य जैसे मेडिटेशन करने से व्यक्ति को आंतरिक शांति महसूस होती है। कई रिसर्च में पाया गया है कि मेडिटेशन मानसिक संतुलन बनाने में सहायक है और ह्रदय पर से दबाव कम करता है। कम शब्दों में समझें तो यह शरीर को अंदर से रिपेयर करता है। मेडिटेशन और आध्यात्मिक दर्शन शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। इससे आप किसी भी मुश्किल परिस्थिति से गुजरते वक्त नर्वस ब्रेकडाउन से बचते हैं। अध्यात्म एक बार में नहीं प्राप्त होता, इसके लिए समर्पित होना चाहिए।

3. यह जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

अध्यात्म एंड्रोफिन्स बनने को बढ़ावा देता है, चाहें आपके शरीर में कुछ भी हो रहा हो। यह आत्म निरीक्षण और आत्म सशक्तिकरण में भी सहयोगी है। अध्या त्मि जीवन की गुणवत्ता। बढ़ाता है। चित्र : शटरस्टॉक अध्यात्मस जीवन की गुणवत्तौ बढ़ाता है। अध्यात्म व्यक्ति के विकास पर केंद्रित होता है। यह किसी भी व्यक्ति को खुद को अपनाना सिखाता है, जिससे व्यक्ति खुद की कद्र करना सीखता है। इससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

4. यह आपको कृतज्ञ बनाता है।

अध्यात्म का अर्थ है बांटना और शेयर करना– जो आपको सभी के प्रति कृतज्ञ होना सिखाता है। अध्यात्म नकारात्मकता को खत्म करता है, प्रेम को बढ़ाता है और एक–दूसरे को अधिक करीब लाता है। खुद को अध्यात्म से जोड़ें और खुद में सकारात्मक बदलाव देखें।

उपसंहार :–

आध्यात्मिक स्वास्थ्य में आशा, उद्देश्य और शांति जैसी व्यापक अवधारणा भी शामिल हो सकती है। कुछ

सामान्य मानदंड जो आध्यात्मिक स्वास्थ्य की श्रेणी में आते हैं, उनमें सर्वोच्च सत्ता में मनुष्य का विश्वास, अधिक बल के साथ एकता, धर्म का अर्थ और मूल्य और इसे एक बड़े स्तर पर संतुलित करना शामिल है।

References :

1. Hjelm JR. The Dimensions of Health : Conceptual Models. USA : Jones and Bartlett Publishers (2010- [Google Scholar]
2. Knapik GP, Martsolf DS, Draucker CB, Strickland KD. Attributes of spirituality described by survivors of sexual violence. Qual Rep- 2010 15(3) : 644–657. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
3. Gomez R, Fisher JW. Domains of spiritual well&being and development and validation of the spiritual well-being questionnaire. Personality and Individual Differerences. 2003 (35(8):1975–91. [Google Scholar]
4. Jirásek I. Religion, spirituality, and sport: from religio athletae toward spiritus athletae. Quest. 2015 (67(3):290–9. [Google Scholar]
5. Adib&Hajbaghery M, Faraji M. Comparison of happiness and spiritual well&being among the community dwelling elderly and those who lived in sanitariums. Int J Community Based Nurs Midwifery. 2015 (3(3):216–26. [PMC free article] [PubMed] [Google Scholar]
6. मोहेब्बिफ़र आर, पाकपुर एएच, नहविजौ ए, सादेघी ए। कैंसर के रोगियों में आध्यात्मिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंध। एशियाई पीएसी जे कैंसर पिछला। 2015; 16(16) : 7321–6. - पबमेड, - गूगल स्कॉलर,
7. डालमिडा एसजी, होल्स्टेड एमएम, डिलोरियो सी, लेडरमैन जी। एचआईवी/एड्स से पीड़ित अफ्रीकी–अमेरिकी महिलाओं के बीच आध्यात्मिक कल्याण और स्वास्थ्य संबंधी जीवन की गुणवत्ता। एपल रेस क्वाल लाइफ। 2011; 6 (2) :139–57. – पीएमसी मुक्त लेख, – पबमेड, – गूगल स्कॉलर।
8. चार्ज़िनस्का ई. आध्यात्मिक मुकाबला के प्रति बहुआयामी दृष्टिकोणरू आध्यात्मिक मुकाबला प्रश्नावली (एससीक्यू) जे धार्मिक स्वास्थ्य का निर्माण और सत्यापन। 2015; 54 (5) : 1629–46. – पीएमसी मुक्त लेख, – पबमेड, – गूगल स्कॉलर।

मो. 9448006285

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 62-65
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक और धार्मिक मान्यताएं

डॉ. दुर्गेश कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, पी.एम. कॉलेज, अलीगढ़।

शोध सार :-

संसार की सभी जातियों में कुछ न कुछ विशिष्ट सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएं होती हैं। सृष्टि के प्रारंभिक काल में ही मानव ने अपनी सृष्टि को एक अलौकिक घटना समझा होगा और उसी समय से उनमें किसी अलौकिक शक्ति पर विश्वास उत्पन्न हुआ होगा। धीरे–धीरे जब मानव के ज्ञान में वृद्धि हुई होगी और उन्होंने सृष्टि की वैज्ञानिक व्याख्या की होगी तब इस अलौकिक शक्ति पर से उनका विश्वास धीरे–धीरे कम होने लगा होगा। संसार में आज जितनी भी जनजातियाँ है उनमें इस अलौकिक शक्ति पर विश्वास का तथ्य विकसित जातियों की अपेक्षा अधिक है और जाति तथा जनजाति में एक प्रमुख विभेदक तत्व है। जन जातियां संसार की अन्य जनजातियों की तरह उराँव जनजाति में भी अलौकिक शक्ति की स्वीकृति प्राप्त होती है। अब इसी के आधार पर इनकी धार्मिक मान्यता दृष्टिगत होती है। संस्कृति में यद्यपि कुछ अन्य तत्व भी आते हैं, परंतु किसी भी जनजाति की संस्कृति के विषय पर विचार करने पर हम पाते हैं कि उस जनजाति की संस्कृति उसकी धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है। उराँव जनजाति में भी हम सांस्कृतिक तथा धार्मिक मान्यताओं को एक–दूसरे से अलग कर के नहीं देख सकते हैं। उराँव जनजाति में हम जिस टोटमवाद को पाते हैं। वह उनकी विशिष्टिता को अभिव्यक्त करता है। इस जनजाति में 20 से भी अधिक टोटम होते है और इन टोटमों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उराँव जनजाति को लोग प्राकृतिक शक्तियों पर अत्यधिक विश्वास करते हैं।

विभिन्न पशुओं–पक्षियों तथा वनस्पतियों को टोटम के रूप में स्वीकार किया जाता है और उनको अपना पूर्वज मानते हुए पूज्य माना है। उराँवों को यह विश्वास है कि उनके दुर्दिन में यह टोटेम उनकी रक्षा करते हैं। किसी भी उत्सव के समय गीत आदि के माध्यम से अपने टोटेम को उराँव लोग स्मरण करते हैं और ऐसा मानते हैं कि उनके स्मरण मात्र से ही उनका वह उत्सव सफल हुआ। उराँव जनजाति आत्मा, जीवात्मा, परमात्मा और दुष्टात्मा सबों पर विश्वास करती हैं। आत्मा स्वीकार करने के कारण ये लोग पुनर्जन्म को भी स्वीकार करते हैं। जीवन में सदाचरण पर विशेष बल दिया जाता है और यह माना जाता है कि जो व्यक्ति इस संसार में अच्छा आचरण करेगा। झूठ नहीं बोलेगा, पाप नहीं करेगा, वह स्वर्ग जायेगा और उसका अगला जन्म सुखमय होगा। इससे विपरीत जो व्यक्ति अच्छा आचरण नहीं करेगा उसे नर्क जाना होगा और उसका अगला जन्म दुरूखमय

होगा। ऐसा मानते हैं कि कोई भी लड़का किसी परिवार में जन्म लेता है तो वह अपने परिवार के पूर्वजों की आत्मा को लेकर ही उत्पन्न होता है। इसी कारण बच्चों के नामकरण के समय उसका नाम उसके दादा के नाम से रखा जाता है। उराँव जीवात्माओं पर विश्वास करते हैं। जीवात्माओं का स्वामी पाट या पाट राजा कहलाता है जो बीमारी अथवा अन्य आपदाओं से लोगों की रक्षा करता है। कुछ गांवों में इनका निवास स्थान गाँव के बाहर पहाड़ी पर होते हैं और कुछ गाँव में किसी वृक्ष के नीचे होता है। सभी लोग पाट की पूजा करते है और उसे अपना देवता मानते हैं। समय–समय पर भी पाहन पाट राजा को बलि भी प्रदान करता है। जीवात्मा भूत, पिसाच, चेचक, बुखार तथा गर्भ नष्ट करने वाली आत्माओं को ये लोग दुष्टात्मा मानते हैं। इन दुष्ट आत्माओं से बचाव के लिए वे उपर्युक्त विभिन्न देवी देवताओं तथा पूर्वजों की पूजा करते हैं। जिन व्यक्तियों की अकाल मृत्यु हो जाती है उसकी आत्माओं को भी ये लोग दुष्ट आत्मा का प्रकोप समझते हैं। यदि किसी गर्भवती स्त्री की मृत्यु हो जाती है तो ऐसा माना जाता कि वह चुड़ैल हो जाती है।

ऐसा विश्वास है कि यदि गर्भवती स्त्री की मृत्यु हो जाने पर उसे गाड़ दिया जाय तो वह निश्चित रूप से चुड़ैल हो जाती है। जैसा की पहले कहा जा चुका है उराँव जनजाति के परिप्रेक्ष्य में धर्म और संस्कृति को अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इस कारण उराँव पर प्रायरू जितने भी संस्कृति हैं वे सभी किसी न किसी रूप में धर्म से जुड़े हुए हैं। उराँव जनजाति में हम जिन सांस्कृतिक कृत्यों को पाते हैं। उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं। नृत्य और संगीत नृत्य और संगीत जीवन को आनंदित, उल्लास एवं सुखमय जैसे श्रृंगार रस से भर देती है। ये कुडूख जीवन के प्रमुख दैनिक कार्य से जुड़े हुए हैं। ये अपने नृत्य और संगीत को सामूहिक रूप से प्रदर्शित करते हैं। आज भी प्रत्येक कुडूख गाँव के बीच एक अखड़ा होता है जिसका आकर गोल होता है। जहाँ गाँव के युवक–युवतियां रात को गाना बजाना करते हैं। दिन भर दैनिक कार्यों से अस्त–व्यस्त थके–मांदे उराँव लोगों के पास मनोरंजन के लिए कोई आधुनिक साधन नहीं होता है। रात्री भोजन के बाद युवक–युवतियां तथा अधेड़ भी परंपरागत ढंग से अपने–अपने मांदर, नगाड़े तथा घंट–झंझर आदि के साथ आखाड़े में आ जुटते हैं। वे प्रायः 10–11 बजे तक ताल मृदंग के साथ नाचते गाते संसार के सारी चिंताओं तथा झंझटों को भूल कर मस्त एवं आनन्द विभोर रहते हैं। पर्व त्योहारों तो ये लोग ताल सूर के साथ नाच करते हैं ऐसे अवसर पर बड़े–बड़े लड़के और लड़कियाँ अलग–अलग कतारें बना कर नाचते हैं।

प्रकृति के गोद में पले, उराँव के गोद में पले उराँव के नृत्य के ताल–सुर ऋतू के अनुसार होता है। जिस प्रकार प्रत्येक ऋतू में काम धंधे अलग–अलग होते हैं। उसी प्रकार के हर ऋतू के पर्व एवं उत्सवों के भिन्न–भिन्न खेल, गीत एवं राग होते हैं। उराँव लोगों का विश्वास है मौसम के अनुकूल नृत्य संगीत एवं राग से प्राकृति देवी खुश होती हैं। वर्षा अच्छी, पेड़ पौधे हरे भरे रहते हैं। उन्हें शक्ति मिलती हैं वे नृत्य संगीत का आनंद का हिलोरे लेते तथा झूमते है और वे फल फूलों से लद जाते हैं यहाँ तक जानवर भी उनके नृत्य संगीत में आकर्षित होते हैं। यह पर्व (त्यौहार) फागुन से प्रांरभ होता है और वैशाख तक चलता है। इस समय का मौसम बहुत ही सुखद और स्वस्थ्यकर होता है। रात को न तो अधिक जाड़ा और न ही दिन को गर्मी। पेड़ पौधा अपने पुराने वस्त्रों

(पत्तों) का परित्याग कर नए परिधानों से सुसज्जित हो जाते हैं। इस हर्ष और उल्लास के अवसर पर भी अपने अभिन्न दोस्त को याद करते हैं, मेहमान बुलाते हैं। वृक्ष एवं फूल–पत्ते मधुमक्खियों एवं तितलियों को आमंत्रित करते है और अपने गोद में बैठा कर अनुपम रस से स्वागत करते हैं। वे रसावादन कर मस्ती में मधुरगान से वातावरण को गूंजित कर देते हैं। कोयल भी रसपान करके मस्ती में आ जाती है। अपने मधुर स्वादों में गूनगुनाती बाग–बगीचे की शोभा बढ़ा देती है। इसके युगल जोड़ी एक दुसरे के लिए व्यग्र होती है और क्षणिक अलगाव भी इन्हें असहाय हो जाता है। सरहुल के त्यौहार के समय प्रत्येक जनजातियों के मन में एक अजीब सा उल्लास का वातावरण देखने को मिलता है। उस त्यौहार को मानने के लिए गाँव को लोग की एक बैठक होती है। गाँव का कोटवार सभी को इकट्ठा होने के उद्देश्य से अवगत कराता है, आपस में सलाह करते हैं की कौन दिन ये त्यौहार मनाया जाए। दिन जब निश्चित हो जाता है तो पहले सभी लोग विशेष आकर औरतें घर की सफाई एवं दीवालों की लिपाई–पुताई करती हैं। उन सभी गंदगियों को घर से किसी कोने पर इकट्ठा करती है। इस क्रम में एक बहुत बड़ी घटना है जिसे आप लोगों को भी जानना चाहिए। सरहुल (खद्दी) के पहले दिन के औरतें, विशेष कर प्रत्येक घर से एक औरत अपने घर से एक पुराना घड़ा में ये गंदगी, जिसे घर के सभी कोनों से बुहार कर निकालते हैं को भर लेती हैं। उसके बाद सभी औरतें गाँव के किसी खास जगह पर इकट्ठा होती हैं। सामूहिक रूप से उन घड़ों को अपने माथे पर ढोकर, हाथ में एक डंडा लेकर और उसे गाँव के सीमा तक पहुँचाने के लिए चल पड़ती हैं। निश्चित स्थान पर वे सभी औरतें उन घड़ों को फेंक कर नाचती हैं। इसी दौरान वे अपने शरीर को नंगा करती हैं एवं उस कपड़े को झाड़ती हुई बोलती हैं चलो बच्चों (भगवान) तुम हमारे सभी बाल–बच्चों को सूखी संपन्न रखना किसी प्रकार की बीमारी इनको न होवे। ये कहकर वे कपड़े पहनती है और सामूहिक रूप से अपने गाँव चली आती हैं। खद्दी नृत्य के उपयोग में लाने वाले प्रमुख यंत्रों में मांदर, नगाड़े, घंट तथा झांझ तथा मंजिरें होते हैं। इस नृत्य में लड़के–लड़कियां खड़े चलते हुए नाचते और गाते हैं। इनकी कतारें क्रमानुसार अलग –अलग रहती हैं। संगीत के स्वर तथा नाच की विधि अंत तक एक ही प्रकार नहीं रहती है।

भाख कट्टी के विधि भाख कट्टी के करने के दो दिन पहले से ही एक उराँव परिवार मन में सोचता है कि मुझे अमुक समय में यह कार्य करना चाहिए। भाख कट्टी करने का स्थान को वह व्यक्ति जो इस कार्य (पूजा) को करते है, गोबर से लीप कर पवित्र करता है। इसके पश्चात उस स्थान पर किसी आदमी, जानवर या कुत्ता, मुर्गी पास एक सूप में अरवा चावल, भेलवा, करियागुरिया (मुर्गा), एक अंडा (मुर्गी का), अर्पण, धूली तथा चूल्हा मिट्टी, लोटा में शुद्ध जल (पानी) रख दिया जाता है। मती सूप को पकड़ता है और अपने जंघा के उपर रख कर निम्न प्रकार सुमिरन करता है– हे भगवान, हे पुरखों, आप लोगों का रास्ता दिखाया हुआ है। हम आज यह काम के लिए भाख कट्टी करने को बैठे हैं। यदि हम से कोई भूल हो जाए तो उसे आप सम्भालेंगे, सही रास्ता दिखायेंगे। इंतना कर कर मती उस लिपी हुई जगह पर, जहाँ वह बैठा है, के सामने ही एक वृत्ताकार चित्र अर्पण से खींचता है। परिधि के बीचों–बीच से ये लकीरें आदि तथा पड़ी व्यास के रूप में बनते हैं। यह व्यास एक–दूसरे को जहाँ काटता है। इसके बाद इन सभी लकीरों पर करियाम गुरिया रंग देता है। अब केंद्र पर बी इन तीनों

रंगों से एक गोलाकार चित्र चित्रित करता है और उसमें एक मुट्ठी अरवा चावल रखा कर उसके उपर एक अंडा रख देता है। अब भेलवा की डाली को एक बड़ा, एक छोटा, दो अलग–अलग टुकड़ा करता है। छोटे टुकड़े को चार भागों में बांटता है और बड़े टुकड़े के चौथाई भाग को दो भागों में। तदनुसार छोटे टुकड़े को चार भाग फलियों में से एक फली देखर बड़े टुकड़े के दो भागों के बीच डाल कर उसका मुंह खुला हुआ बना देता है। उसके बाद अंडा को पूरब मुंह खड़ा रख देता है। उसके बाद बाद बची हुई तीन फलियों के साथ कुछ चावल दोनों मुट्ठी के एक साथ लेकर सगुन करता है। शगुन का अर्थ है दोनों मुट्ठियों में चावल और भेलवा के फलियों को सूप में ही चित–पट करना। जब दो फलियाँ एक बार में चित पड़ जाती है तो सगुन मान लिया जाता है।

संदर्भ सूची :–

1. https://m-hindi.webdunia.com/astrology-articles/religious&beliefs&118060400052&1-html\amp)1
2. https://hi.vikaspedia.in/education/91d93e93091692394d921&93093e91c94d92f/91d93e93091692394d921&915940&91c92891c93e92493f92f93e901/

पता : जवाहर नगर सुरक्षा विहार जीटी रोड अलीगढ़

Email : durgeshsharma0204@gmail.com

मो.– 9411880204

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
April 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 66-70
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

धर्म–विज्ञान और भारतीय सामाजिक परम्पराएं

डॉ. गोपीराम शर्मा
सह आचार्य, हिन्दी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान 335001

मानवतावाद के मूल में भी 'मानव' का कल्याण निहित रहता है। अतः धर्म एवं मानवतावाद में सापेक्ष सम्बन्ध है। भारतीय संस्कृति एकता, अखण्डता एवं सहिष्णुता का संदेश देती है। आत्मसातीकरण हमारी संस्कृति का विलक्षण गुण है। ''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'' हमारा आदर्श रहा है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' हमारे आचारिक सिद्धांत हैं। इन सबके मूल में हैं– हमारी धर्म भावना।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से धर्म शब्द धृञ्धारणे धातु एवं उणादिसूत्र से मन् प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होता है। 'ध्रियते येन स धर्मः' अर्थात् जिसने इस विश्व ब्रह्माण्ड को धारण किया है, वह धर्म है। 'धृ' धातु से कई अर्थ निकलते हैं है– धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना। यह शब्द अनेक परिवर्तनों एवं विपर्ययों के चक्र में घूम चुका है। ऋग्वेद की ऋचाओं में यह शब्द लगभग 56 बार प्रयुक्त है जहाँ इसे या तो विशेषण के रूप में या संज्ञा के रूप में प्रयोग किया।

धर्म के 10 लक्षण बताए गए हैं–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।[1]

इस प्रकार आचार का नाम धर्म है। यह तो अपने आचरण में लाने की वस्तु है। जैसे–जैसे आचरण धर्ममय होता जाता है वैसे–वैसे धर्म का रहस्य ज्ञात होता है– 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस् सिद्धिः स धर्मः।'[2]

अर्थात् जिसके आचरण से जीवन में अभ्युदय और निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है उसका नाम धर्म है।

धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी अवधारणाएं मानी जाती रही हैं। जब से हम यूरोपीय जातियों के यहां पराधीन हुए हैं तब से धर्म को लेकर हम बहुत अधिक सशंकित हो चले। दुर्भाग्य से कालान्तर में हमने धर्म की मिथ्या एवं संकीर्ण व्याख्या प्रारंभ कर दी; जिससे हमारी सामाजिक समरसता संकट में पड़ गयी।

19वीं सदी के बाद 'धर्म' शब्द सबसे अस्पृश्य वस्तु मान ली गई। यूरोप में ज्ञानोदय युग या प्रबोधन परियोजना (इनलाइटमेंट प्रोजेक्ट) के उदय के साथ ही आधुनिकता का जन्म हुआ। यूरोप और पश्चिम ने इसी आधुनिकता को पूरे विश्व को अपनाने के लिए बाध्य किया। 'मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमान को भविष्य के अनुकूल बनाकर उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और उसे आधुनिकता के नाम से अभिहित किया जाता है।'[3]

आधुनिकता तर्क, विज्ञान और प्रयोग पर आधारित है, इसने परंपराओं पर प्रहार किया। इसलिए

आधुनिकता और परम्परा के प्रत्ययों को एक–दूसरे के विपरीत माना जाता है। आधुनिकता परम्परा से आगे का तत्त्व है। परम्पराओं की मृत्यु पर ही आधुनिकता का जन्म होता है। परम्परा में ठहराव है, आस्था और विश्वास है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में– 'परम्परा का शब्दार्थ है एक का दूसरे को दूसरे का तीसरे को दिया जाने वाला क्रम। वह अतीत का समानार्थक नहीं है। परम्परा जीवन्त प्रक्रिया है जो परिवेश का संग्रह त्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर क्रियाशील रहती है।'[4]

धर्म और आधुनिकता को लेकर भी यह विचार है कि ये दोनों धारणाएँ एक दूसरे की विरोधी हैं। धर्म में माना जाता रहा है– 'ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या'। धर्म में ईश्वर की मान्यता है जो अमूर्त संकल्पना है। धर्म आस्था, विश्वास, श्रद्धा जैसे भावों से समझा जा सकता है जबकि आधुनिकता में भौतिक जगत् में पूरी आस्था है। आधुनिकता मूर्त में विश्वास करती है। यहाँ तर्क, बुद्धि, विज्ञान जैसे उपकरण मौजूद हैं। आधुनिकता ईश्वर आदि तत्त्वों को नहीं मानती।

आधुनिकतावादी लोगों ने ईश्वर एवं धर्म को छोड़ते हुए अपनी समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक दृष्टि से करने का संकल्प लिया। 'आज व्यक्ति पूर्व निर्धारित अपने ऊपर थोपे हुए समाधान से अपने जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं ढूँढता बल्कि वैज्ञानिक ढंग से सर्वेक्षण कर खरे–खोटे की परख करता है। उसकी अपनी परख नितांत अपनी परख होती है। आज हर व्यक्ति को अपना क्रूस' स्वयं ही ढोना पड़ेगा।'[5]

उपर्युक्त मान्यताओं के विपरीत धर्म और ईश्वर सम्बंधी अवधारणाएँ केवल अंधविश्वास, कर्मकांड, टोटमवाद मात्र नहीं है। ईश्वर एक परमसत्ता है, परम ऊर्जा है जो अन्य ऊर्जावान जीवों से सम्बन्ध रखता है। व्यक्ति का अपने एवं प्रकृति के साथ सम्बन्धों को दर्शन के द्वारा समझा जा सकता है। इनका आधार भी वैज्ञानिक है। धर्म की मान्यताएँ क्रियाएँ व विधान किसी वैज्ञानिक प्रणाली पर बने हुए हैं। इसी कारण भारतीय धर्म की मान्यताएँ मानव कल्याण व समाज के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

हमारी भारतीय परंपरा और सनातन संस्कृति का महत्त्व है। हमारी भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा रूढ़िवादी नहीं है बल्कि वैज्ञानिकता पर आधारित है। प्रातःकाल का जागना, मनुष्य के लिए अमृत पीने के समान है। प्रातःकाल जागने वाला मनुष्य जीवन में बीमार नहीं होता। सुबह प्राणायाम करने वाले को हार्ट अटैक नहीं आता। कार्तिक के महीने में प्रातःकाल जल स्नान रोगों से मुक्ति दिलाता है। तिलक लगाने से मनुष्य के मस्तक में आज्ञाचक्र जाग्रत होता है, जिससे विद्वता बढती है और मस्तिष्क से संबंधित बीमारियां नहीं होती। औरतें मांग में सिंदूर भरती हैं उससे भी मस्तिष्क संबंधी बीमारियां नहीं होती। गले में माला पहनने से गले के रोग नहीं होते। भारतीय परंपराओं में कोई न कोई विज्ञान या सार्थकता छुपी रहती है।

भारतीय संस्कृति को अनेक त्योहार, संस्कार आदि मिलकर भव्यता प्रदान करते ही हैं, साथ ही इससे भारतीय समाज और मनुष्य परिष्कृत होता है। ये विभिन्नता में एकता के भी प्रतीक हैं। भारत में अनेक बोलियां और भाषाएं विद्यमान हैं। भाषा की यही विविधता भारत की संस्कृति को दूसरी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों से अलग बनाती हैं। यहाँ के लोग अपने जीवन में अपनी भाषा को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं।

भारतीय संस्कृति के विकास एवं भव्यता के पीछे यहाँ की पारिवारिक संरचना का महत्त्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि यहाँ लोग अपने परिवार को लेकर अत्यंत संवेदनशील होते हैं। संयुक्त परिवार में रहना लोगों में सुरक्षा

एवं सहानुभूति की भावना को बढ़ावा देता रहा है। विवाह बंधन को भारतीय संस्कृति में अत्यंत पवित्र माना गया है, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत का अहम हिस्सा है। यह परंपरा लोगों को रिश्ते की पवित्रता बनाये रखने के लिए बाध्य करती है। 'नमस्ते कहकर सबका अभिवादन करना सबसे लोकप्रिय भारतीय रीति–रिवाजों में से एक है। अभिवादन करने वाले की छाती के सामने मुड़ी हुई हथेलियों द्वारा इंगित किया जाता है कि मैं दिल से आपका स्वागत या अभिवादन करता हूँ। नमः शब्द का अनुवाद 'ना मा' (मेरा नहीं) के रूप में भी किया जा सकता है, जो दूसरे की उपस्थिति में अपने अहंकार की कमी को दर्शाता है।'[6] उपवास रखना भारत की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। उपवास आपकी ईमानदारी और संकल्प का प्रतिनिधित्व करने या देवी–देवताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करने का एक तरीका है। उपवास से शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। भारतीय परंपरा के अनुसार प्रतिदिन मंदिर जाने एवं अपने आराध्य के दर्शन करने से सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है, जिससे व्यक्ति को हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। मंदिरों का निर्माण भी वैज्ञानिक ढंग से हुआ है, जहां पर ऊर्जा का संचरित रहती है। ऐसे अनेक परंपराओं में सार्थकता – वैज्ञानिकता मिल जाती है। मनुष्य को वैज्ञानिक ढंग से जीवन जीने के लिए प्राचीन काल में जिन नियमों को बनाया गया, उन्हें धर्म का आवरण औढाकर प्रस्तुत किया जाता था। इसके पीछे उद्देश्य यही था कि आचरण नियमों के पीछे धर्म की शक्ति होने से मनुष्य उन नियमों का पालन करने के लिए अधिक शिद्दत से प्रवृत्त हो सके। धर्म हमारे देश में वही भूमिका निभाता आ रहा है जो किसी देश में कानून निभाता रहा है।

एक समय ऐसा था जब पृथ्वी के आधे भाग पर सनातन संस्कृति का प्रचार था, लेकिन कुछ विदेशी हमलावरों ने हमारी संस्कृति को बहुत अधिक नष्ट करने कार्य किया। उन्होंने हमारी आस्थाओं, मान्यताओं और संस्कृति के प्रति ऐसा भ्रम पैदा उत्पन्न किया, जिससे हमारी श्रद्धा धीरे–धीरे अपने परंपराओं से ही डगमगाने लगी। जिस धर्म के बल पर पूरे विश्व में भारत की दुंदुभी बजती थी, उस ध्वनि को यूरोपीय विज्ञानवाद ने मौन करवाकर रख दिया।

कमलेश्वर इस संदर्भ में कहते हैं– 'धर्म आज गति देने वाला सत्य नहीं रह गया है, इसलिए अब एक अजीब तरह की निर्धनता पैदा हुई है। जीवन पद्धति के मूल्यों को तय करने का काम धर्म अब नहीं करता, न हमारे जमाने के सवालों का जवाब देता है।'[7]

आधुनिकता और विज्ञान के बढ़ाव ने धर्म पर जो आक्रमण किया है, उससे हमारी परंपराएं बहुत अधिक तक प्रभावित हुई है। परिवार का परंपरागत स्वरूप संयुक्त परिवार प्रचलित था, अब एकल परिवार और नैनो परिवार में बदलता दिख रहा है। संयुक्त परिवार रक्त संबंधों में बंधे हुए सदस्यों का समूह था। आज धनोर्पार्जन और परिवार की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पति–पत्नी दोनों घर से बाहर रहते हैं और उनका जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि बच्चे और परिवार के अन्य सदस्यों पर अपना ध्यान कम देते हैं। पति–पत्नी के मधुर संबंधों में एक तनाव उत्पन्न हो रहा है।

नगरीकरण और औद्योगीकरण के कारण व्यक्ति के जीवन में बेगानेपन और अकेलेपन का प्रवेश हो गया है। मनुष्य कभी अपने परिवेश से कट जाने का बोध अनुभव करता है तो कभी परिवार से। व्यक्ति दिग्भ्रमित होकर नए संबंधों की तलाश में जीवन की दोहरी विषमताओं से जुड़ रहा है। वस्तुतः आज का आधुनिक मनुष्य नामहीन और व्यक्तित्वहीन स्थिति से गुजर रहा है। अभावों से घिरकर जड़वत् जीवन जीने मजबूर है। आज के मनुष्य

के जीवन में स्नेह, सहानुभूति, आत्मीयता, परस्पर सहयोग आदि का अभाव है। आज व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक मूल्यों में संतुलन नहीं रह गया है। पुराने मूल्य लुप्त हो रहे हैं और नये मूल्य उत्पन्न नहीं हो रहे हैं। आज पति—पत्नी के पुराने संबंधों के स्थान पर नये संबंध बन रहे हैं। मां का स्थान अंग्रेजी शब्द 'ममा' और पिता का स्थान 'डैडी' ने ले लिया है। रिश्तों में औपचारिकता आ गई है।

भारत में आधुनिकता का आना भी विचित्रता—सी रही है। आधुनिकता सुख के सपने दिखाती है, तो जरूरी है पहले व्यक्ति और समाज कष्ट में हो। भारत में ऐहिक कष्टों को महत्त्व नहीं दिया जाता और भौतिक सुखों की बहुत तीव्र लालसा भी नहीं है। संतोष, सादा जीवन, अपरिग्रह, त्याग, दान आदि वृत्तियाँ हमारे आचरण का हिस्सा है। यूरोपियनों ने हमें समझाया कि जाने हम कष्ट में हैं, दुःख में हैं और सुखी होने के लिए दौड़ लगानी है। यह दौड़ सबको साथ लेकर नहीं, एक दूसरे को गिराते हुए लगानी है। सुख भौतिकता से ही मिलेगी और इसके लिए प्रकृति का दोहन करना होगा। प्रकृति कोई ईश्वर या दैवीय शक्ति नहीं है। प्रकृति मनुष्य के भोग के लिए है।

एक से दो शताब्दियों में इस श्ज्ञानश की दुंदभी चहुंदिश सुनाई देने लगी। ज्ञान व बुद्धि के रथ पर बैठा मनुष्य प्रगति की लम्बी यात्रा तय कर गया। पर यहीं से इसके कुछ साइड एफेक्ट्स भी लक्षित हो चले। भौतिक विकास, आर्थिक समृद्धि, इहलौकिकता की तीव्र गति ने आदर्शों व मूल्यों की भेंट चढ़ा दी, प्रत्युत आधुनिकता अपना भी कोई आदर्श प्रस्तुत नहीं कर पाई।

इस प्रकार आधुनिकतावादी विकास अन्तर्विरोधों का कारण बनता रहा और कृत्रिमता, दिखावटीपन, औपचारिकता, यांत्रिकता, घुटन, संत्रास आदि प्रवृत्तियाँ मन में घर करने लगी। खंडित व्यक्तित्व, सम्बन्धों का विघटन और जुड़े रहने की छटपटाहट लोगों में ऊब बनकर उभरी और इस प्रकार आधुनिकता की तीव्र प्रतिक्रिया से उकता कर अब लोगों का मोह आधुनिकता से भंग होने लगा है। यूरोप ने आधुनिकता की असफलता की घोषणा करके उत्तर—आधुनिकता के प्रारम्भ की बात कह दी है। भारत की हालत खराब है वह एक साथ तीन अवस्थाओं को जी रहा है, मध्यकालीन मानसिकता पूर्णतया छूट नहीं पा रही, आधुनिकता ओढ़ ही रहा था कि छोड़नी पड़ रही है, उत्तर आधुनिकता समझ की बात नहीं।

भारत में धर्म की अनदेखी कर आधुनिकता अपनाने के कारण जहाँ मनुष्य मस्तिष्क संकट ग्रस्त हो गया, वहीं आधुनिकता ने समाज व्यवस्था और प्रकृति को भी बहुत नुकसान पहुँचाया। आधुनिकता ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपना 'क्रूस' स्वयं ही ढोना पड़ेगा तो उसने रिश्ते नातों को कम कर लिया। सामाजिकता का ताना—बाना टूट गया। प्रकृति जहाँ हमारे लिए पूज्य थी। नदी, जल, पर्वत, वृक्ष, मिट्टी यहाँ पूजनीय थे, वहीं आधुनिकता ने प्रकृति को अपनी दासी मान जबरदस्त दूहा।

हमारे ऋषि बड़े रिसर्चर थे, उन्होंने रिसर्च के आधार ही विज्ञान आधारित बातों को सामने रखा। उसी प्राचीन विज्ञान को समाज में प्रचार प्रसार के लिए, सामान्य जन की पहुँच बनाने हेतु 'धर्म के पैकेज के रूप में' पहुँचाया जाता था। हमारे संत, महात्मा, मुनि आदि सुधारक थे। वे निगरानी करते थे कि रिसर्चर अर्थात् ऋषियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को जन सामान्य ग्रहण कर रहा है या नहीं? तो वे अपनी शिक्षाओं से बात को आगे पहुँचाते थे। बात—बात में सीख दे जाते थे। 'हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म, हिन्दू दर्शन तथा वेद हैं जिसके कारण हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति या कोई भी संस्कृति जिसका आधार वास्तविक धर्म में

है, कभी नष्ट नहीं हो सकती, उसका रंग–रूप बदल सकता है, शैली बदल सकती है, प्राचीन सूत्रों की व्याख्याएं बदल सकती हैं लेकिन धर्म की बुनियाद नहीं बदलती।'[8]

यह भारतीय धरा है, जहाँ धर्म को हटाकर किसी विषय पर बात करना आत्मा को निकाल कर शरीर से सम्बन्ध जोड़ना है। भारतीय धर्म में लोचशीलता है जो बहुत गजब की है। परम आध्यात्मिक युग में घोर भौतिकवादी दर्शन प्रस्तुत करने वाले चार्वाक को ऋषि कहकर स्वीकारा गया। इस धर्म एवं संस्कृति को किसी अन्य सम्प्रदाय या संस्कृति के जैसा बताया जाने का व्यवहार करना भारतीय व्यवस्था को कम करके आंकना है। विश्व भारतीय समाज व्यवस्था व धर्म, संस्कृति को हल्के में लेते आया है। अभी उसे यह जानना है कि यहाँ की धरती में वे कौन–से तत्व हैं, जो किसी को राज, वैभव और धन को ठुकराकर त्याग और वैराग्य की ओर मोड़ देते हैं, जो किसी प्राणी, पत्थर में भी ईश्वर का प्रकाश देख लेते हैं और जो इस संस्कृति को हजारों साल से जीवित बनाए हुए हैं।

संदर्भ संकेत :–

1. मनुस्मृति 6/92
2. वैद्य पं तनसुख राम शर्मा – दशकं धर्म लक्षणं, श्री सनातन सुख श्रेयस् संस्थान, श्रीगंगानगर, 2009, पृष्ठ – 51
3. डॉ. उर्मिला मिश्र – आधुनिकता बोध और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,1979, पृष्ठ 05
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी – 'परंपरा और आधुनिकता' निबंध से उद्धृत।
5. डॉ. शिव प्रसाद सिंह– आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1988, पृष्ठ 27
6. https://hindirashifal.in/indian&culture&traditions&rituals&languages/
7. कमलेश्वर – नयी कहानी की भूमिका, राजकमल प्रकाशन नई, दिल्ली 2015, पृष्ठ 160
8. यूनियन सृजन (भारतीय संस्कृति एवं परंपरा विशेषांक), अंक 2, अप्रैल जून 2019, पृष्ठ 11

मोबाइल 9461550103,
मेल drgrsharma76@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 71-73

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रीति रिवाज और उनका वैज्ञानिक परिपेक्ष्य

डॉ. जे. सेन्दामरै

असोसिएट प्रो., हिन्दी विभाग, सीतालक्ष्मी रामस्वामी स्वायत्त महाविद्यालय, तिरुच्चि, तमिलनाडु।

भारत कई रीति–रिवाजों और परंपराओं का देश है। भारत में कई तरह के अनुष्ठान भी किये जाते हैं। भारत अनेकता में एकता वाला देश हैं। हर प्रांत की अपनी संस्कृतियाँ और रीति–रिवाज होते है जिसका हम पालन करते हैं। हर एक रीति–रिवाजों के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक सत्य निहित हैं। जिसे अधिकतर लोग समझे बिना अंधविश्वास का नाम दे देते है। इसी कारण भारत में अनेक आस्थाएँ और धर्म विलीन हो गए है इसलिए यह आवश्यक है कि घर के बड़े लोग बच्चों को संस्कार और रीति–रिवाज बताते समय उसके पीछे का कारण या वैज्ञानिक सत्य को समझा दे तो जरुर हर एक बच्चा उन मान्यताओं को पूरी श्रद्धा के साथ सम्पन्न करेगें।

भारत में जन्म से लेकर मरण तक कई संस्कार और रीति–रिवाजों का पालन होता है।

हर मान्यताओं के पीछे कोई न कोई महत्व होता है। जैसे कि ....

हाथ जोड़कर नमस्ते करना–वैज्ञानिक तर्क :–

पहला तर्क–जब सभी उंगलियों के शीर्ष एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और उन पर जब दबाव पड़ता है। एक्यूप्रेशर के कारण उसका सीधा असर हमारी आँखों, कानों और दिमाग पर होता है, ताकि सामने वाले व्यक्ति को हम लंबे समय तक याद रख सकें।

दूसरा तर्क–हाथ मिलाने के बजाये अगर हम नमस्ते करते है तो सामने वाले के शरीर के कीटाणु हम तक नहीं पहुंच सकते। इसलिए कोरोना महामारी में इस नियम पर अधिक जोर दिया गया था।

माथे पर तिलक लगााना :–

आँखों के बीच में माथे तक एक नस जाती है। तिलक या कुमकुम लगाने से उस जगह की ऊर्जा बनी रहती हैं। माथे पर तिलक लगाते वक्त जब अंगूठा या उंगली से प्रेशर पड़ता है, तब चेहरे की त्वचा को रक्त पहुँचाने वाली मांसपेशिया सक्रिय हो जाती है।

कान छिदवाने की परंपरा :–

इससे सोचने की शक्ति बढ़ती है। बोली अच्छी होती है। कानों से होकर दिमाग तक जाने वाली नस का रक्त संचार नियंत्रित रहता है।

सूर्य नमस्कार :–

पानी के बीच से आने वाली सूर्य की किरणें जब आखों में पहुंचती है, तब हमारी आँखों की रौशनी अच्छी

होती है।

व्रत रखना :–

आयुर्वेद के अनुसार व्रत करने से पाचन क्रिया अच्छी होती है और फलाहार लेने से शरीर का डीटॉक्सीफिकेशन होता है।

चरण स्पर्श करना :–

मस्तिष्क से निकलने वाली ऊर्जा हाथों और सामने वाले पैरे से होते हुए एक चक्र पूरा करती है। इसे कॉसमिक एनर्जी का प्रवाह कहते है। इसमें दो प्रकार से ऊर्जा का प्रवाह होता है, या तो बड़े के पैरों से होते हुए छोटे के हाथों तक या फिर छोटों के हाथों से बड़ों के पैरों तक।

तुलसी के पौधे की पूजा :–

तुलसी इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है। घर में पौधा होगा तो इसका सेवन होगा और बीमारियां दूर होगी।

हवन या यज्ञ करना :–

हवन सामग्री में जिन प्राकृतिक तत्वों का मिश्रण होता है वह और कर्पुर, तिल, चीनी आदि का मिश्रण के जलने पर जब धुंआ उठता है, तो उससे घर के अंदर कोने–कोने तक कीटाणु समाप्त हो जाते हैं।

पैरों में बिछिया पहनना :–

पैरों की दुसरी उंगली में शादी के बाद चांदी की बिछिया पहनी जाती है और उसकी नस का कनेक्शन गर्भाशय (Uterus) से होता है। बिछिया पहनने से गर्भाशय तक पहुंचने वाला रक्त का प्रवाह सही बना रहता है। मासिक धर्म नियमित रहता है। चांदी पृथ्वी से ऊर्जा को ग्रहण करती है और उसका संचार महिला के शरीर में करती है।

मंदिर में घंटा बजाना :–

घंटे की ध्वनि हमारे मस्तिष्क में विपरित तरंगों को दूर करती हैं और इससे पूजा के लिए एकाग्रता बनती है। घंटे की आवाज 7 सेकेंट तक हमारे दिमाग में इक्को करती है। और इससे हमारे शरीर के सात उपचारात्मक केंद्र खुल जाते हैं। हमारे दिमाग में नकारात्मक सोच भाग जाती है।

हाथों और पैरों में मेहंदी लगना :–

मेंहदी एक जड़ी बूटी है, जिसके लगाने से शरीर का तनाव, सिर दर्द, आदि नहीं आता है। शरीर ठंडा रहता है और खास करने सें ठंडी रहती है।

पीपल के पेड़ की पूजा :–

यह एक ऐसा पेड़ है जो रात में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है। इस पेड़ को न काटने के लिए इसकी पूजा करते है।

भोजन में तीखा और मीठा खाना :–

भोजन के शुरुवात में तीखा खाने से हमारे पेट के अंदर पाचन तत्व एवं अम्ल सक्रिय हो जाते हैं। इससें पाचन ठीक से संचालित होता है। अंत में मीठा खाने से अम्ल की तीव्रता कम हो जाती है। इससे जलन नहीं होती हैं।

जमीन में बैठकर भोजन करना :–

पालती मारकर बैठना एक प्रकार का योगासन है। इस तरह बैठने से मस्तिष्क शांत रहता है भोजन का पाचन अच्छा रहता है।

मंदिर में प्रवेश करना :–

मंदिर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। मंदिर का गर्भगृह वो स्थान है जहां पृथ्वी की चुंबकीय तरंगे सबसे ज्यादा होता है। इस ऊर्जा को ग्रहण करेगें तो शरीर और मस्तिष्क स्वस्थ और शांत रहेगा।

नदियों में सिक्को को फेंकना :–

पुराने जमाने में तांबे के सिक्के पानी में फेकने की प्रथा थी क्योंकि तांबा एक महत्वपूर्ण धातु है जिससे शरीर के लिए कई लाभ है पहले सिर्फ नदी का पानी ही सेवन का जरीया था। इस प्रक्रिया से तांबे का लाभ शरीर को मिलता था।

इस प्रकार हम देख सकते है कि हर भारतीय संस्कृति, परंपरा और रीति रिवाज के पीछे कोई न कोई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तत्व मौजूद है। आज देश के में जो एक नकारात्मक माहौल पनप रहा है उसका कारण यही है कि हम सब अपनी परंपरा की जड से उखड़ गये है। जिन्होने हमें लुटा और गुलाम बनाया हम उनकी मान्याओं को स्वीकार कर रहे है। परन्तु सच यही की कोई भी रीति–रिवाज अंधविश्वास नहीं है अगर हम सही ढंग से उसके हर वैज्ञानिक तत्व को समझे और पकड़े तो हमारा जीवन और राष्ट्र का भविष्य हमेशा उज्जवल रहेगा। घर के बड़े बुजुर्ग लोग, अभिभावक, शिक्षक सभी का यह धार्मिक कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चे को भारतीय संस्कृति, परंपरा और रीति–रिवाज के पीछे छिपे वैज्ञानिक तत्वों से अवगत कराये। इन संस्कारों को अपनाना और पालन करना हर मानव का मंत्र होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. धर्म और विज्ञान–प्रो. तारकेश्वर प्रसाद सिंह।
2. धर्म और जीवन –स्वामी आत्माराम।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 74-77

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय रीति रिवाज और उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण

Jyotsna

Assistant Professor, Swami Vivekanand (P) College Of Management and Technology, Haldwani (Nainital) Uttarakhand

सार :–

किसी देश की संस्कृति उस देश की आत्मा को सम्बोधित करती है। देश के निवासियों का रहन–सहन, खान–पान, सामाजिक मान्यताये, रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास, परंपराएँ उस राज्य की वैज्ञानिक व आध्यात्मिक उन्नति आदि तत्व मिलकर उस देश की संस्कृति का निर्माण करतें हैं। पुरातन रीति–रिवाजों को तर्क के आधार पर देखने पर स्पष्ट होता है कि उनके पीछे वैज्ञानिक विचार छिपे है। धर्म और विज्ञान में एक खास संबंध है मानव कल्याण के लिए हमारे ऋषियों–मुनियों ने धर्म को सिधांत बनाकर उन्हें आस्था से जोड़ा। जब भी कोई नदी या नहर पार करता है, तो उसमें सिक्कों को डालता है, क्योंकि जल में तांबा जैसे पदार्थ होते हैं तथा नदी या जल श्रोतो में सिक्के फेंकने पर अक्सर कॉपर नदी के पानी से मिलता है जिससे नदी का पानी पीने से शरीर में कॉपर का संतुलन बना रहता है, यह धीरे–धीरे एक परंपरा और मान्यता बन गया। पुराने जमाने में खाना खाने के स्थान को पहले शुद्ध गाय के गोबर से लीपा जाता था तथा स्नान करने के पश्चात अल्प वस्त्रों में भोजन करने का चलन था जिसके पीछे वैज्ञानिक सोच रही कि साफ सुथरा स्थान पर साफ सुथरे वस्त्रों के साथ भोजन करने से वाह्य विकारों से बचा जा सकता है। रीति–रिवाज और परंपराएं हर किसी की व्यक्तिगत आस्था का सवाल होती हैं। लेकिन हिंदू धर्म में बहुत से ऐसे रीति–रिवाज हैं जिनके वैज्ञानिक आधार हैं। भारतीय कितने भी आधुनिक हो जाए, लोग आज भी कुछ परंपरा और रीति–रिवाज निभाते आ रहे हैं, क्योंकि ये भारतीयों की पहचान हैं। कई लोगों ने हमारी परंपराओं, संस्कृति और रीति–रिवाजों को सिर्फ हमारा अंधविश्वास का नाम दिया, जबकि भारतीय परंपराओं और रीति–रिवाजों के बारे में जानें तो हर एक परम्परा का अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा महत्व है। अतः इस लेख में भारतीय रीति–रिवाजों और उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा की गई है।

की–वर्ड :– रीति–रिवाज, परंपरा, संस्कृति, अंधविश्वास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

प्रस्तावना :–

भारत एक संस्कृति प्रधान देश है। इसे प्राचीन काल से सांस्कृतिक और पारंपरिक देश माना गया है। इस बात में कोई दो मत नहीं है कि भारत की सभ्यता और संस्कृति दुनिया में सबसे धनी और सभ्य है। भारतीय ग्रंथों और पुराणों में इसकी झलक देखने को मिलती है। यहां धर्मों की विविधता में एकता के मजबूत संबंध हैं, क्योंकि विभिन्न संस्कृति और परम्परा के लोग सामाजिक रूप से स्वतंत्र हैं। भारत में पूरब, पश्चिम, उत्तर तथा

दक्षिण में हर राज्य, हर शहर और हर गांव में अपनी–अपनी परम्पराएं तथा रीति–रिवाज हैं, संस्कृति में यह विविधता भारत को विभिन्न रीति–रिवाजों और परंपराओं वाला एक अनूठा देश बनाती है। ऐसी परम्पराएं बहुत से लोगों को आश्चर्य चकित करती हैं। भारत का इतिहास अति प्राचीन सभ्यताओं मे से एक है। प्राचीन काल से विश्व गुरु की भूमिका वाला भारत अपने आप मे सांस्कृतिक विरासत समाये हुए है। जब भी संस्कृति की चर्चा होगी वह भारतीय संस्कृति के बग़ैर अधूरी होगी संस्कृति का अर्थ है "उत्तम या सुधरी हुई स्थिति"। किसी देश के विकास मे संस्कृति का बहुत योग्दान होता है। देश की संस्कृति उसके मूल्य, प्रथाएँ, परंपराएँ एवं रीति रिवाजों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि यह दूसरी संस्कृतियों की विशेषताओं को सहर्ष अपना लेती है और इस तरह एक समकालीन और स्विकार्य परंपरा के तौर पर उभर जाती है। भारत एक विकासशील देश होने के साथ आधुनिक सोच भी रखता है इसके बावजूद भी यहाँ के वासियो ने अपनी परंपराएँ नहीं त्यागी हैं तथा ये विरासत के तौर पर बुजुर्गों से युवा पीढ़ी तक निरंतर आगे बढ़ती रहती है।

भारतीय धर्म ग्रंथों तथा पुराणों से पता चलता है कि प्राचीन काल से ही ऋषि–मुनि विशेष वैज्ञानिक ज्ञान रखते थे। वे जानते थे कि हम भारतीय बहुत ही आस्थावादी होते हैं, अतः ऋषि मुनियों ने मानव जीवन की भलाई के लिये रीति–रिवाजो को हमारी धर्म व आस्था से जोड़ा। भारत में परंपराएँ और रीती–रिवाज रोजमर्रा की जिंदगी का अभिन्न अंग बन गये हैं तथा ये भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं जन्म से लेकर मृत्यु तक एक भारतीय विभिन्न परंपराओ एवं रीति–रिवाजों का निर्वहन करता रहता है। भारत में लगभग हर अवसर के लिये कोई ना कोई परंपराएँ एवं रीति–रिवाज निर्धारित हैं। भारत में कई एसे परंपराएँ एवं रीति–रिवाज हैं जिन्हे हम सदियों से निभाते आ रहें हैं परंतु उनका वैज्ञानिक महत्व न पता होने के कारण युवा पीढ़ी द्वारा अंधविश्वास कहकर उनकी उपेक्षा की जा रही है, किंतु अब समय आ गया है कि हमें यह एहसास हो कि ह्मारे पूर्वज हमसें कही अधिक दूरदर्शी और बुद्धिमान थे उनका मानना था कि धर्म और विज्ञान विरोधी धाराएँ ना होकर इनके बीच गहरा संबन्ध है। वैश्वीकरण के साथ हमने इन परंपराओं के पीछे के वैज्ञानिक कारण ढूँढ लिए है। यहां कुछ ऐसे ही परंपराओ एवं रीति–रिवाजों की उनके वैज्ञानिक महत्व के साथ व्याख्या की गयी है।

रीति–रिवाज और उनका वैज्ञानिक परिपेक्ष्य :–

1. **हाथ जोड़कर नमस्ते करना :–** भारतीय लोग हर किसी को हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। यह वैज्ञानिक महत्व रखता है और किसी भी बाहरी व्यक्ति से परिचय करने का पहला कदम है। जब सभी उंगलियों के शीर्ष एक दूसरे पर दबाव डालते हैं एक्यूप्रेशर हमारी आंखों, कानों और दिमाग पर सीधा असर डालता है, इसलिए हम सामने वाले व्यक्ति को लंबे समय तक याद रख सकते हैं। हाथ मिलाने की अपेक्षा नमस्ते करने का दूसरा तर्क है कि सामने वाले के शरीर के कीटाणु आप तक नहीं पहुंच सकते।

2. **पीपल/तुलसी आदि की पूजा करना :–** तमाम लोग सोचते हैं कि पीपल की पूजा करने से भूत–प्रेत दूर भागते हैं, जबकि एसका वैज्ञानिक तर्क यह है कि इसकी पूजा इसलिये की जाती है, ताकि इस पेड़ के प्रति लोगों का सम्मान बढ़े और वे उसे काटें नहीं। पीपल एक मात्र ऐसा पेड़ है, जो रात में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है। तुलसी की पूजा करने से घर में समृद्धि आती है, सुख शांति बनी रहती है। क्यूँकि तुलसी इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है। लिहाजा अगर घर में तुलसी का पेड़ होगा, तो इसकी पत्तियों का इस्तेमाल भी

होगा और उससे बीमारियां दूर होंगी।

3. **माथे पर कुमकुम/तिलक लगाना :–** भारत में किसी भी शुभ कार्य से पूर्व पुरुष और महिला दोनों माथे पर तिलक या कुमकुम लगाने का रिवाज है। जिसका वैज्ञानिक तथ्य देखा जाये तो पता चलता है कि माथे से आंखों के बीच एक नस जाती है, कुमकुम या तिलक लगाने से उस स्थान की ऊर्जा बचती है। माथे पर तिलक लगाते समय उंगली या अंगूठे से दबाना, चेहरे की त्वचा को रक्त सप्लाई करने वाली मांसपेशी को सक्रिय करता है। इससे चेहरे की कोशिकाओं तक रक्त अच्छी तरह पहुंचता है।

4. **जमीन पर बैठकर भोजन करना :–** भारतीय संस्कृति के अनुसार जमीन पर बैठकर भोजन करना अच्छी बात होती है। वैज्ञानिक तर्क यह कहता है कि पालती मारकर बैठना एक प्रकार का योगासन है। इस पोजीशन में बैठने से मस्तिष्क शांत रहता है और भोजन करते वक्त अगर दिमाग शांत हो तो पाचन क्रिया अच्छी रहती है। इस पोजीशन में बैठते ही खुद–ब–खुद दिमाग से एक सिगनल पेट तक जाता है, कि वह भोजन के लिये तैयार हो जाये।

5. **दक्षिण की तरफ सिर करके सोना :–** भारतीय परंपरा के अनुसार दक्षिण की तरफ कोई पैर करके सोता है, तो लोग कहते हैं कि बुरे सपने आयेंगे, भूत प्रेत का साया आ जायेगा, आदि। इसलिये उत्तर की ओर पैर करके सोयें। वैज्ञानिक तर्क है कि जब हम उत्तर की ओर सिर करके सोते हैं, तब हमारा शरीर पृथ्वी की चुंबकीय तरंगों की सीध में आ जाता है। शरीर में मौजूद आयरन यानी लोहा दिमाग की ओर संचारित होने लगता है। इससे अलजाइमर या दिमाग संबंधी बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है, यही नहीं रक्तचाप भी बढ़ जाता है।

6. **भारतीय महिलाओं द्वारा सिंदूर, चूड़ी, बिछिया और मेहन्दी लगाना :–** शादीशुदा हिंदू महिलाएं सिंदूर लगाती हैं, क्यूँकि सिंदूर में हल्दी, चूना और मरकरी होता है। यह मिश्रण शरीर के रक्तचाप को नियंत्रित करता है। चूंकि इससे यौन उत्तेजनाएं भी बढ़ती हैं, इसीलिये विधवा औरतों के लिये सिंदूर लगाना वर्जित है, इससे स्ट्रेस कम होता है।

चूड़ी पहनना भारतीय महिलाएं हाथों में चूडियां पहनती हैं। हाथों में चूडियां पहनने से त्वचा और चूड़ी के बीच जब घर्षण होता है, तो उसमें एक प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होती है, यह ऊर्जा शरीर के रक्त संचार को नियंत्रित करती है। साथ ही ढेर सारी चूड़ियां होने की वजह से वो ऊर्जा बाहर निकलने के बजाये, शरीर के अंदर चली जाती है। ऐसे ही हमारे देश में शादीशुदा महिला बिछिया पहनती हैं, जो पैर की दूसरी उंगली में पहना जाता है जो चाँदी का बना होता है। उस दुसरी उंगली की नस का कनेक्शन बच्चेदानी से होता है। बिछिया पहनने से बच्चेदानी तक पहुंचने वाला रक्त का प्रवाह सही बना रहता है। इसे बच्चेदानी स्वस्थ्य बनी रहती है और मासिक धर्म नियमित रहता है। चांदी पृथ्वी से ऊर्जा को ग्रहण करती है और उसका संचार महिला के शरीर में करती है। महिलाएं शादी–ब्याह और तीज–त्योहार पर हाथ–पैरों में मेंहदी लगाते हैं ताकि वे सुंदर दिखें। लेकिन इसके पीछे का वैज्ञानिक तर्क यह है कि मेंहदी एक जड़ी बूटी है, जिसे लगाने से बुखार, सिर दर्द, तनाव कम होता है। शरीर ठंडा रहता है, खासकर दिमाग से जुड़ी नस। यही कारण है कि शादी हो या तीज–त्योहार महिलाएँ बड़ी सहजता से तनावमुक्त होकर सारे कार्य करती हैं।

7. **मंदिर में घंटा बजाना :–** हिंदू मान्यता के अनुसार मंदिर में प्रवेश करते वक्त घंटा बजाना शुभ होता है। इससे बुरी शक्तियां दूर भागती हैं। वैज्ञानिक तर्क के अनुसार घंटे की ध्वनि हमारे मस्तिष्क में विपरीत तरंगों को

दूर करती हैं और इससे पूजा के लिये एकाग्रता बनती है। घंटे की आवाज़ 7 सेकेंड तक हमारे दिमाग में ईको करती है। और इससे हमारे शरीर के सात उपचारात्मक केंद्र खुल जाते हैं। हमारे दिमाग से नकारात्मक सोच भाग जाती है।

8. **नदियों/कुंओं में सिक्का डालना :–** भारतीय रिवाज है कि नदियों/कुँओं या जल श्रोतो में लोगों सिक्के फेंकते हैं जिसे भाग्यशाली होने का प्रतीक माना जाता है। इसके पीछे वैज्ञानिक महत्व यह है कि सिक्के कॉपर से बनाए गए हैं और नदी या जल श्रोतो में फेंकने पर अक्सर कॉपर नदी के पानी से मिलता है जिससे नदी का पानी पीने से शरीर में कॉपर का संतुलन बना रहता है।

उपसंहार :–

भारत एक उत्सव प्रिय देश है जहां हम लगभग सालभर ही तमाम तरह के त्यौहार मनाते हैं और रीति–रिवाजों का आनंद लेते हैं। हिंदू धर्म में परंपराओं को मुख्य रूप से अंधविश्वास माना जाता था, लेकिन विज्ञान के आगमन से स्पष्ट हो गया है कि ये परंपराएं कुछ वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित हैं और पीढ़ियों से पीढ़ियों तक चलती रहती हैं। भारत चाहे सफलता के किसी भी शिखर पर पहुँच जाये फिर भी हमें सदैव ही अपने इन अजेय परंपराओं एवं रीति रिवाजों की आवश्यकता पड़ती रहेगी क्यूँकि यही भारत जैसे विशाल देश की उन्नति तथा समृद्धि का आधार हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

1. Anonymous: https://www.jagran.com/uttar&pradesh/mainpuri&12964639-html
2. Anonymous: https://www.ijrdo.org/index.php/sshr/article/view/3874
3. Anonymous:https://www.ghumodunia.com/know&the&scientific&significance&behind&20&superstitious&hindu&traditions&of&india&201261.
4. Anonymous: https://hindi.oneindia.com/religion&spirituality/20&scientific&reasons&behind&hindu&traditions&355435.html.

Mail ID - Jyotshna0185@gmail.com

Mob. No. 9639912987

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
April 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 78-82
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृति और रीति रिवाज – दक्षिण भारत के परिदृश्य में

Dr. K. Priya Naidu
Associate Professor (Hindi), Head Department of Languages,
Women's Christian College, Chennai – 600 006

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। समय के साथ–साथ अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो नष्ट होती रही है, किन्तु भारत की संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अमर बनी हुई है।

भारत देश त्यौहारों का देश है, यहाँ विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं। पंजाब में बैसाखी, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, असम में बिहू आदि त्यौहार काफी हर्ष उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। भारत के विभिन्न भागों में खाने–पीने का ढंग उनकी संस्कृति के मुताबिक अलग–अलग है, बंगाल में जहाँ मछली चावल प्रसिद्ध है वहीं दक्षिण में इडली दोसा सांबार, पंजाब में मक्के की रोटी और सरसों का साग अनेक विभिन्नताओं के बावजूद भी भारत की पृथक सांस्कृतिक सत्ता बनी रही है।

दक्षिण भारत की संस्कृति में बहुत सारे रीति और रिवाज हैं। पोंगल, संक्राति दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है जो खेती के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इसमें धान का पर्वान किया जाता है। तमिलनाडु में यह पर्व 4 दिनों तक मनाया जाता है। सरकार भी स्कूल और कॉलेजों की छुट्टी देती है। जलिकट्टु इस पर्व का एक पारंपरिक खेल है जिसे लोग सामूहिक रूप से उत्सवों और आत्मसात से प्रस्तुत करते हैं। दक्षिण भारत और उसका साहित्य एक अमूल्य धरोहर है। कविता, कहानी, नाटक और गाने का बहुत ही समृद्ध विरासत है।

उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार विविध प्रकार के होते हुए भी उनमें समानता है। विभिन्न रीति–रिवाज, आचार–विचार और तीज–त्यौहारों में भी समानता है, भाषाओं की विविधता अवश्य है फिर भी संगीत, नृत्य और नाटक के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है। संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित है। भारत अनेक धर्मों संप्रदायों मतों और पृथक आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए विस्मय का विषय रहा है।

प्रत्येक जीवन पद्धति रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार से

मनुष्य, पशुओं और जंगलवासियों से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता संस्कृति का अंग है, सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति का पता चलता है जबकि संस्कृति से मानसिक एवं सामाजिक क्षेत्र की प्रगति की जानकारी हमें मिलती है।

प्राचीन काल से प्रकृति की पूजा, जंगल एवं वृक्ष की पूजा आदि हमारे संस्कृति के अंग बन गए हैं जो आज भी उसी रूप में पूरे देश में व्याप्त हैं, चाहे वह वटवृक्ष, पीपल, तुलसी का पौधा हो या फिर छठ पूजा जैसे अनुष्ठान में भगवान सूर्य की पूजा की बात हो, आज भी हमारे समाज तथा संस्कृति की पहचान बने हुए हैं। हम भारतीयों का मानना है कि भगवान हर चीज में निवास करते हैं जैसे पेड़, किताबें, हथियार आदि। यही कारण है कि अनुष्ठानों और समारोहों के माध्यम से दैनिक जीवन के हर पहलू का सम्मान किया जाता है। ऐसा ही एक रिवाज है हथियार या शस्त्र पूजा (आयुद पूजै)। इस दिन सभी कार्योलयों, घरों में जिन जिन वस्तुओं का हम अपने दिनचर्या के काम में प्रयोग करते हैं उन वस्तुओं की पूजा की जाती है। जैसे गाड़ी, किताबें, रसोई में काम आने वाली वस्तुएँ, कार्यालयों में उपयोगी वस्तुएँ आदि।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म, हिन्दू दर्शन तथा वेद है, जिसके कारण हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति या कोई भी संस्कृति जिसका आधार वास्तविक धर्म में है, कभी नष्ट नहीं हो सकती या उसका रंग रूप बदल सकता है, शैली बदल सकती है, प्राचीन सूत्रों की व्याख्याएँ बदल सकती हैं लेकिन धर्म की बुनियाद नहीं बदलती। भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है, वस्तुतः इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई है जो आज भी विद्यमान हैं तथा भविष्य में भी जारी रहेंगी।

विवाह हमारे जीवन और रिश्तों की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। अंतर पारिवारिक विवाह का प्रचलन दक्षिण भारत में कुछ समुदायों के बीच है। जैसे ममेरे फुफेरे भाई–बहनों के साथ विवाह, भांजी से मामा का विवाह, यह प्रथा अनादि कालों से चली आ रही है। दक्षिण भारत के कई समाजों में पारंपरिक रीति–रिवाजों, विश्वासों और परिवार में ही संपत्ति को बनाए रखने के लिए भी आम तौर पर यह विवाह काफी प्रचलित है। लेकिन अब शिक्षा के प्रभाव और प्रेम विवाह के अधिक प्रभाव के कारण यह प्रथा बहुत कम होती जा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह प्रथा उत्तर भारत में भी प्रचलित थी जिसका प्रमाण कुंती और श्रीकृष्ण के परिवारों के संबंधों के माध्यम से हमे पता चलता है। वैदिक संस्कार के विधान का पालन दक्षिण में सही रूप से होता है।

भारतीय रीति–रिवाजों में उपवास रखना तो सदियों से चला आ रहा है। उपवास को हिन्दू धर्म में बहुत महत्व दिया गया है नवरात्रि का व्रत, सोलह सोमवार का व्रत, जन्माष्टमी का व्रत, करवा चौथ आदि कितने ही मौकों पर हिन्दू धर्म में उपवास रखा जाता है, ठीक इसी प्रकार मुस्लिम धर्म में रमजान के महीने में रोजा रखा जाता है, ईसाई धर्म में भी ईस्टर के पर्व में उपवास रखा जाता है। यह माना जाता है कि उपवास रखने से हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। किसी भी परंपरा या रीति रिवाज को जब मन और श्रद्धा से किया जाए तो वह अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने में सहायक होता है।

दक्षिण भारत में लोग अपने देवता के प्रति समर्पण को साबित करने के लिए जलते हुए कोयले पर भी चलते हैं। इस विचित्र परम्परा को थिमिथि या पूमिथि कहा जाता है, जो विशेष महिनों में चलने वाले समारोहों का एक खास हिस्सा है। इस दौरान लोग जलते हुए अंगारों पर नंगे पैर चलते हैं। यह रिवाज सीता मैया और द्रोपदी के प्रति समर्पण को साबित करने के लिए किया जाता है। कई लोग अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए भी ऐसा करते हैं। यह प्रथा अब श्रीलंका, मलेसिया, सिंगापुर जैसे देशों में भी फैल गई है।

दक्षिण भारत के कई राज्यों में देवताओं का नृत्य जैसा रीति—रिवाज बडे ही धूम—धान के साथ मनाया जाता है। स्थानीय लोगों के अनुसार ईश्वर व्यक्तियों के अंदर प्रवेश करते हैं और ढोल नगाडा की थाप पर नृत्य करते और आग पर भी चलते हैं। इस मौके पर लाखों भक्तों की भीड उनसे आर्शिवचन लेने के लिए मौजूद रहती है।

दक्षिण भारत के कुछ शहरों में विभिन्न प्रकार के रीति—रिवाज को अपनाया जाता है जो दिखने में हिंसाकारक लगता है और लोग आज भी उसका अनुसरण कर रहे हैं। इसे बानी उत्सव कहा जाता है। इस उत्सव में लोग एक दूसरे को लाठी से पीटते हैं। यह उत्सव दशहरा के दौरान मध्यरात्रि में होता है जब मल्लेश्वर स्वामी यानी भगवान शिव और मलम्मा देवी पार्वती की मूर्तियों को मंदिर में लाया जाता है उसके बाद जुलूस शुरू होता है जहाँ किसान एक दूसरे को पिटते हैं। पूरा शरीर खून से लथपथ होने पर भी जगह से हिलते नहीं है। ऐसा ही एक हिंसाकारक रीति—रिवाज दक्षिण भारत के कई राज्यों में मनाया जाता है— सिर पर नारियल फोड़ना। इसके पिछे यह धारणा है कि सिर पर नारियल फोडने से देवता प्रसन्न होते हैं और कस्बों में समृद्धि और जन कल्याण करते हैं।

तमिलनाडु शब्द का शाब्दिक अर्थ है तमिलों की भूमि। भारतीय संघ के अत्यधिक विकसित राज्यों में इसे गिना जाता है। यहाँ की आधिकारिक भाषा तमिल है। यह विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है, यद्यपि राज्य में तमिल के अतिरिक्त अन्य भाषाएँ भी बोली जाती है। इन भाषाओं में तेलुगु, उर्दू, मलयालम एवं हिंदी प्रमुख हैं। साथ ही तमिलनाडु प्राचीन समुदायों द्वारा बोली जाने वाली अनेक भारतीय भाषाओं का भी प्रदेश है। यहाँ की जनता अपनी शास्त्रीय संस्कृति को संरक्षित करने के साथ—साथ उसे प्रोत्साहित भी करते रहे हैं। समृद्ध तमिल भाषा और साहित्य, यहाँ के निवासियों का रहन—सहन उनकी खान—पान संबंधी आदतें तथा वेश—भूषा सब इस बात का प्रमाण है।

दक्षिण भारत की महिलाएँ आज भी परंपरागत पहनावा पहनती हैं — बच्चे पावाडै, युवतियाँ पावाडै दावानी, महिलाएँ साड़ी। कांचीपुरम मंदिरों का एक भव्य शहर है। कांचीपुरम की साडियाँ तमिलनाडु की राजसी साड़ी है जो विशेष रूप से कांचीपुरम शहर से निर्मित होती है। कांचीपुरम सिल्क की साडियों की आज भी बहुत माँग है। क्योंकि महिलाएँ महत्वपूर्ण अवसरों जैसे विवाह तथा पर्वों पर ऐसी साडियाँ पहनना पसंद करती हैं। पुरूष वर्ग भी धोती कुर्ता या शर्ट पहनते हैं। केरल की बुजुर्ग महिलाएँ सिर्फ लूँगी और ब्लाउज पहनती हैं। त्यौहारों के दौरान कसावु नामक सेट साड़ियाँ पहनती हैं। मूँडू केरल की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है जो लुंगी और धोती के समान है।

दक्षिण भारत का प्रमुख व्यंजन चावल है। यहाँ चावल से बने कई पकवान मशहूर है। नाश्ते के रूप में इडली—ढोसा, अडै, घी पुट्टु, वेन पोंगल, भोजन के रूप में विभिन्न प्रकार के चावल, रागी से बने पकवान, जोलड

रोटी, चावल की कई मिठाईयाँ भी मुँह में लार टपकाती हैं जैसे अदीरसम, कुळी पनिहारम, मुरूक्कु, चकरै पोंगल, आदि। केरल का सद्या भोज समारोहों और त्यौहारों के दौरान बहुत ही मशहूर है। दक्षिण भारत के कई भोजनालयों में इसको खास तौर पर तैयार किया जाता है। इस राज्य की एक और खासियत नारियल से बने व्यंजन है, भोजन भी अधिकतर नारियल तेल से ही बनाये जाते हैं जो कि स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं। आंध्र प्रदेश के व्यंजन में बंदर लड्डु गोंगुरा, पप्पू चारू, ओबट्टु आदि मशहूर हैं।

दक्षिण भारत का कर्नाटक राज्य अपनी विरासत और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। कर्नाटक के कई त्यौहार कला, धर्म, मौसम आदि के नाम पर आयोजित किए जाते हैं। कर्नाटक अपने अजीबो गरीब कंबाला उत्सव के लिए काफी मशहूर है जो एक तरह की भैंस दौड़ प्रतियोगिता है। कर्नाटक का अन्य मुख्य त्यौहार उगादी, (नव वर्ष) मैसूर दशहरा जो संपूर्ण भारत में लोकप्रिय है, हिंदू देवी चामुंडेश्वरी के सम्मान में दस दिन यह त्यौहार मनाया जाता है। कन्नडी अपनी सरल जीवन शैली अपने अनूठे रीति—रिवाजों, मोहक संस्कृति और परम्पराओं की झलक इनके त्यौहार, उत्सव, वेशभूषा, गहने संगीत और उनके खान—पान में भी देखा जा सकता है। कर्नाटक संगीत पर आधारित एक अन्य शास्त्रीय संगीत शैली है, जिसका प्रचलन पूरे देश में है।

दक्षिण भारत के केरल प्रदेश की उत्कृष्ट संस्कृति भारतीय और द्रविड दोनों शैलियों का मिश्रण हैं। केरल की विभिन्न लोक संस्कृतियाँ कथकली, मोहिनी आट्टम है, यह भारत के सबसे प्रसिद्ध नृत्य रूपों में से एक है। ओणम अगस्त सितंबर के महीने में मनाया जाता है। यह भी एक फसलों का उत्सव है। उत्सव के दौरान महिलाएँ फर्शों पर फूलों से रंगोली बनाती हैं। विभिन्न प्रकार के नृत्य, वल्लमकली नामक स्नेक बोट रेस आदि का आयोजन किया जाता है। विशु केरलवासियों का नव वर्ष है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर सबसे पहले भगवान का चेहरा देखने की एक रस्म है। बड़े बुजुर्ग अपनी क्षमता के अनुसार छोटों को उपहार भेंट करते हैं। केरल राज्य केकई अनुष्ठान होते हैं जो अधिकांश मंदिर में मनाये जाते हैं। एक अनुष्ठान देवी काली के लिए किया जाता है जिसमें नर्तक काली माँ के रूप में तैयार होते हैं और दुष्ट राक्षस दारिकन को हटाने और नष्ट करने के लिए गाँव कें सभी मंदिरों में नृत्य करते हैं। अथचमायम एक हाथियों का मार्च है। केरल का राज्य पशु हाथी है। सभी धार्मिक त्यौहारों के दौरान मंदिरों के बाहर पाए जाते हैं। हाथियों को शैया के पुत्र के रूप में जाना जाता है।

दक्षिण भारत का एक और शहर है आंध्र प्रदेश, जो की अब तेलंगाना और आंध्रा दो में विभाजित हो चुका है। कुचीपुडी आंध्र प्रदेश की समृद्ध शास्कीय नृत्य है। यहाँ का तिरुपति या तिरुमला भगवान वेंकटेश्वर का प्रसिद्ध मंदिर पुरी दुनिया में मशहूर है। कहा जाता है कि यह दुनिया का सबसे धनवान मंदिरों में से एक है। सिम्माहचलम पौराणिक कथाओं के देवता नरसिम्हा का निवास स्थान है जिन्होंने प्रहलाद को अपमानजनक पिता हिरण्यकश्यप से बचाया। यहाँ का श्रीशैलम शिव भगवान को समर्पित है। यह विभिन्न ज्योतिलिंगों के स्थानों में से एक है।

हमारे भारत की खासियत है कि हम हमारे त्यौहारों पर जैसे होली, दीपावली नवदुर्गा आदि पर्वों पर हमारे घर के आंगन में विभिन्न प्रकार की रंगो से भरी रंगोली बनाते हैं। यह माना जाता है कि जिसके घर में इसका सुंदर अंकन होता है वहाँ लक्ष्मी देवी निवास करती हैं। दक्षिण भारत में रंगोली हर घर में हर दिन बनाया जाता है। यह रिवाज है कि सुबह—सुबह उठते ही महिलाएँ स्नान कर आंगन को पानी से धोकर रंगोली बनाती हैं। पुरूष या घर को कोई भी सदस्य सुबह घर से बाहर निकलने के पहले यह कार्य सम्पन्न किया जाता है। रंगोली

को देखकर किसी भी कार्य के लिए जाना शुभ माना जाता है। यह माना जाता है कि घर के आंगन में बनाई गई रंगोली बुरी आत्माओं को घर में प्रवेश करने से रोकती हैं। रंगोली के चारों तरफ दो लकीर खींची जाती है, कहते हैं कि इनसे अच्छे कर्म होंगे। माना जाता है कि नक्षत्र के आकार में बनी रंगोली भूत प्रेत को दूर रखती है। इसलिए कहा जाता है कि हमें रंगोली को लांगकर या उस पर पैर रखकर नहीं जाना चाहिए। पूजा घर में भी रंगोली बनाई जाती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ये कुछ मुख्य दक्षिण भारत के रीति और रिवाज हैं, जो उसकी संस्कृति और विरासत को अद्वितीय बनाते हैं। तमिल भाषा में एक कहावत है कट्टरदु कई अलवु, कट्टराद्दु कडळ अलवु। अर्थात् जो हमने सिखा वह सिर्फ हमारी मुट्ठी भर ही है, जो नहीं सिखा या न जाना वह सागर समान गहरा और विशाल है। इसके अलावा भी कई रीति और रिवाज दक्षिण भारत के परिदृश्य में है जिन्हें हम बहुत कम ही जानते हैं।

संदर्भ सूचि :-

1. https://shorturl.at/fmxAK
2. https://shorturl.at/almu8
3. https://shorturl.at/dgvCS
4. https://shorturl.at/cCI13
5. https://shorturl.at.blmCF
6. भारतीय संस्कृति के मूलतत्व – सोती वीरेन्द्र चन्द्र।
7. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व – राष्ट्रिय पंडित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 83-87

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संजीव के उपन्यासों में सामाजिक मान्यताओं का वैज्ञानिक अध्ययन

किरण

पीएच.डी. हिन्दी, शोधार्थी, किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश –281001

कोई भी साहित्य अपने समाज से अछूता नहीं रह सकता है। साहित्य का प्रतिभा प्रसाद समाज के वातावरण पर ही खड़ा होता है। यह स्पष्ट देखा जाता है कि जैसा समाज होता है वैसा ही उस काल का साहित्य बन जाता है। उदाहरण के लिए हिंदी साहित्य का आदिकाल एक प्रकार से युद्ध युग था। समाज में शौर्य और बलिदान की भावना थी वीरयोद्धा प्राणोत्सर्ग करना सामान्य बात समझते थे। फलस्वरूप वीरगाथा काव्यों की रचना हुई। परवर्ती काल में मुगलों के आक्रमण से हिन्दू जनता पीड़ित थी। इस कारण सूर और तुलसी आदि भक्त कवियों ने भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया तथा सामाजिक समन्वय की भरपूर चेष्टा की। वर्तमान काल में साहित्य में सामाजिक दृष्टिकोण का परिचायक है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि समय की परिवर्तनशीलता के कारण समाज का साहित्य पर भी प्रभाव पड़ता है।

संजीव हिंदी साहित्य जगत के एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। संजीव ने अपने साहित्य सृजन कर्म से साहित्य प्रेमियों को ऐसी अमूल्य रचनाएँ प्रदान की है जिनकी उपयोगिता कालजयी है। संजीव एक शोधक के रूप में अपने उपन्यासों को पाठक के सामने रखते हैं क्योंकि उनका मानना है कि वे शोध के बिना साहित्य सृजन नहीं कर सकते। इसीलिए वे खोजी प्रवृत्ति के साहित्यकार हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में है – अहेर, सर्कस, धार, सावधान! नीचे आग है, पाँव तले की दूब, जंगल जहाँ शुरू होता है, आकाश चम्पा, रह गई दिशाएँ इसी पार, प्रत्यंचा और मुझे पहचानो। संजीव के प्रत्येक उपन्यास में समाज के एक ऐसे वर्ग को रेखांकित किया गया है जो समाज का अभिन्न अंग होते हुए भी उससे अछूता और अनभिज्ञ–सा दिखाई देता है।

'धार' उपन्यास में संथाल परगना में कोयले की खदानों में काम करने वाले मजदूरों का चित्रण हुआ है। उपन्यास के केन्द्र में संथाल परगना का बॉसगड़ा अंचल और आदिवासी है। ये आदिवासी मजदूर पेट की आग के कारण कोयले की खदानों में काम करने जाते हैं। कभी जहरीली वायु फैलने के कारण, कभी धरती के धँसने के कारण तो कभी पानी भरने के कारण उन्हीं खदानों में समा जाते हैं। इसके अलावा प्रस्तुत इस उपन्यास में पूँजीवादी व्यवस्था, बिचौलियों की कुटिलताएँ, अवैध खनन, माफिया गिरोह का आतंक, श्रमजीवियों का शोषण, आदिवासियों का जीवन आदि का भी चित्रण हुआ है।

वर्तमान समय में आदिवासी समाज की स्थिति पहले से खराब होती जा रही है। उनसे वह सब कुछ

छिनता जा रहा है, जिसे प्राप्त करने का वह हकदार हैं। संजीव के श्धारश उपन्यास में इसका सजीव चित्रण दिखाई देता है, जिसमें संथाल आदिवासी गरीबी तथा बेगारी में जीवन बिताते हैं। उद्योगपति महेंद्र बाबू आदिवासी इलाके में तेजाब का कारखाना शुरू करते हैं, जिसके पानी से कुएँ, तालाब सब दूषित हो जाते हैं। अतः आदिवासियों को नई समस्याओं से जूझना पड़ता है। उपन्यास की मैना अपने समाज की हालत को बयाँ करती हुई कहती है – 'खेत–खतार, पेड़, रूख, कुआँ, तालाब, हम और हमारा बाल–बच्चा तक आज तेजाब में गल रहा है, भूख में जल रहा है। पहले हम चोरी का चीज है नहीं जानता था, भीख कब्भी नहीं माँगा....इज्जत कभी नहीं बेचा, आज हम सब करता।'[1] मैना के माध्यम से उपन्यासकार ने वर्तमान कालीन आदिवासियों के जीवन का कड़वा सच प्रस्तुत किया है कि आदिवासी समाज आज किस तरह बेबस जीवन जीने के लिए अभिशप्त है।

आज आदिवासी का हर वर्ग शोषण का शिकार है। ऐसा भी नहीं है कि आदिवासी इस शोषण के प्रति मौन रहते हैं। उनमें भी अब चेतना आयी है, वे भी अब संगठन शक्ति का महत्व पहचानने लगे है। संजीव के 'धार' उपन्यास में यही स्थिति अंकित है, जहाँ अविनाश शर्मा तथा मैना खदान में आदिवासियों के साथ काम करते हैं, जिसमें कोयला निकलता है, लेकिन शोषण का सिलसिला यहाँ भी दिखाई देता है, इसीलिए आदिवासी साथियों से अविनाश शर्मा अपनी संगठन शक्ति का एहसास दिलाते हैं। 'तो साथियों यह धार हमारी शक्ति है और धार का भोथरा होना ही मौत....धार बरकरार रही है तो सारा संसार ही आपका है। इसलिए हमें धार की जरूरत है सतत सान से ताजा होती धार चाहिए हमें कोई भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े।'[2]

आज हम भले ही कितना भी क्यों न कह लें कि आदिवासी क्षेत्रों में संचार माध्यमों का विकास बहुत तेजी से हुआ है, किन्तु हकीकत है कि मेरे अध्ययन क्षेत्र में संचार माध्यमों का विकास कुछ ही प्रतिशत तक सीमित है और उसकी भी क्या सार्थकता है यह हमें समझने की जरूरत है। जनजातियों के लिए सड़कें सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं पर इसी के बन जाने मात्र से ही विकास संभव नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह संचार माध्यम से होने वाले विकास के प्रति आदिवासियों को जागरूक करें और साथ ही इसके विपरीत पड़ने वाले प्रभाव के प्रति भी उन्हें सचेत रखें।

संजीव के उपन्यासों में नारी आधुनिकता की प्रतिमूर्ति है। संजीव की नारी पात्र अपने समय के अनुगूँज को स्वयं में अनुभूत करने वाली तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग विद्रोहिणी नारी है। वह नारी के सभी सुंदर और ग्राह्य गुणों के साथ अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए भी जागरुक है। वह समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह बहुत ही सशक्त रूप में करती है। 'धार' उपन्यास की मुख्य पात्र मैना मर्दवादी व्यवस्था को तोड़ती आदिवासी नारी है। उसमें स्त्री सुलभ सात्विकताएँ, सुंदरता, दया, ममता, प्रेम आदि गुण हैं तो दूसरी ओर अन्यायी, अत्याचारी समाज–व्यवस्था और भोग प्रधान पुरुषवादी व्यवस्था से आक्रोश और विद्रोह कूट–कूट कर भरा हुआ है। मैना की अपनी एक जीवन शैली है और अपनी नैतिकता है। वह अपने समाज और बिरादरी वालों की परवाह न करते हुए बिना शादी के मंगल के साथ रहती है। जब वह पैसे के लालच में खलासी के साथ व्यभिचार करती रमिया को पकड़कर उसके बाप के पास ले जाती है तब गाँव वाले उसे ही भला बुरा कहते हैं

और मैना का विरोध करने लगते हैं। तब वह निडरता से कहती है– 'मैना का जब मन चाहा मरद किया, मन से उतर गया छोड़ दिया, मरजी से किया मजबूरी से नहीं। असल बाप का बेटा हो तो पहले मैना बनके दिखाना तब बात करना।'[3] इस कथन से उसके स्वाभिमानी व्यक्तित्व का परिचय होता है।

मैना अपने समाज से अत्यधिक प्रेम करती है इसलिए वह अविनाश शर्मा के जनमोर्चा से मिलकर सबको रोजगार मिले ऐसी जनखदान का निर्माण करती है। उसके इस कार्य से उसके प्रगतिवादी चरित्र का परिचय मिलता है। संजीव ने मैना के माध्यम से समाज की स्त्री वर्ग को प्रतिकूल व्यवस्था को परिवर्तित करने की प्रबल प्रेरणा देने का अमूल्य कार्य किया है। मैना एक साधारण अनपढ़ आदिवासी स्त्री है, जो अपनी सोच और विचारों से पुरुषवादी समाज व्यवस्था से संघर्ष कर असामान्य बन जाती है।

संजीव ने प्रेमचंद के बाद किसानों की समस्या को व्यापक फलक पर चित्रित किया है। 'फाँस' उपन्यास के माध्यम से संजीव ने किसानों की दुर्दशा को सबके सामने खोल कर रख दिया है। उपन्यास के समर्पण में संजीव जी लिखते हैं कि – 'सबका पेट भरने और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों और उनके परिवारों को जिनकी 'हत्या' या 'आत्महत्या' को हम रोक नहीं पा रहे है।'[4] इस उपन्यास के विषय में प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि– 'भारत में अब तक तीन लाख से अधिक संख्या में किसानों ने आत्महत्या की है। यह मानवता के इतिहास की एक भयावह त्रासदी है और अमानवीय समाज–व्यवस्था का भीषण अपराध भी। इस त्रासदी और अपराध के प्रतिरोध की प्रवृत्ति पैदा करने वाला यह उपन्यास 'फाँस' प्रेमचंद के कथा–साहित्य की प्रगतिशील परंपरा का आज की स्थिति में विकास करेगा।'[5] (उपन्यास के फ्लैट से साभार)। खेती–किसानी के सीमित साधन, आर्थिक तंगी तथा सूखे की मार झेलता 'शिबू' इस खेती–किसानी के लिए सरकारी बैंकों तथा सेठ–साहूकारों से इतना कर्ज ले चुका था कि यह कर्ज अब उसके गले की 'फाँस' बन चुका था। ऐसे में अपनी दोनों मुलगियों की शादी के लिए दहेज के लाखों रुपये तथा गाड़ी के पैसे वह कहाँ से ले आता। 'शिबू' के अन्तर्मन में द्वंद चल रहा था कि वह क्या करें। किसी तरह उसने अपनी बायको (पत्नी) की मदद से एक दिन अपने गले में पड़े कर्ज रूपी फंदे को निकाल तो लेना है लेकिन उसके बाद भी वह समय और समाज की मार झेल नहीं पाता, अंततः एक दिन कुएँ में कूदकर जान दे देता है। शिबू की कहानी किसी एक किसान या एक घर की कहानी नहीं है बल्कि आत्महत्या के लिए मजबूर उन समस्त भारतीय किसानों की महागाथा है जो इस खेती–किसानी के पेशे में बुरी तरह फँसकर अपना जीवन दाँव पर लगा दे रहे हैं। इस प्रकार से यह कथा विदर्भ के किसानों की कथा के साथ साथ समस्त भारतीय किसानों तथा उनके परिवारों की भी व्यथा कथा है। उपन्यास की पात्र छोटी (कलावती) कहती है – 'भारतीय किसान कर्ज में जन्म लेता है, कर्ज में ही बड़ा होता है, कर्ज में ही मर जाता है।'[6] यह कथन कितना हृदय विदारक, मारक, भयावह किंतु आज के समय का एक कटु सत्य है।

किसानों की माँग मुफ्त बिजली और पानी नहीं है, बल्कि बिजली की निर्बाध आपूर्ति के लिए हैं जिसके लिए वे भुगतान करने के लिए तैयार है। पंजाब जैसे राज्यों में, पहली बार में हरित क्रांति से किसानों को बहुत

मदद मिली लेकिन कम कीमतों मैं बम्पर फसलों की उपज के कारण उनके काम मैं बधाओ ने आना शुरु कर दिया। भारतीय किसानों की हालत में सुधार किया जाना चाहिए। उन्हे खेती की आधुनिक विधि सिखाया जाना चाहिए। उन्हे साक्षर बनाया जाना चाहिए। उनको पढा लिखा बनाना चाहिए। वह हर संभव तरीके में सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए। छोटे किसानों ने भी कुछ कुटीर उद्योग शुरू करने का निर्णय ले लिया। फसल चक्र प्रणाली और अनुबंध फसल प्रणाली कुछ राज्यों में शुरू कर दिया गया। इस तरह के कदम किसानो को सही दिशा में ले जाते और लंबे समय तक किसानी करने में मदद करते। भारत का कल्याण किसानो पर ही निर्भर करता है।

भारतीय कृषि की तरक्की में एक बड़ी बाधा अच्छी परिवहन व्यवस्था की कमी भी है। आज भी देश के कई गांव और केंद्र ऐसे हैं जो बाजारों और शहरों से नहीं जुड़े हैं। वहीं कुछ सड़कों पर मौसम का भी खासा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में, किसान स्थानीय बाजारों में ही कम मूल्य पर सामान बेच देते हैं। कृषि क्षेत्र को इस समस्या से उबारने के लिए बड़ी धनराशि के साथ–साथ मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता भी चाहिए।

कृषि क्षेत्र में अब मशीनों का प्रयोग होने लगा है लेकिन अब भी कुछ इलाके ऐसे हैं जहां एक बड़ा काम अब भी किसान स्वयं करते हैं। वे कृषि में पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। खासकर ऐसे मामले छोटे और सीमांत किसानों के साथ अधिक देखने को मिलते हैं। इसका असर भी कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और लागत पर साफ नजर आता है।

विर्दभ में लगातार सूखा पड़ रहा है, रबी के मौसम में या तो पानी या उधार न मिलने के कारण किसानों को भूमि खाली छोड़नी पड़ती। भूमि खाली छोड़ने की वजह से भूमि की उपज खराब होने का भी खतरा होता है। जो लोग अन्य के खेतों में काम करते उन्हें भी सूखे के कारण खाली बैठना पड़ता। पानी के सीमित साधन होने की वजह से लोगों के पास बारिश का इंतेज़ार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं होता।

खेती के बदलते तरीके भी किसानों की समस्या का कारण बन गए हैं। छोटे–किसानों के पास संसाधन कम होते हैं। वह बीज, कीटनाशक, खाद आदि चीज़ों के लिए बाहरी संसाधनों की तरफ़ देखते हैं। बढ़ती कीमतो की वजह से खेती का सामान खरीद पाना किसानों के लिए आसान नहीं होता। पंप, अच्छे किस्म के बीज जिसमें पानी कम लगता है कि कीमत बहुत ज़्यादा होती है जिसे गरीब किसान नहीं खरीद पाता। खेती के लिए गरीब किसान बैंको से उधार लेता है। बारिश न होने पर फसले नहीं हो पाती जिससे वह और भी ज़्यादा उधारी से घिर जाता है।

खेती के लिए, लिए गए सारे बीज व खाद बर्बाद हो जाते हैं। अनाज खरीदने के लिए उसे फिर से उधार लेना पड़ता है। उधार चुकाने के लिए वह अपनी जनीं भी बेच देता है। चूंकि अब ज़मीन नहीं है तो वह खेती भी नहीं कर सकता। वह जीविका के लिए अन्य साधनों की तरफ़ देखता है।

अभी भी विर्दभ में लोगों तक ज़रूरी सुविधाएँ नहीं पहुँची हैं। सरकार की तरफ से कोई छूट न मिलने पर किसान पर उधार और बढ़ता जाता है। जिससे की किसान आत्महत्या कर लेता है। हर साल बुंदेलखंड के

कई गांवो में बहुत से किसान भूख और उधारी के चलते आत्महत्या कर लेते हैं। आत्महत्या की संख्या और भी बढ़ती जा रही है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संजीव के उपन्यास समकालीन समाज की थाह लेने में सफल सिद्ध हुए हैं। उनके उपन्यासों में नारी, आदिवासी, गरीब, मजदूर, दलित और किसान आदि प्रमुख रूप से अपने समय और समाज की कड़वी सच्चाइयों के साथ प्रस्तुत हुए हैं। इसी कारण संजीव एक समकालीन और सशक्त साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. संजीव, धार, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण –1997, पृष्ठ सं.–130
2. वही, पृष्ठ संख्या–165
3. वही, पृष्ठ संख्या–133
4. संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण– 2016, पृष्ठ सं.– 17
5. वही, पृष्ठ संख्या– 9
6. वही, पृष्ठ संख्या– 68–69

संपर्क सूत्र : 9990170467

ई–मेल – kirankiran13011992@gmail.com

आवासीय पता –

मकान नं.– 474, वी.पी.ओ. औचन्दगाँव, दिल्ली–110039

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 88-92

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय सणांचा शास्त्रीय दृष्टिकोन

प्रा.एम.वाय. पोवार

श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अॅण्ड सायन्स कॉलेज, माळवाडी–कोतोली।

सारांश -

भारतीय सण,उत्सव,वृत्तवैकल्य यामध्ये संस्कृती,संस्कार व शास्त्रीय दृष्टिकोन आढळतो.सण,उत्सवामध्ये जसे धार्मिक महत्त्व आहे तसेच सण, उत्सवांचे शास्त्रीय दृष्टिकोनातूनही महत्त्व आहे.सण,उत्सव समाजाचे मानसिक व शारीरिक आरोग्य चांगले राखण्यासाठी मदत करतात.सण, उत्सवामधील बदलानुसार आहारामध्ये वापरण्यात येणाऱ्या धान्य,फळे,पालेभाज्या,कंदभाज्या, वनस्पती, वेगवेगळे पदार्थ यांचा वापर केल्यामुळे आपले आरोग्य तंदुरुस्त राहण्यास मदत होते.

उद्देश -

१) भारतीय सण,उत्सवाचे स्वरूप समजून घेणे.

२) भारतीय सण,उत्सवांची वैशिष्ट्ये समजून घेणे.

३) भारतीय सण,उत्सवामधील शास्त्रीय दृष्टिकोन समजून घेणे.

४) भारतीय सण,उत्सवामुळे समाजाच्या मानसिक व शारीरिक दृष्ट्या होणाऱ्या बदलाचे निरीक्षण करणे.

संशोधन पद्धती -

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा वापर करण्यात आलेला आहे.प्रस्तुतचा शोध दुय्यम स्तोत्र आधारित असून त्यासाठी विविध ग्रंथ,मासिके, साप्ताहिके, वेबसाईट इत्यादीचा वापर करण्यात आलेला आहे.

प्रस्तावना -

प्रत्येक देशाचा संस्कृतीचा विस्तार हा त्या देशांमध्ये होणाऱ्या सण,उत्सव, परंपरेवर अवलंबून असतो यातूनच त्या देशाची संस्कृतिक विविधता, राहणीमान यांचे दर्शन होते.भारत हा देश सण आणि उत्सवांची भूमी आहे. भारतीय सण,उत्सवामध्ये धर्माचा संगम आहे.तसाच प्रत्येक सणांमध्ये शास्त्रीय दृष्टिकोन आहे.भारतीय संस्कृतीचे विविध आयाम आहेत. ज्यामध्ये आपले कपडे,आभूषणे, भोजन,सण,उत्सव यांचा समावेश आहे.सण,उत्सव आपल्याला समाजामध्ये सक्रिय करतात.सण, उत्सवामुळे आपण आपले दुःख विसरून आपल्या नातेवाईकांमध्ये आनंदी होतो.भारतात विविध धर्म, पंथाचे,भाषेचे लोक गुण्यागोविंदाने राहतात.सर्वांचे संबंध मैत्रीपूर्ण आहेत.प्रत्येक धर्माचे सण,उत्सव वेगवेगळे आहेत ते त्यांच्या जीवनाचा भाग असतात.सण,उत्सवामुळे मानवी जीवनात आनंद भरून जातो. त्यामुळे सण समाजाला जिवंत ठेवण्याचा प्रयत्न करतात विविधतेतून एकतेचा भाव निर्माण होतो.भारतात साजरे करण्यात येणाऱ्या सण,उत्सवांमध्ये शास्त्रीय दृष्टिकोन आढळतो तो खालील प्रमाणे -

मकर संक्रांतीचे शास्त्रीय महत्त्व -

मकर संक्रात हा सण दरवर्षी १४ जानेवारी रोजी साजरा केला जातो या दिवशी लोक आपल्या दिवसाची सुरुवात सकाळी नदीमध्ये स्नान करून करतात या दिवशी सूर्य एका राशीतून दुसऱ्या राशीत प्रवेश करतो हा सण भारतात पश्चिम बंगाल,तामिळनाडू,आंध्र प्रदेश, कर्नाटक,गुजरात,राजस्थान,उत्तर प्रदेश,बिहार,मध्य प्रदेश,महाराष्ट्र या राज्यांमध्ये साजरा केला जातो. महाराष्ट्रातील लोक संक्रातीच्या दिवशी तीळ आणि गूळ यांच्यापासून बनवलेले तिळगुळ व तिळगुळ वड्या एकमेकाला देतात.तीळ आणि गुळात अनेक प्रकारचे पोषक गुणधर्म आहेत.तीळ आणि गूळ यामुळे आपल्या शरीराला हिवाळ्यात उबदार ठेवण्यास मदत होते.थंडीमध्ये हृदयाच्या समस्या जास्त प्रमाणात वाढतात यामागचे कारण म्हणजे कोलेस्ट्रॉलची पातळी नियंत्रणात न राहणे.तिळाचे लाडू खाल्ल्याने कोलेस्ट्रॉलची पातळी कायम राहते त्यामुळे हृदयाशी संबंधित समस्यांचा धोका कमी होतो.जस्त,लोह,व्हिटॅमिन बी, व्हिटॅमिन ई व सेलेनियम यासारखे पोषक तत्व तिळामध्ये आढळतात तसेच गुळामध्ये कॅल्शियम,फॉस्फरस मॅग्नेशियम,पोटॅशियम,फॉलिक ॲसिड,लोह यासारख्या पोषक तत्त्वांचा यामध्ये समावेश असतो. यामुळे रोगप्रतिकारशक्ती वाढवण्याचे काम केले जाते.हाडे मजबूत होतात सांधेदुखी,गुडघेदुखी यासारखे आजार होत नाहीत.मुतखडा आजार असलेल्या लोकांसाठी तीळ आणि गुळाचे लाडू उपयुक्त ठरतात.

होळी सणाचे शास्त्रीय महत्त्व -

होळी हा उत्सव केवळ रंगाचे प्रतीक नसून बंधूभाव आणि आपुलकीचे प्रतीक आहे.प्रत्येकजण हा सण प्रेमाने आनंदाने आणि उत्साहाने साजरा केला जातो.हा सण एकात्मतेचा आणि एकतेचा उत्सव आहे.होळीच्या दुसऱ्या दिवशी धुलीवंदनाचा सण साजरा केला

जातो.एकमेकांना गुलाल लावणे आणि रंगाची उधळण करणे,सर्वांनी एकत्र येणे,बंधुभाव आणि एकतेचे प्रतीक असते.या दिवशी लोक आपआपसातील भेदभाव,भांडण, गरीब,श्रीमंत हे विसरून एकत्र येतात.होळीचे मानसिकदृष्ट्या देखील महत्त्व आहे.लोकांच्या मनात बऱ्याच प्रकारचे मनोविकार लपलेले असतात.ते समाजात भीतीने किंवा शालिनतेमुळे प्रकट होऊ शकत नाहीत.होळीच्या दुसऱ्या दिवशी ते सगळे बाहेर काढण्याची संधी असते. होळीच्या दिवशी शिव्या देणे हा सुद्धा त्याचाच एक भाग आहे.आता थंडी गेलेली असते त्यामुळे आता थंड पाण्याने स्नान करावे हाही संदेश यातून दिला जातो.

गुढीपाडवा सणाचे शास्त्रीय महत्त्व -

भारतामध्ये कोणताही सण साजरा करताना काही प्रथा,परंपरांचे अगत्याने पालन केले जाते.त्यामधील प्रत्येक गोष्टीला प्रतिकात्मक अर्थ आहे.वसंत ऋतू हा सृजनाचा मानला जातो.मानवी मनाला उल्हास,हर्ष प्रदान करतो.शरीराचे जडत्व दूर करून चैतन्याचा संचार या ऋतूमध्ये घडतो.गुढीपाडवा सण साजरा करताना आपण गुढीसाठी बांबू वापरतो बांबूच्या पेरामध्ये आढळणारा सिलिकायुक्त पदार्थ अनेक आयुर्वेदिक औषधांमध्ये वापरला जातो.तसेच कडुनिंब हा पृथ्वीवरील अमृततत्त्व लाभलेला वृक्ष रक्तातील दोष दूर करतो.तसेच शरीराला शीतलता प्रदान करतो. उन्हाळ्याच्या सुरुवातीला होणारे काही उष्णतेचे विकार जसे गोवर, कांजिण्या,घामोळे यावर कडूनिंब अत्यंत प्रभावी औषध आहे. उन्हाळ्यामध्ये वाढणारे पित्त कडुनिंबामुळे कमी होते या वृक्षाचे प्रत्येक अंग औषधी आहे याची फळे लिंबोळया एक उत्कृष्ट कीटकनाशकाचे काम करतात. उन्हाळ्यामध्ये वरचेवर येणाऱ्या घामामुळे शरीरामध्ये पाण्याची, खनिजद्रव्यांची कमतरता जाणवते यामुळे ऊर्जा खालावते काही खाण्याची इच्छा होत नाही अशावेळी साखरमाळेमुळे ताबडतोब आपल्या शरीरात ऊर्जा निर्माण करते साखर माळ तयार करण्यासाठी लिंबाचा रस वापरतात.साखरमाळेतील हा लिंबू रस ताजेपणा आणतो त्याचबरोबर व्हिटॅमिन सी सुद्धा देतो.

नागपंचमी सणाचे शास्त्रीय दृष्टिकोनातून महत्व -

नागपंचमीच्या आख्यायिकांचा विचार करता वन्य प्राण्यांचे संरक्षण व्हावे यासाठी नागपंचमीच्या दिवशी जमीन नांगरायची नाही,खणायची नाही जीवांना इजा होईल असे काही करायचे नाही अशी परंपरा आहे. यातून निश्चितच एक वैज्ञानिक दृष्टिकोन ठेवला आहे.नागपंचमीच्या दिवशी सापांच्या विविध प्रजाती विषयी सर्वसामान्य लोकांना ज्ञान होण्यासाठी चित्र प्रदर्शन,व्हिडिओ दाखवले जातात जेणेकरून साप हा आपला शत्रू नसून आपला मित्र आहे ही भावना निर्माण होते.

गणेश चतुर्थी सणाचे शास्त्रीय दृष्टिकोनातून महत्व -

गणेशोत्सव हा पारंपारिक सण असल्यामुळे अनेक रूढी,परंपरा आहेत अनेक समज, गैरसमज आहेत त्यातलाच एक समज म्हणजे गणेश उत्सवा दरम्यान चंद्राकडे पाहू नये.आपण याकडे शास्त्रीय दृष्टिकोनातून पाहता चंद्र हा पृथ्वीच्या जवळ येतो आणि त्याच्यात तयार होणाऱ्या एका विशिष्ट कोणातून सूर्याची अधिक किरणं जास्त तीव्रतेने परावर्तित होतात आणि ही किरणं आपल्या डोळ्यासाठी हानिकारक ठरू शकतात त्यामुळे गणेशोत्सवा दरम्यान चंद्राकडे पाहू नये.गणेशमूर्ती या शाडूपासून तयार केल्या जातात. काही काही ठिकाणी त्या चंदन व हळद यापासून तयार केल्या जात होत्या कारण शाडू व हळद यापासून तयार केलेल्या गणपतीच्या मूर्ती या पर्यावरण पूरक होत्या या मूर्ती विसर्जन केल्यामुळे नदी,तलाव स्वच्छ ठेवायलाही मदत करत होत्या. शाडूच्या मातीच्या मूर्ती ज्यावेळी विसर्जित केल्या जात होत्या त्यावेळी सगळा गाळ त्या शाडू सोबत खाली जात होता तसेच गणेश उत्सवामध्ये दुर्वा,तुळस,जास्वंद यासारख्या अनेक वनस्पती वापरल्या जातात या निर्माल्याचे विसर्जन पाण्यात केल्यामुळे पाण्यातले किटाणू नष्ट होत होते व पाणी पिण्यायोग्य आणि स्वच्छ होत होते.

दिवाळी सणाचे शास्त्रीय महत्त्व -

दिवाळी सणातील प्रत्येक दिवस मानवी जीवनातील एक महत्त्वाचे सूत्र सांगतो या सणांमध्ये आरोग्य,धन,निसर्ग,प्रेम आणि सद्भावनेचा संदेश आहे.

धनत्रयोदशी -

अश्विन वद्य त्रयोदशी म्हणजेच धनत्रयोदशी या दिवशी घरातील सर्वजण विशेषतः स्त्रिया तेल,उटणे लावून डोक्यावरून अंघोळ करतात. या दिवशी सूचिभरूत होऊन दिवाळीस प्रारंभ होतो सायंकाळी घराजवळील परिसर झाडून,सडा मारून नवीन वस्त्रे परिधान करून लक्ष्मीची पूजा केली जाते.व्यापारी लोक वही पूजन करतात तसेच घरातील अवजारे,हत्यारे सोने,नाणी यांचीही पूजा करतात धने व गुळाचा नैवेद्य दाखविला जातो.धनत्रयोदशी पासून तेलाचे दिवे लावतात.घरासमोर आकाश कंदील लावतात.धनत्रयोदशीला आयुर्वेदाचा जनक धन्वंतरीचा जन्म झाला या धन्वंतरीने आपल्याला आणि जीवसृष्टीला आयुर्वेद दिला मानवाचे जीवन आरोग्यदायी बनवले म्हणून या दिवशी वैद्यकीय क्षेत्रातले लोक धन्वंतरीची पूजा करतात.

नरक चतुर्दशी -

अश्विन वद्य चतुर्दशीला नरक चतुर्दशी म्हणतात या दिवशी सर्व लोक सकाळी उठून सुवासिक तेल, उटणे लावतात गरम पाण्याने आंघोळ करतात.घरात सगळीकडे दिवे लावतात.वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून आपले शरीरसुध्दा नाना यातना व रोगराईने पिडलेले असते अनेक नरक यातना आपण व्याधीरूपाने भोगत असतो म्हणून या दिवशी सकाळी लवकर उठून

सर्वांगांस तेल,उटणे लावून चोळतात अंगाचा मळ निघतो सर्वांगाचे रंध्र मोकळे होतात.सकाळी हवेत ओझोनचे प्रमाण जास्त असल्याने शरीर ताजेतवाने होते. अनेक व्याधीपासून मुक्तता मिळते. हवेतील गारव्याने त्वचा फाटू लागते तेलामुळे त्याचे रसन होते.

लक्ष्मीपूजन -

दिवाळीचा दुसरा दिवस म्हणजेच अश्विन अमावास्येचा दिवस लक्ष्मीपूजनाचा दिवस या दिवशी भगवान विष्णुनी लक्ष्मीसह सर्व देवतांना बळीच्या तुरुंगातून मुक्त केले आणि यानंतर सर्व देव क्षीरसागरात जाऊन झोपले या आनंदाप्रित्यर्थ सर्वजण दिपोत्सव साजरा करतो. व्यापारी लोक कुबेर पूजन करतात लक्ष्मीला घरात घाण,पसारा, अस्वच्छता आवडत नाही.जेथे टापटीप असते तेथे तिला राहायला आवडते.वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून पाहिले तर केवळ टापटीपपणा म्हणजे सुंदर असे नाही तर ज्या व्यक्तीचे आचरण शुद्ध आहे मनात छल,कपट,मद,मोह,मत्सर,अहंकार असे अवगुण नाहीत जो आपला व्यवहार अतिशय प्रामाणिकपणे करतो तो निरोगी राहतो.

निष्कर्ष :-

१. भारतीय संस्कृतीनुसार साजरे केले जाणारे सण, उत्सव हे शेती, पर्यावरण, परंपरा यांच्याशी जोडले गेले आहेत।

२. भारतीय सण, उत्सव हे धार्मिक व शास्त्रीय दृष्टिकोनातून साजरे केले जातात।

३. भारतीय सण, उत्सवामध्ये उच्च– नीच,गरीब–श्रीमंत हा भेदभाव न मानता साजरे केले जातात।

४. भारतीय सण, उत्सव सामाजिक जाणिवेतून साजरे केले जातात।

५. भारतीय सण उत्सवांमध्ये वापरण्यात येणारे धान्य, फळे, फुले, भाज्या यामुळे लोकांचे आरोग्य चांगले राहण्यास मदत होते।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. जोशी महादेव शास्त्री – संस्कृती कोश।

२. ढेरे रा.चिं. – लोकसाहित्याचे स्वरूप।

३. कर्णिक मधु मंगेश (संपा.) सांस्कृतिक महाराष्ट्र।

EMail- prakashmane164@gmail.com

Mob. No. 9763803331

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 93-98
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

महाराष्ट्रातील सण आणि विज्ञान

डॉ. मनिषा हिंदुराव पाटील
श्रीपतराव चौगुले आट्‌र्स अँड सायन्स कॉलेज, माळवाडी –कोतोली।

प्रस्तावना :–

मानवी जीवन आणि निसर्ग यांचा अतूट असा संबंध आहे. कारण मानव हाच निसर्गाच्या अनेक अंगांपैकी एक अंग आहे। त्यामुळे भारतीय सण आणि विज्ञान यांचा निकटचा संबंध आहे। विशेषतः त्याबाबत महाराष्ट्रातील हिंदू सणांचा उल्लेख करावा लागेल। सांस्कृतिक, अध्यात्मिक अथवा धार्मिक कारणांनी साजऱ्या होणाऱ्या दिवसांना सण असे म्हणतात। महाराष्ट्रातील अनेक सण,उत्सव जत्रा–यात्रा या मोसमी स्वरूपाच्या असतात। त्या साजरा करण्याचा दिनांक भारतीय पंचांगाला अनुसरून असतात। म्हणून मानव स्वतःचे जीवन सुखी करण्यासाठी वेगवेगळे असे वर्षभर सण आणि उत्सव साजरे करतो। महाराष्ट्रातील सण आणि उत्सव हे निसर्गाबरोबरच कृषी संवर्धनाशी जोडलेली आहेत। विशेष म्हणजे निसर्ग आणि विज्ञान यांचा मिलाफ झालेला असतो। सणांच्या आहरामागे देखील आहार विज्ञान आहे। गुढीपाडवा,वटपौर्णिमा, नागपंचमी, रक्षाबंधन, गोकुळाष्टमी, बैलपोळा, गणेशोत्सव, नवरात्र उत्सव, दसरा, दिवाळी इत्यादी महाराष्ट्रीयन सणामध्ये निसर्ग आणि विज्ञान प्रतिबिंबित आहेत। सण उत्सवाकडे वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून पाहिले पाहिजे। कारण त्यामुळे विज्ञाननिष्ठ तरुण पिढीला सणांचे महत्त्व लवकरच समजेल आणि ते साजरी करताना अधिक आनंद होईल पर्यावरणाच्या दृष्टीने तेअधिक उपयुक्त ठरेल।

अभ्यासाचा उद्देश :–

1. प्रत्येक सणांमध्ये असलेल्या रुढी परंपरा मागील विज्ञान जाणून घेणे।
2. सणांच्या आहारामागे देखील कोणते आहार विज्ञान आहे जाणून घेणे।
3. सणांच्या माध्यमातून कोणते संदेश दिलेले असतात ते समजावून घेणे आणि भारतीय संस्कृतीतील विविध सणांचा आढावा घेणे।

अभ्यास पद्धती :–

सादर शोधनिबंधासाठी आवश्यक असणारी माहिती ग्रंथ, मासिके, पाक्षिके, वर्तमानपत्रे, वेब साईटवरुण उपलब्ध करण्यात आलेली आहे।

महाराष्ट्रातील विविध सण आणि विज्ञान

1. गुढीपाडवा :–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदेला गुढीपाडवा हा सण साजरा केला जातो। गुढी म्हणजे ब्रह्मध्वज। गुढी आपल्याला

विश्वातील प्रजापती लहरींचे फायदे मिळवून देते। ब्रह्मदेवांनी विश्व निर्मिती केली ती पाडव्याच्या दिवशीच आणि पुढे सत्य युगाची सुरुवात झाली। म्हणूनच नूतन वर्षारंभ म्हणून चौत्र शुक्ल प्रतिपदेला गुढीपाडवा साजरा केला जातो।

महाराष्ट्रीयन परंपरेत आणि संस्कृतीत गुढीचे महत्त्व अलौकिक असे आहे। शेती कामाची सुरुवात याच दिवशी केली जाते। कारण गुढीपाडव्याचा दिवस हा वर्षातील साडेतीन मुहूर्तांपैकी एक मानला जातो। नांगरण, पेरणी याच दिवशी करण्याचा प्रघात आहे। कारण त्यामुळे भूमी कडून भरपूर उत्पन्न मिळते असे मानले जाते। वसंत ऋतूत निसर्गाला नवा बहर आलेला असतो। वातावरण आरोग्यदायी असते। या दिवशी अभ्यंग स्नान केल्याने रज व तम गुण एक लक्षांश कमी होतात व तेवढ्याच प्रमाणात सतो गुणांची वाढ होते। या दिवशी बांबूला तांब्या खाली तोंड करून व नवे वस्त्र व कडुलिंबाचा डहाळा बांधून गुढी उभारली जाते। तांबे धातू प्रजापती लहरीना आकर्षित करतो। त्या लहरी तांब्यातून घरात प्रवेश करतात। अशा तांब्यातून वर्षभर पाणी पिल्याणे आरोग्य लाभते अशी मान्यता आहे।

कडूलिंब जंतुनाशक असल्याने गुढीवर लावला जातो। या दिवशी प्रातःकाळी ओवा, मीठ, हिंग, मिरी व गुळ कडूलिंबांच्या पाना बरोबर खातात। पुढे उन्हाळ्यात पचनक्रिया सुधारते। पित्ताचा नाश केला जातो। त्वचा सुधारते। त्वचारोग बरे होतात। तसेच कडुलिंब धान्य ठेवल्यास धान्याला कीड लागत नाही। शरीराला थंडावा देणाऱ्या कडुलिंबाची पाने आंघोळीच्या पाण्यात घातल्यास कांती सुधारते। तसेच त्याची पाने वाटून खाल्ल्यास आरोग्यास लाभदायक असते।

संत एकनाथांनी त्यांच्या काव्यात गुढी हा शब्द कितीतरी वेळा वापरला आहे। संत एकनाथ हर्षाची गुढी, साम्राज्य, यशाची, रामराज्याची, रोकडी, भक्तीची, जैताची, वैराग्याची, भावार्थाची, स्वानंदाची, निजधर्माची इत्यादीच्या गुढयांची रूपके वापरतानाआढळतात।

2. मकर संक्रांति :-

भारत देश उत्तर गोलार्धात वसलेला आहे। मकर संक्रांतीच्या अगोदर सूर्य दक्षिण गोलार्धात असतो। त्यामुळे रात्र मोठी व दिवस छोटा असतो आणि थंडी असते। मकर संक्रातीपासून सूर्य उत्तर गोलार्धात येण्यास सुरुवात होते। त्यामुळे रात्र छोटी व दिवस मोठा होण्यास सुरुवात होते। रात्र छोटी असल्याने अंधकाराचे प्रमाण कमी असते। सूर्याच्या मकर संक्रमणामुळे अंधकार प्रकाशाकडे परावर्तित होत जाण्याची सुरुवात होते। सूर्यप्रकाश वाढल्याने प्राण्यातील आणि वनस्पतीतील चौतन्य आणि कार्यक्षमता वाढीस लागते। संक्रातीचा सण तीन दिवसात असतो, पहिल्या दिवशी भोगी दुसऱ्या, दुसर्या दिवशी संक्रांत आणि तिसऱ्या दिवशी किंक्रांत असते। या सणाला तिळगुळ दिला जातो। कारण पौष महिन्यात संक्रातीचा सण येतो, त्यावेळी थंडी असते, थंडीमुळे त्वचा कोरडी शुष्क पडते आणि परंतु तीळ हे स्निग्ध असते आणि गुळ उष्ण, लोहयुक्त असल्याने तिळगुळ हे पोषक आहे। भोगीच्यादिवशी मडक्यामध्ये ओले हरभरे, वाटाणा, पावटा, उसाचे तुकडे, गाजराचे तुकडे, बोरे, हलवा भरून हळदी—कुंकू लावून पूजा करतात। आपली कृषी प्रधान संस्कृती असल्याने या महिन्यात शेतात जे पिकते त्याचा सन्मान करण्याची ही परंपरा गौरव असत आहे। संक्रातीच्या जेवणात सर्व पालेभाज्या, कडधान्ये, द्विदल धान्य घालून भाज्या करण्याचा प्रघात आहे। तसेच तीळ लावलेली बाजरीची भाकरी, लोणी, राळ्या चा भात असा बेत असतो। पौष महिन्यातील थंडीमुळे उष्ण बाजरी आणि स्निग्ध लोणी खाण्यात यावे हा त्या पाठीमागे उद्देश आहे।

3. गणेश उत्सव :–

सर्वांच्या जीवनाला चौतन्याचा, प्रसन्नतेचा साज चढवणारा गणेशोत्सव सर्वांनाच हवावसं वाटतो। पहिल्या दिवसापासून ते अनंत चतुर्थी पर्यंत सर्वजण पूजा अर्चा करीत असतो। रोज सकाळ–संध्याकाळ आरतीचे स्वर कानी पडतात। मोदक आणि लाडूचे प्रसाद चढविले जातात। सार्वजनिक गणेशोत्सवाला तर शंभर वर्षाहून अधिक मोठी परंपरा आहे। लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळकांनी भारतीयांना एकत्र आणण्याकरिता आणि विचारांची देवाणघेवाण करण्याकरिता या उत्सवाची सुरुवात केली होती। गणेश हे बुद्धीचे दैवत आहे त्यांची कृपादृष्टी त्यांच्या भक्तावर असणारच पण एकत्र येण्याने चर्चा सुसंवाद घडतात। त्यामुळे वैयक्तिक, सामाजिक आणि सामूहिक ताण तणाव हलके होतात। समस्यावर मात करण्याचे बळ, पाठिंबा, उत्साह व प्रेरणा मिळते।

4. नारळी पौर्णिमा :–

श्रावण मास निसर्गातील बदलानुसार स्वतः मध्ये बदल घडवून आणणे हेच भारतीय अध्यात्मिक आहे। नारळी पौर्णिमा समुद्रातील बदलांचे महत्त्व जाणून समुद्रदेवते प्रति कृतज्ञता व्यक्त करण्याचा सण आहे।

कोळी बांधव पावसाळ्यात मासेमारी करत नाहीत, कारण समुद्र खवळलेला असतो। आणि त्या काळात माशांची पिले जन्माला येतात। पिलांनाच आपण पकडून खाल्लं तर पुढच्या वर्षीपासून मासे मिळणार नाही। पिल्ली मोठी झाली आणि समुद्र शांत झाला की नारळ दर्याला अर्पण करून पुन्हा मासेमारी सुरू होते तो सण म्हणजे नारळी पौर्णिमा।

5. धुलीवंदन :–

सर्वांचा आवडता आणि रंगांचा सण म्हणजे होळी। होळी नंतर धुलीवंदन हा सण येतो। होळी अर्थात होलिका साजरी करण्याची परंपरा आहे। देशभरात होळी अगदी मोठ्या उत्साहात साजरी केली जाते। महाराष्ट्रात होळीला शिमगा असे म्हटले जाते। फाल्गुन पौर्णिमेच्या रात्री विधीपूर्वक होळी पेटवली जाते। धुलीवंदन म्हणजे वाईट विचारांचा संहार करण्यासाठी, गाईच्या शेणाच्या वाळलेल्या गोवऱ्या एकत्र करून त्यात गायीचे तूप, कापूर, उसाचे वाढे, एरंडची फांदी या सर्व वस्तू एकत्र करून जाळल्या जातात। होळी पेटवल्यानंतर त्याचा धूर केल्याने वातावरण शुद्ध होते अशी भावना आहे। पुरणपोळीची आहुती दिली जाते। होळी नंतर पाचव्या दिवशी रंगपंचमी खेळली जाते, उन्हाळ्याच्या सुरुवातीला हा सण साजरा केला जातो। उन्हाचा दाह कमी व्हावा म्हणून हा सण साजरा करण्याची प्रथा आहे।

6. दसरा :–

दसरा सणहिंदू धर्मातील सर्वात महत्त्वाचा साडेतीन मुहूर्तांपैकी एक मुहूर्त असणारा सण म्हणजे दसरा सण होय। विजयाची प्रेरणा देणारा आणि छात्रवृत्ति जागृत करणारा असा हा एक सण असून घटस्थापना केल्यानंतर नऊ दिवसांनी येणारा हा सण आहे। नवरात्र उत्सवाची सांगता दसरा या सणांनी केली जाते। दहाव्या दिवसाला विजयादशमी असे म्हणतात।

अश्विन शुद्ध दशमी म्हणजे विजयादशमी। याच दिवशी भगवान रामाचा पूर्वज रघु या अयोध्यादिशाने विश्वजीत यज्ञ केला होता। त्या काळापासून म्हणजेच त्रेता युगापासून हिंदू लोक विजयादशमी महोत्सव साजरा करतात। विजयादशमीला शस्त्र आणि शास्त्र पूजन करण्याबाबत वेगवेगळे महत्त्व आहे। प्राचीनकाळी क्षेत्रीय युद्धाला जाण्यासाठी दसरा या दिवसाची निवड करत असत। त्यांचे असे मानने होते की, या दिवशी केलेल्या

युद्धामध्ये विजय निश्चित असतो क्षेत्रीय प्रमाणेच इतर लोक या दिवशी विद्याग्रहण करण्यासाठी म्हणजेच ज्ञान मिळवण्यासाठी घराबाहेर पडत असतात। व्यापारी लोक या पवित्र दिवशी नवीन दुकाने, शोरूम इत्यादींचा शुभारंभ करणे शुभ मानतात।

विजयादशमी दिवशी शमी वृक्ष पूजनाला फार महत्त्व असते। नवरात्रीच्या नऊ दिवसात प्रत्येक दिवशी सायंकाळी शमी वृक्ष पूजन केल्याने आरोग्य व धनसंपत्ती प्राप्त होते असे मानले जाते। शेतकरी विजयादशमी दिवशी आपली शेती अवजारे शस्त्र यांचे पूजन करतो। घराला आंब्याच्या पानांची झेंडूच्या फुलांचे तोरण बांधतो। व्यापारी झेंडूंच्या फुलांनी आपल्या दुकानाची पूजा करतात। तर विद्यार्थी स्वतःच्या पुस्तकांचे पूजन करतात।

आपट्याची पाने :–

आपट्याच्या वृक्षाला अश्मंतक असेही म्हणतात। आपट्याची पाने या विजयादशमीला परस्परांना दिली जातात। त्याला सोने असे म्हणतात। आपट्याची पाने पित्त व कफ दोषोवर अत्येत गुणकारी आहेत। दसरा सणातून पुढीव प्रकारची शिकवक मिळते।

1. स्वल बरोबरच इतरांचाही विचार करण्यास शिकवणारा सण म्हणजे दसरा होय। नवरात्रीत नऊ दिवस भजन, पूजन, कीर्तन, केले जाते।
2. रज, तमोगुण आणि वाईट शक्ती यांचा नाश होने आणि पुरस्परांप्रती प्रेम जागृत करने हे दसरा सणाचे मर्म आहे, असे शास्त्र सांगते।
3. छात्रवृति जागृत करणारा सण म्हणजे दसरा होय। म्हणजे महत्त्वाचा गुरु व शिष्य यांच्यातील भाव अधिक मजबूत करण्यात दसरा महत्त्वाचा आहे। श्रीरामांनी रावणाचा वध केला तो विजयादशमी दिवशीच म्हणून या सणाला विजयादशमी असे म्हणतात। म्हणून विजयाची प्रेरणा देणारा आणि छात्रवर्ती जागृत करणारा असा हा सण आहे।

7. दिवाळी :–

"साधुसंत येती घरा, तोची दिवाळी–दसरा।" या तुकाराम महाराजांच्या उक्तीत दोन मोठ्या सणांचा अजोड असा उल्लेख आहे। आणि तो योग्यच आहे।

दिवाळी सणास दिव्यांचा सण असेही म्हतात। प्रत्येक शरद ऋतूमध्ये होणारा हा दिवाळीचा आंनदोत्सव भारतातील सर्वात मोठा आणि उत्साही सण आहे। हा सण म्हणजे अंधकारावर प्रकाशाच्या विजयाचे प्रतीक आहे। आणि कुटुंब मित्र आणि समाज एकत्र येऊन उत्सव साजरा करण्याची वेळ आहे।

दिवाळी हा सण कार्तिक महिन्याच्या कृष्ण पक्षातील अमावस्येला साजरा केला जातो। दिवाळीच्या दिवशी श्रीराम लंकापती रावणाचा पराभव करून अयोध्येत परतले होते। भगवान राम आयोध्याला परतले हे वाईटावर चांगल्या विजयाचे प्रतीक आहे। त्यामुळे दिवाळीचा सण साजरा केला जातो।

दिवाळी या शब्दाचा अर्थ दिव्यांची माळ असा होतो। दिवाळीला दीपावली असेही म्हणतात। दिवाळी हा पाच दिवसाचा सण आहे। दिवाळी आधी घरांची स्वच्छता केली जाते। घरांच्या प्रत्येक कोपऱ्यात दिवे लावले जातात। अंगण फुले आणि रंगीबेरंगी रांगोळ्यांची सजवले जाते। लोक नवीन कपडे परिधान करतात। दिवाळीच्या रात्री म्हणजेच लक्ष्मीपूजनाच्या दिवशी लोक माता लक्ष्मीची पूजा करतात। या दिवशी लक्ष्मीपूजन करणाऱ्यांना वर्षभर समृद्धी लाभते असे म्हटले जाते। लक्ष्मी पूजनानंतर फटाक्यांची आतिशबाजी केली जाते।

दिवाळीला फराळ बनवला जातो। यामध्ये लाडू, करंजी, शंकरपाळी, अनारसे, चकली, चिवडा अशा अनेक पदार्थांचा समावेश असतो। मोठ्या आनंदाने घरातील सर्वजण एकत्र जमतात आणि या क्षणाचा आनंद लुटतात। लहान मुले मोठ्यांच्या पाया पडून आशीर्वाद घेतात। वाईट गोष्टी सोडून चांगल्या गोष्टींचे अनुकरण करण्याची शिकवण या दिवशी दिली जाते। वाईटावर चांगल्याच्या विजयाचे प्रतीक म्हणून दिवाळी साजरी केली जाते। दिवाळीचा उत्सव माता लक्ष्मीच्या सुटकेचे प्रतीक आहे। माता लक्ष्मीला राजाबळीने कैद केले होते। भगवान विष्णूने माता लक्ष्मीला वाचविले। ज्यामुळे लोकांच्या घरी लक्ष्मीचे आगमन झाल्यामुळे मोठ्या आनंदाने दिवाळी साजरी केली जाते। भारतीय संस्कृती ही कृषिप्रधान संस्कृती असल्याने द्वादशी दिवशी गाईसह पाडसाची पूजा केली जाते। त्रयोदशीस धनत्रयोदशी हा सण साजरा केला जातो। नरक चतुर्दशी दिवशी कृष्णाने नरकासुराचा वध करून प्रजेला त्याच्या जुलमी राजवटीतून सोडवले। या दिवशी अभ्यंग स्नानाचे महत्त्व आहे। सकाळी लवकर उठून, संपूर्ण शरीरास तेलाचे मर्दन करून सुवासिक उटणे लावून, सूर्योदयापूर्वी स्नान केले जाते। अमावस्येस लक्ष्मीपूजन केले जाते. भाऊबीज शुद्ध द्वितीयस सण साजरा केला जातो नातेदृढ आणि वृद्गंत होते।

8. वटपौर्णिमा :-

ज्येष्ठ महिन्यात येणारी पौर्णिमा हा दिवस वटपौर्णिमा म्हणून साजरा केला जातो। या दिवशी स्त्रिया वटपौर्णिमा नावाचे वृत्त करतात। या वृत्ता दरम्यान विवाहित स्त्रिया आपल्या पतीला उत्तम आरोग्य लाभावे, दीर्घायुष्य प्राप्त व्हावे म्हणून वडाच्या झाडाची पूजा करतात। निसर्गतःच दीर्घायुष्य असणाऱ्या वृक्षांचे संवर्धन आणि जतन व्हावे अशा हेतूने वड, पिंपळ अशा वृक्षांची पूजा करण्याची कल्पना भारतीय संस्कृतीने स्वीकारली। एखाद्या जातीचा वृक्ष एकदा पवित्र मानला की, त्याची सहसा तोड होत नाही अशीच कथा वटपौर्णिमेची आहे। सत्यवानाचे प्राण सावित्रीने वडाच्या झाडाखालीच परत मिळवले म्हणून ज्येष्ठ महिन्यात पौर्णिमेला स्त्रिया वडाच्या झाडाची पूजा करून उपवास करतात व वटसावित्री वृत्त आचरणात आणतात।

वटवृक्ष हा भगवान शिवाचे निवासस्थान असून मानवी संसाराप्रमाणेच वटवृक्षाचा विस्तार सदोदित होत राहतो। त्याच्या पारंब्या पुन्हा पुन्हा मूळ धरतात आणि आपल्या अस्तित्वाचे अमरत्व सिद्ध करतात। म्हणूनच वटवृक्षाला संसार वृक्षाचे प्रतीक मानतात। प्राचीन काळी ऋषीमुनी केस घट्ट चिकटून राहून शुद्ध राहण्यासाठी आपल्या जटांना वडाचा चीक लावत असत। भगवान बुद्धांना वटवृक्षाखाली दिव्य ज्ञानाचा साक्षात्कार झाल्यामुळे बौद्धधर्मीय या झाडाला अतिशय पवित्र मानतात। वटवृक्षाला सामर्थ्याने आणि पावित्र्याचे प्रतीक मानले जाते। वटवृक्षातून बाहेर सोडल्या जाणाऱ्या कर्ब वायू बरोबरच बाष्पाचे प्रमाण अधिक असल्याने तो इतर वृक्षापेक्षा अधिक गारवा देणार असतो असे म्हणतात। वडाचा विस्तार, त्याची दाट सावली, त्याची भव्यता यांनी मानवाच्या मनात आदराचे स्थान प्राप्त केले आहे।

वडाची पाने सूज किंवा ठणका आलेल्या जागेवर गरम तेल करून तेल तूप लावून बांधतात। त्यामुळे सूज आणि ठणका थांबतात। पारंब्याचा काढा रक्तवर्धक व शक्तिवर्धक असतो। फळे ही बुद्धीवर्धक असतात। वटवृक्षाचे एवढे फायदे पाहता त्याच्या सानिध्यात राहून आपलेही कार्य त्याच्यासारखेच वर्धिष्णू व विशाल व्हावे आणि आपल्या सहवासात इतरांना अल्लादायक वाटावे असा आदर्श आपण घेतला पाहिजे।

9. नागपंचमी :-

नागदेवता व अन्य पशुसाठी मनात प्रेमाची भावना ठेवणारी हीच ती महाराष्ट्रीयन संस्कृती। भारतीय वैदिक

परंपरेत सर्व प्राणी देवांचेच रूप मानले जाते। हाच संदेश या सणातून देण्यात येतो। साप माणसाचे मित्र आहेत, उंदीर शेताची नासाडी करतात, त्यांना खाऊन साप आपणास अप्रत्यक्ष मदत करतात। म्हणून नागदेवते प्रति कृतज्ञता व्यक्त करण्यासाठी नागपंचमी साजरी केली जाते। सृष्टीतील इतर सजीवांप्रती सतत प्रेम भूतदया मैत्री जपण्याचा शुद्ध हेतूने त्यांनी कृतज्ञते पोटी खास त्यांच्या नावाने सहभागाने सण उत्सवाचे आयोजन केले जाते। वैज्ञानिक महत्त्वबरोबरच महाराष्ट्रीयन सण संस्कृती तसेच आध्यात्मिक दृष्ट्याही परिपूर्ण आहे।

निष्कर्ष :-

1. सण शरीराचं आरोग्य चांगले राखण्यासाठी मदत करतात।
2. शरीराचं आरोग्य हे मुखतः आहारावर अवलंबून असतं। बदलत्या ऋतूप्रमाणे आहारात बदल केला की शरीराचं आरोग्य चांगले राहते।
3. उत्सव माणसाला दुःख विससायला लावून त्यांच्या जीवनात आनंद निर्माण करतात आप्तेष्ट मित्र मंडळ एकत्र येतात।
4. सण उत्सवामुळे मानसिक ताण तणाव कमी होऊन माणूस अधिक उत्साही बनतो। व नवीन काम करण्यास अधिक ऊर्जा निर्माण होते।
5. सण हे पर्यावरण प्रदूषण मुक्त ठेवण्याच्या संदेश देतात पुढच्या पिढीला शुद्ध पाणी व स्वच्छ हवा यांच्या संवर्धन करण्यास मदत करतात।
6. सण हे आनंदाने जगा आणि इतरांच्या जीवनात आनंद निर्माण करा। औषधी उपयुक्त वनस्पतींची लागवड करा। पशुपक्षी, नदी, डोंगर जपा। घर परिसर स्वच्छ ठेवा। आप्तेष्ट, मित्रांशी चांगले वागा। सहिष्णुता प्रेम वृद्धिंगत करा असा संदेश देतात।
7. सण हे जल प्रदूषण, वायू प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण करू नका असा पर्यावरणाचा संदेश देत असतात।

संदर्भ :-

1. फेस्टिवल ऑफ महाराष्ट्र सकाळ प्रकाशन पुणे।
2. आपले मराठी सण आणि उत्सव डॉक्टर मविस वनी।
3. Loksatta.com.
4. आपले सण आणि विज्ञान सौ पुष्पा वंजारी।
5. लोकमत दैनिक।
6. 'विज्ञान आणि वैज्ञानिक महाराष्ट्र' (Science and Scientists of Maharashtra) – लेखक : डॉ. श्रीराम पोंडलिक अभ्यंकर।
7. 'महाराष्ट्रातील सण आणि संस्कृती : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोन' (Festivals and Culture of Maharashtra: A Scientific Perspective) – लेखक : डॉ. अनिलकुमार रानादिवे।
8. 'महाराष्ट्रातील सण आणि विज्ञान' (Festivals and Science in Maharashtra) – लेखक : डॉ. आर. पु. परधान।

Email - manishapatil1229@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
April 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 99-103
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उराँव जनजाति – रीतिरिवाज, चुनौतियाँ एवं भावी रणनीति

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर (छ.ग.)

सारांश :–

भारत की लगभग 8 प्रतिशत जनसंख्या जनजातीय है। 2021 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या का 31.6 प्रतिशत है। राज्य में कुल 42 अनुसूचित जनजातियां पायी जाती है। जो पुनः 161 उपसमूहों मे विभाजित है। सबसे साक्षर जनजाति उरॉव है।

आज हालत यह है कि उरॉवो की जनजातीय अस्मिता बाहरी प्रभाव की चपेट में आकर खंडित हो रही है। चाय बागानों में पत्ती तोड़ने के कार्यो में लगे हुए है।

उरॉव जनजाति की पिछड़ेपन के कारण है –

आदिवासी भाषा एवं संस्कृति के प्रति हेय दृष्टिकोण, वैश्वीकरण का प्रभाव विस्थापन, बाहरी घुसपैठ, मातृभाषा में शिक्षा का अभाव, आदिवासी शैक्षिक योजनाओं का अप्रभावी क्रियान्वयन, गैर आदिवासी शिक्षकों का निकृष्ट व्यवहार एवं इससे उपजा भाषाई सांस्कृतिक हीनता बोध आदि।

उरॉव जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए यह जरूरी है कि उन्हे उनके पारम्परिक परिवेश में ही जीवनयापन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराया जाए। आदिवासियों की जीवन स्थिति को उजागर करने के साथ–साथ विस्थापन से उभरी विभिन्न समस्याओं पर ध्यान देना जरूरी है।

जनजातीय महिलाओं की स्थिति को सामान्य करने हेतु योग्यता, साहस एवं प्रतियोगिता के साथ उन्हे विशेष संरक्षण की आवश्यकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास प्रक्रिया का स्वरूप उन लोगों के प्रति अधिक अनुक्रियाशील बनाया जाए जो आर्थिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़े रह गए है। उनके परम्परागत ज्ञान की रक्षा की जाए और उसका उन पर वैधानिक अधिकार प्रदान किया जाए।

मुख्य शब्द – उराँव जनजातीय संस्कृति, चुनौतियाँ, पिछड़ेपन के कारण, भावी रणनीति।

अध्ययन का उद्देश्य –
1. उराँव जनजातीय रीतिरिवाज का अध्ययन।
2. उराँव जनजाति के पिछड़ेपन के कारणो को जानना।
3. विकास के लिए भावी रणनीति।

अध्ययन विधि – द्वितीयक समंको पर आधारित।

प्रस्तावना :–

हमारे देश की संस्कृति में जनजातियों का विशेष महत्व है। भारत में जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है। लम्बी अवधि तक उपेक्षित अविकसित रहने के कारण स्वतंत्र भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 द्वारा राष्ट्रपति को अधिकार दिया गया कि उनके द्वारा किसी भी पिछड़े आदिम समुदाय को जनजाति घोषित किया जा सकता है। अनुसूचित जनजाति का निर्धारण निम्नलिखित कसौटियों के आधार पर किया जाता है –

– जिस जनजाति की उत्पत्ति किसी जनजातीय समुदाय द्वारा हुई हो।
– भौगोलिक रूप से पृथक किसी पिछड़े क्षेत्र में उसका निवास हो।
– जिसका जीवन आदिम विशेषताओं से युक्त हो।
– जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ी हुई हो।

स्वतंत्रता से पूर्व जनजातियों की मुख्य समस्याएं वनोपज पर प्रतिबंध, विभिन्न प्रकार के लगान, महाजनी–शोषण, पुलिस प्रशासन की ज्यादतियाँ आदि है। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा अपनाए गए विकास के गलत मॉडल ने आदिवासियों से उनके जल, जंगल और जमीन छीनकर उन्हे बेदखल कर दिया। विस्थापन उनके जीवन की मुख्य समस्या बन गई। इस प्रक्रिया में एक ओर उनकी सांस्कृतिक पहचान छूट रही है। दूसरी ओर उनके अस्तित्व की रक्षा का प्रश्न खड़ा हो गया है। इसलिए आज का आदिवासी विमर्श अस्तित्व और अस्मिता का विमर्श है।

आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है – आदिम युग में रहने वाली जातियाँ। औपनिवेशिक युण के पूर्व आदिवासियों की अपनी स्वतंत्र सत्ता थी। जैसे–जैसे साम्राज्यवादी ताकतें बढ़ती गई वैसे–वैसे आदिवासियों का शोषण और उन पर अन्याय अत्याचार बढ़ता गया। अपनी स्वायत्तता और अस्मिता के लिए जितना विद्रोह आदिवासियों ने किया उतना देश के किसी अन्य वर्ग में देखने को नहीं मिलता।

उराँव जनजाति –

मुख्य रूप से सरगुजा, बलरामपुर, जशपुर, रायगढ़ क्षेत्र में निवास करती है। उराँव जनजाति की युवा गृह धूमकुरिया है जिसके मुखिया को धौंगरमहतो कहते है। इनके नाम पशुओ, पक्षियो, मछलियों पौधो तथा वृक्षो के नाम पर रखे जाते है। उराव के प्रमुख देवता ''धर्मेश'' है। जो सूर्य देवता का रूप है। ''सरना देवी'' मुख्य देवी है। उराँव जनजाति द्वारा साल वृक्ष में फूल लगने के उपलक्ष्य में सरहुल नृत्य करते है। प्रमुख बोली ''कुडुख'' है। सरहुल के साथ–साथ करमा नृत्य भी करते है। विरन गीत करमा गीता का हिस्सा है। गाँव के प्रमुख ''मांझी'' कहलाते है। प्रमुख पर्व खट्टी, सरहुल एवं भाग है एवं पारम्परिक पोशाक ''करेया'' है।

यह मुख्य रूप से खेती–किसानी करने वाली जनजाति है। छत्तीसगढ़ में मुख्य रूप से धांसर के नाम से जाने जाते है – जिसका अर्थ है – ''कृषि श्रमिक''।

उराँव जाति के लोग झारखण्ड राज्य के छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासी है। कभी उराँव जाति के लोग सुदूरवर्ती दक्षिण पश्चिम में रोहतास के पठार पर रहते थे, लेकिन अन्य लोगों द्वारा विस्थापित किए जाने पर ये लोग छोटा नागपुर चले आए यहां पर यह मुंडा बोलने वाले आदिवासियों के आस–पास बस गए।

कुल तथा भाषा –

उराँवो की संख्या लगभग 19 लाख है लेकिन शहरी क्षेत्रों विशेषकर ईसाईयों के बीच कई उराँव अपनी मातृभाषा के रूप में हिन्दी बोलते है। यह जनजाति पशु–पौधों तथा खनिज गणचिन्हो से जुड़े कई कुलो में विभाजित है। प्रत्येक गांव में एक मुखिया तथा एक पुश्तैनी पुरोहित होता है। कई पड़ोसी गाँव के लोग मिलकर एक संगठन गठित करते है। जिसके मामले एक प्रतिनिधि परिषद द्वारा निर्दिष्ट होते है।

शयनागार व्यवस्था –

एक गाँव के सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता अविवाहित पुरूषों का सार्वजनिक शयनागार है। महिलाओं के लिए एक अलग भवन होता है। शयनागार व्यवस्था युवाओं के समाजीकरण तथा प्रशिक्षण का कार्य करती है।

उराँव जाति का इतिहास –

कुडुख सिन्धु सभ्यता के वंशज है। यह लिपि से सिद्ध होती है। पड्डू, अली, आल, बिनको उराँव जनजाति में देखने को मिलते है। कुडुख द्रविण परिवार से है, वे बहुत ईमानदार सरल और शांतिपूर्ण व्यक्ति थे। बाढ़, महामारी के कारण वे यहां से अन्यत्र गए। रोहतासगढ़ और छोटा नागपुर में बसे।

2500 ई.पू. के बाद से 1540 के पास छोटा नागपुर में बसे।

उराँवों के संबंध में यह कहा जाता है कि शेरशाह के रोहतास पर आक्रमण के बाद वहां से भागकर छोटा नागपुर में आये। उनके रोहतास छोड़ने की तिथि 6 अप्रैल 1538 बताई जाती है।

इस समूह की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर अवलंबित है। आखेट द्वारा भी वे अंशतः अपनी जीविका अर्जित करते है।

उराँव अनेक गोत्रो में विभाजित है। गोत्र के भीतर वैवाहिक संबंध, निषिद्ध होते है। प्रत्येक गोत्र का अपना विशिष्ट गोत्र चिन्ह होता है। प्रत्येक गोत्र अपने आपको एक विशिष्ट पूर्वज की संतान मानता है। प्रत्येक गोत्र अपने गोत्र–चिन्ह वाले प्राणी, वृक्ष अथवा पदार्थ का किसी भी तरह उपयोग नहीं करता। उसे किसी प्रकार हानि पहुंचाना भी उनके सामाजिक नियमों द्वारा वर्जित है। राय के अनुसंधानो द्वारा 68 गोत्रों की सूची प्राप्त हुई है, इनमें 16 के गोत्र चिन्ह जंगली जानवरों पर 12 के पक्षियों पर 14 के मछलियों तथा अन्य जलचरों, 19 के वनस्पतियों पर 2 के खनिजों पर, 2 के स्थानीय नामों पर तथा 1 का सर्पो पर आधारित है। शेष 2 विभाजित गोत्र है।

प्रत्येक उराँव ग्राम की अपनी स्वतंत्र नियंत्रण व्यवस्था होती है। सामाजिक नियमों के उल्लंघन पर विचार गांव के पंच करते है। गांव के ''महतो'' और ''पाहन'' इस कार्य में उनका निर्देश करते है। राज्य शासन व्यवस्था का विस्तार अब आदिवासी क्षेत्रों में हो चुका है। इसलिए पंचो की परम्परागत शक्ति क्षीण हो गई है। वे अब जातीय परम्पराओं के उल्लंघन पर ही विचार कर सकते है।

उराँव लोगों का ''अंतर ग्राम संगठन'' भी उल्लेखनीय है। कई समवर्ती गांव 'परहा' के रूप में संगठित होते है। परहा का सबसे महत्वपूर्ण गांव राजा गांव माना जाता है। तीन अन्य महत्वपूर्ण गांव अपने महत्व के अनुसार क्रमशः दीवान गांव, पानरे गांव (लिपिक ग्राम) और कोटवार ग्राम माने जाते है। शेष सब प्रजा गांव माने जाते है। परहा संगठन अपने सब सदस्य ग्रामों की सुंरक्षा का प्रबंध करता है।

चुनौतियाँ –

उराँव जनजाति इन दिनो पहचान के संकट से जूझ रही है। चाय–बगान इस जनजाति की संस्कृति के लिए खतरा बनकर उभरे है। उनकी भाषा, संस्कार, त्यौहार सभी लुप्त होने की कगार पर है। इनके पुश्तैनी गाँवो के आस–पास दुर्लभ खनिजों के भंडार थे विकास के नाम पर अंधाधुंध खनन शुरू हुआ फलस्वरूप वे या तो खदानो में काम करने लगे या पलायन कर गये। उराँवो की मातृभाषा ''कुडुख'' है पर बागानो में काम कर रहे उराँव अब ''सादरी'' बोलते है। इनकी सांस्कृतिक गतिविधयां भी गुम हो गयी है। उराँवों ने रोहतागढ़ में 3 बार मुगलो को हराया था। इसी जीत की याद में हर 12 वर्ष में एक बार उराँव महिलाएं पुरूष वेशभूषा में जंगल जाती है और शिकार करती है। पर यह परम्परा भी लुप्त होती जा रही है। उराँवो के पारंपरिक गाँवो में रात्रिघर हुआ करता है जिसमें धुमकुरिया कहते है पर अब यह परम्परा भी विलुप्त होती जा रही है।

जनजातियों के पिछड़ेपन के कारण –

जनजातियों का एक बड़ा हिस्सा भूमिहीन है। ये प्राचीन पद्धति से कृषि कार्य करते है एवं साधनों का अभाव है। सिंचाई सुविधा एवं पेयजल का संकट है। आज भी रूढ़िवादी अंधविश्वास से घिरे हुए है। ऋण के बोझ से दबे है एवं साहूकारों के शोषण का शिकार है। इनके गाँवों तक जाने के लिए अधिकांश जगह आज तक सड़के नहीं बनी है। अधिकांश जनजातीय गाँव उग्रवाद से प्रभावित है जो विकास न होने का एक प्रमुख कारण है। वनों की निरन्तर अवैध कटाई एवं जंगली जानवरों का अवैध शिकार जारी है। ये लोग समाज के अन्य वर्गों से अलग थलग है। सरकारी विकास कार्यक्रम से अधिकांश लोग अनभिज्ञ है।

भावी रणनीति –

इनके सामाजिक आर्थिक विकास में निम्नलिखित सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते है –

जनजातियों के गाँवो तक पहुंचने के लिए संपर्क मार्ग का निर्माण करना चाहिए। सभी विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन नियोजित तरीके से किया जाना चाहिए एवं नियोजन में युवकों को पूर्ण भागीदार बनाना चाहिए। जिससे ये विकास कार्यक्रमों से लाभान्वित हो सके। कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सम्मिलित व्यक्तियों एवं संस्थाओ की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। कार्यक्रम में सम्मिलित व्यक्ति एवं संस्था को जनजातीय भाषा की जानकारी होनी चाहिए जिससे इनसे संवाद स्थापित किया जा सके। सरकार को सिंचाई सुविधा के साथ–साथ सभी कृषि सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। कृषि के आधुनिक तरीके अपनाने हेतु प्रेरित करना चाहिए। जनजातियों को उनके स्वभाव के अनुसार उनकी आर्थिक स्थिति ठीक करने हेतु छोटे–छोटे व्यवसायों से जुड़ने के लिए सकारात्मक पहल करनी चाहिए। जैसे – जंगली जड़ी बूटी, पत्तल, मधुमक्खी पालन, बॉस से निर्मित वस्तुएं आदि। उन्हे छोटे–छोटे ऋण की सुविधा प्रदान की जाए, सरकारी एजेन्सियों से ऋण लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। भूमिहीन जनजातीय परिवारों को उनके गाँवो के समीप भूमि आबंटन करना चाहिए जिससे वे समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित हो सके। बंजर भूमि पर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों को स्कूल भेजने के लिए धीरे–धीरे प्रोत्साहित करना चाहिए। सरकार को वनो की अवैध कटाई एवं जानवरों के अवैध शिकार को रोकने के लिए कड़े कदम उठाना चाहिए। गैर–सरकारी संस्थाओं को इनके विकास में योगदान देने के लिए सहायता प्रदान करनी चाहिए एवं प्रोत्साहित करना चाहिए। वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके साथ अपने संबंधो को और सुधारने के लिए प्रयास करने चाहिए जिससे वे लोग अपनापन

महसूस कर सकें। सरकार को इनके गाँवों को उग्रवाद मुक्त करने के लिए प्रयास करने चाहिए। इनके लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों एवं नीतियों की उपयोगिता का मूल्यांकन किया जाना चाहिए एवं आवश्यकतानुसार समय–समय पर नीतियों में संशोधन करना चाहिए।

संदर्भ :

From Internet

1. उराँव परम्पराओं को निगलते चाय बागान – पंकज चतुर्वेदी।
2. छत्तीसगढ़ के उराँव, हलवा, भत्तरा और भरिया जनजातियाँ।
3. छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ।
4. उराँव जाति।
5. उराँव जाति का इतिहास।
6. उराँव।
7. संस्कृति और विरासत –उराँव जनजाति।
8. आदिवासियों की जीवन शैली और परम्परा – विकिपीडिया।
9. उराँव – विकिपीडिया।
10. कुरूख लोग – विकिपीडिया।
11. उराँव जनजाति की संस्कृति।
12. उराँव जनजाति की संपूर्ण जानकारी।

मो. नं. 9584895167

Email – kashyapmanju6@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha April 2024 ISSN : 2395-7115 Page No. : 104-106
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान

प्रा. नाझीया खतीब
अर्थशास्त्र (कॉमर्स विभाग), तु.बा.कदम महाविद्यालय भरणे, ता. खेड, जि. रत्नागिरी।

प्रस्तावना :-

भारतीय संस्कृतीने तिच्या इतिहासाने अद्वितीय भौगोलिक रचनेने, वैविध्य पूर्ण लोकजीवनाने आणि शेजारील देशांच्या परंपरा व कल्पना स्वीकारून तसेच पुरातन परंपरा जपून आकार घेतला आहे। भारतात जागोजागी वेगवेगळे लोक, धर्म, वातावरण, भाषा, चालीरीती आणि परंपरा यात वैविध्य दिसत असूनही आढळणारे साम्य हे या देशाचे वैशिष्ट्ये आहे। देशभरात पसरलेल्या विविध उपसंस्कृती आणि हजारो वर्षाच्या परंपरा यांची एकत्रित वळलेली आहे। म्हणजे भारतीय संस्कृती ती अनेक प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरूंचे व योगशिक्षकांचे आश्रयस्थान आहे।

संस्कृती ही संकल्पना अतिशय व्यापक व गुंतागुंतीची असून त्यामध्ये त्या त्या समाजातील श्रद्धा, कला, नीती, कायदे, रूढी, परंपरा, मुल्ये, अभिवृत्ती, सवयी, तंत्रे, कल्पना, देवदेवता, प्रजाविधी अशा अनेक गोष्टीचा अंतर्भाव त्यात होत असतो। भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान संदर्भित करण्यासाठी साहित्य भारतीय संस्कृती ही एक प्राचीन आणि जगातील सर्वात लोकप्रिय संस्कृतीपैकी एक आहे।

शोधनिबंधाची उद्दिष्टे :-

१) भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान यांचा सहसंबंध अभ्यासणे।

२) भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान यांच्यामधील सद्यरूस्थितील उपयुक्तता अभ्यासणे।

संशोधन पद्धती :-

हा शोधनिबंध पूर्ण करण्यासाठी दुय्यम साधनांचा वापर केला आहे। ज्यामध्ये संदर्भग्रंथ, पुस्तके, साप्ताहिक, मासिके, वर्तमान पत्रातील लेख तसेच इंटरनेटवरील माहितीचा आधार घेण्यात आला आहे। तसेच हा प्रस्तुत शोधनिबंध पूर्ण करण्यासाठी काही ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक अनुभवावर आधारित पद्धतीचा वापर केला आहे।

१) भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान यांचा सहसंबंध :-

पश्चिमेतील वादविवाद कोपर्निक्स आणि गॅलिलीओ विशेषत नंतरचे जे त्यांच्या वैज्ञानिक क्रांतीचे चिन्हांकित करतात। प्राचीन काळी निरनिराळे ऋषि, संत आणि गुरु यांचे आश्रम, मंदिरे ही सर्व प्रकारच्या विद्या, कला आणि शास्त्रे शिवकवण्याची स्थाने होती त्याचबरोबर वेद काळापासून आजपर्यंत भारतात ठिकठिकाणी मोठ मोठी विद्यापीठे स्थापन करण्यात आली त्यात शास्त्रे, विद्या, धर्म, कला, तत्त्वज्ञान इत्यादी सर्व विषय शिकवले जात

असत। या विद्यापीठांमुळेच सहस्रो वर्षाची संस्कृती आणि विज्ञान कायम राहिले. विज्ञान हा संस्कृतीचा भाग आहे। आणि विज्ञान कसे केले जाते हे मुख्यत्वे ज्या संस्कृतीत केले जाते त्यावर अवलंबून असते।

भारतीय सभ्यतेचा वैज्ञानिक संस्कृतीचा मोठा इतिहास आहे जो ५००० वर्षाहून अधिक काळाचा आहे। भारतीय वारसा रत्नापचार आयुर्वेदिक औषध, भौतिकशास्त्र, शेती, साहित्य इत्यादी सारख्या विविध विकासासाठी ओळखला जातो।

भारतीय सण हे आपल्या विज्ञानाचेही प्रतिबिंब आहेत। या सणांमध्ये आपल्या पूर्वजांनी केलेल्या वैज्ञानिक निरीक्षणांचा आणि शोधांचा समावेश आहे। उदा. होळी हा ऋतू परिवर्तनाचा सण आहे। या सणात आपण रांगोळी काढतो, होळी खेळतो आणि फुलांची रांगोळी बनवतो। विविध प्रकारच्या संस्कृतीने नटलेला आपला देश व आपल्या देशातील प्रत्येक सण यांचे महत्त्व आपल्या जीवनात अनन्य साधारण आहे। वर्षाच्या सुरुवातीपासून तर अगदी अखेर पर्यत प्रत्येक सणांचे महत्त्व व त्यावेळेस बदलणारे ऋतुमान होणारा नैसर्गिक हवामानातील बदल याची सांगड सुद्धा या सणांसोबत घातलेली प्रामुख्याने आढळते। आपल्या संस्कृतीतील प्रत्येक धर्म यामागे कुठल्या ना कुठल्या प्रकारच आधात्म व शास्त्र जोडलेले आहे।

भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान यामधील उपयुक्तता :-

आजचे वैज्ञानिक युग हे वेदांवर आधारभूत आहे। वेदाभ्यास करणाऱ्यांना व वैज्ञानिक दृष्टीकोन बाळगणाऱ्या अशा प्रत्येक व्यक्तीला उपयुक्त आहे।

योग (Yoga)

योग ही साधनेची एक पारंपारिक पद्धत आहे। जी प्राचीन भारतीयांनी विकसित केली आहे। योग अभ्यासकाला एक स्पष्ट आणि केंद्रीत मन देखील देतो आणि शारिरीक, मानसिक, सामाजिक आणि आध्यात्मिक आरोग्याच्या क्षेत्रात विकास सुनिश्चित करून तणाव मुक्त जीवन जगण्यास मदत करतो। योगाच्या सर्वात महत्त्वाच्या पैलूंपैकी एक म्हणजे प्राणायाम, योगिक श्वासोच्छवास विज्ञान।

ओम जप (Chanting om)

ओमच्या लयबद्ध उच्चांरातील कंपनांचा शरीरावरही शारिरीक प्रभाव पडतो तो मज्जासंस्था आणि मन शांत करतात। त्यामुळे रक्तदाब कमी होतो आणि ह्र्दयाचे आरोग्य सुधारते।

नमस्ते (Hello)

नमस्ते हा शब्द उच्चारताना छातीच्या पातळीवर हात जोडून ह्र्दय चक्राच्या जवळ डोळे बंद करून आणि डोके टेकवून लोकांना अभिवादन करण्याची पद्धत आहे। हे वेदांमध्ये नमुद केलेल्या पारंपारिक अभिवादनांच्या पाच प्रकारापैकी एक आहे।

उपवास (Fasting)

प्रत्येक धर्मामध्ये उपवासाला अनन्य साधारण महत्त्व आहे। उपवास केल्याने आत्मा आणि शरीर स्वच्छ होते।

पाण्यासाठी तांबे वापरणे (using copper for water)

आयुर्वेदानुसार सकाळी रिकाम्या पोटी तांब्याने समृद्ध पाणी प्यायल्याने तिन्ही दोष (कफ, वात आणि पित्त) संतुलित राहण्यास मदत होते।

निष्कर्ष

१. वैज्ञानिक संस्कृती ही मानवाच्या किंवा मानवांच्या क्रिया कलपांच्या विशिष्ट गटांचे उत्पादन आहे।

२. सांस्कृतिक मुल्य ही वैविध्यपूर्ण संस्कृतींना अद्वितीय बनवतात।

३. एक संस्कृती म्हणून विद्वान इतर दोन प्रमाणे स्पष्टपणे प्रकट होत नसले तरी त्याचे खोल आणि महत्त्वाचे परिणाम आहेत।

सारांश :–

संस्कृती आणि विज्ञान हे जटिल सामाजिक विषय आहेत जे भिन्न संस्कृती आणि परंपरानुसार बदलू शकतात। विज्ञान हा वस्तुनिष्ठ विचार आहे। तर संस्कृती हा व्यक्तीनिष्ठ विचार आहे। म्हणून संस्कृती आणि विज्ञान वेगवगळ्या पैलूंमध्ये खूप जवळून जोडलेले आहेत। त्याची विधाने दर्शविण्यासाठी विज्ञान नेहमीच तथ्य आणि तर्कावर अवलंबून असते, तर संस्कृती लोकांच्या श्रद्धा व आस्था यावर अवलंबून असते।

संदर्भ :–

१. भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान, सनातन संस्था संदर्भ– महाराष्ट्र टाइम्स, १६/०१/१९८१ लेखक धुंडिराज।

२. भारतीय संस्कृती कोश, (२०१०)

३. भारतीय संस्कृती (साने गुरुजी)

४. भारतीय संस्कृती आणि परंपरा (सुषमा नानोटी)

मो. ८००७१३९८८३

ई मेल : khatibnajeeya.gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 107-111
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सनातन धार्मिक प्रतीकों की वैज्ञानिकता

डॉ. नेहा प्रधान
सहायक व्याख्याता, इतिहास, कीर्ति डिग्री कॉलेज, नैनवा, बूंदी, राजस्थान।

सनातन धर्म में संस्कार संस्कृति को अंगीकार किया गया है। संस्कृति का अर्थ है भूषण भूत सम्यक् कृति अर्थात् वह क्षेत्र जो कि सम्यक् कृतियों से परिपूर्ण हो। इस संस्कृति में मनुष्य की न सिर्फ भौतिक अपितु आध्यात्मिक उन्नति का ध्यान भी रखा गया। वेदादि और अन्य धार्मिक ग्रन्थों में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, कलाओं, ज्ञान और विज्ञान आदि सभी विषयों को सम्मिलित किया गया है। त्रिवेदों में मनुष्य के सभी मुख्य आधारों को भलीभांति सिखाया गया है। प्रागैतिहासिक काल से ही सनातन संस्कृति की विद्यमानता रही है। संस्कार की हुई यह पद्धति ही संस्कृति के रूप में वैदिक काल में फलीभूत हुई। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद की ऋचाओं में देवताओं के लिए मंत्रों उनके उच्चारणों, हवन की वेदियों, मंत्रों को साम अर्थात् गान द्वारा उच्चारित करके दैवीय शक्तियों को आकर्षित करने का वर्णन है। पाषाणकालीन मानव के मन मस्तिष्क में भले ही यह सब विचार न रहे हों लेकिन भारतभूमि की पुण्य मिट्टी से उसने उन्हीं विचारों को ग्रहण किया जो वर्तमान में हमारी संस्कृति का मुख्य आधार हैं।

ॐ – प्रागैतिहासिक काल में भी त्रिशूल, शिवलिंग, चक्र, गदा और स्वास्तिक की आकृतियों का अंकन पाया जाना यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें दैवीय शक्तियों का ज्ञान अवश्य रहा होगा। वैदिक काल में ऋषियों ने इन आकृतियों का वैज्ञानिक तौर पर विश्लेषण कर इन्हें सिद्ध किया है। सर्वप्रथम ॐ का वैज्ञानिक आधार प्रकृति से लिया गया है। शून्य और अंतरिक्ष में इसकी ध्वनि विद्यमान है। माण्डूक उपनिषद् में इसे सम्पूर्ण सृष्टि माना गया है। बौद्ध धर्म में ॐ मणि पद्मे हूं और अन्य में भी इसका वर्णन प्राप्य है। ब्रह्माण्ड में एक लयबद्ध कम्पन का केन्द्र इसी में निहित है। यह तीन अक्षरों से निर्मित है–

वैज्ञानिक रूप से देखें तो अ ध्वनि गले के पृष्ठ भाग से उच्चारित की जाती है परन्तु मुंह को खोलने से अ की ध्वनि आरंभ को दर्शाती है तत्पश्चात् उ की ध्वनि आती है जो कि मध्य से आती है और अंत में म की ध्वनि म, होंठों को बंद करने के बाद आती है जो कि अंत का प्रतीक है। इस प्रकार यह सृष्टि के आरंभ, संचालन और अंत का प्रतिनिधित्व करती है।

यहां अन्य कई विद्वानों ने ॐ की व्याख्या निम्न प्रकार की है–

अ अर्थात् तमस(अंधकार या अज्ञान), उ अर्थात् रजस (गतिशीलता), म अर्थात् सत्व (शुद्धता, प्रकाश)

अ –वर्तमान, उ–भूत, म–भविष्य

अ– जगे होने की स्थिति, उ– स्वप्न देखने की स्थिति, म–गहरी नीं की स्थिति

अ–ब्रह्मा, उ–विष्णु म–शिव

वैदिक पद्धति में इनके उच्चारण के नियमों के साथ ही सकारात्मक अनुनाद की संस्कृति पल्लवित हुई। महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में इसके निम्न लाभ बतलाए हैं–

सूत्र 1.27 ईश्वर की रहस्यवादी ध्वनि ॐ अर्थात् प्रणव है।

सूत्र 1.28 ॐ के अर्थ को समझकर ही ध्यान करना चाहिए

सूत्र 1.29 ॐ का ध्यान करने से समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं।

सूत्र 1.30 ॐ के जाप से रोग, निराशा, चिंता, संदेह, आलस्य, कामवासना आदि दूर हो जाते हैं।

सूत्र 1.31 ॐ के जाप से मानसिक विकृतियां ,शारीरिक दोषादि दूर होते हैं।

स्वास्तिक –भारतीय संस्कृति के एक मुख्य प्रतीक स्वास्तिक मांगलिक चिन्ह का प्रतिनिधित्व करता है। इसका संबंध सूर्य से माना गया। इसका अर्थ है 'स्वस्ति' जो कि साधना की अवस्था है जो कि एक आनंद की अवस्था होती है। स्वस्ति का अर्थ है कल्याणकारी या सौभाग्यशाली, जिसके साथ सूर्य और चन्द्रमा दोनों की कल्याणकारी शक्तियां होती हैं।(ऋग्वेद 52.15) भारतीय संस्कृति में स्वास्तिक को घड़ी की सुई की दिशा में बिना एक भी रेखा को काटे बनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी रेखा को काटकर उसकी नकारात्मकता को आकर्षित करने की प्रथा का अभाव रहा है। दक्षिणावर्ती स्वास्तिक में सूर्य की भांति ही गतिशीलता होती है। विभिन्न युगों में इसकी चार भुजाओं को विभिन्न नामों से जाना गया जैसे पृथ्वी, जल अग्नि और वायु तो कुछ ने इसे चारों दिशाओं से संज्ञापित किया, कहीं चारों वेदों से तो कहीं चार ऋतुओं की कल्पना की गई किन्तु इसकी सटीक और महत्वपूर्ण व्याख्या वैदिक काल में

की गई। इस व्याख्या में इसकी चार भुजाओं को चार पुरूषार्थो यथा–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष माना गया। बाहरी भुजाओं को चार प्रकार की मुक्ति सालोक्य अर्थात् देवता की पूजा करने से देवलोक की प्राप्ति होती है इसलिए इसे सालोक्य कहा जाता है। जब वह देवता के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है तो सारूप्य की प्राप्ति होती है। जब मनुष्य देवता के निकट पहुंच जाता है तो सामीप्य की प्राप्ति होती है तथा अंत में वह देव के साथ एकाकार हो जाता है, उसे सायुज्य कहा जाता है। यह नाम जप का प्रतीकात्मक अंकन है जो कि प्रत्येक शुभ अवसर पर दक्षिणावर्ती दिशा में घूमते हुए बनाया जाता है।

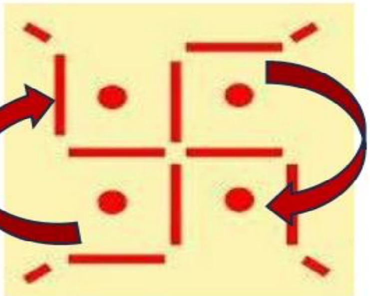

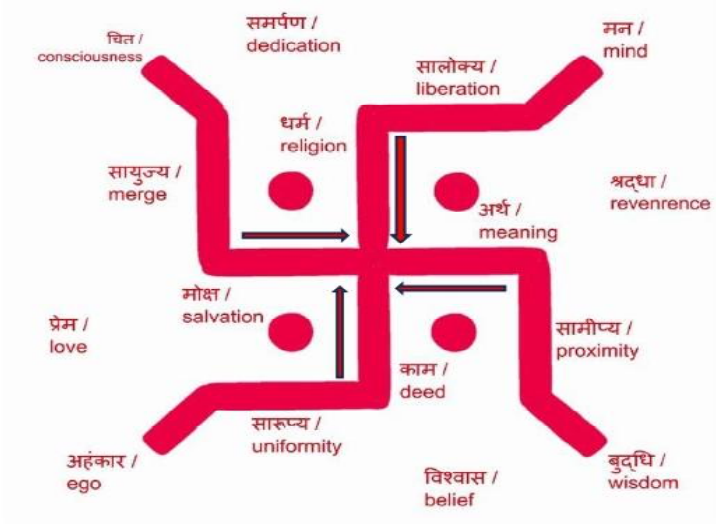

बाहरी चार भुजाएं मनुष्य के अंतःकरण मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त अर्थात् चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। भक्तों की भक्ति दर्शाने के लिए इनके मध्य में चार बिन्दु श्रद्धा, बुद्धि, प्रेम और समर्पण भी अंकित किए जाते हैं। इस प्रकार से स्वास्तिक मनुष्य के समस्त प्रकार की कल्याण की भावना का प्रतीक है जो कि सकारात्मक उर्जा का प्रवाह करता है।

चक्र –भारतीय संस्कृति में मुख्यतया गोलाकृतियों को ही आधार बनाया गया है। संभवतया इसी प्रेरणा सभी ग्रहों के गोलाकार स्वरूप से ग्रहण की गई है। प्रागैतिहासिक काल में पहिए के निर्माण के बाद मनुष्य जीवन में निर्माण के नवीन अवसर प्राप्त होने के कारण भी इसके प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। यह निरन्तरता का प्रतीक है। बिना किसी रूकावट के निरन्तर गतिमान रहने की ओर संकेत प्रदान करता है।

गोलाकृति के पीछे छिपे विज्ञान का ज्ञान प्राप्त होने के बाद वैदिक काल में इसका प्रयोग विभिन्न स्थानों पर किया गया। पहिए के कारण ही रथ, बैलगाड़ियों, प्राचीन विमानों का निर्माण संभव हो सका। ऋग्वेद में पहिए का वर्णन प्राप्त होता है – 'प्रवो वायुं रथयुजं कृणुध्वम्।' जिसका अर्थ है कि वायु द्वारा रथ को संचालित किया जाए और यह सिर्फ गोलाकृति अर्थात् पहिए द्वारा ही संभव था जो कि उसे आगे की ओर गति प्रदान करता था।

श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र का रूप भी गोलाकार था, जो कि अपना कार्य सम्पन्न कर पुनः उन्हीं के पास लौट आता था। इसी को आधार बनाकर चक्रपूजा का आरंभ हुआ। यह श्रीकृष्ण के सुदर्शन से संबंधित रहा तो कहीं सूर्य के प्रतीकात्मक अंकन के लिए भी इसका प्रयोग किया गया। भारतीय संस्कृति में वृहदारण्यक उपनिषद में संसार और जन्म–मरण के चक्र को इसी के समकक्ष माना गया है। भारत में पल्लवित समस्त धर्मों में किसी न किसी रूप में चक्र को ग्रहण किया गया। मनुष्य जीवन में नियमों को धर्मचक्र कहा गया। प्राचीन काल में चक्र के समान वीरोचित गुणों वाले नरेशों को चक्रवर्ती कहे जाने की प्रथा का आरंभ भी हुआ। चक्र के पीछे एक गहन और विशद् विज्ञान का रहस्य छिपा है। चक्र में तीन प्रमुख भाग होते हैं– केन्द्र, परिधि और व्यास। गणितज्ञों के अनुसार परिधि =पाई x व्यास और इसका मान है 22/7 इसके अनुसार मनुष्य शरीर को चक्र मानें जो हमारा केन्द्रबिन्दु हमारी आत्मा है। नाड़ी तंत्र उसकी परिधि और रक्तवाहिनियों को व्यास माना जा सकता है। जब तक यह सुचारू रूप से कार्य करता है तब तक शरीर पहिया गतिमान रहता है।

भारतीय संस्कृति में ईश्वर की सगुण और निर्गुण भक्ति उपासना पद्धतियां रही हैं। इनमें ऊंकार जप, हवन आदि को निर्गुण अर्थात् निराकार भक्ति कहा गया है। गुप्त काल के पश्चात् ईश्वर का प्रतीकात्मक अंकन या उनकी मूर्तिरूप की उपासना का प्रचलन रहा। सनातन धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और महेश के साथ पंचदेवों गणेश, शिव, शक्ति, सूर्य और विष्णु , प्रकृति की शक्तियों की भी उपासना की गई। इन सभी के पीछे पंचभूत तत्वों की उपासना का आशय निहित था जिनसे सृष्टि के समस्त चर और अचर जीवों का उद्भव हुआ है और अंत में इसी में विलीन होने का अर्थ रहा।

सनातन संस्कृति प्रकृति की संरक्षक, पोषक और आश्रित होने की परम्परा का निर्वहन करती आई है। इसमें सभी के कल्याण की भावना ही निहित रही है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को आत्मसात करती हुई विश्वभर में अपनी संस्कृति का बीजारोपण करते हुए इसका ज्ञान निरन्तर पल्लिवित होता रहा है। भारतीय धार्मिक प्रतीकों के गहन अर्थों और उनके रहस्यों को समझने का निरन्तर प्रयास किया जाता रहा है जिससे सृष्टि के विभिन्न रहस्यों का उद्घाटन हुआ है। वैज्ञानिक उपकरणों और अन्य रहस्यों का ज्ञान हो जाने के बाद इसकी विलक्षणता स्वयमेव सिद्ध होगी जो कालजयी होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. व्यास डॉ0 श्याम मनोहर– भारतीय संस्कृति एवं दर्शन, संघी प्रकाशन जयपुर, 2000
2. **Somani, Dr Hariprasad- Prabhat Prakashan.2019**
3. डॉ. विनय– गरूड़ पुराण, **Feb 2017 · Diamond Pocket Books Pvt Ltd**
4. ऋग्वेद सूत्र 52.15
5. माण्डूक उपनिषद PDF , https://vedantastudents.com/

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 112-115

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

बौद्ध धर्माचे तत्वज्ञान विज्ञाननिष्ठ

प्रा. पी. डी. माने

सहा. प्राध्यापक इतिहास विभाग, श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अँड सायन्स कॉलेज. माळवाडी– कोतोली।

प्रस्तावना :–

भारतात जन्माला आलेला बौद्ध धर्म हा जगातील महत्त्वाच्या धर्मापैकी एक मानला जातो। बौद्ध धर्म आपल्या जन्मस्थानापासून निघून जगभर पसरलेला जगातील पहिला धर्म होय। याचे सर्वात महत्त्वाचे कारण म्हणजे बौद्ध धर्माचे तत्वज्ञान हेच मुळात विज्ञाननिष्ठ आहे। तसेच विज्ञानाच्या कसोटीवर आधारलेले आहे त्यामुळेच बौद्ध धर्माची ओळख ही विश्वधर्म म्हणून केली जाते। ऐतिहासिक दृष्टिकोनातून बौद्ध धर्म हा भारतातील एक अतिप्राचीन तत्त्वज्ञानाच्या दृष्टिकोनातून मानवी मूल्यांचा पुरस्कर्ता, विज्ञाननिष्ठ व परिवर्तनशील धर्म आहे।

तथागत गौतम बुद्धांनी इ.स.वी पूर्व सहाव्या शतकात बौद्ध धर्माचे धम्मचक्र परिवर्तन करून आपल्या धर्माचे तत्त्वज्ञान सांगितले आहे। गौतम बुद्ध यांनी अखिल मानव जातीला प्रज्ञा, शील, करुणा या तत्त्वाची शिकवण दिली बौद्ध धर्म हा स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व, करुणा, मैत्री, प्रज्ञा, मानवी मूल्य व विज्ञानवाद या तत्त्वांचा पुरस्कार करणारा धर्म आहे। आधुनिक विज्ञान व मानवी मूल्याचे समर्थन करणारा धर्म म्हणून बौद्ध धर्माला एक वेगळी ओळख मिळालेली आहे। त्यामुळेच जगामध्ये ख्रिश्चन धर्मानंतर सर्वाधिक अनुयायी बौद्ध धर्माला (1.8 अब्ज) लाभलेले आहेत। भारतातील कोट्यावधी हिंदू, दलित धर्मीयांनी तसेच जगभरातील अनेक मानवतावादीविज्ञानवादी लोकांनी बौद्ध धर्माचे आनुयायित्व पत्करलेले आहे। त्यामुळे या सर्व बौद्ध अनुयायांची एकत्रित लोकसंख्या ही 2.3 अब्जावर आहे। त्यानुसार बौद्ध धर्म हा जगातील सर्वाधिक अनुयायी असलेला धर्मसुद्धा ठरतो. यास अनेक कारणे असू शकतात पण सर्वात महत्त्वाचे कारण म्हणजे हा धर्म विज्ञाननिष्ठआहे। बौद्ध धर्माचे तत्त्वज्ञान हे बहुमतांशी विज्ञानवादी आहे। त्याची विचारधारा विज्ञानावर आधारलेली आहे। विज्ञान व बौद्ध धर्मात समानता आहे। हे या धर्माचे सर्वात महत्त्वाचे वैशिष्ट्य आहे। विज्ञान ज्या पद्धतीने सत्याचा शोध घेते त्याच पद्धतीने सत्याचा शोध घेणे हाच बौद्ध धर्माच्या तत्त्वज्ञानाचा अंतिम सार आहे।

बुद्धाचाप्रतीत्यसमुत्पात सिद्धांत/कार्यकारणभाव :

विश्वामध्ये दररोज हजारो लाखो घटना घडतात त्या सर्वच घटना घडण्यापाठीमागे कोणते ना कोणते कारण असते त्यास विज्ञानातील कार्यकारणभाव म्हणतात विश्वामधील कोणतीही घटना कारणाशिवाय होत नाही। घटना म्हटले की कारण हे असलेच पाहिजे विज्ञानात चमत्काराला स्थान नाही निसर्गातील अनेक घटना आपणास चमत्कार अथवा गूढ वाटतात। पण याचा अर्थ त्याचे शास्त्रीय कारण नसताना त्या घडतात असे होत नाही, तेथे ते कारण मानवाला माहीत नसते एवढेच म्हणजेच कारणाशिवाय कोणतेही कार्य घडत नाही या सिद्धांताची

निर्मिती भारतात हजारो वर्षांपूर्वी गौतम बुद्धाने केले आहे।

निसर्गामध्ये चमत्कार, अद्‌भुतशक्ती व मंत्र इत्यादी अस्तित्वात नाहीत। हाच सिद्धांत बुद्धांनीप्रतीत्यसमुत्पातया नावाने मांडला। बौद्ध धर्माचा प्रत्येक सिद्धांत विज्ञानाच्या कसोटीला उतरतो जगाच्या पाठीवर घडणारी प्रत्येक घटना ही कुठल्या ना कुठल्या कारणामुळे घडत असते। हे सांगताना गौतम बुद्धांनी वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून या जगातील सर्व गोष्टींचा विचार केलेला दिसतो। कोणतीही गोष्ट नित्य नाही व ती कायम टिकणारी नाही, जी प्रत्येक गोष्ट जगामध्ये निर्माण होते, ती अनित्य असून तिचा नाश होतो। त्यामुळे संम्यक दृष्टिकोन ठेवून आपण प्रत्येक गोष्टीकडे पाहिलेपाहिजे.निसर्गाचे चक्र हे कायम असून माणसाची आसक्ती हे त्याच्या दुःखाचे मूळ कारण आहे, असे प्रतिपादन गौतम बुद्धाने केले। यावरून बौद्ध धर्माचे तत्त्वज्ञान विज्ञानवादी असल्याचे दिसून येते।

हा सिद्धांत म्हणजे बौद्ध धर्माची भारतीय तत्त्वज्ञानाच्या क्षेत्रात मिळालेली एक देणगी आहे। या जगात विना हेतू काहीही होऊ शकत नाही, असा सिद्धांत सांगून गौतम बुद्धाने दुःखाची जी हेतू फल परंपरा सांगितलेली आहे। त्यालाच प्रतीत्यसमुत्पातसिद्धांत म्हणतात या भावलोकात मानवाचे जीवन दुःखाने भरलेले आहे। या दुःखाचेगौतम बुद्धांनी केलेले निदान म्हणजेचप्रतीत्यसमुत्पातसिद्धांत (कार्यकारण संबंध) या नावाने बौद्ध ग्रंथातून प्रसिद्ध आहे।

बौद्ध धर्मातदेव आत्मा अमान्य :

विश्वामध्ये देव अथवा ईश्वर नावाची कसलीही गोष्ट, वस्तू किंवा प्राणी अस्तित्वात नाही। बौद्ध धर्मामध्ये देवाला स्थान नाही तथागत भगवान गौतम बुद्धाने देव नाही हा सिद्धांत अनेक दृष्टीकोनातून लोकांना पटवून दिला आहे विज्ञानाच्या सिद्धांताप्रमाणे जगात देव नाही कारण त्याचा आकार कसा स्थान याबद्दल कोणालाही माहिती नाही देव ही मानवी मनाची काल्पनिक संकल्पना आहे। त्याचबरोबर विज्ञानानुसार शरीरामध्ये कोठे ही आत्म्याचे स्थान नाही हा सिद्धांत तथागत भगवान बुद्धाने इ.स.वी सणाच्या सहा शतके आधी सांगितलाआहे। शरीर चार महाभूतांनी बनलेले आहे त्यामध्ये पृथ्वी, आप, तेज व वायू यांचा समावेश आहे। मनुष्यप्राणी जेव्हा मरतो तेव्हा ही चारही महाभुते निसर्गातील आपापल्या घटकांमध्ये विलीन होतात। त्यामुळे शरीरामध्ये आत्मा नाही हे सिद्ध होते मानवाच्या शरीरामध्ये आत्मा नावाचा कोणताही भाग आढळत नाही। असे बुद्धानी सांगितले आहे।

गौतम बुद्धांनी चिकित्सक वृत्तीने पुनर्विचार पुनरनिरीक्षण व पुनर्परीक्षण करावे असा संदेश दिला। आधुनिक काळात वैज्ञानिक दृष्टिकोनाची हीच खरी पार्श्वभूमी आहे एखाद्या गोष्टीचे वास्तव जाणून घ्यायचे असल्यास प्रथम पाहणे, नंतर निरीक्षण करणे, त्यानंतर परीक्षण करणे व त्यानंतर हाती आलेला निष्कर्ष पुन्हा पुन्हा पडताळून पाहणे। जेव्हा तोच तो निष्कर्ष वारंवार कोणत्याही परिस्थितीत, कोणत्याही काळी आणि कोणत्याही ठिकाणी येत असेल तर, तो मान्य करणे ही वैज्ञानिक प्रक्रिया होय। सत्यशोधनाच्या या वैज्ञानिक प्रक्रियेत व बुद्धांच्या सिद्धांतात अद्वितीय साम्य असल्याचे दिसून येते।

गौतम बुद्धांचाधर्म अंतरमुखी विज्ञानाची शिकवण देतो व बहिरमुखी विज्ञानाचा स्वीकार करतो। मानवाच्या सुख सुविधांसाठी भौतिक गरजा पूर्ण होण्यासाठी आधुनिक विज्ञान आवश्यक आहे। बाहेरील समस्यांचे निवारण होण्यासाठी आधुनिक तंत्रज्ञान, आधुनिक शिक्षण व विज्ञान आवश्यक आहे, तर आतीलसमस्याचे निवारण होण्यासाठी मनाला स्थिर शांत व मनाच्या पार होण्यासाठी अंतर विज्ञानाची ध्यान समाधीची आवश्यकता आहे। बुद्धाने ईश्वर किंवा आत्म्याला धर्माचा केंद्रबिंदू मानले नाही, त्यांनी मानवाला व मानवी मनाला धर्माचे केंद्रबिंदू मानले आहे।

गौतम बुद्धांचाकर्म सिद्धांत :

गौतम बुद्धांनीसांगितलेला कर्म सिद्धांत हा इतर धर्मातील धर्मसिद्धांतापेक्षा वेगळा आहे। बुद्धांचा कर्म सिद्धांत "कराल तसे भराल" असे सांगतो चांगल्या कर्माचा परिणाम चांगचांगला ववाईट कर्माचा परिणाम वाईट असतो बौद्ध धर्मात कर्माचे तीन प्रकार सांगितलेले आहेत एक तात्काळ फळ देणारे कर्म दोन परिणाम व व फळ कालांतराने देणारे कर्म तीन अनिश्चित काळात फळ देणारे कर्म होय।

कर्म म्हणजे माणसाकडून केले जाते ते कार्य आणि विपाक म्हणजे त्याचा परिणाम जर नैतिक व्यवस्था वाईट असेल तर त्याचे कारण मनुष्य कुशल कर्म करतो आहे। जर नैतिक व्यवस्था चांगली असेल तर त्याचा अर्थ इतकाच की मनुष्य कुशल कर्म करतोय। भगवान बुद्ध केवळ कर्मा संबंधित बोलत नाही तर, ते ज्यांना कर्म नियम म्हणून ओळखतात त्या कर्मनियमांचे विवेचन करतात। ज्याप्रमाणे दिवसा मागून रात्री येते त्याप्रमाणेच कर्मा मागून त्याचे परिणाम येतातहा निसर्ग नियम आहे। म्हणून भगवान बुद्धांचा उपदेश असा आहे की तुम्ही असे कुशल कर्म करा म्हणजे मानवतेला चांगल्या नैतिक व्यवस्थेचा लाभ होईल, कारण कुशल कर्मानेच नैतिक व्यवस्था राखली जाते।

भगवान बुद्धांनीकर्मसिद्धांत सांगताना त्यांच्या म्हणण्यानुसार दैव, (देव) नशीब, नियती या सर्व संकल्पना चुकीच्या आहेत। तुम्ही ज्याप्रमाणे वर्तन कराल त्याप्रमाणे तुम्हाला फळ मिळेल असे विज्ञान सांगते। भगवान बुद्धांच्याकर्मसिद्धांताप्रमाणे आदर्श समाज घडवायचा असेल तर कुशल कर्म करावे म्हणजेच दैववाद नशीब यावर अवलंबून राहू नये। स्वकर्म चांगले तर त्याचा परिणामही चांगला ही नीती बौद्ध धर्माचा गाभा आहे।

समारोप :-

बौद्ध धर्माच्या एकूणच तत्त्वज्ञानाचा विचार केला असता, त्या धर्मातील पंचशीलतत्वे, त्रिशरण, अष्टांग मार्ग यांची विचारधारा ही विज्ञानावर आधारलेली दिसून येते। विज्ञानवादी बौद्ध धर्माने लोकांमध्ये वैज्ञानिक दृष्टिकोन बिंबवण्यासाठी सहाय्य केले आहे। या धर्माची मूलतत्त्वे व तत्वज्ञान ही विज्ञानादीष्टीत असल्याने त्यांच्या शिकवणीतून लोकांमध्ये वैज्ञानिक दृष्टी येण्यास हातभार लागला आहे।

आजच्या युगात विज्ञानाच्या गगनभेदीगरुडभरारीशीयशस्वीरित्या स्पर्धा करू शकणारा पहिल्या विश्वधर्माचाअविष्कार गौतम बुद्धांनी अडीच हजार वर्षांपूर्वी केला। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, "विज्ञाननिष्ठ समाजाला बौद्ध धर्माशिवाय पर्याय नाही अन्यथा तो समाज नष्ट होईल आधुनिक जगाला जर स्वतःला वाचवायचे असेल तर त्याला बुद्ध धर्माची कास धरावी लागेल।"

चार्ल्स डार्विन हाउत्क्रांतीवादाचा जनक म्हणून ओळखला जातो, त्यानी 19 साव्या शतकात असे सांगितले आहे की, विश्वकोणी निर्माण केले नाही तर, विज्ञानाच्या आधारे जगाच्या हळूहळू विकास होत गेला। हा सिद्धांत मांडला। हाच सिद्धांत अडीच हजार वर्षांपूर्वी इ.स. पूर्व सहाव्या शतकात भगवान बुद्धाने संपूर्ण जगाला सांगितला आहे। याचाच अर्थ बौद्ध धर्म हा विज्ञानवादी धर्म आहे। आणि विज्ञानवादहा बुद्ध धर्माचा पाया आहे। असे दिसून येते। आधुनिक काळातील जगतविख्यात शास्त्रज्ञ अल्बर्ट आईन्स्टाईन यांच्या मते," जगातील पहिला वैज्ञानिक तथागत गौतम बुद्ध होय।"

जगामध्ये सतत बदल होत असतात ते स्थिर (नित्य) असे नसते ग्रह, तारे, पृथ्वी, वगैरे विश्वात काही नित्य नाही। असे विज्ञान स्पष्ट सांगते भगवान बुद्धांनी सुद्धा विश्वामध्ये प्रत्येक गोष्ट अनित्य आहे। सर्व बदलत

असते सजीवांमध्येहीक्षणाक्षणाला बदल होत असतो। असा परिवर्तनवादी सिद्धांत बुद्धांनी मांडला।

भगवान बुद्ध आपले तत्त्वज्ञान सांगताना म्हणतात, मी सांगतो म्हणून तुम्ही खरे मानू नका तर या पहा व विचार करा आणि तुमच्या बुद्धीला पटेल तरच धर्माच्या तत्त्वज्ञानाचा स्वीकार करा। तसेच धर्म हा सर्वांसाठी खुला आहे त्यामध्ये जात, पात, पंथ, लिंग इत्यादी कोणताही भेदभाव नाही विज्ञानाणी केलेले संशोधन हे अंतिम आहे। असे विज्ञान मानत नाही म्हणजे बौद्ध आचारसंहिता व विज्ञान यामध्ये हे साम्य आहे।

बौद्ध तत्त्वज्ञान धर्म व विज्ञान दोन्ही स्वीकारतो गौतम बुद्धांच्यामुळे या जगात धर्माने प्रथमच विज्ञानासह चालण्याचे सामर्थ्य दाखवले म्हणून विज्ञानचाजसजसा प्रचार व प्रसार होईल, तसतसा येणाऱ्या काळात बौद्ध धर्माच्या तत्त्वज्ञानाचाही प्रचार व प्रसार वाढत जाईल आज बौद्ध धर्म हा जगातील 200 पेक्षा अधिक देशात असून वीस देशात बहुसंख्यांक आहे, आज सर्वच खंडात तथागतबुद्धांचे अनुयायी आहेत अशा आशिया खंडात बौद्ध धर्म हा मुख्य धर्म आहे। आशिया खंडाची जवळपास अर्धी (49 प्रतिशत) लोकसंख्या ही बौद्ध धर्मी आहे। जगाच्या आणि भारताच्या जीवनविषयक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय आणि विशेषता धार्मिक बाजूंवर बौद्ध धर्माच्या तत्त्वज्ञानाची खोलवर व न पुसणारे अशी छाप पडलेली आहे।

संदर्भ साधने :–

1. डॉ. मोरवंचीकर, : प्राचीन भारताची सांस्कृतिक ओळख।
2. डांगे शिंधू, : बौद्ध धर्म व तत्त्वज्ञान।
3. स्वामी विवेकानंद, : भगवान बुद्ध आणि त्यांचे शिकवण।
4. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, : भगवान बुद्ध आणि त्यांचा धम्म।
5. RC Majumdar, : Ancient India.
6. Roy Devidas, : Buddhist India.
7. Mathur S.N., : Gautam Buddha.
8. Journal Of global Buddhism, : Artical by John borup.

EMail - prakashmane 164@gmail.com

Mob. No. 9763803331

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 116-119
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं एवम् रीति रिवाज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण "धर्म विज्ञान के बीच संबंध"

PADMA HADA
ASS. PRO., Dr. C. V. Raman University Khandwa.

सारांश :–

सामाजिक मान्यता विज्ञान का इतिहास हर किसी की व्यक्तिगत आस्था का परीक्षा होती है लेकिन हिंदू धर्म में बहुत से ऐसे रीति रिवाज है जिनके वैज्ञानिक आधार है। मानव जीवन की क्रियाकलाप जो मानव जीवन को धर्म के साथ–साथ विज्ञान से भी जोड़ती है। सामाजिक विज्ञान ने समाज में एक विकास की क्रांति के रूप में अपनी पहचान बनाई। सामाजिक विज्ञान में अच्छी आदतों, आचरण, कौशल, का विकास अन्तः निर्भरता की भाव का विकास समाजवादी दृष्टिकोण सामाजिक जटिलताओं को समझने में सद्भावना का विकास वर्तमान को समझने का विकास और लोकतांत्रिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया। धर्म व विज्ञान दोनों आपस में एक तरह से जुड़े हुए है सामाजिक मान्यताएं और विज्ञान रीति रिवाज परंपरा हर किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत आस्था एक–दूसरे से जुड़ी हुई है। हिंदू धर्म की बहुत से ऐसे रीति रिवाज जिनके वैज्ञानिक आधार है "हाथ जोड़कर नमस्कार करना।" हिंदू धर्म की प्राचीन परंपरा और सभ्यता है दोनों हाथ को जोड़कर नमस्कार करने से आप सामने वाले को सम्मान भी देते हैं। इस क्रिया का वैज्ञानिक महत्व के कारण आपको शारीरिक लाभ भी मिल जाता है दोनों हाथों को आपस में जोड़ते हैं तो हमारी हथेलियां और उंगलियों के उन बिंदुओं पर दबाव पड़ता है।

इन बिंदुओं का आंख, कान, दिल आदि शरीर की अंगों से सीधा संबंध रहता है। इस तरह दबाव पढ़ने को एक्वाप्रेशर चिकित्सा भी कहते हैं।

प्रस्तावना :–

सामाजिक और धार्मिक मान्यता रीति रिवाज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अंतर्गत मानव विकास व्यवस्थाओं का प्रशिक्षण किया। मानव विकास प्राकृतिक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है। मानव विकास के अंतर्गत मानव शरीर में परिवर्तन जीवन परिचय चलता है। मानव जीवनकाल की परिवर्तन बहुत है विविध और जटिल होते हैं। विज्ञान एक वस्तुनिष्ठ विचार जबकि धर्म एक व्यक्ति पर विचार विज्ञान धर्म अलग–अलग पहलू में बहुत करीब से जुड़े हुए हैं। विज्ञान हमेशा अपनी कथनों को प्रदर्शित करने के लिए तथ्यों तर्क पर निर्भर करता है जबकि धर्म लोगों की आस्था और शक्ति पर निर्भर करता है।

शोध विधी :-

हिंदू परंपराओं के पीछे के वैज्ञानिक तर्क

हिंदू परंपराओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आपस में महत्वपूर्ण संबंध है। जिस प्रकार हमारा शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है उसी प्रकार यह सृष्टि भी पांच तत्वों से मिलकर बनी है। ये पांच तत्व जल, आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वनस्पति आदि। हिंदू धर्म में पूज्यनीय है। उसी प्रकार ये पांच तत्व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

जल की बात की जाएं तो जल नदियों से प्राप्त होता है। नदियां हिन्दू धर्म में पूज्यनीय है। हमारे धर्मशास्त्रों, ग्रंथों में पूर्ण रूप से वर्णित है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है।

वनस्पतियों की बात की जाए तो कई वृक्ष हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाते हैं। जिनकी पूजा की जाती है।

पीपल वृक्ष :–

पीपल वृक्ष में 33 कोटि देवताओं का वास माना जाता है जिसके कारण उसकी पूजा की जाती है। पीपल वृक्ष छाया देने वाला वृक्ष है। इसकी विपरीत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पीपल वृक्ष सबसे अधिक ऑक्सीजन देने वाला पेड़ है। पीपल वृक्ष एक ऐसा वृक्ष है जो रात में भी आक्सीजन प्रदान करता है।

इसके अलावा आंवला, नीम, तुलसी आदि की पूजा की जाती है जो वृक्ष दवाइयां के रूप में भी कार्य करते हैं। जोकि रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं, इनके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

इसके अलावा कई रीति रिवाज है जो हमें हिन्दू रिति रिवाज व धार्मिक मान्यताओं से सभी जोड़ते हैं और उनको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्व है कुछ भारतीय रीति रिवाज या परंपरा के पीछे एक वास्तविक वैज्ञानिक कारण है।

शादी के बाद महिलाएं सिंदूर लगाती हैं। महिलाएं शादी के बाद सिन्दूर लगती है सिंदूर कुमकुम और हल्दी पाउडर से बनाया जाता है। यह माथे के क्षेत्र में खराब पानी को अवशोषित करके एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाता है इसमें थोड़ी मात्रा में पारा होता है जो शरीर को ठंडा करता है। महिलाओं का आराम का एहसास कराता है।

सूर्य नमस्कार करना :–

हिंदू में सुबह उठकर सूर्य को जल चढ़ाते हुए वे नमस्कार करने की परंपरा काफी पुरानी है।

वैज्ञानिक तर्क :–

पानी के बीच में से आने वाली सूर्य की इफॉरेड किरणे जो हमारी आंखों तक पहुंचती है। जो हमारी आंखों की रोशनी बढ़ाने तथा आंखों को स्वस्थ रखने में काफी उपयोगी है।

सूर्य नमस्कार शारीरिक लाभों के साथ–साथ मानसिक संतुलन भी प्रदान करता है।

इनके अलावा :–

(1) ताली बजाने की क्रियाएं भी भारतीय संस्कृति, विज्ञान से जुड़ी हुई है।

(2) भारतीय परंपरा में जमीन पर बैठकर अपने हाथों से भोजन करने का संस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्व बताया गया है।

(3) जब हम किसी से मिलते हैं तो हाथ जोड़कर नमस्ते अथवा नमस्कार करते हैं।

वैज्ञानिक तर्क :-

जब सभी उंगलियों की शीर्ष एक दूसरे के संपर्क में आ जाते हैं और उन पर दवाब पढ़ता है तो एक एक्यूप्रेशर के कारण उनका सीधा असर हमारी आंखों, कानों दिमाग पर होता है। ताकि सामने वाले व्यक्ति को लंबे समय तक याद रख सके।

पश्चिमी सभ्यता का तर्क है कि व्यक्ति से हाथ मिलाने की वजह नमस्ते करने से सामने वाली कीटाणु आप तक नहीं पहुंच पाते हैं।

इसका अच्छा उदाहरण है पिछले साल की बात करें तो कोरोना वायरस की स्थिति ने हमें धार्मिक रीति रिवाजों से जोड़ा है।

निष्कर्ष :-

भारतीय परंपरा और विज्ञान तत्व हो या मेडिकल साइंस यह तीनों आपस में जुड़ी हुई हमारा संस्कार जो है मैडिकल को भी चेंज करता है। प्रथम समाज को जोड़ता है सामाजिक विज्ञान समाज में विकास की क्रांति के रूप में अपनी पहचान बनाई सामाजिक विज्ञान अच्छी आदतों, आचरण, कौशल का विकास अन्तः निर्भरता की भाव का विकास सामाजिक जटिलताओं को समझने में विकास वर्तमान को समझने राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करते हुए लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास किया है। विज्ञान को समाज से जोड़ने पर विज्ञान प्रौद्योगिकी दोनों शांति तथा विकास की सबसे मजबूत स्तंभों में से एक बन सकते हैं। समाज के लिए व्यापक पैमाने पर विज्ञान का संचार एक बड़ी चुनौती है। धर्म और विज्ञान को भ्रांति वंश गलत प्रकार से परिभाषित किया जाता रहा है जबकि दोनों एक ही है।

और दोनों का पारस्परिक संबंध है विज्ञान को तो उसके वास्तविक रूप में समझ लिया जाता है किंतु धर्म को उससे संबंधित व्यक्ति अपनी दृष्टिकोण के अनुकूल ग्रहण करते हैं जिसका परोक्ष प्रभाव विज्ञान के हाथ पर भी होता है।

विज्ञान और धर्म की स्थिति के विरोधी नाम का पूरा खेल सभी धर्म का आधार अनुभव जन्य सौंदर्य है।

संदर्भ सूची :-

1. Ajay Mohan published [IST], https://hindione hindi.com
2. Quora, https://htguora.com, वैज्ञानिक........
3. https//www.bhaskar.com/ news
4. Ravi Kumar Sharma ka article.

Address : Dr. C. V. Raman University chhaigaon Makhan khandwa [M.P]
M. 9406656337, padma 94066@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 120-122

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

धार्मिक रीति रिवाज और तकनीकी प्रगति

डॉ. पूजा शर्मा

प्रवक्ता, विद्युत कन्या इंटर कॉलेज कासिमपुर, अलीगढ़।

प्राचीन समय से ही भारत परम्पराओं, रीति–रिवाजों और संस्कृति का देश रहा है। वास्तव में भारत धर्म, मानव सभ्यता के विकास और नैसर्गिक सम्पदा को संरक्षण देने का आधार स्तंभ है। हमारी संस्कृति में जितने भी अनुष्ठान और रीति–रिवाज हैं, उन सभी का आधार कहीं न कहीं वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। धर्म को सूक्ष्मता से जानने का यदि प्रयास करें तो धर्म का मूल अर्थ जो धारण किया जाए वही धर्म है। हमारे प्रत्येक रीति–रिवाज, धार्मिक या किसी भी संस्कार योग्य कार्य का कोई न कोई वैज्ञानिक कारण है। इन मान्यताओं एवं आस्थाओं का वैज्ञानिक आधार हमारे महर्षियों द्वारा पूर्व में अनुसंधान द्वारा निर्धारित किया जा चुका है। शास्त्रों की बात, धर्म के साथ प्राचीन समय से ही भारत परम्पराओं, रीति–रिवाजों और संस्कृति का देश रहा है। वास्तव में भारत धर्म, मानव सभ्यता के विकास और नैसर्गिक सम्पदा को संरक्षण देने का आधार स्तंभ है।

हमारी संस्कृति में जितने भी अनुष्ठान और रीति–रिवाज हैं, उन सभी का आधार कहीं न कहीं वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। धर्म को सूक्ष्मता से जानने का यदि प्रयास करें तो धर्म का मूल अर्थ जो धारण किया जाए वही धर्म है। हमारे प्रत्येक रीति–रिवाज, धार्मिक या किसी भी संस्कार योग्य कार्य का कोई न कोई वैज्ञानिक कारण है। इन मान्यताओं एवं आस्थाओं का वैज्ञानिक आधार हमारे महर्षियों द्वारा पूर्व में अनुसंधान द्वारा निर्धारित किया जा चुका है। गौ माता का स्वरूप भारतीय संस्कृति में पुरातन काल से ही गाय को माता का स्थान दिया गया है। गोमूत्र, दूध व गोबर को पवित्र और शुद्ध माना जाता है। गाय के दूध, गोबर और गोमूत्र को अनेक असाध्य रोगों के चिकित्सा कार्यों में औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। आज इसकी पुष्टि वैज्ञानिकों ने भी कर दी है कि गाय के दूध में प्रोटीन एवं अनेक विटामिन्स अन्य दूध की अपेक्षा अधिक हैं। इस दूध में यकृ त एवं प्लीहा के रोगों को दूर करने की क्षमता सामान्य से अधिक रहती है।

इसी प्रकार हर शुभ कार्य का प्रारंभ गोबर लीपने से प्रारंभ होता है। वैज्ञानिकों ने माना कि गोबर में कीटाणुनाशक फास्फोरस तत्वों की अधिकता है। इसी क्रम में गाय से प्राप्त पांचों सार अर्थात दूध, घृत, दही, गौमूत्र और गोबर के सम्मिश्रण पंचद्रव्य को अमृत रूप में सनातन मान्यता प्रचलित है। ब्रह्म मुहूर्त रात्रि का आखिरी प्रहर ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है। यह सूर्योदय से ठीक पूर्व का समय होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह सबसे अच्छा मुहूर्त माना जाता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस समय वायुमंडल में प्रदूषण सबसे कम और वायु में आक्सीजन की मात्रा सर्वाधिक होती है। स्वास्थ्य के पक्ष से यह वायु सर्वोत्तम मानी गई है। यही वजह है कि इस समय उठकर घूमने

से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर और मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है। जनेऊ धारण करने का वैज्ञानिक आधार हिंदू धर्म में पहले के समय की बात करें तो शिक्षा ग्रहण करने से पहले यज्ञोपवीत होता था। पूर्व में बालक की उम्र आठ वर्ष होते ही उसका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया जाता था। जनेऊ पहनने का हमारे स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। विवाह से पूर्व तीन धागों का तथा विवाहोपरांत छह धागों का जनेऊ धारण किया जाता है। पूर्व काल में जनेऊ पहनने के पश्चात ही बालक को पढ़ने का अधिकार मिलता था। आयुर्वेद के अनुसार, यज्ञोपवीत धारण करने से व्यक्ति की उम्र लम्बी, बुद्धि तेज और मन स्थिर होता है। इससे व्यक्ति बलवान, यशस्वी, वीर और पराक्रमी होता है। मल–मूत्र विसर्जन के पूर्व जनेऊ को कानों पर कस कर दो बार लपेटना पड़ता है। इससे कान के पीछे की दो नसें जिनका संबंध पेट की आंतों से है, आंतों पर दबाव डाल कर उनको पूरा खोल देती हैं जिससे मल विसर्जन आसानी से हो जाता है तथा कान के पास ही एक नस से ही मल–मूत्र विसर्जन के समय कुछ द्रव्य विसर्जित होता है। जनेऊ उसके वेग को रोक देता है, जिससे कब्ज, एसीडिटी, पेट रोग, मूत्रन्द्रीय रोग, रक्तचाप, हृदय रोगों सहित अन्य संक्रामक रोग नहीं होते।

जनेऊ पहनने वाला नियमों में बंधा होता है। वह मल विसर्जन के पश्चात अपनी जनेऊ उतार नहीं सकता, जब तक वह हाथ–पैर धोकर कुल्ला न कर ले। अतरू वह अच्छी तरह से अपनी सफाई करके ही जनेऊ कान से उतारता है। यह सफाई उसे दांत, मुंह, पेट, कृमि, जीवाणुओं के रोगों से बचाती है। जनेऊ का सर्वाधिक लाभ हृदय रोगियों को होता है। पीपल के वृक्ष की पूजा ज्योतिष शास्त्र और हिन्दू धर्म में पीपल के पेड़ की पूजा का विधि–विधान है। पीपल के पेड़ के बारे में वैज्ञानिक अनुसंधान यह कहते हैं कि यह एकमात्र वृक्ष है जो दिन और रात दोनों समय में आक्सीजन का विसर्जन करता है। यह वातावरण /वायुमंडल को शुद्ध करने का कार्य करता हैं। आयुर्वेद में भी पीपल के पत्ते, छाल एवं फल सभी रोगनाशक बताए गए हैं। पीपल के वृक्ष का प्रत्येक भाग किसी न किसी रूप में प्रयोग होता हैं। ज्योतिष शस्त्र के अनुसार पीपल के पेड़ की पूजा–उपासना से शनि जनित दोषों का शमन होता है। लाल किताब के अनेक टोटकों में भी पीपल के पेड़ का प्रयोग किया जाता है।

तुलसी माता की मान्यता : भारतीय संस्कृति में तुलसी के पौधे का बहुत महत्व है और इसे बहुत पवित्र माना जाता है। यही कारण है कि इसे घर के आंगन में स्थान दिया गया है। इसके पौराणिक महत्व और औषधीय महत्व को देखते हुए इसे देवी का दर्जा दिया गया है। देवताओं को अर्पित भोग प्रसाद बिना तुलसी पत्र के नहीं चढ़ता है। मरणासन्न प्राणी को अंतिम समय में गंगाजल के साथ तुलसी पत्र दिया जाता है। तुलसी का पौधा एक दिव्य औषधीय पौधा है। इसमें असाध्य एवं संक्रामक बीमारियों को रोकने की क्षमता है। तुलसी की मंजरियों की विशेष खुशबू से विषधर सांप नहीं आते। वैज्ञानिकों के अनुसार तुलसी का पौधा अपने आयुर्वैदिक गुणों के कारण अपना विशेष महत्व रखता है। प्रतिदिन चार पत्तियां तुलसी की सुबह खाली पेट ग्रहण करने से मधुमेह, रक्त विकार, वात, पित्त आदि दोष दूर होने लगते हैं। मां तुलसी के समीप आसन लगाकर यदि प्रतिदिन कुछ समय बैठा जाए तो श्वास के रोग, अस्थमा आदि से जल्दी छुटकारा मिलता है। घर में तुलसी के पौधे की उपस्थिति एक वैद्य समान तो है ही, यह वास्तु दोष भी दूर करने में सक्षम है। इसका उपयोग सर्दी, जुकाम, खांसी, दंत रोग और श्वास संबंधी रोग में अत्यंत लाभदायक है। मूर्ति पूजा हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा का विधि–विधान है।

यह माना जाता है कि चंचल मन को एकाग्रचित रखने के लिए साक्षात साकार रूप की धारणा को महत्व दिया गया है। उन्नति, ज्ञान और सन्मार्ग तक पहुंचने के लिए मन सुस्थिर होना आवश्यक है। ईश्वर की प्राप्ति के लिए ईश्वर के साकार रूप की पूजा–उपासना को सबसे सहज मार्ग कहा गया है। जैसे माता के चित्र को देखकर वात्सल्य की भावना स्वतरू ही जागृत हो जाती है। माना जाता है कि मूर्ति पूजा तो बीज है, जब बीज से अंकुरण हो जाता है तो बीज स्वतरू ही मिट जाता हैं। बीज जब मिटता है तभी तो अंकुरण होगा, मूर्ति में नारायण को देखने के बाद मूर्ति का अस्तित्व नहीं रहता हैं। नारायण की प्राप्ति के लिए मूर्ति पूजन मार्ग (साधन) का कार्य करती है। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि जैसे किसी घर की छत पर जाने के लिए सीढ़ी सहज मार्ग है उसी प्रकार मूर्ति की उपासना ईश्वरीय शक्ति तक पहुंचने का सहज मार्ग है।

ज्योतिष आचार्य रेखा कल्पदेव

संदर्भ सूची :–

1. https://raghuwanshi/net/\p/3140
2. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF

पता : जवाहर नगर सुरक्षा विहार जीटी रोड अलीगढ़।

Contact – 7906542530

Email- pari74sharma@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 123-126
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रचलित रीति और रिवाज : संघर्ष बीच विज्ञान की प्रगति

डॉ. पूजा त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक, आम्रपाली ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, शिक्षा नगर हल्द्वानी।

प्रस्तावना :–

प्रचलित रीति और रिवाज एक समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक धारा को दर्शाते हैं। ये रीतियाँ और रिवाज अक्सर समय के साथ परिवर्तित होते हैं, लेकिन कई बार वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ मेल नहीं खाते। इस लेख में, हम देखेंगे कि कैसे प्रचलित रीतियाँ और रिवाज विज्ञान की प्रगति को रोकते हैं और कैसे इस संघर्ष को हल किया जा सकता है। रीति और रिवाज मानव समाजों के अभिन्न घटक हैं, जो सामाजिक अंतरक्रियाओं, सांस्कृतिक पहचानों, और सामूहिक व्यवहारों को आकार देते हैं। अनुष्ठानिक पारितंत्रिक रीतियों से लेकर वार्षिक उत्सवों तक, ये प्रथाएं सामाजिक एकता को बनाए रखने, सांस्कृतिक मूल्यों को प्रसारित करने, और व्यक्तियों को एक आत्मीयता का अहसास प्रदान करते हैं। विविध संस्कृतियों और ऐतिहासिक संदर्भों में, रीति और रिवाज समुदाय की धार्मिकता, नीतियों, और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने वाले प्रमुख प्रतीक होते हैं।

इस अन्वेषण में, हम रीति और रिवाज के जटिल बुनाव को गहराई से समझते हैं, उनके महत्व, विकास, और समाजों पर दीर्घकालिक प्रभाव को विश्लेषित करते हैं। इन अनुष्ठानों के नीचे छिपे संरचनात्मक तंत्रों और कार्यों को समझकर, हम सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक संघर्ष, और पहचान निर्माण के तंत्रों के लिए अध्ययन करते हैं। प्राचीन के धार्मिक अनुष्ठानों से लेकर वर्तमान समाजों में लोकप्रिय रिवाजों तक, प्रत्येक प्रथा हमें मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती है।

हम रीति और रिवाज में निहित गहराई में उतरते हैं। हम देखते हैं कि ये अभिन्न सामाजिक संदर्भों में कैसे बदलते हैं, नए सामाजिक परिस्थितियों के साथ कैसे उपयोगी होते हैं, और अन्य मानव गतिविधियों के साथ कैसे अंतरंगता रखते हैं। सामान्यतः उत्पन्नता और विविधता में से जीवन को समझने के लिए हम उन नितंबों को पहचानते हैं जो हमें एक सामूहिक रूप से बांधते हैं, जबकि हम सांस्कृतिक धरोहर और अभिव्यक्ति के समृद्धता को श्रेष्ठ करते हैं।

आगे चलकर, हम रीति और रिवाज के रहस्यों को सुलझाते हैं, उनके प्रोफाउंड महत्व को उजागर करते हैं, और मानव अस्तित्व के कपट को प्रकाशित करते हैं। धार्मिक समुदायों के पावन अनुष्ठानों से लेकर आधुनिक समाजों के धर्मनिरपेक्ष रिवाजों तक, प्रत्येक अभ्यास हमें मानव के विकास के संवेदनशील मार्ग पर ले जाता है।

मुख्य शब्द :–

रीति, रिवाज, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रथा, परंपरा, समुदाय, संस्कृति, धार्मिक, अनुष्ठान, आचरण, परिवार।

मुख्य भाग :-

रीति और रिवाज की परिभाषा : इस अनुभाग में, हम प्रचलित रीतियों और रिवाजों की परिभाषा को विस्तार से विवेचन करेंगे। हम देखेंगे कि इन्हें कैसे सामाजिक संरचना और संस्कृति का हिस्सा माना जाता है।

विज्ञान का योगदान : इस अनुभाग में, हम देखेंगे कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी किस प्रकार समाज को बदलती है और उसकी धाराओं को प्रभावित करती है।

संघर्ष के कारण : यहां हम जानेंगे कि प्रचलित रीतियों और रिवाजों के कैसे विज्ञानिक विकास के साथ संघर्ष होता है।

संभावित समाधान : इस अनुभाग में, हम संभावित समाधानों पर चर्चा करेंगे जो रीतियों और रिवाजों के साथ विज्ञान के मिलान को बढ़ावा देते हैं।

रीति और रिवाज की परिभाषा :

रीति और रिवाज विशेष समाज या सामाजिक समूह के लोकप्रिय और स्थायी आचरण, परंपरा, और विचारों को संदर्भित करते हैं। ये सामाजिक सांस्कृतिक प्रथाओं और मान्यताओं का अभिव्यक्तिकरण होते हैं, जो व्यक्तियों और समुदायों के बीच साझा किए जाते हैं। रीति और रिवाज समाज की संरचना और व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं, और उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में समझा जाता है।

रीति रिवाज का मतलब होता है समाजिक और सांस्कृतिक आचरण जो एक समुदाय या समाज के लोगों द्वारा स्वीकार किया और पालन किया जाता है। ये आचरण, प्रथाएं, और मान्यताएं समाज की संरचना और व्यवहार को निर्धारित करती हैं और समाज के सदस्यों को एक साथ बांधती हैं। रीति रिवाज उन सांस्कृतिक और सामाजिक नियमों और परंपराओं का संदर्भ देते हैं जो एक समुदाय द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव डालते हैं।

विज्ञान का रीति रिवाज में योगदान :-

विज्ञान का रीति रिवाज में योगदान उसके विकास और प्रगति को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। विज्ञान ने समय-समय पर रीति और रिवाजों को परिवर्तित किया है और सामाजिक बदलावों में योगदान किया है। **यहां कुछ विज्ञान के रीति और रिवाज में योगदान के क्षेत्र हैं :**

आयु र्विज्ञान और चिकित्सा : विज्ञान ने चिकित्सा में अद्भुत प्रगति की है, जिससे लोगों का जीवन काल बढ़ा है और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार हुआ है। यह रीति और रिवाजों को संबंधित चिकित्सा प्रणालियों और उपचार के साथ बदल ने में मदद करता है।

पर्यावरणीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी : विज्ञान ने पर्यावरणीय विषयों में भी बड़ी प्रक्रिया की है, जैसे कि प्रदूषण नियंत्रण, ऊर्जा संयंत्रों की बदलतीतक नीक, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।

समाज शास्त्र और मनोविज्ञान : विज्ञान ने समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी योगदान किया है, जिससे हमारे समाज में बदलाव आया है और लोगों की सोच और व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। इससे सामाजिक संरचना, संबंध, और संगठन में परिवर्तन आया है।

विज्ञान ने रीति और रिवाजों को अपडेट और समायोजित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे समाज और संस्कृति का विकास हो सका है।

प्रचलित रीति और रिवाज के संघर्ष का विज्ञान के साथ संबंध :–

प्रचलित रीति और रिवाज के संघर्ष का विज्ञान के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध है। यहाँ कुछ क्षेत्रों में इस संघर्ष की उदाहरण हैं :

सांस्कृतिक प्रतिकृति : विज्ञान की नई खोजों और तकनीकी प्रगति के कारण, प्राचीन रीति और रिवाजों को अद्यतित करने में संघर्ष हो सकता है। कुछ समुदाय और संस्कृतियों में यह संघर्ष संवेदनशीलता, विरोध या संगठित प्रतिरोध के रूप में दिख सकता है।

धार्मिक और नैतिक मान्यताएं : कुछ धार्मिक और नैतिक मान्यताओं और रीति–रिवाजों को विज्ञानी तथ्यों और तार्किक विचार के साथ संघर्ष हो सकता है। इसका परिणाम हो सकता है आलोचना, विरोध, या आंदोलन। सामाजिक संरचनाः विज्ञानी और तकनीकी प्रगति आम तौर पर समाज में परिवर्तन लाती है, जो पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और व्यवहार में संघर्ष पैदा कर सकती है। यह संघर्ष सामाजिक बदलाव के रूप में नजर आ सकता है, जैसे कि परिवार संरचना, लैंगिक समानता, और सामाजिक न्याय।

यह संघर्ष नई विचार धारा, संज्ञान, और समाधान की ओर ले जा सकता है जो समाज को और विज्ञान को समृद्धि और समानता की दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

रीति और रिवाज का विज्ञान के साथ मिलान :–

रीति और रिवाज का विज्ञान के साथ मिलान एक रोमांचक और महत्वपूर्ण विषय है। इस संदर्भ में, यह मिलान नए विचार और प्रयोगों को संबोधित कर ता है जो सामाजिक प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिवृद्धि, और विज्ञानिकविकास को समायोजित करते हैं। यहां कुछ मुख्य क्षेत्र हैं जिनमें रीति और रिवाज का विज्ञान के साथ मिलान देखा जा सकता है :

परंपरागत चिकित्सा प्रथाओं का वैज्ञानिक अध्ययन : वैज्ञानिक अनुसंधान ने परंपरागत चिकित्सा प्रथाओं और आयुर्वेदिक औषधियों के प्रयोग को मान्यता प्रदान की है। यह रीति और रिवाज को वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करता है और उन्हें सामूहिक स्वास्थ्य लाभ के लिए उपयोगी बनाता है।

जलवायु और पर्यावरण के साथ संघर्ष : जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संरक्षण में वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर नए उपायों की खोज और विकास हो रहा है। इससे परंपरागत प्रथाओं और नए तकनीकी समाधानों के बीच संघर्ष देखा जा सकता है।

सामाजिक विविधता और विज्ञान : विज्ञान और तकनीक का विकास सामाजिक विविधता को प्रभावित करता है, और यह नए सांस्कृतिक रूपों, भाषाओं, और सामाजिक संरचनाओं के रूप में विभिन्नता को समर्थन कर सकता है।

विज्ञान के साथ रीति और रिवाज का मिलान अद्वितीय और सामूहिक विकास का माध्यम हो सकता है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने और समाधान करने में मदद कर सकता है।

विज्ञान और रीति –रिवाज के संबंध में और जानकारी प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित संबंधित विषयों पर ध्यान देना उपयुक्त हो सकता है :–

सामाजिक विज्ञान : सामाजिक विज्ञान में विभिन्न सामाजिक प्रणालियों, संस्कृतियों, और समाज विचारों का अध्ययन होता है, जिसमें रीति–रिवाज का भी विशेष महत्व है।

प्रौद्योगिकी और समाज : प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप समाज में परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए, इसे रीति–रिवाज के साथ संबंधित करके जांचा जा सकता है।

सामाजिक अनुसंधान : रीति–रिवाज और विज्ञान के संबंध में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए, सामाजिक अनुसंधान के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

पर्यावरणीय अध्ययन : पर्यावरण और विज्ञान के संबंध में, जैसे कि जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, रीति–रिवाजकाअध्ययन किया जा सकता है।

धार्मिक अध्ययन : धार्मिक और नैतिक मान्यताओं और रीति–रिवाज के संबंध में ज्योतिष, दर्शन और धर्मशास्त्र में अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष :–

इस शोध आलेख के माध्यम से, हम देखते हैं कि प्रचलित रीतियाँ और रिवाज विज्ञान की प्रगति को कैसे अवरोधित करते हैं। लेकिन, यह भी साबित होता है कि समाधानों के माध्यम से हम इस संघर्ष को हल कर सकते हैं और एक और उत्तम समाज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, रीति और रिवाज हमारे समाज के मूल भूत धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक विचार धारा को प्रतिबिंबित करते हैं। ये समाज की संरचना, संगठन, और संघर्षों को अभिव्यक्त करते हैं, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी का भी एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। विज्ञानी तथा सामाजिक विशेषज्ञों के सहयोग से, हम रीति और रिवाजों के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझ सकते हैं और समाज में सुधार के लिए उपयोगी समाधान ढूंढ सकते हैं। इस प्रकार, रीति और रिवाज संघर्ष का एक महत्वपूर्ण आधार बनते हैं, जो हमें सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। अंत में, हम रीति और रिवाज का मूल्यांकन कर सकते हैं और समाज में संवेदन शीलता, समानता, और समृद्धि के माध्यम से उन्हें समृद्ध कर सकते हैं।

Refrences :

1. Bell, Catherine. Ritual: Perspectives and Dimensions. Oxford University Press, 1997. (This book offers a multidisciplinary approach to understanding rituals, examining their cultural, psychological, and sociological dimensions.)
2. Tambiah, Stanley J. Magic, Science, Religion, and the Scope of Rationality. Cambridge University Press, 1990. (Tambiah explores the interactions between ritual practices, scientific knowledge, and religious beliefs in different societies.)
3. Durkheim, Emile. The Elementary Forms of Religious Life. Free Press, 1912. (This classic work explores the role of rituals in maintaining social cohesion and collective consciousness within societies.)
4. Geertz, Clifford. The Interpretation of Cultures. Basic Books, 1973. (Geertz provides insights into the symbolic meanings of rituals and traditions in various cultural contexts.)
5. Turner, Victor. The Ritual Process: Structure and Anti-Structure. Aldine Transaction, 1969. (Turner discusses rituals as transformative processes that create and reinforce social structure.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 127-131

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय परिपेक्ष में धार्मिक मान्यताओं एवं रीति–रिवाजों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

पूजा नेगी

एम.एड, नेट (शिक्षाशास्त्र), असिस्टेंट प्रोफेसर, आम्रपाली विश्वविद्यालय, शिक्षा नगर, लामचौड़, हल्द्वानी।

सारांश :-

आदिकाल से ही भारत अपने धार्मिक ग्रन्थों व संस्कृति के लिए प्रसिद्ध रहा है। भारतीय परिपेक्ष में धार्मिक मान्यताओं व रीति रिवाजों का अपना अलग ही महत्व होता है। इन धार्मिक मान्यताओं व रीति–रिवाजों से प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था जुडी होती है। जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण करने की परंपरा हमारी संस्कृति में आदिकाल से हीहै।ये धार्मिक मान्यताएं व रीति रिवाज हमारी अध्यात्मिक शक्ति पर निहित होती हैं। समय के साथ चलते रहना भारतीय संस्कृति की सबसे अनूठी बात है। इसके बावजूद भी रीति–रिवाज व धार्मिक मान्यताएं प्रत्येक धर्म की पृथक पहचान बनाए हुए हैं। भारतीय संस्कृति में अनेक रीति–रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं जैसे प्रातः उठकर अपने दोनों हाथों की हथेलियां को देखना, अपने से बड़ो को हाथ जोड़कर नमस्कार कह कर अभिवादन करना, सूर्योदय से पहले उठना, सूर्य ग्रहण के समय घर से बाहर न निकलना, महिलाओं द्वारा माथे पर सिंदूर लगाना, हाथों में चूड़ियां पहनना, माथे पर तिलक या बिंदी लगाना, पैरों की उंगली में छल्ला या बिछुए पहनना आदि का प्रचलन आज भी है।

इन सभी धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं को वैज्ञानिक कसौटी पर कसा गया जिससे यह पता चलता है कि भारतीय परिपेक्ष में धार्मिक मान्यताओं एवं रीति–रिवाजों का अपना वैज्ञानिक आधार होता है।

मुख्य बिंदु – परंपरा, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताएं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

प्रस्तावना :-

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। जिसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। जीने की काल हो या विज्ञान के क्षेत्र में, भारतीय संस्कृति का सदैव ही विशेष स्थान रहा है। समय की धारा में अनेक परिवर्तन होने के बावजूद भी भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है।

कुछ लोगों की धारणा धर्म, परंपरा, रीति–रिवाज व उसके वर्तमान स्वरूप को अंधविश्वास व रूढीवाद की संज्ञा देते हैं। उसके प्रति अपनी नई अवधारणा बनाने का प्रयास करते हैं। उनकी दृष्टि से धार्मिक मान्यताओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है किंतु हमारे धर्म और संस्कृति से जुड़ी छोटी–छोटी बातों और मान्यताओं के

पीछे विज्ञान का गहरा प्रकाश होता है।

विश्व के सभी क्षेत्रों व धर्म की अपनी रीति–रिवाज व धार्मिक मान्यताएं होती है। जिनका संबंध प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था से होता है। जिन्हें विज्ञान की कसौटियों पर आका गया जिसके फलस्वरूप भारतीय परिपेक्ष में प्रचलित सभी धार्मिक मान्यताओं व रीति–रिवाजों के पीछे अनेक वैज्ञानिक आधार पाए गए जो निम्न प्रकार है :–

हाथ जोड़कर नमस्कार करना :–

हाथ जोड़कर नमस्कार करना हिंदू धर्म की प्राचीन परंपरा है। दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करने का उद्देश्य सामने वाले को सम्मान देना होता है परंतु इस क्रिया का वैज्ञानिक महत्व शारीरिक लाभ होता है। जब हम दोनों हाथों को आपस में जोड़ते हैं तो हमारी हथेलिंयों और उंगलियों के उन बिंदुओं पर दबाव पड़ता है जो हमारे आँख, कान, नाक व दिल आदि शारीरिक अंगों से जुड़े होते हैं। इस तरह के दबाव को एक्वा प्रेशर चिकित्सा प्रणाली में अपनाया जाता है।

पैर की उंगली में छल्ला या बिछुए पहनना :–

पैर की अंगुलियों में छल्ला या बिछुए पहनना भारतीय संस्कृति का हिस्सा तो है लेकिन इसके पीछे भी वैज्ञानिक आधार है। आमतौर पर बिछुए को पैर के अंगूठे के बगल वाली अंगुली में धारण किया जाता है जिनकी नस का संबंध महिलाओं के गर्भाशय और दिल से होता है जिसके कारण महिलाओं में गर्भाशय और दिल संबंधित बीमारियों की गुंजाइश नहीं रहती है। इस अंगुली में चांदी का छल्ला पहनना ज्यादा प्रभावी माना जाता है क्योंकि चांदी धुर्वीय ऊर्जा से शरीर को ऊर्जावान बनाती है।

नदी में सिक्के डालना :–

प्राचीन काल से ही जल को देवता माना जाता है तथा स्नान के बाद जल स्रोतों में सिक्का या भेंट चढ़ाने की प्रथा आज भी चली आ रही है। जिसके पीछे का वैज्ञानिक आधार यह है कि प्राचीन काल में तांबे के सिक्के हुआ करते थे जिसकी जगह आज स्टेनलेस स्टील के सिक्कों ने ले ली है। ताँबा पानी को शुद्ध करता है इसलिए प्राचीन काल से ही नदियों में तांबे के सिक्के डाले जाते थे क्योंकि ज्यादातर नदियां ही उस समय पीने के जल का स्रोत हुआ करती थी।

माथे पर तिलक लगाना :–

भारतीय परिपेक्ष में प्राचीन काल से ही दोनों भौहों के मध्य माथे पर तिलक लगाने का प्रचलन है जिसका वैज्ञानिक तर्क है कि दोनों भौहों के मध्य तिलक लगाने से उसे बिंदु पर दबाव पड़ता है जिसका संबंध हमारे तंत्रिका तंत्र से होता है। तिलक लगाने पर वह बिंदु सक्रिय हो जाता है जिससे मानव शरीर में नई ऊर्जा का संचार होने लगता है, चेहरे की मांसपेशियों में रक्त का संचार सक्रिय हो जाता है साथ ही तिलक लगाने से एकाग्रता बढ़ती है।

मंदिर में घंटी बजाना :-

प्राचीन काल से ही पूजा स्थलों में घंटी बजाने का प्रचलन चला आया है। जिसका अपना एक वैज्ञानिक कारण है। घंटे की आवाज जैसे ही हमारे कानों में पड़ती है वैसे ही हमें आध्यात्मिक अनुभूति होने लगती है। मन शांत हो जाता है और एकाग्रता में बढ़ोतरी होने लगती है। जब हम मंदिर में घंटा बजाते हैं तो करीब सात सेकेंड तक हमारे कानों में उसकी प्रतिध्वनि गूंजती है जिससे हमारे शरीर में सुकून पहुंचाने वाला सातों बिंदु सक्रिय हो जाते हैं। और हमारे शरीर से नकारात्मक ऊर्जा बाहर आ जाती है।

भोजन के बाद मिठाई खाना :-

भारतीय थाली में विभिन्न प्रकार के मसालेदार व्यंजनों के साथ मिठाई भी परोसी जाती है। जिसका सेवन भोजन के अंत में किया जाता है। जिसका वैज्ञानिक तर्क है कि मसालेदार खाने से पाचन तंत्र में पाचक रस व अम्ल सक्रिय हो जाता है। और मीठा खाने से पाचन क्रिया नियंत्रित रहती है।

शौच के समय जनेऊ कान पर लपेटना :-

शौच के समय जनेऊ कान पर लपेटना शरीर के विभिन्न अंगों पर लाभकारी प्रभाव डालता है। लंदन के क्वींन एलिजाबेथ चिल्ड्रन हॉस्पिटल के भारतीय मूल के डॉक्टर एस. आर. सक्सेना के मतानुसार हिंदुओं द्वारा मल मूत्र त्याग के समय कान पर जनेऊ लपेटने का वैज्ञानिक आधार यह है कि जनेऊ कान पर चढ़ने से आंतों की सिकुड़ने व फैलने की गति बढ़ती है। जिससे मल त्याग शीघ्र होकर कब्ज दूर होता है। कान के पास की नसें दबाने से बढे हुए रक्तचाप को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

इटली के भारतीय विश्वविद्यालय के न्यूरो सर्जन प्रोफेसर एनारीब पिटाजेली ने यह पाया कि कान के मूल के चारों तरफ दबाव डालने से हृदय मजबूत होता है।

मांग में सिंदूर भरने का प्रावधान :-

वैज्ञानिक दृष्टि से हल्दी, चूना और पारे से बने सिंदूर का महिलाओं के शरीर से काफी महत्वपूर्ण संबंध होता है। सिंदूर महिलाओं के शरीर में रक्त के बहाव को नियंत्रित करने में सहायता करता है। साथ ही तनाव व चिड़चिड़ेपन को दूर करता है।

पूजा स्थलों पर शंखनाद करना :-

पूजा स्थलों पर शंखनाद का वैज्ञानिक तथ्य यह है कि किसी भी अर्चना स्थल पर शंखनाद से वातावरण कीटाणु मुक्त और पवित्र होता है। शंख की ध्वनि से मलेरिया के मच्छर भी खत्म हो जाते हैं। शंख को सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के बाद बजाने के पीछे मान्यता है कि सूर्य की किरणें शंख की ध्वनि तरंगों में बाधा डालती है।

भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने अपने यंत्रों के माध्यम से यह खोज लिया था कि एक बार शंख बजाने से उसकी ध्वनि जहाँ तक जाती है वहां तक के अनेक बीमारियों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

बर्लिन विश्वविद्यालय ने शंख ध्वनि पर अनुसंधान कर यह पाया कि इसकी तरंगे बैक्टीरिया नष्ट करने

के लिए उत्तम व सस्ती औषधि है।

रुद्राक्ष और तुलसी की माला धारण करना :-

रुद्राक्ष व तुलसी आदि दिव्य औषधियों की माला धारण करने के पीछे वैज्ञानिक मान्यता यह है कि होंठ व जीभ के प्रयोग से साधक की कंठ धमनियों को सामान्य से अधिक कार्य करना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप कंठमाला, गलगंड आदि रोगों के होने की आशंका होती है। जिसके बचाव के लिए गले में माला धारण करते हैं।

अमेरिका के डॉक्टर इब्राहिम जार्जु ने रुद्राक्ष के औषधीय गुणों पर शोध किया। उनका निष्कर्ष है कि रुद्राक्ष मानसिक रोगों को ठीक करता है। यही कारण है कि प्राचीन काल में रुद्राक्ष धारण करने का विधान हमारे शास्त्रों में है। रुद्राक्ष धारण करने से आध्यात्मिक उन्नति होती है। रक्तचाप संतुलित होता है। शीत– पित्त रोगों का शमन होता है।

तुलसी माला से ज्वर, जुकाम, सिरदर्द, चर्म रोग व संक्रामक बीमारियाँ नहीं होती है।

ओम का उच्चारण करना :-

वैज्ञानिकों का कहना है कि हमारे सिर की खोपड़ी में स्थित मस्तिष्क के कई अंग व दिमाग में योगासन व व्यायाम द्वारा खिंचाव नहीं लाया जा सकता है। इसलिए ओम का उच्चारण दिमाग में कंपन व तरंग लाकर कैल्शियम कार्बोनेट के जमाव को झटककर दिमाग साफ रखता है।

हाथों में मेहंदी रचना :-

प्राचीन काल से ही हाथों में मेहंदी की पत्तियों व बीजों को पीसकर लगाने का प्रचलन चला हुआ है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेहंदी एक प्राकृतिक जड़ी–बूटी के रूप में औषधिय गुणों से युक्त होती है। जिसकी महक से व्यक्ति तनाव मुक्त रहता है।

चरण स्पर्श करना :-

वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारे हाथ–पैरों की उंगलियां व तलवे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। जिनकी सहायता से हम वस्तु के कोमल, कठोर, शीतल व गर्म आदि गुणों की अनुभूति करते हैं। क्योंकि हमारे हाथ–पैरों की उंगलियों से विशेष प्रकार की विद्युत धारा निरंतर निकलती रहती है। जब हम किसी बुजुर्ग के चरण स्पर्श करते है तो वह आशीर्वाद स्वरुप हमारे मस्तिष्क पर अपनी हथेली रखते हैं। इस प्रकार वह हमें अपना उत्कृष्ट प्रभाव भी विद्युत धारा के माध्यम से दे देते हैं। जिससे हमें स्फूर्ति मिलती है व मस्तिष्क तेजोमय हो उठता है।

मंगलवार को नाखून और बाल नहीं काटना :-

मंगलवार को नाखून और बाल नहीं काटना चाहिए इसके पीछे वैज्ञानिक कारण यहां है कि मनुष्य का शरीर सर्दी–गर्मी को संतुलित आवश्यकतानुसार कर लेता है। इस संतुलन को बनाने में हमारे शरीर के व्यर्थ माने जाने वाले अंग नाखून और बाल दोनों की बड़ी भूमिका होती है। मंगलवार को शरीर में उत्पन्न होने वाले अतिरिक्त ऊर्जा को यह दो अंग अपने में संचित करके रखते हैं। मंगलवार के दिन जब हम नाखून व बाल काटते हैं तो

शरीर की विद्युत ऊर्जा का क्षय हो जाता है और इसका आंतरिक संतुलन बिगड़ जाता है।

निष्कर्ष :–

भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में मानव कल्याण की भावना सर्वोपरि होती है। यहाँ पर जो कार्य किया जाता है वह बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की दृष्टि से किया जाता है। हमारी संस्कृति की मूल भावना वसुदेव कुटुंबकम के पवित्र उद्देश्य पर आधारित है। हमारी संस्कृति में सभी सुखी हो, सभी निरोग हो, सबका कल्याण हो, किसी को भी दुख प्राप्त न हो,ऐसी पवित्र भावनाएँ व रीति–रिवाज को स्वीकार किया जाता है। ऐसे अनेक धार्मिक मान्यताओं व रीति–रिवाज भारतीय परिपेक्ष में स्वीकार किए गए हैं जैसे–

जिनका वर्तमान परिपेक्ष में भी स्थान ज्यों का त्यों बना हुआ है। इन सभी मान्यताओं व रीति–रिवाजों के पीछे विज्ञान का प्रकाश है। अनेक वैज्ञानिकों ने इन मान्यताओं व रीति रिवाजों पर अनुसंधान किया और उनके तथ्यों को जानने का प्रयास किया और पाया कि भारतीय परिपेक्ष में धार्मिक मान्यताओं व रीति रिवाज का वैज्ञानिक आधार है।

संदर्भ सूची :–

1. सिंह वी के, हिंदू धर्म में वैज्ञानिक मान्यताए।
2. यूनियन सृजन, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया।
3. डॉ प्रकाश चंद गंगराड़े ,हिंदुओं के रीति रिवाज तथा मान्यताएं।

मो. नं–7505643556

ईमेल – 4433pujanegi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 132-134
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय पारिवारिक जीवन की मान्यताएं और उनके वैज्ञानिक आधार

राज कुमार
शोधार्थी, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।
डॉ. गोपीराम शर्मा, (शोध–निर्देशक)
सह–आचार्य, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

प्रस्तावना :–

परंपरा से तात्पर्य है– बाधा रहित/के अभाव में, क्रम से जारी रहना। परंपरा रूढ़ीपालन मात्र न होकर इतिहास–बोध परंपरा का अभिन्न अंग है। पाश्चात्य विद्वान थॉमस स्टीयर्न्स इलियट (टी.एस.इलियट) की मान्यता है कि 'परंपरा कोई मृत या अनुपयोगी वस्तु नहीं है। परंपरा अविच्छिन्न प्रवाह है, जो अतीत के साहित्यिक सांस्कृतिक दाय के उत्तमांश से वर्तमान को समृद्ध एवं सार्थक बनाती है तथा भविष्य का पथ प्रशस्त करती है। परंपरा का विस्तार देश में भी है और काल में भी।'[1] इस तरह परंपरा अपने आप में व्यापक है। परंपरा द्वारा ही एक पीढ़ी के रीति–रिवाज, विश्वास दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं।

भारतवर्ष में परंपरा की एक सुदृढ़ शृंखला रही है।हमारे यहां हर वर्ष अनेक त्योहार, पर्व मनाये जाते हैं। यहां पर विभिन्न धर्मों के लोग सद्भाव एवं भाईचारे के साथ निवास करते हैं। हिंदू, सिख, जैन, मुस्लिम आदि विभिन्न धर्मों से संबंध रखने वाले लोग अनेक प्रकार के त्योहार एवं उत्सव उल्लासपूर्वक मनाते हैं।

भारतीय संस्कृति समयानुसार पल्लवित एवं संवर्धित होती रही है। प्राचीन काल में ऋषि–मुनियों के अलावा आमजन भी प्रकृति–प्रेम में पूर्ण विश्वास रखता था। विभिन्न त्योहारों एवं पर्वों पर भिन्न–भिन्न वृक्षों की पूजा की परंपरा हमारी संस्कृति में चली आ रही है। पीपल पूर्णिमा या बुद्ध पूर्णिमा पर पीपल की पूजा, विजयादशमी के दिन खेजड़ी की पूजा, तुलसी एकादशी के दिन तुलसी की पूजा, हमारी परंपरा रही हैं। यह परंपराएं प्रकृति के प्रति हमारे पूज्य भाव एवं प्रेम का ज्वलंत उदाहरण हैं।

बैसाखी, मकर संक्रांति, दीपावली, ओणम, पोंगल जैसे पारंपरिक त्योहारों पर पूजा–पाठ हमारी संस्कृति की पहचान बने हुए हैं। कुछ परिवर्तनों के उपरांत भी भारतीय संस्कृति अपने आधारभूत मूल्यों और विरासत को सहेजे हुए हैं। भारतीय संस्कृति में उदारता, ग्रहणशीलता, सहिष्णुता जैसे गुण मौजूद होने के कारण, यह अधिक स्थायित्व लिए हुए हैं। हमारी संस्कृति में यहां निवास करने वाले लोगों ने अपनी समन्वय भावना का परिचय देते हुए बाहर से आने वाले यूनानी, हूण, कुषाण जैसी प्रजातियों के लोगों को भी अपनी संस्कृति में समाहित कर लिया

है।

भारतीय पारिवारिक जीवन की मान्यताएं :–

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति विविधताओं से ओत प्रोत है। यहां विभिन्न धर्मों जैसे–हिंदू , बौद्ध, मुस्लिम, जैन, सिख आदि को मानने वाले लोग निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति की परंपरा को सभी धर्मों की मान्यताओं द्वारा सुदृढ़ता मिली है। भारतीय संस्कृति की अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जो अन्य देशों की परंपराओं में द्रष्टव्य नहीं होती। 'भारत की सबसे बड़ी परंपरा देश की सर्वांगीण पवित्रता की भावना है। यहां के पहाड़, जंगल, नदी, नाले, पेड़, पल्लव, ग्राम, नगर, मैदान यहां तक की टीले भी पवित्र तीर्थ हैं। द्वारका से लेकर कामरूप कामाक्षा तक और बद्री–केदार से लेकर कन्याकुमारी या धनुषकोटि तक सैकड़ो तीर्थ और देव स्थान हैं। प्रत्येक भारतीय अपनी मातृभूमि को पूजता है, चाहे वह मूर्खता से ऐसा करता हो चाहे समझ–बूझकर, पर वह भक्ति–भाव से अपने देश के एक–एक अंग और एक–एक पदार्थ की पूजा करता है, उसके सामने नवाता है।'[2]

विष्णु पुराण में कहा गया है :–

''अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने
यतोहि कर्मभूरेषा ततो+न्या भोगभूमय
कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्य सज्चयात्।।''[3]

हमारे सभी रीति–रिवाज, मान्यताएं, विश्वास एवं त्योहार हमारे आपसी सद्भाव एवं संबंधों को प्रगाढ़ करते हैं। जैसे–रक्षाबंधन भाई–बहिन के स्नेह एवं प्रेम को बढ़ावा देता है। करवा चौथ दांपत्य जीवन में माधुर्य का संचार करता है। छठ पूजा में मां द्वारा अपने बच्चों की दीर्घायु के लिए व्रत किया जाता है। 'हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता और गुरु के पैर छूने की परंपरा है। माता–पिता और बड़ों का अभिवादन करने से मनुष्य की चार चीज़ें यथा आयु, विद्या, यश, एवं बल बढ़ता है :–

''अभिवादन शिलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्धर्मो यशो बलम्।।''[4]

भारतीय समाज में अतिथि को भगवान के समान माना गया है। हमारे परिवार में यदि कोई मेहमान आता है तो उसका सत्कार 'अतिथि देवो भव' मानकर किया जाता है। अतिथि का सत्कार हमारे समाज के पारिवारिक जीवन की प्रमुख मान्यताओं में से है।

भारतीय पारिवारिक जीवन की मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार :–

हिंदू धर्म को विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं वैज्ञानिक धर्म माना जाता है। विश्व के लगभग 20 देशों में यह अपने पैर पसारे हुए हैं। इतिहासकारों का मानना है कि हिंदू धर्म का प्रादुर्भाव वेदों से ही हुआ है इसलिए इसे वैदिक धर्म के नाम से भी अभिहित किया जाता है। प्राचीन काल में विज्ञान की शिक्षा के अभाव में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भारतीय धार्मिकता, परंपराओं एवं मान्यताओं से जोड़ा गया। शाश्वत एवं सनातन धर्म वही होता है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हो, जैसा की वैदिक धर्म है।

वैज्ञानिक आधार वाली कुछ पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की मान्यताओं का विवेचन निम्नलिखित हैं :–

1. **अतिथि सत्कार –** अतिथि सत्कार प्राचीन काल से ही परंपरा रूप में चला आ रहा है। पारिवारिक

मान्यताओं में अतिथि सत्कार को प्रमुख माना जाता है। अतिथि को देवता के समकक्ष माना जाता है। इसका वैज्ञानिक आधार यह माना जाता है कि इससे विनम्रता एवं आदर भाव आदि गुणों का विकास तथा वैज्ञानिकता के दृष्टिकोण से एकाग्रता का विकास होता है।

2. **हवन** – प्राचीन काल से ही पूजा पाठ करते समय हवन करवाया जाता रहा है। हवन करते समय मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञकुंड में हवन सामग्री जैसे घी, कपूर, आम की लकड़ी, नारियल आदि डाला जाता है। जिससे हवा शुद्ध होती है और कीटाणु नष्ट होते हैं।

3. **हल्दी** – हल्दी के साथ ही विवाह कार्य की शुरुआत होती है। वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करते है कि हल्दी एक उत्तम एंटीबायोटिक है और कैंसर जैसे घातक रोगों के उपचार में लाभदायक एवं कारगर है।

4. **पूजा के दीपक जलाना** – पूजा–अर्चना करते समय दीपक जलाया जाता है। घी डालकर दीपक जलाने से वायु में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड नष्ट हो जाती है एवं तेल के दीपक प्रज्वलित करने से कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

सारांश :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हमारी परंपराएं एवं मान्यताएं हमें आपस में जोड़ने, सद्भाव एवं भाईचारा बनाए रखने, सामाजिक समरसता एवं नियंत्रण हेतु आवश्यक है। यह व्यक्ति के सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने एवं सामाजिक संगठन को मजबूत और सुदृढ़ करने में सहायक है। परंपराओं और मान्यताओं द्वारा मनुष्य का व्यवहार भी परिष्कृत होता है।

वर्तमान में भूमंडलीकरण, पूंजीवाद, पाश्चात्य प्रभाव आदि के कारण हमारी सामाजिक व्यवस्थाएं एवं परंपराएं संकट में पड़ गई हैं। ऐसे समय में हमें इन मान्यताओं के पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों को भली–भांति परखकर, जानकर, समाज एवं व्यक्ति के समक्ष इसे रखना चाहिए जिससे हमारे समाज और देश का कल्याण हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. देवेंद्र नाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पेपरबेक्स, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 207.
2. कृष्ण कुमार यादव, मान्यताएं एवं पालन, यूनियन सृजन पत्रिका, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा विशेषांक, अप्रैल–जून 2019, मुंबई, पृष्ठ 21–22.
3. विष्णु पुराण।
4. कृष्ण कुमार यादव, मान्यताएं एवं पालन, यूनियन सृजन पत्रिका, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा विशेषांक, अप्रैल–जून 2019, मुंबई, पृष्ठ 21–22.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 135-137
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजस्थानी रीति-रिवाज़ - विज्ञान का दर्पण

रेणु शर्मा
व्याख्याता, समाजशास्त्र, केशव कॉलेज, अटरू, बांरा, राजस्थान।

भारतीय संस्कृति को अपने ढंग से व्यक्त करने में राजस्थान के निवासियों ने अपने प्राचीन ज्ञान का उपयोग कर अपने रीति–रिवाज़ों को उन्हीं के अनुरूप परिष्कृत किया। थार के मरूस्थल की झुलसाती गर्मी में भी उन्होंने अपने दैनिक जीवन और रीति–रिवाज़ों में उन सभी को सम्मिलित किया जो प्रकृति द्वारा उन्हें प्रदान किए गए। उनके प्राचीन ज्ञान का समावेश खानपान, वेशभूषा, वास्तुकला, संगीत, चिकित्सा, खेल और ज्योतिष आदि में दृष्टिगत होता है। उन्होंने अपनी समृद्ध धरोहर को वर्तमान तक संजोकर रखा है। राजस्थान के निवासी अपने परंपरागत ज्ञान का मानकीकरण कर वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास में भी योगदान देते रहे हैं।

राजस्थानी संस्कृति में विज्ञान का महत्व उनकी आधुनिकीकरण के संदर्भ में भी है। आज के समय में भी राजस्थानियों ने अपने पूर्व ज्ञान और वर्तमान तकनीकी आविष्कारों का प्रयोग कर जुगाड़ के द्वारा विभिन्न इलेक्ट्रोनिक यंत्रों का आविष्कार किया है। वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित कर रहे हैं। वे उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भी अहम योगदान दे रहे हैं, जिससे राजस्थान को आधुनिक विज्ञान की दिशा में अग्रणी भूमिका मिल रही है। जीवन के प्रत्येक पहलू में राजस्थानी संस्कृति का महत्व दिखाई देता है। उनकी भोजन पद्धतियाँ, परिधान, संगीत, नृत्य, कला, और समाज में नैतिकता का प्रचलन, सभी में उनकी अद्वितीय पहचान है। राजस्थानी जीवनशैली में सामाजिक समृद्धि, साहित्य, और विज्ञान के तत्व अंतर्गत होते हैं, जो इसे एक अद्वितीय और समृद्ध संस्कृति बनाते हैं।

राजस्थानी संस्कृति को विज्ञान से संबंधित वर्णित करते हुए, हम देख सकते हैं कि उनकी भोजन पद्धतियाँ और रसोईघर का विज्ञानिक दृष्टिकोण कैसे है। उनके परंपरागत भोजन पद्धतियाँ, जैसे कि धोखा, चाचड़ी, सेंगरी, कैर, लसोड़े आदि विभिन्न अद्वितीय पदार्थों का उपयोग कर बनायी जाती हैं, जिसमें अलग–अलग पोषक तत्वों की समृद्धि होती है। राजस्थान के सहरिया, गरासिया, मीणा, कालबेलिया आदि जनजातियों में अभी भी प्राचीन खाद्यान्नों का उपयोग किया जाता है। उनके द्वारा जंगलों से जड़ी–बूटियों और सब्जियों–फलों का एकत्रण कर प्राकृतिक तरीकों से भोजन पकाया जाता है। भोजन में मिट्टी के सम्मिश्रण से उसकी पौष्टिकता में वृद्धि होती है। वर्तमान के स्टील ऑर टेफ्लान के बर्तनों के प्रयोग से कई प्रकार की बीमारियां होने का अंदेशा होने के कारण इनके स्थान पर पीतल, तांबे, मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग किया जाता है। राजस्थान, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध राज्य है, जिसका इतिहास, संस्कृति और खानपान विविधता से भरपूर है। यहाँ के खाने का वैदिक प्रभाव उसकी रूचिकर खाद्य परंपराओं

का परिणाम है, जिनमें वैदिक साहित्य के आधार पर आहार की महत्वपूर्ण दिशाएँ निर्मित हुई हैं। वैदिक समय में, भारतीय समाज और जीवनशैली धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित थीं, और खानपान भी इन मूल्यों को पालन करता था। राजस्थान के खाने में भी यही पारंपरिक दृष्टिकोण दिखता है, जिसमें वैदिक आयुर्वेदिक तत्वों का उपयोग होता है। यहाँ के खाने में अनाज, दालें, सब्जियाँ, फल, दूध, घी और मिश्रित धान्य शामिल होते हैं, जिनमें प्राकृतिक गुण होते हैं और विभिन्न विटामिन, मिनरल और पोषक तत्व प्रदान करते हैं। इन खाद्य पदार्थों को परिपक्वता और स्वादानुसार बनाया जाता है, जिससे खाने का अनुभव आनंदमय होता है। राजस्थान के खाने में दाल–बाटी, गट्टे की सब्जी, लाल मांस, मिर्च के पकौड़े जैसे प्रसिद्ध व्यंजन हैं, जिनमें स्थानीय अद्भुत रसोईघर की छाप होती है। इन व्यंजनों में भी वैदिक संस्कृति की प्रेरणा और आयुर्वेदिक ज्ञान का पारंपरिक उपयोग दिखता है।

इनके परम्परागत वस्त्र भी गर्मियों में ठंडे और सर्दियों में गर्म रहते हैं। स्वयं के हाथ से की गई कढ़ाई से गर्म रेत और उमस भरे वातावरण की नीरसता को ठंडक मिलती है। इनमें आभूशण पहनने की परिपाटी स्त्री–पुरुषों में दोनों में आरम्भ से दिखाई देती है। बदन सिंह वर्मा ने लिखा है कि– सहरिया पुरुष पहले कानों में बाली या चांदी की मुरकी, गले में ताबीज या काले धागे की कंठी या पीतल की जंजीर पहनते थे। अब यह पहनावा लुप्त सा प्रायः हो गया है। स्त्रियाँ आभूषणों में चांदी, पीतल, गीलट, राग, कांसा आदि विभिन्न धातुओं से बने जेवर जैसे माथे में कंठी, हार, जंजीर, कानों में टोकरियाँ, हाथों में हथफूल, बाजूबंद, पैरों में खड़ला तथा लाख का चूड़ा हाथों में पहनती थी। इनमें चांदी के आभूषण पहने जाते हैं क्योंकि चांदी ठंडक प्रदान करती है जबकि यह सोने के आभूषण सिर्फ कमर के ऊपरी भाग में ही पहनते हैं और वह भी न के बराबर क्योंकि सोना गर्म प्रकृति का होता है।

पुरुष कान में छेलकडी, मुरकी, झेला, गोखड़ू, गले में कंठी, गोप, चौसर, हाथ में कडूल्या, अंगुलियों में बीठी, पैरों के अंगुठों में अंगुठी, कमर में सूतपां तनकती पहनते हैं जबकि महिलाऐं सिर में बोरला, राखड़ी, क्लिप, कान में फिफरपत्ता, गुटठी, एरन, बाली, नाक में सोने चांदी की लोंग, गले में खंगाड़ी, बजन्टी, रूपयों की माला, कटला, लड़, भुजा पर बरा, बाजूकड़ा, हाथ में चूड़ा, बगड़ी, डार दाढ़, बिलया, परेलिया, शीशफूल, हथफूल, कमर में करधोनी, कनकती, कमरलच्छा चपेटा, पैरों में चांदी की कड़ी, छागल, आंवली तोडिया, नेवरी, गरेठी, तोड़ा, तड़का, पायजेब, पैर की अंगुलियों में फोलरी, बीछिया पहनती हैं। प्राचीन परम्परा के अनुसार उक्त आभूषण पहनने से शरीर के विभिन्न अंगों के बिन्दुओं पर दबाव पड़ता है जिसके कारण वह निरोगी और दीर्घायु होते हैं।

वर्तमान में भी घड़े का पानी पीने, ताजे फल–सब्जियां खाने से इनका प्रकृति के साथ संतुलन बना हुआ है जबकि शहरी लोगों द्वारा आधुनिकता के नाम पर प्रसंस्कृत डिब्बा बंद फूड के साथ लाइलाज बीमारियां घर कर रही हैं। इनकी रसोई में ऋतु अनुसार भोजन बनाने का प्रचलन, पथ्य और अपथ्य का ध्यान रखना, किस सब्जी के साथ कौनसा फल या क्या पदार्थ नहीं खाना है। इन बातों का ध्यान रखकर भोजन निर्माण करना प्राचीन समृद्ध विज्ञान की समझ को इंगित करता है।

राजस्थानी संगीत और नृत्य में भी विज्ञान का महत्व है, जैसे कि ध्वनि के गुण और रंग का प्रयोग। समधुर, सांस्कृतिक थाती में भी विलक्षण विज्ञान के दर्शन होते हैं। विभिन्न प्रकार के वृक्षों की लकड़ियों, तारों, चमड़े का प्रयोग कर विभिन्न वाद्ययंत्रों का निर्माण राजस्थान की एक विशेषता रही है। रावणहत्था, कामायचा,

भपंग, तुरही आदि ऐसे प्राचीन वाद्ययंत्र हैं जिन्हें परम्परागत रूप से आगे बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। राजस्थान में विभिन्न कलाओं का विकास हुआ उस्ताकला जो कि ऊंटों पर विभिन्न डिजायन बनाकर की जाती है।

राजस्थानी चिकित्सा पद्धतियाँ भी विज्ञान के आधार पर होती हैं, जैसे कि आयुर्वेदिक औषधि का उपयोग, जिनसे नुकसान न के बराबर होता है। जाहर पीर, तेजाजी का डोरा बांधने से सांप के जहर का असर न होने जैसे वैज्ञानिक चमत्कार भी प्राप्य हैं। राजस्थानी शैली में यहां की जलवायु, जल, विभिन्न प्रकार के रोगों से रक्षा के लिए ऐसी युक्तियों का उपयोग किया गया जिससे कि गर्म जलवायु में भी आसानी से रहा जा सकता था। यहां की वास्तुकला और स्थापत्यकला में भी विज्ञान का प्रयोग होता है, जैसे कि ज्यामिति, रंग और आकार के संबंध में। दुर्ग निर्माण के लिए विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से ऐसे दुर्गम दुर्गों, खाईयों, प्राचीरों, दरवाजों का निर्माण किया गया जिससे कि मुगल आक्रमण के समय यह अजेय रहे। जयपुर, उदयपुर आदि में हवामहलों का निर्माण गर्मी एवं वर्षा ऋतु में राहत हेतु किया गया था। महलों एवं स्थानीय निवासियों के आवासों में झरोखों, रोशनदान आदि के माध्यम से हवा के आवागमन का भी प्रबंध था। इनके शस्त्र भी गुप्त शत्रुओं से रक्षा करने में सक्षम थे। विभिन्न प्रकार गुप्तियां, तीर, बरछी और भाले राजस्थानी वीरों के अनुरूप थे। राजस्थानी संस्कृति में एक अलग प्रकार के विज्ञान के दर्शन होते हैं जो कि देखने में प्राचीन किन्तु इतने आधुनिक हैं कि वर्तमान वैज्ञानिक भी हैरत में पड़ जाते हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण यह परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. Regional Medical research Centre, ICMR Jabalpur 2011, Annual Report 2010-2011
2. Ministry of Tribal Affairs , Government of India 2008 , Annual report of Ministry of Tribal Affair 2007-2008
3. कोलीन टेलर सेन (2004)—भारत में खाद्य संस्कृति, ग्रीनवुड प्रकाशन समूह, आईएसबीएन 978—0—313—32487—1
4. शर्मा गोपीनाथ :—राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर, 1995

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 138-141
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक मान्यता और विज्ञान

Saimeera Joshi
Shodharti (PHD Hindi), Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras.

किसी देश की संस्कृति प्राचीन परंपराओं एवं मान्यताओं से अनिवार्यतः आबद्ध होती है। अतः मान्यताएँ चिरसंचित संस्कृति का अविभाज्य अंग होती है। वे एक प्रमुख सामाजिक प्रतिमान है। परंतु आज आधुनिकता के आडंबर की आड़ में स्वस्थ परंपराओं की भी मान्यता धूमिल होती जा रही है। मनुष्य कि प्रवृत्ति रहि है कि वह अपनी परंपराओं का और मान्यताओं का अनुसरण करता है और चाहता है कि उसकी आनेवाली पीढ़ी भी इन मान्यताओं और परंपराओं को अपनाएँ। वर्तमान युग में अतीत काल से हस्ताँतरित होती आ रहीं मान्यताओं एवं नई आस्थाओं अथवा आधुनिक आयामों में एक द्वन्द चल रहा है। अपने आपको प्रगतिशील समझने वाली युवा पीढ़ी आजकल के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन मान्यताओं को प्रासंगिक मानने को तैयार नहीं एवं उन्हें व्यर्थ की रूढियां मानती है। वह उनके अस्तित्व को अहमियत नहीं देती।

ऐसा प्रतीत होता है कि वह दिग्भ्रमित होकर भटक रही है और राह से बेराह हो गई है। इसके फलस्वरूप नवयुवक श्रेष्ठ प्राचीन मान्यताओं का विरोध करते देखे जाते है। परंतु हकीकत में सामाजिक मान्यताएँ प्रगति विरोधी नहीं है। बात यह है कि इस वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी काल में प्राचीन और नवीन मान्यताओं में संघर्ष चल रहा है। आज का प्रगतिशील नवयुवक पुरानी पीढ़ी के मनुष्यों की प्रवृतियों को निरर्थक कुरीति और ढ़ोंग समझता है। वह मान्यताओं कि सीमाओं को तोड़ना चाहता है उसकी उसमें कोई आस्था नहीं है। उन्हें वह अपने राह में रुकावट समझता है। परिणामतः मान्यताओं के विरुध्द नवयुवकों की प्रबल प्रतिक्रिया हो रही है जिसके फलस्वरूप मान्यताएँ बहुत तेजी से बदल रही हैं। इस संबंध में एक कवि ने ठीक ही कहा है–

तेरी दुनिया तेरे उकवे तो कब के मिट चुके हैं बाइज।
ज़माने में नई इन्सानियत की खुदाई है।।

अर्थात– हे प्रभो! इस लोक एवं परलोक की तेरी किस्से एवं कहानियाँ कब की मिट चुकी हैं। अब तो नई मानवता का राज आ रहा है।

इस विषय में यह ध्यान देने योग्य है कि परम्परागत मान्यताएँ अगणित वर्षों से अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। वे हमारी संस्कृति की गौरव पथ प्रदर्शक हैं। उनमें से कुछ मान्यताएँ ऐसी है जो शाश्वत हैं तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर अनन्तकाल से टिकी हुई हैं। इस कारण वे हमारे देश की संस्कृति की मूलाधार हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही मान्यताएँ सामाजिक नियंत्रण का सबसे अधिक प्रभावपूर्ण साधन हैं। वे सदगुणों की जननी है। यह मान्यताएँ आदर्शों पर आधारित होने के कारण उनका मुख्य उद्देश्य मनुष्यों में उच्च

आदर्शों की प्रतिष्ठा करना है, न कि अड़चने ड़ालना। भारत एक ऐसा देश है जिसमें अनेक बोली और जाति के लोग रहते है। भारत का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसी प्रकार संपूर्ण भारत की परंपरा और मान्यताएँ भिन्न–भिन्न होते हुए भी वह भारत के इतिहास का प्रतिक है।

हमारे पूर्वज बहुत ज्ञानी थे। अगर आप इतिहास कि ओर अपना ध्यान आकर्षित करे तो आपको समझ आ जाएगा की ज्यादा से ज्यादा आविष्कारों की खोज भारत में ही सर्वप्रथम हुई है। इसका प्रमाण आपको कई किताबों में मिल जाएगा। एक समय ऐसा भी था कि भारत के पास हर बीमारी का इलाज था भौगोलिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी भारत विकसित था। हमारे वेदों में जो ज्ञान का भंडार है शायद ही किसी किताब में होगा। हमारे पूर्वज धरती को अपनी माता मानते थे और प्रकृति के हिसाब से उन्होंने अपने आपको ढाला। चाँद और सूरज को पूजा और उनके अनुसार ही अपने दिनचर्या निश्चित की। जैसे–जैसे मनुष्य की जिज्ञासा बढ़ी अविष्कार होता चला गया और साथ ही साथ इन आविष्कारों की गरिमा बनाए रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने इसे मान्यताओं से जोड़ दिया। भारत कश्मिर से कन्याकुमारी तक विस्तृत रूप से फ़ैला है और इसी तरह उत्तर से लेकर दक्षिण तक मान्यताएँ भी अलग–अलग है परंतु मान्यताओं के पीछे का विज्ञान एक है।

सबसे सरल शब्दों में सामाजिक मान्यता एक समावेशी समूह का हिस्सा बनने के लिए वर्तमान परिवेश की परंपराओं के अनुरूप होने के बारे में है जिसमें आप है। बिना मान्यताओं को जाने आप किसी भी समाज में अपने आपको समायोजित नहीं कर सकते। जिस क्षेत्र में आप हो वहाँ कि मान्यताओं का ज्ञान होना आपके लिए आवश्यक है। भारत में कई राज्य है हर राज्य की मान्यताएँ भी अलग–अलग है। भारत में कुछ मान्यताएँ ऐसी है जो हर जगह मान्य है। अनादिकाल से ही हिंदू धर्म में अनेक प्रकार की मान्यताओं का समावेश रहा है। भारत में बड़ी आबादी सनातन धर्म को मानने वाली है। इनकी अपनी कई मान्यताएँ और परंपराएँ है। कई लोग इन्हें अंधविश्वास कहते है लेकिन इनके पीछे विज्ञान के बड़े कारण होते है।

भारत में जब लड़की की शादि हो जाती है तो उसे चूड़ी, पायल, बिछिया और मंगलसूत्र पहनना होता है इस मान्यता के पीछे विज्ञान है। यहाँ तक कि माथे पर बिंदी के पीछे भी विज्ञान है। बिंदी जब दो भौंहो के मध्य उपर लगाया जाता है तो वह हमारे तीसरे नेत्र की शक्ति को जागृत करता है और वहाँ उर्जा बनी रहती है। मंगलसूत्र काले मोतियों और सोने के संयोजन से बनता है इसमें हिलींग के गुण होते हैं, जो आपके हृदय को, स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मद्द करते है। बिछिया हमेशा पैर के दूसरे उंगली में पहनी जाती है और यह चाँदी की बनी होती है। बिछिया के पारंपरिक गुण के साथ–साथ कुछ वैज्ञानिक फायदे भी होते है। चांदी को ठंडा माना जाता है और बिछिया को पैरों में पहनने से यह एक्यूप्रेशर का काम करती हैं जिससे दबाव बना रहता है जो गर्भाशय को स्वस्थ रखता है और पेट संबंधित रोग भी दूर होते है। इसे पहनने से दिमाग भी शांत रहता है और तनाव में काफी कमी आती है। विज्ञान की नजर से यदि देखा जाए तो चांदी से बनी पायल महिलाओं के शरीर में बदलते हार्मोन्स की परेशानियों को दूर करने के लिए बेहतर मानी जाती है। पायल पहनने से शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति भी बढ़ती है। यह शरीर की लिम्फ ग्रंथियों को सक्रिय कर देती है। वैदिक युग से ही महिलाएँ अपने हाथों में चूड़ियाँ पहनती आ रही हैं। इसके पीछे भी वैज्ञानिक कारण छिपा हुआ है। चूड़ी हाथ में धारण करने से रक्त संचार बढ़ता है। हाथों में चूड़ी पहनना सांस के रोग और दिल की बीमारी की आशंकाओं को घटाता है। माँग में सिंदूर लगाने से सिर में दर्द, अनिद्रा और अन्य मस्तिष्क से जुड़े रोग भी दूर होते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखे तो सिंदूर में पारा धातु पाया जाता है, जिससे शरीर पर लगाने से विधुत ऊर्जा नियंत्रण होती है।

जमीन पर बैठकर खाना हिंदू परंपरा रही है इसके पीछे के विज्ञान के अनुसार जमीन पर बैठकर खाना खाने से पाचन क्रिया अच्छी होती है और खाना आसानी से पचता है। पालथी मारकर बैठना एक प्रकार का योग आसन है। उपवास रखने का विशेष महत्व होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, व्रत रखने से मनुष्य को भगवान के नजदीक रहने की शक्ति और सुख–समृध्दि की प्राप्ति होती है। वहीं विज्ञान ने यह पाया कि उपवास करने से पाचन क्रिया संतुलित और तंदरुस्त रहती है। उपवास करने से शरीर को डिटाक्सीफाई करने में मदद मिलती है। मान्यता है कि सुबह स्नान करके सूर्य को जल अर्पित किया जाता है। विज्ञान के अनुसार ऐसा करने से सूर्य की किरणें हम पर पड़ती है जिससे हमें विटामिन डी प्राप्त होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होता है। पानी के बीच से आने वाली सूर्य की किरणें जब आँखो में पहुँचती है तब हमारी आँखों की रोशनी अच्छी होती है। पहले हर घर के आँगन में तुलसी का पौधा होता था। वैज्ञानिकों ने भी इस बात को प्रमाणित किया है कि तुलसी के पत्ते से हर छोटे–बड़े रोग दूर हो जाते है। इसी प्रकार पुरुष माथे पर जब कुमकुम लगाते है तब अँगूठे या उँगली से दबाव पड़ता है तब चेहरे की त्वचा की रक्त संचार करने वाली मांसपेशी सक्रिय हो जाती है।

भारत में लगभग सभी धर्मों में कान छिदवाने की परंपरा है। दर्शन शास्त्री मानते है कि इससे सोचने समझने की शक्ति बढ़ती है जबकि डाक्टरों का मानना है कि इससे बोली अच्छी होती है और कानों से होकर दिमाग तक जाने वाली नस का रक्त संचार नियंत्रित रहता है। हमारे समाज में जब किसी से मिलते हैं तो हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हैं। जब सभी उँगलियों के शीर्ष एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं और उन पर दबाव पड़ता है तब एक्यूप्रेशर के कारण उसका सीधा प्रभाव हमारी आँखो, कानों और दिमाग पर होता है, जिससे सामने वाले व्यक्ति को हम अधिक समय तक याद रख सकें। मान्यताओं के अनुसार भोजन का आरंभ तीखे से और विराम मीठे से होना चाहिए। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि तीखा खाना खाने से हमारे पेट के अंदर पाचन तत्व अम्ल सक्रिय हो जाते है। इससे पाचन तंत्र ठीक तरह से संचालित होता है। अंत में मीठा खाने से अम्ल की तीव्रता कम हो जाती है। इससे पेट में जलन नहीं होती। एक कहावत भी है कि 'खाने के बाद कुछ मीठा हो जाए'।

जब हम उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर सोते है तो मान्यता है कि बुरे सपने आते है। परंतु वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार जब हम उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर सोते हैं तब हमारा शरीर पृथ्वी की चुंम्बकीय तरंगो की सीध में आ जाता है। शरीर में उपस्थित आयरन अर्थात लौह दिमाग की ओर संचालित होने लगता है। इससे अल्जाइमर, पार्किंसन या दिमाग संबंधी बीमारी होने का खतरा तथा रक्तचाप भी बढ़ जाता है। हिंदू धर्म में सिर पर चोटी (शिखा) रखने की परंपरा है इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण है कि उस जगह दिमाग की सारी नसे मिलती हैं। इससे दिमाग स्थिर रहता है और मनुष्य को क्रोध नहीं आता। हिंदू मान्यता के अनुसार जब आप किसी बड़े से मिलें तो उसके चरण स्पर्श करें। यह हम बच्चों को भी सिखाते हैं ताकि वे बड़ों का आदर करें। इसके पीछे का कारण यह है कि मस्तिष्क से निकलने वाली उर्जा हाथों और सामने वाले पैरों से होते हुए एक चक्र पूरा करती है। इसे कॉस्मिक ऊर्जा का प्रवाह कहते हैं। नींबू–मिर्ची दरवाजे पर लटकाने से बुरी नजर नहीं लगती

और नकारात्मक ऊर्जाएँ दूर रहती है। इसके पीछे का विज्ञान यही है कि नींबू मिर्ची में सायट्रिक एसिड होता है, जिससे कीड़े–मकौड़े घर के भीतर प्रवेश नहीं करते हैं।

हिंदू धर्म में मान्यता है कि किसी शुभ या विशेष काम के लिए घर से दही चीनी खाकर निकलना चाहिए। इसके पीछे यह कारण है कि घर से दही चीनी खाकर निकलने से पेट ठंडा रहता है और दही चीनी से शरीर में ग्लूकोज की मात्रा बनी रहती है। मान्यताओं के अनुसार ग्रहण के दौरान घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। इससे नकारात्मक ऊर्जा हावी हो सकती है और ग्रहण का दुष्प्रभाव लग सकता है। वही विज्ञान के अनुसार ग्रहण के दौरान घर से बाहर निकलने पर, सूर्य की रोशनी से त्वचा रोग हो सकते हैं और ग्रहण को देखने से आँखो को भी नुकसान हो सकता है। हरे पत्तों के तोरण दरवाजे पर लगाना शुभ माना जाता है। इसके वैज्ञानिक फायदे यह है कि ताजा हरे पत्ते हवा को फिल्टर करते हैं और आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ बनाते हैं। हरे पत्ते कार्बन डाईऑक्साइड को ऑक्सीजन में परिवर्तित करते है। इसलिए जो भी हवा दरवाजे से आती है वो शुद्ध होकर आती है।

यद्यपि मान्यताएँ संस्कृति की उपज हैं किन्तु यह स्मरणीय है कि मान्यताएँ कभी जड़ नहीं रही। देश काल और अवस्था के अनरूप तथा समय के प्रवाह से उनमें थोड़ा बहुत परिवर्तन तो होता है। परिवर्तन निश्चित नियति है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। कितने ही मान्यताओं को मनुष्य स्वेच्छा से वरण करता है और उनसे लाभान्वित होता है। आज हम पश्चिम के मनुष्यों को हमारी मान्यताओं का पालन करते हुए पाते है और हम इसके विपरीत उनकी मान्यताओं और जीवन मूल्यों को अपना रहे है। हमारी भाषा, वेश–भूषा, खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार एवं रिति–रिवाजों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रतिबिम्ब न केवल स्पष्ट दिखाई देता है बल्कि वास्तविकता तो यह है कि उसने एक अमिट छाप छोड़ दी है जिसके फलस्वरूप हमारी जीवन–शैली बदलती जा रही है।

हमारे पूर्वजो ने हमेशा प्रकृति के अनुरूप ही कार्य किया और इसी प्रकृति को ध्यान में रखकर उन्होंने इन मान्यताओं का पालन किया जिसे आज के युवा समझ नहीं पा रहे है और इसे व्यर्थ की रूढ़ियाँ मान रहे है। पुराने समय में जो भी मान्यताएँ बनाई गई हैं, उनके पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक तथ्य था। लेकिन उस तथ्य को न तो समझने का प्रयास किया गया न ही समझाया गया, इसलिए वो मान्यता अंधविश्वास और कुप्रथा में बदल गई। हमारे पूर्वजों ने अपने जीवनशैली के साथ प्रकृति, विज्ञान और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए ही इन मान्यताओं को समाज के हित के लिए बनाया और अपनाया। आज की युवा अगर इन मान्यताओं के पीछे के विज्ञान को समझते हुए इसे अपनाए तो उनकी आधी से ज्यादा शारिरीक समस्या खत्म हो जाएगी और उनका दैनिक जीवन भी तनाव रहित होगा।

संदर्भ सूची :–

1. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, दिपिका प्रकाशन, पृ. 153–154
2. Navbharat times patrika
3. Dainik bhaskar patrika
4. Greh laxmi patrika

Saimeerajoshi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 142-145
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मॅक्स वेबरचा धर्म विषयक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

डॉ. संभाजी एस. कुरलीकर
समाजशास्त्र विभाग, श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज, माळवाडी– कोतोली।

प्रस्तावना :–

कोणत्याही मानवी समाजात धर्म हा एक अविभाज्य घटक असल्याचे दिसून येते। धर्म हा मानव समाज इतकाच प्राचीन आहे। आजचा प्रगत समाजात त्याचे अस्तित्व नाही असे म्हणता येत नाही। आज वर्तमान स्थितीत मानवाने विज्ञानाच्या साहाय्याने आपल्या बहुतांच्या पर्यावरणावर बरेच नियंत्रण मिळवली आहे। त्याचा परिणाम असा की काही समाज धर्मनिरपेक्षित झाले आहे। तरीसुद्धा धर्म एक सार्वभौमिक तत्त्व बनलेला आहे। धर्म मानवाचा अलौकिक शक्तीशी संबंध जोडतो। त्याचा संबंध मानवाच्या भावना श्रद्धा आणि भक्तीशी आहे। धर्म मानवाच्या आंतरिक जीवनालाच प्रभावित करीत नाही तर त्याच्या सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक जीवनालाही प्रभावित करतो।

कार्ल मार्क्सने धर्माला मानवासाठी अफूची गोळी मांडली आहे। धर्म हा भारतीय जीवनाचा सर्वोच्च आदर्श मानला जातो। धर्म एक महत्त्वाची सामाजिक संस्था असून धर्म मानवाच्या वैयक्तिक सामाजिक सांस्कृतिक आणि आर्थिक जीवनालाही प्रभावित करतो। आपणासही माहिती आहे की धर्म हा मानवी समाज एकाच पुरातन आहे। प्रारंभी अवस्थेपासून ते विकसित अवस्थेपर्यंत जगाच्या पाठीवर जेवढे मानवी समाज अस्तित्वात आहेत। त्यातील काळाच्या ओघात काही नष्ट झाले परंतु धर्माचे अस्तित्व मात्र अबाधित आहे। व्यक्तीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी तानाचे निरसन करण्यासाठी चांगले वर्तन करण्यासाठी म्हणजे सामाजिक नियंत्रण करण्यासाठी धर्म संस्था कार्यकरते। कोणत्याही समाजातील मूल्य जीवन विषयक दृष्टिकोन संस्कृती धर्म यांचा परस्पराशी असणारा संबंध हा घनिष्ठ आहे। एवढेच नाही तर बरेच मानवी व्यवहारात हे धार्मिक जीवन आणि धार्मिक क्रिया भावनेशी संबंधित असतात।

व्याख्या :–

1. दिव्य प्राण्यावरील श्रद्धा म्हणजे धर्म होय। – एडवर्ड टायलर
2. Religion is the belief in spiritual beings. - Edward Tylor
3. मानवी जीवन आणि निसर्गक्रम यांचे निर्देशक आणि त्यावर नियंत्रण ठेवू शकतात अशी श्रद्धा असलेल्या आणि मानवापेक्षा श्रेष्ठ असलेल्या शक्तीशी मिळते जुळते घेणे किंवा आराधना व प्रार्थना करणे म्हणजे धर्म होय। –जेम्स फ्रेजर
4. धर्म ही एक मानसिक शक्ती किंवा प्रवृत्ती असून ती ईश्वरास जाणण्यासाठी मानवास समर्थ बनवते।

— प्रा. बॅलाड

उद्दिष्टये :–

1. मॅक्स वेबरचाधर्मविषयक दृष्टिकोन।
2. प्रोटेस्टंटनीतीशास्त्र आणि भांडवलशाहीची प्रवृत्ती।
3. भांडवलशाहीच्या विकासाला प्रभावित करणारी वैशिष्ट्ये।

धर्मविषयक वैज्ञानिक दृष्टिकोण :–

मॅक्स वेबर यांनी आपल्या धर्माच्या चिंतनातून धर्म हा कसा अर्थव्यवस्थेवर प्रभाव टाकतो हे प्रोटेस्टंटएथिक्स अँड स्पिरिट ऑफ कॅपिटलइजम या ग्रंथामध्ये स्पष्ट केलेले आहे। धर्माने अर्थव्यवस्था या कशा परस्परांना प्रभावित करत असतात त्यांच्यातील परस्पर संबंध कशा प्रकारचे आहेत। हे दाखवून दिले आहे। अर्थव्यवस्था आणि धर्मातील अनन्य संबंध दाखवून देताना मार्क्स यांचा संदर्भ वेबर दिला आहे। आणि त्यांच्या विचारांचे खंडणी केलेले आहे। मार्क्स म्हणतो की अर्थव्यवस्थेवर समाजातील इतर व्यवस्था अवलंबून असतात त्यामुळे अर्थव्यवस्थेमध्ये बदल झाला की इतर व्यवस्थित बदल होतो। अर्थव्यवस्था ही धर्मावर प्रभाव टाकत असते। मार्क्सचे हे मत वेबरला एकाकी वाटते। त्यांच्या मते धर्म व अर्थव्यवस्था या एकमेकावर प्रभाव टाकत असतात। म्हणजे मार्च अर्थव्यवस्थेचा धर्मावरील प्रभाव सांगतो तर दिवेवर हा धर्माच्या अर्थव्यवस्थेवरील प्रभाव टाकतो।

यासंदर्भात विवेचन वेबनेक्रिस्ती धर्मातील प्रोटेस्टंट पंथाचे नीतीशास्त्र ही विशेषताकॅलिफिन वादी या नावाच्या उपपंथांची नित्य किंवा आचारसंहिताही भांडवलशाहीची प्रवृत्ती विकसित करण्यात कशी सहाय्यभूत ठरली याचे पुराव्यासहित विश्लेषण केले आहेकेल्विन वाद पंताची स्थापना केली।

कॅल्वीनवादाचीनितीतत्वे :–

1. काम हीच पूजा :

प्रोटेस्टंटआचार शास्त्रामध्ये काम करणे हा सर्वात मोठा गुण मांडला आहे कॅथोलिक नेतृत्वामध्ये मात्र असे विचार आढळत नाहीत। काम हीच पूजा आहे काम केल्यानेच ईश्वराची प्राप्ती होते अशा पद्धतीचे विचार प्रोटेस्टंट निश्चिततत्त्वांमध्ये असल्याने भांडवली विकासात त्याचे स्थान मोठे आहे थोडक्यात या तत्त्वाच्या अनुषंगाने कामालाच ईश्वराची प्रार्थना असे म्हटले आहे।

2. धनाद्वारेच धनाची वृद्धी होते :

प्रोटेस्टंटआचारशास्त्रातीलधनाद्वारेच धनाची वृद्धी होते। हा विचार महत्त्वाचा आहे म्हणजे कर्जावर व्याज वसूल करण्यास दिलेली मान्यता होय बेंजामिन फ्रॅकलीन यांच्या मते धनाने धन मिळवता येऊ शकते। याचा अर्थ आपल्या धनाचा उपयोग दर मिळवण्यासाठी करता येऊ शकतो ज्यामध्ये व्याजाच्या रूपाने दर मिळवता येते कॅथॉलिक नित्य तत्त्वांमध्ये व्याज घेणे हे अधर्म मानले जाईल। यांच्या उलट इथे व्याज घेण्याला मान्यता दिलेली आहे याचा परिणाम म्हणून व्यक्ती आपले धन ईश्वरीय दंड अथवा भय बाजूला ठेवून धन मिळवण्यासाठी कोणत्याही उद्योगांमध्ये गुंतवू शकतात।

3. व्यावसायिक नितीतत्वे :–

प्रोटेस्टंट वादाने भांडवलशाहीच्या विकासाला प्रभावित करणारे महत्त्वाचे घटक म्हणजे व्यावसायिक नीतीतत्वे किंवा उद्योगाची संकल्पना होय। या तत्त्वामुळेच भांडवलशाहीच्या वाढीस सहायता मिळाली आहे

कॅलिफिनवादामध्ये असते मानले जाते की व्यक्तीच्या मृत्यूनंतर प्रत्येक आत्म्याला एक तरी स्वर्गात किंवा नका जावे लागणार आहे व्यक्तीने आयुष्यभर केलेल्या कामांनी त्याचे भाग्य बदलत नाही। परंतु असे काही चिन्हे व्यक्तीला दिसून येतात की त्यावरून आपला आत्मा स्वर्गात जाणार की नरकात याविषयीच्या अंदाजे येतो। आपण करत असलेल्या कामांमध्ये किंवा व्यवसायामध्ये अधिकाधिक यश प्राप्त करत असेल तर तो स्वर्गात जाणार आहे। या तत्त्वामुळे प्रत्येकाने आपल्या उद्योगांमध्ये सतत कार्य मग न राहून अधिकाधिक यश संपादन करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे। असा प्रभाव पाडला गेला आपले कार्य अधिकाधिक कठोर परिश्रमातून यशस्वीरित्या प्राप्त करणे म्हणजे ईश्वरीय इच्छेने गुणगान केल्यासारखेच आहेत।

चर्चला नियमित भेट दिल्यामुळे अगर यात्रा केल्यामुळे मोक्ष प्राप्ती होणार नाही। तर आपल्या वाट्याला आलेले काम व्यवस्थित रित्या करण्यानेच मिळणार आहे। एखादी व्यक्ती आपल्या धर्माचे पालन चर्चेप्रमाणेच आपल्या कामाच्या ठिकाणी किंवा व्यवसायाच्या ठिकाणी करू शकते। हे विचार भांडवलीय विकासास अधिकाधिक मदत करणारे ठरले। भांडवलशाहीची यशस्वीता ही प्रत्येक व्यक्ती आपल्या व्यावसायिक क्षेत्रामध्ये अधिक उत्साह आणि निष्ठापूर्वक काम करण्यावरच अवलंबून आहे। अशा प्रकारचे व्यावसायिक निश्चिततत्त्वे भांडवलशाही विकासाला कारणीभूत करतात असे मत मॅक्स वेबरनी मांडले।

4. मद्यसेवनावर बंदी :

प्रोटेस्टंटआचारशास्त्रामध्ये मद्यपानाला बंदी घातली असून त्याला वाईट कर्म असे म्हटले आहे। या वर्तनाला कमी ठरवून सदवर्तन आणि इमानदारी कृती अधिकाधिक उच्च ठरविण्यात आली आहे महासेवनावरील बंदी हा निर्बंधामुळे या लोकांमधील आळशीपणा कमी होऊन कामाच्या ठिकाणी कार्यक्षमता वाटली कुशलता वाटली त्याचबरोबर जे लोक यंत्रावर काम करतात। त्यांच्यासाठी तर या गोष्टी खूप महत्त्वपूर्ण आहेत या आजच्या शास्त्रामध्ये आत्मसंयमाला महत्त्व दिलेले आहे यामध्ये सरळ साध्या जीवनाचा पुरस्कार केलेला आहे श्रमाला मौल्यवान म्हटलेले दिसून येते।

5. अति सुट्ट्या घेण्याला विरोध :

प्रोटेस्टंट वादात कॅथोलिकप्रमाणे अति सुट्ट्या घेण्याला विरोध केलाआहे। प्रोटेस्टंटसाठी काम हीच पूजा आहे तर अधिकाधिक काम श्रम आणि कमीत कमी सुट्ट्या घेणे महत्त्वाचे असते। हे आचार शास्त्र सांगते यामुळे माणसाचे कामाचे तर वाढलेत व भांडवलाचा पुरेपूर वापर येऊ लागला असा विचार मॅक्स वेबरने मानलेला दिसून येतो।

6. साक्षरता व शिक्षणाला चालना :

प्रोटेस्टंट वादात शिक्षण आणि साक्षरतेला महत्त्वाचे स्थान दिले आहे। प्रोटेस्टंट पंथा शिक्षणाला प्रोत्साहित करत असल्यामुळे सर्वसामान्यांच्या शिक्षणात आणि साक्षरतेमध्ये वाढ झाली परिणामी कुशल लोकांची संख्या ही वाढलेली दिसून येते।

7. प्रामाणिकपणा :

प्रोटेस्ट आजच्या शास्त्रामध्ये प्रामाणिकपणा किंवा सचोटी या गुणाला महत्त्वाचे स्थान आहे प्रामाणिकपणाने व्यवसाय किंवा काम करणे महत्त्वाचे आहे। कोणालाही न फसवणे सत्याच्या मार्गाने चालली याला महत्व दिलेले आहे।

निष्कर्ष :-

1. मॅक्स वेबरचाधर्मविषयक दृष्टिकोन समजावून घेण्यात आला।
2. प्रोटेस्टंटनीतीशास्त्र आणि भांडवलशाहीची प्रवृत्तीचा अभ्यास करण्यात आला।
3. भांडवलशाहीच्या विकासाला प्रभावित करणारी वैशिष्ट्येपाहिली।

सारांश :-

एकूणच पेपरच्या मतानुसार प्रतिष्ठान पंथामध्ये असलेली नीतीतत्त्वे ही भांडवलशाहीच्या उदयाला कारणीभूत ठरली आहेत। प्रोटेस्टंट पंथाचे नीतिशास्त्र व भांडवलशाही प्रवृत्ती यांच्यातील अनन्य संबंध स्पष्ट करून वेबरने धर्माच्या अर्थव्यवस्थेवर कसा प्रभाव पडतो हे दाखवून दिलेले आहे। तसेच वेबरने भांडवलशाहीच्या उत्क्रांतीचेपरीक्षण करून आपल्या विचारांच्या दृष्टिकोनातून आपल्यासमोर इतिहासातील काही तथ्येही मानले आहेत। त्यांच्या मते भांडवलशाहीचा विकास इंग्लंड अमेरिका हॉलंड या देशात उच्चत्तम झाला आहे कारण या देशात प्रोटेस्टंटवादी विचारसरणी आचाराचे अनुकरण करणारे लोक आहेत। परंतु इटली स्पेन यासारख्या देशांमध्ये कॅथोलिक नितितत्वांचा प्रभाव असल्याने भांडवलशाहीचा विकास झाला नाही। वेबरने आया संदर्भात विविध धर्मांचे तुलनात्मक अध्ययन करून भांडवलशाहीच्या विकासासंदर्भात संदर्भ मानलेला आहे।

कोणत्याही क्षेत्रांमधील व्यवसायामध्ये उत्तुंग यश मिळविण्यासाठी व्यवस्थित आचरण, प्रामाणिकपणा, परिश्रम, कार्य, कुशलता, सतर्कता, सचोटी, एकनिष्ठा असणे आवश्यक असते। हे सर्व गुण प्रोटेस्टनीतीशास्त्रामध्ये आहेत म्हणून ज्या देशांमध्ये प्रोटेस्टंट पंथाची निधीतत्वे अचानक आणली जातात। त्याच भागात भांडवलशाहीचा विकास झाला असे वेबर सांगतो आणि धर्माचा अर्थ व्यवस्थित असणारा अनन्य संबंध स्पष्ट करतो वेबरच्याधर्मविषयक दृष्टिकोनातून वैज्ञानिक दृष्टिकोन पहावयास मिळतो।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. विद्याधर पुंडलिक : धर्माचे समाजशास्त्र, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, 2003
2. डॉक्टर प्रदीप आगलावे : समाजशास्त्र डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, सुगावा प्रकाशन, पुणे. 2009
3. कऱ्हाडे बी. एफ. : समाजशास्त्र : मूलभूत संकल्पना, पिंपळापुरे अँड कंपनी पब्लिशर्स, नागपूर, 2011.
4. डॉ. रावसाहेबकसबे : आंबेडकर आणि मार्क्स।
5. डोईफोडे ज्योती : भारतीय समाज रूसौरचना व परिवर्तन विद्यापीठ पब्लिशर्स, औरंगाबाद 2011

Email ID - sambhajikamble2877@gmail.com

Mob. No. 9763771258 / 8623801258

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 146-150
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सोलह श्रृंगार और उनका धार्मिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण

श्री. संचित भगवान कांबळे, शोध छात्र
डॉ. वंदनापी. पाटील, शोध निर्देशिका
(अध्यक्षा, हिंदी विभाग), श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अँड सायन्स कॉलेज, कोतोली।

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ नष्ट हो रही हैं, किंतु भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ जीवंत बनी हुई है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों के बाद भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है। भारत में नदियों, बरगद के पेड़ जैसे वृक्षों, सूर्य तथा अन्य देवी–देवताओं की पूजा का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है और आज भी जारी है। भारत की भौगोलिक स्थिति, जलवायु एवं उसकी अर्थव्यवस्था क्षेत्रीय विशेषताओं और विविधताओं को उत्पन्न करती है। इसी कारण भारत में खान–पान से लेकर रहन–सहन, वेशभूषा व रीति–रिवाज़ों में विभिन्नता दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण वैश्विक रहा है तथा वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात सारा विश्व ही एक परिवार है की अवधारणा में विश्वास करती है। कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति स्वयं में अनेकों विशेषताओं को समेटे हुए है जो संपूर्ण भारतीय समाज को आज भी उच्चतम मूल्यों और आदर्शों की चेतना प्रदान कर रही है।

भारतीय संस्कृति और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। भारतीय धर्म संस्कृति अपने आप में विज्ञान है। भारतीय प्राचीन वैज्ञानिक आर्यभट्ट द्वारा शून्य का अविष्कार, चरक द्वारा आयुर्वेद की खोज आदि और अन्य वैज्ञानिक तत्त्वों को उजागर करने वाले ग्रंथों की निर्मिति तथा विविध त्योहार, उत्सवों को मनाने के पिछे का प्राकृतिक और वैज्ञानिक तत्त्व विश्व मान्य है। प्राचीन काल से विभिन्न दैनंदिन कार्यों में विज्ञान तत्त्व को आधार माना गया।

शुरूवात के दौर में लोग इन वैज्ञानिक तत्त्वों को मानने से इन्कार करते थे। वे उन्हें श्रद्धा और अंधश्रद्धा से जोड़ते थे। इस वजह से इन वैज्ञानिक तत्त्वों को धार्मिकता से जोड़ा गया। भारतीय संस्कृति में धर्मतत्व लोगों की भावनाओं से काफी हद तक जुडा हुआ है। इसी कारण विभिन्न कार्यक्रम, अनुष्ठान, विभिन्न त्योहार आदि में इन तत्वों को धार्मिकता से जोड़ा गया। एक ओर से धार्मिक परंपराओं का पालन और दूसरी ओर से वैज्ञानिक तत्वों का अनुसरण सहजता से दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति और सोलह श्रृंगार का महत्त्व :–

हिंदू धर्म में हर विवाहित स्त्री का श्रृंगार करना महत्त्वपूर्ण है। मान्यता है कि सोलह श्रृंगार, सुहागिनों के लिए उनके पति की लंबी आयु की कामना और परिवार की सुख–समृद्धि के लिए जरूरी है। ऋग्वेद के अनुसार,

सोलह श्रृंगार से न केवल स्त्रियों का सौंदर्य बढ़ता है, बल्कि उनके भाग्य में भी वृघ्द्धि होती है। विवाहित स्त्रियों द्वारा किये गये सोलह श्रृंगार उनके जीवन में सौभाग्य लाते हैं। श्रृंगार के लिए स्त्रियां बहुत से आभूषणों को पहनती हैं। स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले हर आभुषण का अपना एक विशेष धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व है। भारतीय महिलाएँ श्रृंगार से खुद के व्यक्तित्व को उजागर करती है तो इन्ही सोलह श्रृंगारों के पिछे छिपे वैज्ञानिक तत्वों के कारण उनका निजी और सामाजिक स्वास्थ्य बेहतर होता हैं।

पहला श्रृंगार : स्नान :–

धार्मिक महत्त्व : धार्मिक मान्यताओं के अनुसार शादी के दिन वधु को सुबह–सुबह मंदिर के कुएँ से लाये गए पवित्र जल से स्नान करवाया जाता है। इस स्नान से तन और मन दोनों भी प्रफुल्लित हो जाते हैं। दिन भर की ताजगी के लिए यह अति आवश्यक होता है ऐसा कहा जाता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार शादी के दिन का स्नान करते वक्त उस पानी में शिकेकाई, रिठा आदि बालों के लिए बहुगुणी वनस्पतीयाँ मिलायी जाती है। जिससे बालों की खुबसूरती तथा उनकी ताजगी बरकरार रहती है। स्नान के पहले वधू के पूरे शरीर को हल्दी लगायी जाती है। हल्दी का लेप शरीर की विभिन्न बैक्टेरियों को खत्म करता है। तथा पूरे शरीर पर हल्दी के मलने से शरीर का सौदर्य बढ़ता है तथा शरीर पर जमी अतिरिक्त धूल–मिटटी नष्ट हो जाती है।

दूसरा श्रृंगार : माथे की बिंदी :–

धार्मिक महत्त्व : माथे की बिंदी किसी भी विवाहित स्त्री का प्रतीक माना जाता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : विज्ञान के अनुसार, बिंदी लगाने से महिला का आज्ञा चक्र सक्रिय हो जाता है। बिंदी आज्ञा चक्र को संतुलित करके महिला को ऊर्जावान बनाने में सहायक होती है।

तीसरा श्रृंगार : माँग का सिंदूर :–

धार्मिक महत्त्व : पति की लंबी आयु के लिए माँग में सिंदूर लगाती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार मांग टीका महिलाओं के शारीरिक तापमान को नियंत्रित करता है, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

चौथा श्रृंगार : आँखों का काजल :–

धार्मिक महत्त्व : आँखो का काजल स्त्रियों के वात्सल्य का प्रतीक है। आँखों का काजल स्त्रियों के जीवन से मंगलदोष कम करके उन्हें बुरी नजरों से बचाता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, काजल आंखों को ठंडक देता है। आंखों में काजल लगाने से नुकसानदायक सूर्य की किरणों व धूल मिट्टी से आँखो का बचाव होता है।

पाँचवा श्रृंगार : बालों में गजरा :–

धार्मिक महत्त्व : गजरे का श्रृंगार स्त्रियों को ताजगी और ऊर्जा से भर देता है। गजरे से आने वाली बुशबू स्त्रियों के मन को शांत बनाए रखती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : विज्ञान के अनुसार, चमेली के फूलों की महक हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। चमेली की खुशबू तनाव को दूर करने में सबसे ज्यादा सहायक होती है।

छटा श्रृंगार : नाक की नथनी :–

धार्मिक महत्त्व : नथनी से सुहागिनों के पति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और घर में धन–धान्य की वृद्धि होती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : नाक में बनाए गए छिद्र महिलाओं के गर्भाशय से संबंधित होते हैं। जिसके कारण महिलाओं को प्रसव के दौरान कम तकलीफ होती है।

सातवां श्रृंगार : कानों की बालियाँ :–

धार्मिक महत्त्व : घर की बहुएं अपने घर परिवार की बुराई नहीं सुनेंगी। कानों की बालियों से कान की शोभा बढ़ती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार हमारे कर्णपाली पर लगभग 80 एक्यूपंक्चर पॉईटस होते हैं, जिन पर सही दबाव दिघ्या जाए, तो माहवारी के दिनों में होने वाले दर्द से राहत मिलती है। कर्णफूल उन्ही प्रेशर पॉईंट्स पर दबाव डालते हैं। साथ ही ये किडनी और मुत्राशय को भी स्वस्थ बनाए रखते हैं।

आठवां श्रृंगार : गले का मंगलसूत्र :–

धार्मिक महत्त्व : पति के प्रति अपने समर्पण भाव को दिखाने के लिए स्त्रियां अपने गले में मंगलसूत्र पहनती है। काले मोतियों और सोने के मोतियों से बना मंगलसूत्र स्त्रियों के मन में अपने पति के प्रति प्रेम और आदर–सत्कार को बढ़ाता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, मंगलसूत्र सोने से निर्मित होता है। सोना शरीर में बल व ओज बढ़ाने वाली धातु है। मंगलसूत्र शारीरिक ऊर्जा का क्षय होने से रोकता है। गले में मंगलसूत्र पहनने से महिलाओं के वक्षस्थल पर दबाव बना रहता हैं, जो ह्रदय के कार्य के लिए आवश्यक हैं।

नौवां श्रृंगार : बाजूबंद :–

धार्मिक महत्त्व : स्त्रियों द्वारा बाजुओं में पहने जाने वाला बाजूबंद परिवार के धन और प्रतिष्ठा की रक्षा करने का संकेत है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, बाजूबंद बाजू पर सही मात्रा में दबाव डालकर रक्त संचार बढ़ाने में सहायता करता है।

दसवां श्रृंगार : हाथ की चूड़ियाँ :–

धार्मिक महत्त्व : हाथ की चूड़ियाँ स्त्रियों के परिवार की संपन्नता और खुशहाली का प्रतीक होती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार चूड़ियों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि महिलाओं की हड्डियों को मजबूत करने में सहायक होती है। माना जाता है कि विशेषता हथेली से 6 इंच पिछे तक चूडियाँ पहनने से हाथ के उस स्थान पर दबाव पड़ता है। यह दबाव शरीर के रक्त संचारण में मददगार होता हैं। इस प्रकार महिलाओं के रक्त के परिसंचरण में चूड़ियाँ सहायक होती है।

ग्यारहवां श्रृंगार : अंगूठी :–

धार्मिक महत्त्व : अंगूठी का मतलब है कि पति–पत्नी जीवन भर एक दूसरे का हाथ थामे रहेंगे।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, अनामिका उंगली की नसें सीधे ह्रदय व दिमाग से जुड़ी होती है। इन पर प्रेशर पड़ने से दिल व दिमाग स्वस्थ रहता है।

बारहवां श्रृंगार : चांदी का कमरबंद :–

धार्मिक महत्त्व : महिला के लिए कमरबंद बहुत आवश्यक है. चांदी का कमरबंद महिलाओं के लिए शुभ माना जाता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, चांदी का कमरबंद पहनने से महिलाओं को माहवारी तथा गर्भावस्था में होने वाले सभी तरह के दर्द से राहत मिलती है। चांदी का कमरबंद पहनने से महिलाओं में मोटापा भी नहीं बढ़ता।

तेरहवां श्रृंगार : पायल :–

धार्मिक महत्त्व : पैरों में पहनी जाने वाली चांदी की ही पायल सबसे उत्तम और शुभ मानी जाती है। पायल कभी सोने की नहीं होनी चाहिए। घर की बहू को घर की लक्ष्मी माना गया है। इसी कारण संपन्नता बनाए रखने के लिए महिला को पायल पहनाई जाती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं कें अनुसार, चांदी की पायल महिला को जोड़ों और हड्डीयों के दर्द से राहत देती है। साथ ही पायल के घुंगरू से उत्पन्न होने वाली ध्वनि से नकारात्मक ऊर्जा घर से दूर रहती हैं।

चौदहवां श्रृंगार : बिछिया :–

धार्मिक महत्त्व : पैरों की उंगलियों में महिला बिछिया पहनती है। चांदी की बिछिया शुभ मानी जाती है। बिछिया पहनने से महिला का स्वास्थ अच्छा रहता है और घर में संपन्नता बनी रहती है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार महिलाओं के पैरों की उँगालियों की नसे उनके गर्भाशय से जुड़ा होती है, बिछिया पहनने से उन्हें गर्भावस्था व गर्भाशय से जुड़ी समस्याओं से राहत मिलती है। बिछिया पहनने से महिलाओं का ब्लडप्रेशर भी नियंत्रित रहता है।

पंद्रहवां श्रृंगार : मेहंदी :–

धार्मिक महत्त्व : मेहंदी का गहरा रंग पति–पत्नी के बीच के गहरे प्रेम से संबंध रखता है। मेहंदी का रंग जितना लाल और गहरा होता है, पति–पत्नी के बीच प्रेम उतना ही गहरा रहता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार मेहंदी दुल्हन को तनाव से दूर रहने में सहायता करती है। मेहंदी को ठंडक और खुशबू दुल्हन को खुश व ऊर्जावान बनाए रखती है।

सोलहवां श्रृंगार : इत्र :–

धार्मिक महत्त्व : सौभाग्यवती महिलाओं के लिए गुलाबकी सुगंध सबसे उत्तम मानी जाती है। गुलाब प्रेम का प्रतीक है। इसलिए गुलाब का छत्र लगाने से पति हमेशा पत्नी की ओर आकर्षित रहता है।

वैज्ञानिक महत्त्व : वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, इत्र मानसिक तनाव दूर कर तरोताजा रखता है। गुलाब की सुगंध दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इत्र को नर्वपॉईंट्स पर लगाना चाहिए।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि महिलाओं के सोलह श्रृंगारों में धार्मिक तथा वैज्ञानिक महत्त्व व्यापक रूप में दिखाई देते हैं। लेकिन ये केवल महिलाओं में ही नहीं प्राचीन काल से पुरुषों के लिए भी कुछ आभूषण ऐसे बनाए गए हैं, जिससे पुरुषों के भी आरोग्य को फायदा हो। जैसे– पूरे सिर पर पगड़ी या गमछा बाँधने से सिरके ॲक्यूप्रेशर पॉईंट्स ॲक्टीव्ह हो जाते हैं। पुरुष हाथों की कलाई में कड़ा पहनते हैं, जिससे महिला जैसे पुरुषों

के भी रक्त परिचालन में सहायता होती है। महिलाओं जैसे पुरुष भी कान में बाली लगाते हैं। जिससे उनके भी ॲक्यूप्रेशर पॉईंट्स ॲक्टीव्ह होते हैं। सिंधू सभ्यता के नर–नारी तरह–तरह के आभूषण पहनते थे। हार, कान की बालियां, पैरों के कड़ेऔर मनकों की मालाएं स्त्री और पुरूष दोनों पहनते थे। आभूषण सोने, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दांत, तांबे तथा हड्डी के बनते थे।

आज विश्व में भारतीय संस्कृति का अनुकरण किया जा रहा है, जिसका कारण उसकी वैज्ञानिकता में है। आजकल विश्व में भारतीय खान पान, रहन–सहन तथा उत्सव–त्योहारों को धूम धाम से मनाया जा रहा है, जिसके पिछे छिपी वैज्ञानिकता लोंगो को समझ आ रही है। दुर्भाग्य से भारत में यह कम दिखाई दे रहा है। महिलाओं में विभिन्न बिमारियाँ फैल रही है। सोना और चांदी यह धातु सिर्फ सौंदर्यवर्धक नहीं है बल्कि विभिन्न गुण धर्मों ओर गुण वैशिष्ट्यों से युक्त है। जैसे चांदी यह धातु उष्णता रोधक होता है। सोना यह धातु रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है। और महिलाओं के आभुषण इन्हीं दो धातुओं से बनाए जाते हैं। इसी कारण भारतीय संस्कृति और परंपराओं के अनुसार, सोलह श्रृंगार से महिलाओं का जीवन और स्वास्थ्य अच्छा बनता है।

संदर्भ सूची :–

1. श्री. मुळेगुणाकर –भारत : इतिहास, संस्कृति और विज्ञान, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन, वर्ष 2013
2. बडोनी कमला : ब्लागर लेखांश : मेरी सहेली।
3. Google **वेबसाईट्स :**

- http://m-hindi.webdunia.com
- http://grehlakshmi.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 151-154
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

महाराष्ट्रीयन धार्मिक त्योहारों में विज्ञान

प्रा. (डॉ.) सविता कृ. पाटील
स.ब.खाडे महाविद्यालय, कोपार्डे।

भारतीय समाज उत्सवप्रिय है। त्योहार भारत की समृद्ध परंपरा के प्रतीक हैं। हर जाति, धर्म के अपने–अपने अलग–अलग त्यौहार हैं। अनेक छोटे–बड़े अवसरों पर उत्सव मनाये जाते है। यही उत्सवप्रियता भारत में उर्जा का स्रोत बन जाती है। रोजमर्रा के जीवन सकारात्मकता फैलाने में त्योहारों का योगदान बहुत बड़ा है। त्यौहार मनाना इसका मतलब यह नहीं कि सिर्फ उत्सव मनाना, तो प्रत्येक त्यौहार के पीछे एक वैज्ञानिक दृष्टि जरूर रहती है। कुछ त्यौहार मूल्यों में वृद्धि करते हैं, तो कुछ त्यौहार पर्यावरण की रक्षा करते हैं। त्यौहारों के कारण जीवन के प्रति एक उदार दृष्टिकोण निर्माण होता है। निराशा के स्थान पर आशा का संचार हो जाता है। गहन सांस्कृतिक चिंतन, पौराणिक आख्यान, लोकरंजन ऐसे विविध हेतु इन त्योहारों का अपना अलग महत्त्व है।
बीज शब्द :– त्यौहार, विज्ञान, पेड़ पौधे, पर्यावरण, खान–पान, कृतज्ञता, मनोविज्ञान।

महाराष्ट्र राज्य में विविध त्यौहार मनाएं जाते हैं। त्यौहार मनुष्य जीवन को खुशी प्रदान करते हैं। त्योहार धार्मिक, राष्ट्रीय, पारम्परिक और सांस्कृतिक होते हैं। महाराष्ट्रीयन प्रत्येक त्यौहार के पीछे एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूर दिखाई देता है। कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति अध्यात्मवादी, धर्मप्रवण संस्कृति है, इसीकारण इस संस्कृति की ओर से विज्ञान की उपासना नहीं हो पाई है। यह आत्मा, परमात्मा मोह माया, मोक्ष आदि में उलझी हुई है, लेकिन यह बिल्कुल गलत धारणा है प्राचीन भारतीयों की वैज्ञानिक प्रगति को देखकर इस धारणा पर विश्वास नहीं किया जाएगा। पवन शेखर लिखते हैं, "इसके पूर्व ही सिन्धु घाटी की सभ्यता में भारतीयों ने विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को अपने काल से कहीं आगे ले जाकर यह सिद्ध कर दिया था कि भारतीय विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व के लिए अग्रदूत रहे हैं।"[1] विज्ञान के हर क्षेत्र में भारत ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

त्यौहार एक समुदाय द्वारा मनाया जाता है। महाराष्ट्र में हर धार्मिक त्यौहार में वैज्ञानिक दृष्टि है। राजपाल हिंदी शब्दकोष में 'त्यौहार' का अर्थ इस प्रकार दिया गया है, "वह दिन, तिथि जिसमे धार्मिक उत्सव मनाया जाता है"[2] मराठी महीने के विशिष्ट दिन ये त्यौहार मनाए जाते हैं।

प्रत्येक त्यौहार के पीछे उत्सव का स्वरुप होने के कारण एक अलग उर्जा मनुष्य के शरीर में प्रवाहित हो जाती है। विज्ञान विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करता है। साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण होने के कारण इसका लाभ भी मिलता है। "विज्ञान प्रकृति का अध्ययन, विवेचन, प्रायोगिक अन्वेषण एवं सैद्धान्तिक व्याख्या है। साथ ही वह भौतिक एवं प्राकृतिक संसार में तत्त्वों एवं तथ्यों का व्यवहार है।"[3] महाराष्ट्रीयन त्योहारों के पीछे यही व्यवहार

दिखाई देता है।

महाराष्ट्रीयन त्योहारों में सबसे पला त्यौहार 'गुढीपाडवा' है। यह त्यौहार चौत्र शुद्ध प्रतिपदा को मनाया जाता है। चौत्र महीने में नवबहार आ जाती है। वातावरण आल्हाददायी होता है। इस दिन से नया साल शुरू करने की दृष्टि से मन सकारात्मक बन जाता है। गुढी के लिए बड़ी लाठी का इस्तेमाल किया जाता है। इसे ताम्बे का लोटा बाँधा जाता है। इसका मुख नीचा होने के कारण ये लहरें घर की ओर आ जाती है। इन लहरों से युक्त ताम्बे के लोटे से सालभर पानी पिया तो आरोग्य प्राप्ति हो जाती है। साथ ही इस दिन कडवी नीम की पत्तियां, अजवायन, गुड, नमक मिलाकर खाया जाता है, जिसका हमारे शरीर के साथ गहरा संबंध है। कडवी नीम की पत्तियां आरोग्यकारी होती हैं। ये पित्त प्रवृत्ति का शमन करती हैं। साथ ही उष्णता को दूर करती हैं। इससे पचनक्रिया में सुधार आ जाता है। खांसी दूर होती है। गुढीपाडवा अच्छे विचारों के साथ ही हमें आरोग्य प्रदान करता है।

वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को अक्षय तृतीया मनाई जाती है। अक्षय तृतीया मनाई जाती है। अक्षय तृतीया के दिन सूरज की किरणें सीधी जमीन पर आ जाती है। इस दिन सूरज बहुत तेज होता है। किसान अपने इसी दिन से अपनी खेती में बीज बोना शुरू करता है। सूर्य की किरणों से तपी मिटटी में बीज बोना आसन हो जाता है महाराष्ट्र में अक्षय तृतीया के दिन दो मिटटी के घट की पूजा की जाती है। मिटटी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का भी यह त्यौहार है। मिटटी के घटों पर पलाश के पत्तें रखे जाते हैं। पलाश के पत्तों की थाली बनाकर उसपर भोग रखा जाता है। पलाश पत्तों पर रखा भोजन खाने से कफ, पित्त कम हो जाता है। यह प्यास को कम करने वाला होता है। एसिडिटी कम करके शक्ति बढ़ाने में पलाश के पत्तें लाभकारी होते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण होने वाली बीमारी पलाश के पत्तों के कारण दूर हो जाती है।

श्रावण शुक्ल पंचमी को महाराष्ट्र नागपंचमी मनाई जाती है। इस दिन महाराष्ट्र के प्रत्येक घर मिटटी से बने नागदेवता की पूजा की जाती है। महाराष्ट्र के सांगली तहसील के बत्तीस शिराला नामक गाँव में असली नागों को पूजा की जाती थी। आज शासन निर्णय के कारण असली नागों की पूजा करना बंद हो गया है। नागपंचमी के एक महीने पहले बड़े—बड़े नागों को मिटटी के घड़ों में बंद कर अतिथि के रूप उनका सम्मान किया जाता था। यह उत्सव मनाने के पीछे वैज्ञानिकता है। भारत यह कृषि प्रधान देश है। साँप, नाग किसानों के लिए बहुत हितकारी माने होते हैं। फसलों को नष्ट करने वाले कीड़े—मकोड़ों को ये कहा जाते हैं। सांप चूहों को भी खा जाते हैं. जिससे फसलों को खानेवाले चूहों से किसानों की मदद मिलती है। पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।

भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी का त्यौहार आ जाता है। यह महाराष्ट्र का सबसे बड़ा त्यौहार है। गणेश जी का आगमन हर महाराष्ट्रीयन के मन में खुशहाली और उमंग पैदा करता है। उनकी मूर्ति हर घर में प्रतिष्ठापित की जाती है। घर के गणेश जी पांच—छः दिनों तक और हर गली के बड़े गणेश जी 10 दिनों तक याने अनंत चतुर्दशी तक विराजमान रहते हैं। गणेश जी की प्रतिष्ठापना चावल की राशि पर की जाती है। चावल में कई विटामिन्स और खनिज होते हैं, ज्यों हमारी रोग प्रतिकारक शक्ति को बढ़ाते हैं हमारी हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। ये हमारे सेहत के लिए फायदेमंद होती हैं। गणेश जी के आगमन पर सुंदर रंगोली बनाई जाती है। रंगोली के कारण हमारी निर्मिती क्षमता बढ़ती है। जब हम रंगोली देखते हैं, तब हमारा तनाव

दूर हो जाता है। अलग–अलग रंगों का सीधा असर हमारे दिमाग पर हो जाता है, जिसके कारण अच्छे हार्मोन्स उत्पन्न होते हैं। इससे हमारे मन को शांति और खुशी मिलती है। उत्साह के साथ जब हम कार्य करते हैं तो इसमे सफलता मिलती हैं। गणेश जी को भोग के रूप में मोदक दिए जाते हैं। चावल के आटे से बनाए गए मोदक स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं। इसमे नारियल, गुड, काजू, बादाम, इलायची का उपयोग किया जाता हैं। ये सारी चीजें सेहत के लिए फायदेमंद होती है। मोदक से हमारी उर्जा शक्ति बढती है। मोदक मीठे होने के कारण हमारी भूख शांत होती है। हमारी थकान और कमजोरी मोदक के कारण दूर हो जाती हैं। साथ ही गणेश जी के लिए शमी, धतूरा, तेजपत्ता, कनेर, आक, महुआ, देवदारू जैसे अनेक वनस्पतियाँ मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए मददगार बनती हैं।

गणेश चतुर्थी के दो–तीन बाद गौरी आगमन हो जाता है। इस दिन सुवासनी औरतें सजधजकर नदी पर जाती हैं। वहां गुलतेवडी जिसे मराठी में में तेरडा कहा जाता हैं, उसके पौधे कलश में रखकर घर ले आती है। उसकी बहुत भक्ति भाव से पूजा की जाती है। गौरी आगमन के अगले दिन पतिदेव के रूप में शंकर देवता का आगमन होता है। शंकर देवता के रूप में द्रोणपुष्पी नामक वनस्पती का उपयोग किया जाता है। यह वनस्पती अत्यंत गुणकारी होती है। सर्पदंश, त्वचा दोष तथा आँखों की बीमारियाँ इसके द्वारा दूर हो जाती हैं। गुलतेवडी वनस्पती एंटीबायोटिक की तरह कार्य करती हैं। दूर्वा, चन्दन तथा फूल पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष के पहले दस दिन एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता है। उसे दशहरा खा जाता है। इन दस दिनों में पूरा माहोल धार्मिक, मंगलमय बन जाता है। पूजा के समय धूप, दीप का प्रज्वलन किया जाता है। सावन और भाद्रपद महीने के बाद नमी के कारण वातावरण दूषित बन जाता है। अनेक जीव जंतुओं का निर्माण हो जाता है। धूप दीप जलाने से प्रदुषण पर रोक लग जाती है। दशहरे में पहला दिन घटस्थापना का होता है। इस दिन मिट्टी पर पानी से भरा मिट्टी का घट रखा जाता है। मिट्टी में बीज बीए जाते हैं। नौ दिनों तक बीज अच्छी तरह से उग आते थे। इनका निरीक्षण करके तय किया जाता है कि कौनसे बीज अच्छे हैं और कौनसे बीज बुरे याने अनुपजाऊ। बीजों की उगने की क्षमता को इसके द्वारा परखा जाता था। दूसरी ओर घटस्थापना के दिन ताम्बे के पात्र का जल चुम्बकीय विद्युत ऊर्जा को आकर्षित करता है। उस पर रखा नारियल ब्रह्मांड उर्जा का संवाहक बन जाता है। इससे उत्पन्न उर्जा वातावरण को दिव्यता प्रदान करती है। नवरात्रि के नौ दिनों में अनेक लोग व्रत रखते हैं। शाकाहार, अल्पाहार अथवा पूर्णतरू निराहार रहकर यह व्रत किया जाता है। इसके कारण शरीर का विषहरण हो जाता है। शरीर के विषतत्व बाहर हो जाते हैं। पाचन तंत्र को आराम मिल जाता है। आत्म अनुशासन के कारण मानसिक स्थिति मजबूत हो जाती है। जिससे नैराश्य, सिरदर्द, ह्दयरोग आदि बीमारियों के होने की संभावना कम हो जाती है।

दशहरे के दिन कठमूली जिसे मराठी में आपटा कहा जाता है, उसकी पत्तियों को नाते–रिश्ते, मित्र परिवार में बाँट दिया जाता है। एक दूसरे के लिए शुभेच्छाओं का आदान प्रदान किया जाता है। इन पत्तिओं को सोना पत्ती भी कहा जाता है। एक दूसरे को पत्तिओं को बांटने से पहले इसकी पूजा की जाती है। इन पत्तियों को लेकर आने वाले आदमी का औक्षण करने की प्रथा भी कुछ स्थानों पर प्रचलित है। ये पत्ते अनेक औषधीय गुणों से भरे रहते हैं। इनका उपयोग फंगल संक्रमण के उपचार में किया जाता है। अस्थमा और मधुमेह जैसी बीमारियों में ये पत्ते आरोग्यदायी होते हैं।

दीपावली का त्यौहार दीप जलने का त्यौहार है। दीपों को जलाने से वातावरण में नमी बढ़ती है। वातावरण का ताप बढाने में दीप जलन से मदद मिलती है। ठंडी के दिनों में हवा भारी होती है। दीपक जलाने से हवा हल्की और साफ़ बन जाती है। दीपावली के दिन अभ्यंग स्नान का महत्व अनन्य साधारण है। शरीर पर 'उटने' याने एक प्रकार की प्रसाधन सामग्री का उपयोग किया जाता है। इससे त्वचा में निखार आ जाता है। शरीर की कांति तेजस्वी बन जाती है। त्वचा का रूखापन कम होकर वह मुलायम बन जाती है। दीपावली के समय बनाई मिठाई खाने से शरीर में उर्जा निर्माण हो जाती है।

दीपावली के बाद मकर संक्रांति का त्यौहार आ जाता है। मकर संक्रान्ति हर राज्य में अलग—अलग तरीके से मनाई जाती है। महाराष्ट्र में इस पर्व पर नदी स्नान का विशेष महत्व है। नदियों से होने वाली वाष्पन क्रिया के कारण अनेक रोग दूर हो जाते हैं। सूर्य के उत्तरायण में दिन बड़ा होने के कारण मनुष्य की कार्यक्षमता बढती है। इस दिन बनाई जाने वाली खिचड़ी से शरीर रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ती है और यह जीवाणुओं से लड़ने मदद करती है।

फाल्गुन पौर्णिमा में होली का त्यौहार मनाया जाता है। इस पर्व के दौरान महाराष्ट्र में लकड़ियाँ. गोबर के कंडे जलाए जाते हैं। जलाई गई इस सामग्री से वातावरण में फैले खतरनाक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। होलिका परिक्रमा के करने से शरीर पर जमे कीटाणु अलाव की गर्मी से मर जाते है। होलिका दहन की राख से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। कंडे जलाने के बाद उनमे से निकले ओक्सिजन से वातावरण शुद्ध बनता है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि महाराष्ट्रीयन त्यौहार वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं। हर त्यौहार के पीछे वैज्ञानिक तथ्य गहराई से जुड़े दिखाई देते हैं। पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में ये त्योहार मददगार बनते हैं। प्रकृति हमें जो कुछ देती है, उसके प्रति कृतज्ञता का भाव हर त्यौहार के पीछे दिखाई देता है। ये त्यौहार कभी हमारी सकारात्मकता बढ़ाते हैं। महाराष्ट्र कृषि प्रधान होने के कारण कुछ त्यौहार कृषि की दृष्टि से महत्ववपूर्ण हैं। कुछ त्योहारों में उपयोग में लाए जाने वाले पेड़ पौधों का उपयोग सिर्फ त्योहारों की दृष्टि से मर्यादित नहीं है तो मनुष्य जीवन के लिए वे उपयोगी और मददगार बन जाते हैं। इन पेड़ पौधों की पूजा करके हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। कृतज्ञता ज्ञापन तथा उपकार भावना से नकारात्मकता के प्रति प्रतिरोध बढ़ता है। मनुष्य को स्वास्थ्य प्राप्ति में इससे मदद मिलती है। त्योहारों के पीछे होने वाला मनोविज्ञान मनुष्य जीवन को खुशियों से भर देता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. शेखर पवन; प्राचीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, (पटना, जानकी प्रकाशन : प्रथम संस्करण 2013) पृ. 1
2. बाहरी हरदेव, राजपाल हिंदी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली : प्रथम संस्करण 1991 पृ. 374
3. किरण झा, अवधेशझा, राजेंद्र प्रसाद शर्मा; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, (नई दिल्ली, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा.लि. : संस्करण 2011) पृ. 1

मोबा. 9403552007, Email- savitapatil1965@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 155-158

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक मान्यताएँ एवं धार्मिक विश्वासों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक व्यापक समीक्षा

Dr. Shefali Mendiratta
Assistant Professor, Education, Suresh GyanVihar University, Jaipur (Rajasthan)

सार :-

यह शोध आलेख वैज्ञानिक अन्वेषण और सामाजिक और धार्मिक विश्वासों के बीच जटिल संबंधों पर विचार करता है। इसका उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में सामाजिक और धार्मिक विश्वासों की उत्पत्ति, विकास और प्रभाव का अध्ययन और विश्लेषण करने के लिए वैज्ञानिक विधियों को कैसे उपयोग किया जा सकता है, का एक विश्लेषण प्रदान करना है। मनोचिकित्सा और परिकल्पना मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए, यह अनुसंधान जांचता है कि विश्वास प्रणालियों की कैसे योजनात्मक सहयोग, नैतिक मूल्यों, और समूह पहचान को बढ़ावा देने में भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन सामाजिक और धार्मिक विश्वासों के सामाजिक प्रभावों में खोजता है, कि ये विश्वास प्रणालियाँ मानव व्यवहार, समाजिक संरचनाएँ, और समूहों की गतिविधियों को कैसे प्रभावित करती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, अनुसंधान संस्थागत प्रणालियों और धार्मिक विश्वासों के बीच के संबंधों की परीक्षा करता है, जो सामाजिक नैतिकताओं, और नीतियों, को कैसे आकार देते हैं।

मुख्य बिन्दु :- वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक मान्यताएँ, धार्मिक विश्वास।

प्रस्तावना :-

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि विज्ञान और धर्म के बीच संबंध जटिल है, और यह समय के साथ विकसित हुआ है। प्राचीन सभ्यताओं में धर्म, अक्सर प्राकृतिक घटनाओं को समझाने में केंद्रीय भूमिका निभाता था। पौराणिक कथाओं और धार्मिक ग्रंथों ने ब्रह्मांड, पृथ्वी और जीवन की उत्पत्ति के लिए स्पष्टीकरण प्रदान किया। मध्य युग के दौरान, कैथोलिक चर्च एक शक्तिशाली संस्था थी, और इसकी शिक्षाएँ अक्सर वैज्ञानिक विचारों को प्रभावित करती थीं। हालाँकि, तनाव भी थे, खासकर जब वैज्ञानिक विचार धार्मिक सिद्धांतों का खंडन करते थे। निकोलस कोपरनिकस ने चर्च द्वारा समर्थित भूकेन्द्रित दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए सौर मंडल का एक सूर्य केन्द्रित मॉडल प्रस्तावित किया। इससे ब्रह्मांड की उभरती वैज्ञानिक समझ और धार्मिक रूढ़िवादिता के बीच तनाव पैदा हो गया। हेलियोसेंट्रिक मॉडल के लिए गैलीलियो के समर्थन और आकाशीय पिंडों का निरीक्षण करने के लिए दूरबीन के उपयोग ने उन्हें कैथोलिक चर्च के साथ संघर्ष में ला दिया। ज्ञानोदय ने तर्क, अवलोकन और अनुभव जन्य साक्ष्य पर बढ़ती निर्भरता के युग की शुरुआत की। इस अवधि में वैज्ञानिक जांच का उदय

हुआ और पारंपरिक धार्मिक प्राधिकार पर सवाल उठाए गए। विज्ञान में प्रगति, विशेष रूप से ब्रह्मांड विज्ञान, आनुवंशिकी और तंत्रिका विज्ञान में, सृष्टि और मानवता की प्रकृति के बारे में धार्मिक मान्यताओं को चुनौती देना जारी रखा है। हालाँकि, कई धार्मिक समूहों ने वैज्ञानिक खोजों को अपना लिया है, और वैज्ञानिक समझ के साथ अपने विश्वास को समेटने के तरीके खोजे हैं। पूरे इतिहास में, ऐसे व्यक्ति और आंदोलन रहे हैं जिन्होंने विज्ञान और धर्म में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश की है, इस बात पर जोर दिया है कि वे एक साथ रह सकते हैं और दुनिया को अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं को समझना कई कारणों से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक अधिक सूचित और सहिष्णु समाज को बढ़ावा देने में योगदान देता है। यहां कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं कि यह समझ क्यों महत्वपूर्ण है :–

– एक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों को खुले दिमाग से अलग–अलग मान्यताओं को अपनाने, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है।
– मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार को समझने से पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता को कम करने, अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।
– कई झगड़े सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं की गलतफहमी या गलत व्याख्याओं से उत्पन्न होते हैं। एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण संघर्षों के लिए सामान्य आधार और संभावित समाधानों की पहचान करने में मदद करता है। वैज्ञानिक समझ संघर्षों के मूल कारणों में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है, जिससे अधिक प्रभावी संघर्ष समाधान रणनीतियाँ बन सकती हैं।
– सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण सांस्कृतिक क्षमता को बढ़ाता है, जिससे व्यक्ति संवेदनशीलता और समझ के साथ विविध सांस्कृतिक परिदृश्यों को प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।
– एक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य पूर्ण व्यक्ति सामाजिक कल्याण पर विश्वासों के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करके नैतिक निर्णय लेने में योगदान दे सकता है।
– शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को शामिल करने से छात्रों को महत्वपूर्ण सोच, कौशल और दुनिया की व्यापक समझ विकसित करने में मदद मिलती है।
– समावेशी और न्यायसंगत नीतियां बनाने के लिए नीति निर्माताओं के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से

सामाजिक और धार्मिक परिदृश्य को समझना आवश्यक है। जो नीतियां वैज्ञानिक समझ से प्रेरित होती हैं, उनके प्रभावी होने और विविध सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं का सम्मान करने की अधिक संभावना होती है।

वैज्ञानिक विश्लेषण ऐसे उदाहरणों की पहचान करके मानवाधिकारों को बढ़ावा देने में योगदान दे सकता है जहां सांस्कृतिक या धार्मिक प्रथाएं, मौलिक मानवाधिकार सिद्धांतों के साथ संघर्ष कर सकती हैं। यह समझ मानव अधिकारों की सुरक्षा के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता को संतुलित करने के उद्देश्य को सूचित कर सकती है।

विभिन्न सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं के सकारात्मक और नकारात्मक सामाजिक प्रभाव :–

सकारात्मक सामाजिक प्रभाव :

– कई सामाजिक मान्यताएँ समुदाय, एकजुटता और आपसी सहयोग के महत्व को बढ़ावा देती हैं। धर्म

अक्सर दान, दूसरों की मदद और सामुदायिक निर्माण पर जोर देते हैं।

– आस्था–आधारित समुदाय अपने सदस्यों को भावनात्मक और भौतिक सहायता प्रदान कर सकते हैं।
– धर्म नैतिक संहिता प्रदान करते हैं, जो अनुयायियों को सदाचारी जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
– सांस्कृतिक मान्यताएँ परंपराओं, भाषाओं और रीति–रिवाजों के संरक्षण और प्रसारण में योगदान कर सकती हैं। कई धार्मिक परंपराएँ सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में भूमिका निभाती हैं, जिनमें अनुष्ठान, कला और ऐतिहासिक आख्यान शामिल हैं।
– कुछ सामाजिक मान्यताएँ शिक्षा और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे अधिक सूचित और सशक्त नागरिक बनते हैं।

नकारात्मक सामाजिक प्रभाव :–

– कुछ सामाजिक – धार्मिक मान्यताएँ नस्ल, लिंग या सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे कारकों के आधार पर असहिष्णुता को जन्म दे सकती हैं।
– कुछ धार्मिक मान्यताएँ रूढ़िवादी हो सकती हैं, जो पारंपरिक मूल्यों के साथ टकराव वाले सामाजिक परिवर्तनों का विरोध करती हैं।
– कुछ मामलों में, धार्मिक सिद्धांतों का कड़ाई से पालन व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित कर सकता है, विशेष रूप से अभिव्यक्ति, जीवन शैली और रिश्तों के मामलों में।
– विशिष्ट सामाजिक मान्यताएँ विभाजनकारी समुदायों के निर्माण में योगदान कर सकती हैं। धार्मिक विशिष्टता, श्रेष्ठता या अलगाव की भावना पैदा कर सकती है, जिससे 'हम बनाम वे' मानसिकता को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष :–

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संचार में प्रगति ने कुछ समाजों में पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं को चुनौती दी है। विशेष रूप से विकसित देशों में धार्मिक पालन और प्रभाव में गिरावट के साथ धर्मनिरपेक्षता की प्रवृत्ति देखी गई है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं का विकास जारी है, और विभिन्न संस्कृतियाँ और व्यक्ति विभिन्न तरीकों से इन मान्यताओं की व्याख्या और अनुकूलन कर सकते हैं। संस्कृति, इतिहास, राजनीति और व्यक्तिगत अनुभवों का परस्पर संबंध मानवीय विश्वासों और आध्यात्मिकता की समृद्ध छवि को आकार देता रहता है। अध्ययन वैज्ञानिक स्पष्टीकरणों और धार्मिक आख्यानों के बीच संभावित संघर्षों को भी संबोधित करता है, उन तरीकों की खोज करता है जिनमें वैज्ञानिक जांच विविध विश्वास प्रणालियों के साथ सह–अस्तित्व में हो सकती है। यह अधिक सूक्ष्म और समावेशी संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए वैज्ञानिक और धार्मिक समुदायों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने के महत्व पर विचार करता है। निष्कर्ष में, यह शोध पत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं की व्यापक खोज की पेशकश करता है, जो जांच की अंतःविषय प्रकृति पर जोर देता है।

सन्दर्भ :–

1. ईस्टरब्रुक, जी. (15 अगस्त 1997)। 'वैज्ञानिक समुदाय : विज्ञान और भगवान : एक वार्मिंग प्रवृत्ति?'।

विज्ञान। अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस (एएएएस)। 277 (5328) : 890–893
2. फ्रैंक टर्नर, 'विज्ञान और धर्म के बीच विक्टोरियन संघर्ष : एक व्यावसायिक आयाम', आइसिस, 49 (1978) 356–76।
3. नोंगब्री, ब्रेंट (2013)। धर्म से पहले : एक आधुनिक अवधारणा का इतिहास। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. रॉबट्र्स, जॉन (2011)। '10. विज्ञान और धर्म'। शैंक में, माइकल; नंबर्स, रोनाल्ड; हैरिसन, पीटर (सं.)
5. राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी और राष्ट्रीय अकादमियों के चिकित्सा संस्थान (2008)। विज्ञान, विकासवाद और सृजनवाद। पृ. 3–4.
6. शर्मा दीपक (2011) 'शास्त्रीय भारतीय दर्शन : एक पाठक' पृष्ठ। 167 कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. स्टेनमार्क, मिकेल (2004). विज्ञान और धर्म का संबंध कैसे बनाएं : एक बहुआयामी मॉडल। ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन : डब्ल्यू.बी. एर्डमैन्स पब। कंपनी पी. 45.
8. सहगल, सुनील (1999)। हिंदू धर्म का विश्वकोश (खंड 3)। सरूप एंड संस। पी। 688. स्पिनोज़ा के अस्तित्व से दो हजार वर्ष से भी पहले हिंदू स्पिनोज़ाईट थे; और डार्विनियन हमारे समय से कई शताब्दियों पहले, और 'विकास' जैसा कोई शब्द दुनिया की किसी भी भाषा में मौजूद होने से पहले थे।
9. हाउट, जॉन एफ.;सेल्क, यूजीन ई. (1996)। 'विज्ञान और धर्म : संघर्ष से वार्तालाप तक'। अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिक्स. अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ फिजिक्स टीचर्स (एएपीटी)।
10. हैरिसन, पीटर (2015)। विज्ञान और धर्म के क्षेत्र. शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 3. आईएसबीएन 9780226184517

$ 91 99284 99000

shefali.mendiratta@mygyanvihar.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 159-162
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय त्योहारों का वैज्ञानिक दृष्टीकोन

सुश्री. स्नेहलता गौतम कांबळे
श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अँड सायन्स कॉलेज, माळवाडी कोतोली।

बीजशब्द :– संस्कृति, त्योहार, पर्व, मकर संक्रांति, दीपावली, होली, गुढी पड़वा।

सारांश :–

देश की सांस्कृतिक चेतना का विस्तार उस देश में आयोजित होने वाले पर्व त्योहार पर निर्भर करता है। भारतीय संस्कृति का त्योहार एक अभिन्न अंग है। भारत हर महीने में कोई ना कोई त्योहार मनाया जाता है। इसलिए भारत हो त्योहारों का देश कहा जाता है। बहारों के माध्यम से सांस्कृतिक विशेषताए, आचार विचार, रहन सहन, आदि का दर्शन होता हैं। हमारे निरस जीवन से परेशानियों से बाहर आते है। हमरे रिश्तेदारो के साथ मिलकर त्योहार मनाते है। त्योहार मनाने के धार्मिक कारण तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोन भी होते है। संक्रांति, होली, गुडीपडवा, दीपावली तभी त्योहारों के पीछे वैज्ञानिक दृष्टिकोन है। आज आवश्यकता है कि हम हमारे त्योहारों को सहेजकर वास्तविक रूप से मनाए ताकी आनेवाले पिढीयो तक इन त्योहारों को मौलिक रूप से हस्तन्तरीत कर सके। आज आवश्यकता है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक त्योहारों के धार्मिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोन की जानकारियां साझा करे। त्योहार के पीछे का दृष्टिकोन, जानकारिया, उनके मनाने का तरीका अन्य लोगों तक पोहोचेगा तब यह सरल सहज एवं रूप मे उनका विस्तार पाते रहेंगे। अन्यथा ऐसे त्योहार कई बोलिया लोकपर्व की तरह इतिहास मे ओझल हो जायेंगे। जो किसी भी क्षेत्र की संस्कृति के लिए सही नहीं है। हमें प्रयास करना होगा हमारी संस्कृति, लोक पर्व, त्योहारों के बारे में संस्थानों कॉलेज में जागरूकता अभियान चलाए ताकी युवा पिढी उसे अपने जीवन शैली में अपना कर उसके संरक्षण के लिए चिंतनशील बने।

प्रस्तावना :–

देश की सांस्कृतिक चेतना का विस्तार उस देश मे आयोजित होने वाले पर्व, त्योहारों पर निर्भर करता है।

लोकपर्व, व्रत–त्योहार सभी में संस्कृति के संस्कार प्रतिबिंबित होते हैं। त्या ।हारों के माध्यम से उस देश की सांस्कृतिक विशेषताएँ रहन–सहन आदि का दर्शन होता है।

भारत के संस्कृति के विविध आयाम है। इसमें हमारी परंपरा ए खानपान आभूषण तथा त्योहार सम्मिलित है। तीज त्योहार हमें सामाजिक रूप से सक्रिय बनाते है। हम अपने स्वकियों को मिल पाते है और अपना सुख –दुःख बाटने के लिए संकल्पबद्ध होते है। भारत एक बहु धर्म और बहुभाषी देश है। जहाँ सभी धर्म के लोक रहते है। तथा एक–दूसरे के साथ सोहाद्र वातावरण बनाने का प्रयास करते है। सभी धर्म के अपने अपने अलग त्योहार

है। जिन्हें सभी धर्म के लोग उल्हास के साथ मनाते है। ये त्योहार समाज में जीवंतता प्रदान करते है। विविधता में एकता का भाव उत्पन्न करते है।

भारतीय त्योहार हमारे जीवन का हिस्सा है। हर महिने कोई ना कोई त्योहार मनाया जाता है। इसलिए भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। त्योहार हमारे जीवन में खुशियाँ लाते है। त्योहारों के आते हीं हमारे निरस जीवन में रस भर जाते है। दैनिक व्यस्त जीवन में हम इन त्योहारों के माध्यम से हमारे रिश्तेदारों के करीब आते है और अपने सुख–दुःख बांटते है। भारत में दो प्रकार के त्योहार मनाए जाते है। राष्ट्रीय त्योहार तथा धार्मिक त्योहार। राष्ट्रीय त्योहार सभी राष्ट्र मिलकर मनाते है जैसे स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस। धार्मिक त्योहारों के अंतर्गत मकर संक्रात, होली, दिपावली, गुडीपडवा आदि, त्योहार संमेल्लीत है। इस शोध लेख मे त्योहारों का धार्मिक महत्त्व तथा वैज्ञानिक महत्व बताने का प्रयास किया है।

मकर संक्रांति :–

पृथ्वी सूर्य के चारों और 365 दिन में एक चक्र लगाती है। इसे सौर वर्ष कहा जाता है। तथा पृथ्वी का एक राशि से दूसरी राशी मे प्रवेश संक्राति कहलाता है। सूर्य के उत्तर को मकर संक्रांति दक्षिणायन को कर्क संक्रांति कहते है। उतरायण में दिन बड़े होते हैं तथा प्रकाश बढ़ जाता है। राते दिन की अपेक्षा छोटी होती है। दक्षिणायन में इससे उलटा होता है। शास्त्रों के अनुसार उत्तरायण के अवधि देवताओ के दिन तथा दक्षिणायन देवताओं की रात्री कहलाती हैं। धर्मशास्त्र के अनुसार इस दिन पुण्य, दान, तथा धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व होता है। संक्रांति की विशेषता यह है कि त्योहार हर साल 14 जनवरी को मनाया जाता है। अपवाद के रूप में 13 जानेवारी या 15 जनवरी को आता है। इस त्योहार का जिस प्रकार धार्मिक महत्त्व है उसी प्रकार वैज्ञानिक महत्व भी बड़ा है। मकर संक्रांति के समय नदियों में वाष्पन क्रिया होती है। इन दिनों लोग नदी में स्नान करते है। जिससे तमाम रोग दूर हो जाते है। मकर संक्रांति के समय भारत में ठण्ड का मौसम होता है। लोग तील, गुड, और बाजरी की रोटी खाते है। तील और गुड खाने से शरीर में ऊर्जा निर्माण होती हैं। यह ऊर्जा सर्दी में शरीर की रक्षा करती है। मकर संक्रांति में पतंग उडाने की भी परंपरा है। इसका भी एक वैज्ञानिक दृष्टिकोन है। पतंग उड़ाते ज्यादा समय सूर्य की किरण मे बिताने से ठण्ड से मुक्ति मिलती है।

होली :–

होली को रंगों का त्योहार या प्यार का त्योहार कहा जाता है। यह चंद्रमास पूर्णिमा के अंतिम दिन मनाया जाता है यह त्योहार वसंत की शुरुवात और अच्छाई के जितके लिए मनाया जाता है। एक दूसरे पर रंग फेकना यह इस त्योहार की पहचान है। इसलिये इसे रंगों का त्योहार कहा जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार हिरण्यकश्यप नाम का एक राजा था। खुद को खुद को बड़ा बलवान समझता था। आपले अहंकार के कारण वह देवताओं की घृणा करता था। असे उलटा उसका पुत्र प्रल्हाद भगवान विष्णू का भक्त था। हिरण्यकशप को पसंद नही था। अपनी बहन के सहारे जिसे अग्नि से बचने का वरदान मिला था। प्रल्हाद को डराने के लिए होलिका का सहारा लिया। चिंटू भगवान विष्णू की कृपा से प्रल्हाद बच गया और होलीका जल गई। तभी से बुराई पर अच्छाई की जीत है रूप में होलिका दहेन होने लगा।

होली का वैज्ञानिक महत्व यह हैं कि होली के दौरान मौसम में तेजी से बदलाव आते है। जिससे अनेक बिमारियां फैलती हैं। बिमारी फैलाने वाले अनेक बॅक्टेरिया जन्म लेते है। होलीका दहन की अग्नि से इलाके के

आसपास मौजूद किटाणू खत्म हो जाते है और बिमारीयो का खतरा कम होता है। होली शरद ऋतू की समाप्ति बसंत ऋतु के आगमन का काल पर्यावरण और शरीर में बॅक्टरिया की वृद्धि को बढा देता है। जब होली का जलाई जाती है तब इन बॅक्टेरियां का नाश हो जरा हैं। होली होली में जब रंग केले जाते है तब रंगों का स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। पुराने जमाने मे प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती थी जैसे हल्दी, बेल, चकुंदर, नीम से बने रंग हमारे शरीर को ठंडक पहुंचाते थे और मनुष्य जीवन मे स्फूति लाते थे। उत्तर प्रदेश में होली के समय सरसो और गाजर की कांजी बनाते है। जिससे पीने से पेटके विशेले तत्व मर जाते है। पेट कीं बिमारी दूर होकर रोग प्रतिकारक शक्ति बढ जाती है। इन सभी वैज्ञानिक कारण से होली एक श्रेष्ठ त्योहार है।

गुडीपडवा :–

गुढीपडवा त्योहार महाराष्ट्र में बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। आज के आधुनिक युग में भी त्योहार का ऐतिहासिक सांस्कृतिक और नैसर्गिक महत्त्व आहे। तो में हर त्योहार का कोई ना कोई उद्देश होता है। आनेवाले आधुनिक पिढी को इसकी जानकारी मिले इसलिए इसका महत्त्व जान लेना बहुत जरुरी है। गुढीपडवा के बारे मे कुछ पौराणिक कथाए कहीं जाती हैं। इस दिन ब्रह्मणे विश्व की निर्मिती कि थी ऐसा वेद में कहा है। कुछ पौराणिक कथा के अनुसार प्रभू रामचंद्र 14 साल का वनवास खत्म कर अयोध्या वापस आये थे इस यश के उपलक्ष में गुढीपडवा मनाते है। चैत्र महिना के वसंत ऋतु का आगमन होता हैं। समय पेड के पत्ते झडकर नये पत्ते आते है इसके प्रतीक के रूप मे आम की टेहनी को गुडी को बांध दिया जाता है। वातावरण में जो तापमान बढता है उसे कम करने के लिए नीम के पत्ते लगाये जाते है। आजवाएन, नमक, नीम के पत्ते, प्रसाद रूप मे दिए जाते है। जिससे पाचनक्रिया अच्छी होती है। पित्त का नाश होत हैं। नीम के पत्ते गुणकारी है ये गुढीपाडवा के दिन खाये जाते है। इन सभी वैज्ञानिक कारण से गुढीपडवा का महत्व है।

दीपावली :–

भारत में मनाये जाने वाले सभी पर्व में मालिका सामाजिक धार्मिक वैज्ञानिक दृष्टीने अधिक महत्त्व हैं। त्योहार को दीपोत्सव भी कहा जाता है रोशनी का त्योहार भी कहा जाता है। दीपावली हिंदू महिने के अमावस्या को मनाई जाती है। इस दिन माता लक्ष्मी तथा भगवान गणेश की उपासना की जाती है। त्योहार भारत में नही बल्की दुनिया भर भारतीय समुदाय मे आनंद के साथ मनाया जाता है। त्योहार हर घर में खुशियों की सौगात लाता है। यह पाच दिन का त्योहार होता है। जिसमे धनतेरस, नरक चतुर्दशी, लक्ष्मीपजा, गोवर्धन पूजा, और भाईदूज। लक्ष्मी पूजन के दिन धनसंपदा समृद्धी का आशीर्वाद पाने के लिए लक्ष्मी की पूजा की जाती है। लोग नये कपडे पहनते है। मिठाईया बनाते है। पटाके फोड कर त्योहार का आनंद लेते हैं। दीपावली मनाने के पीछे धार्मिक कारण यह कि दिन प्रभू राम 14 साल का वनवास भुगत कर आयोद्या वापस आए थे अयोध्यावासीयाने उनका स्वागत घी के दिये जलाकर किया था और आज भी वह परंपरा चल रही है। जब हम इस्का वैज्ञानिक दृष्टिकोन देखते है तब पता चलता है की दीपावली त्योहार वर्षा ऋतु के बाद आता है इस समय वातावरण मे जादा किडे मकोडे होते हैं जो बिमारीया फैलाते है। दीपावली मे घरं की साफ सफाई की जाती है जिससे किडे मकोडे मर जाते है वातावरण साफ हो जाता है। त्योहार मनाने के साथ साथ लोग बीमारी के खतरो से भी बच जाते है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते है।

1. भारतीय संस्कृती ने मनाया जाने वाले तीज त्योहारों का संबंध रहन–सहन, खान–पान, ऋतू, फसलो आदि से जुडा हैं।
2. भारतीय त्योहार धार्मिक तथा वैज्ञानिक दृष्टी से मनाए जाते है।
3. भारतीय संस्कृती में कमजोर तथा असाहाय् की रक्षा करणा सबसे बडा धर्म है।
4. प्रत्येक भारतीय त्योहार का न केवल वैज्ञानिक महत्त्व हैं बल्की उसके पीछे एक मकसद छुपा रहता है। उदाहरणं के लिए ठंड के मौसम में बिना किसी विशेष दिन का इंतजार किए हम गरिबां को कपडे देकर उनकी सहायता करते है।

संदर्भ सूची :-

1. कुमार विनय – भारतीय पर्वो की वैज्ञानिकता, सेठी प्रकाशन, बरेली।
2. जैन रोशन –हमारे पर्व त्योहार, देवनागर प्रकाशन।
3. मिश्रा सुनील – हिन्दुओ के पर्व और त्योहार, अरुण प्रकाशन दिल्ली।
4. शर्मा, डी. डी –उत्तराखंड के लोकोस्तव एवं पर्वोस्तव, अंकित प्रकाशन, हल्दवानी।
5. https//www.jagran.com.jind
6. https//www.shalacom.bharti

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 163-165
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान

डॉ. यु. एन. लाड
श्रीपतराव चौगुले आर्टस् अँन्ड सायन्स कॉलेज, माळवाडी– कोतोली।

प्रस्तावना :–

सदर शोधनिबंधामध्ये भारतीय संस्कृती आणि वैज्ञानिक पद्धती यासंबंधीचा अभ्यास करण्यात येणार आहेभारत आपल्या परंपरा आणि संस्कृतीसाठी जगभरात प्रसिद्ध आहे। एका बाजूला मानवी 'संस्कृती' या शब्दाने सर्व मानवांना आणि त्यांच्या सर्व जीवनाला व्यापून टाकण्याची झेप हा शब्द घेतो; तर दुसरीकडे 'आमच्या घराण्याची संस्कृती' किंवा 'ही माझी संस्कृती (स्वभावधर्म) नव्हे', अशा उद्‌गारांनी 'संस्कृती' हा शब्द स्वतरूला अगदी आकुंचितही करून घेतो। पाश्चात्य–पौरस्त्य, भारतीय–युरोपीय, हिंदू–इस्लामी, आर्य–द्रविड, ब्राह्मणी–मराठा, महाराष्ट्रीय–कन्नड यांसारख्या शब्दांनी संस्कृतीचा अर्थ प्रादेशिक, धार्मिक, वांशिक, जातीय, प्रांतीय इत्यादी दृष्टीने मर्यादित केलेला आढळतो। तर प्राचीन, मध्ययुगीन, अर्वाचीन, कालची–उद्याची या शब्दांनी संस्कृतीला कालिक मर्यादा घातली जाते। पारध, कृषी, नागर किंवा सरंजामदारी, भांडवलदारी व समाजवादी या विशेषणांनी युगपरत्वे संस्कृतींचे पृथकत्व इतिहासकारांनी ठरवलेले दिसून येते; तर कित्येकदा भौतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक या शब्दांनी संस्कृतीच्या घटकांनाच भिन्नत्व बहाल केले जाते।

भारतीय संस्कृतीचा इतिहास समृद्ध व वैविध्यपूर्ण आहे। सिंधू संस्कृतीचा उदय व अस्त, आर्याचे स्थलांतर, ग्रीक, पद्दशयन, शक, पहलव, कुशाण, हूण यांची प्राचीन काळातील आक्रमणे व त्यांचे भारतीयीकरण तसेच मध्ययुगीन काळातील इस्लामिक आक्रमणे व त्यांचे भारतीयीकरण या प्रक्रियेमधून भारतीय संस्कृती समृद्ध व वैविध्यपूर्ण झाली। हा संपूर्ण सांस्कृतिक प्रवास राजकीय, सामाजिक, आद्दथक, धार्मिक मन्वंतरांमधून घडतो, उत्क्रांत होतो। अशा प्रकारे भारतीय संस्कृतीही अनेक प्रवाहातून तयार होत गेलेली आहे। या देशाच्या संस्कृतीला आणि इतिहासाला बौद्धिक ज्ञानाची तात्त्विक परंपरां लाभलेली आहे। या अनुशंगाने भारतीय संस्कृती आणि तिची विज्ञानवादी वाटचाल याचा आढावा या ठिकाणी घेण्यात येणार आहे।

संशोधनाची उद्दिष्टे :–

१. संस्कृतीचा अर्थ समजून घेणे।

२. भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान यांचा सहसंबंध अभ्यासणे।

विषय प्रवेश :–

भारतीय संस्कृतीच्या मागे असलेले विज्ञानः भारत हा सर्वात वांशिकदृष्ट्या वैविध्यपूर्ण देश म्हणून ओळखला जातो जो खोलवर रुजलेल्या पारंपरिक संस्कृती आणि धार्मिक समाजांसाठी ओळखला जातो। हिंदु धर्म

आणि बौद्ध धर्म या दोन मोठ्या प्रमाणात अनुसरलेल्या धर्मांचे जन्मस्थान म्हणूनही भारत लोकप्रिय आहे। लोकांच्या जीवनात धर्म महत्त्वाची भूमिका बजावतो; भारतीय कुटुंबांमध्ये दैनंदिन जीवनात पाळल्या जाणाऱ्या विविध वैज्ञानिकदृष्ट्या सिद्ध झालेल्या सांस्कृतिक आणि धार्मिक प्रथा आहेत। या पद्धतींमध्ये भारतीय चालीरीती आणि संस्कृतीचे अनेक घटक आहेत जे शेवटी मानवाच्या चांगल्या आणि शिस्तबद्ध कल्याणासाठी तयार केले गेले आहेत। येथे आपण वैज्ञानिकदृष्ट्या सिद्ध असलेल्या परंतु सामान्यतः अंधश्रद्धा म्हणून लेबल केलेल्या पाच दिवसांच्या भारतीय पद्धतींबद्दल बोलणार आहोत। त्यातील काही महत्त्वाचे उदाहरणे पुढील प्रमाणे।

योग्य दिशेने झोपणे :-

भारतीय संस्कृतीच्या मागे विज्ञान–सच्ची शिक्षावडिलांनी झोपताना उत्तर दिशेला डोकं ठेवू नका असं सांगितल्यावर आपल्यापैकी बऱ्याच जणांनी त्यांची हेटाळणी केली आहे, त्यामागचं शास्त्रीय कारण काय असेल याचा अंदाज एया! मानवी शरीराच्या अभियांत्रिकी आणि पृथ्वी ग्रहाच्या चुंबकीय क्षेत्रांमधील परस्परसंबंध समजून घेण्यासाठी संशोधकांनी वेळ दिला आहे। हे तथ्य लक्षात घेऊन वडिलांनी झोपताना उत्तर दिशेकडे डोके न ठेवण्याचा सल्ला दिला आहे, कारण आपल्या रक्तातील लोह आणि पृथ्वीच्या चुंबकीय खेचामुळे मेंदूवर अनावश्यक दबाव निर्माण होतो। जर तुमचे डोके उत्तरेकडे ठेवलेले असेल आणि झोपताना ६–७ तास त्याच स्थितीत राहिल्यास, यामुळे आरोग्याच्या अनेक समस्या उद्‌भवू शकतात आणि चुंबकीय पुलामुळे झोपेचा त्रास होऊ शकतो।

मुद्रांचे विज्ञान :-

सच्ची शिक्षातुम्ही कधी विचार केला आहे का की भारतीय संस्कृतीत हाताच्या जेश्चरवर एवढा जोर का आहे, जे जेश्चर सामान्यतः 'मुद्रा' म्हणून ओळखले जातात। भारतीय संस्कृतीत जवळपास सर्वत्र मुद्रांचा सहभाग आपण पाहिला आहे; मंदिरांमधील देवता, शास्त्रीय नृत्य प्रकार, भारतीय चित्रे, ऐतिहासिक वास्तूंमधील पुतळे आणि ते इतके सामान्य झाले आहेत की त्यांच्याकडे बारकाईने पाहण्याचा विचारही केला नाही। बरं, मुद्रांमागे तर्क आहे! मुद्रा आणि हात हे मानवी शरीराचे नियंत्रण कक्ष मानले जातात, आपल्या हातात आपण ठरवलेल्या प्रत्येक गोष्टीवर नियंत्रण ठेवण्याची क्षमता असते। येथे उद्धृत करण्यासाठी सर्वोत्तम उदाहरण म्हणजे योगाभ्यास करणे, हे मुद्रांचे सूक्ष्म विज्ञान आणि विशिष्ट हाताची स्थिती धारण केल्याने तुमची उर्जा योग्य दिशेने आणि उजव्या पेशीकडे कशी दर्शविले जाऊ शकते याचे महत्त्व सांगते। योग आपल्याला शिकवते की आपल्या तळहाताची फक्त एक साधी पुनर्स्थिती आपल्या शरीराच्या कार्यात्मक प्रणालीमध्ये कशी बदल करू शकते, हे संपूर्ण विज्ञान शरीराच्या भूमिती आणि परिक्रमातून प्राप्त झाले आहे।

चरण स्पर्श :-

साची शिक्षाभारतीय संस्कृतीतील आणखी एक महत्त्वाची परंपरा म्हणजे वृद्धांच्या पायांना स्पर्श करणे। असे म्हटले जाते की जेव्हा तुम्ही मोठ्या लोकांच्या पायांना स्पर्श करता तेव्हा त्यांचे शरीर आणि हृदय विशेषतः सकारात्मक ऊर्जा उत्सर्जित करते जी त्यांच्या हाताच्या बोटांद्वारे प्रसारित होते। हे पूर्ण सर्किट वैश्विक ऊर्जेला सामर्थ्यवान बनवते आणि सकारात्मक उर्जेचा प्रवाह वाढवते ज्यामुळे दोन अंतःकरणे आणि मन यांच्यात जलद संबंध निर्माण होतो।

नदीत नाणी फेकणे :-

नाणी नदीत फेकल्याने आपले नशीब मिळेल, असा आपला लहानपणापासून विश्वास आहे, बालपणीच्या

आठवणी उध्वस्त न करता त्यामागचे वैज्ञानिक कारण शोधूया! प्राचीन काळात वापरले जाणारे चलन मुख्यत्वे तांबेपासून बनविलेले होते, आज आपण वापरतो त्या स्टेनलेस चलनांपेक्षा वेगळे। ही वस्तुस्थिती आहे की तांबे हा मानवी शरीरासाठी एक महत्त्वाचा धातू आहे जो स्वतःच संश्लेषित केला जात नाही आणि त्याला बाहेरून पुरवठा आवश्यक आहे। त्याकाळी नद्या, तलाव आणि तलाव हे पिण्याच्या पाण्याचे एकमेव स्त्रोत होते, त्यामुळे तांब्याचे चलन जलकुंभांमध्ये फेकणे हा आपल्या पूर्वजांनी दैनंदिन तांब्याचा पुरेसा वापर सुनिश्चित करण्यासाठी अवलंबलेला एक मार्ग होता। तांब्याचे नाणे फेकण्याचे आणखी एक कारण म्हणजे ते तळाशी धुळीचे कण स्थिर करून वरच्या बाजूला पिण्याचे पाणी उपलब्ध करून देत असे।

जमिनीवर बसून जेवतो :–

सर्वजण जमिनीवर बसून एकत्र जेवण करण्याच्या पारंपारिक प्रथेला भारतीय संस्कृतीत खूप महत्त्व आहे। असे मानले जाते की कुटुंबासह एकत्र जेवण केल्याने बंध सुधारतात आणि मुद्रा शरीराला आराम देते आणि एकत्र आनंदी वेळ घालवण्यास मदत करते। ओलांडलेल्या पायांनी जमिनीवर बसण्याची जुनी भारतीय पद्धत 'सुखासन किंवा पद्मासन' म्हणूनही ओळखली जाते। म्हणून, जेव्हा तुम्ही सुखासनामध्ये बसून जेवता तेव्हा तुमचे मन शांत होते आणि खालच्या मणक्यावर दबाव टाकल्याने आराम मिळतो। तसेच, जेवताना पाठीमागच्या हालचालीमुळे पोटाच्या स्नायूंना पाचक रस स्राव होतो आणि अन्नाचे योग्य आणि जलद पचन होण्यास मदत होते।

समारोप :–

विज्ञान मानवाने निर्माण केले आहे। वैज्ञानिक क्रियाकलाप सामाजिक क्रियाकलाप आहेत, म्हणून वैज्ञानिक संस्कृती ही मानवाच्या किंवा मानवाच्या क्रियाकलापांच्या विशिष्ट गटांचे उत्पादन आहे। विज्ञानाच्या इतिहासात निर्माण झालेल्या विचार पद्धती, मूल्ये, वर्तणूक मानदंड आणि परंपरा हे त्याचे सांस्कृतिक अर्थ प्रतिबिंबित करतात। काही विधी, जसे पूजा, आपल्याला दररोज देवाची आठवण करून देतात। उपवास आणि ध्यान यासारखे इतर विधी आपल्या जीवनाला आध्यात्मिक प्रगतीसाठी शिस्त लावतात। धार्मिक समारंभ किंवा तीर्थयात्रा आपल्याला आध्यात्मिक आकांक्षांवर मन केंद्रित करण्यास मदत करतात। काही समारंभ जसे की उतार्‍याचे संस्कार कुटुंब आणि समाजाला एकत्र आणतात।

संदर्भ सूची :–

१. दिक्षित नारायण, चतुर्वेदी श्रीगिरिधर शर्मा, "वैदिक विज्ञान आणि भारतीय संस्कृती", सुनिधी पब्लिकेशन, पुणे।

२. कुमारी किरण, "भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान", बी.आर. पब्लिकेशन, नवी दिल्ली।

३. सयाला रमा, "भारतीय संस्कृती आणि विज्ञान", बुक क्राप पब्लिकेशन, नवी दिल्ली।

४. दैनिक लोकसत्ता वृत्तमान पत्र।

५. दैनिक महाराष्ट्र टाईम्स वृत्तमान पत्र।

Email - udaykumarlad2015@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 166-169
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं एवं रीति रिवाजों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

उमा बंजारे
ब्याख्याता एवं शोधार्थी जीव–विज्ञान (वनस्पति–शास्त्र),
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय इंदौर (म.प्र.) पिन कोड– ४५२०१६

१. प्रस्तावना :–

(क) मानव विकास पर धर्म और विज्ञान की मुख्य भूमिका :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डार्विन के अनुसार जीवों का विकास आद्या सागर से सर्वप्रथम छोटे–छोटे जीव जंतु जैसे जीवाणु शैवाल कवक एवं कुछ गिंगो नामक पादपकि उत्पत्ति का प्रमाण प्राकृतिक विज्ञान में मौजूद हैं।

(ख) मानव विकास में विज्ञान का योगदान :

विज्ञान के विकास से मानव चेतना में गति आई है। मानव विकास की और सतत अग्रसर है। विज्ञान के विकास बढ़ती जा रही है। इसी से मनुष्य ने भोजन वस्त्र वास चिकित्सा परिवहन संचार आदि के क्षेत्र में कई तरह के आविष्कार किए हैं। इन आविष्कारों से मनुष्य के जीवन बहुत सुख में ओम आसान हो गया है। जीवन को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के तकनीकी क्षेत्र में कृषि के क्षेत्र में एवं औद्योगिक क्षेत्र में विकास हुआ है। जिससे मानव जीवन शैली में उपलब्धता एवं रोचक बदलाव एवं सुधार निरंतर बढ़ती ही जा रही है एवं चिकित्सा क्षेत्र में विज्ञान की नई अन्वेषण प्राकृतिक आपदा से संबंधित हो या महामारी संबंधी हर बार बेहतर तरीके से मानव विकास में मुख्य भूमिका निभा रही है।

(ग) मानव विकास का मूल अर्थ :

मानव विकास का वास्तविक अर्थ यह होता है कि व्यक्तियों का मौलिक स्वतंत्रता में वृद्धि करना तथा मानसिक परिपक्वता एवं वांजनिया जीवन स्तर में बदलाव हेतु सतत प्रयास करते रहना ही मानव विकास का मूल मंत्र है इसे ही मानव विकास के मूलभूत आधार माने जा सकते हैं–जैसे कि इसके मूलभूत आधार चार प्रकार के होते हैं–

1.	समानता	2.	उत्पादकता
3.	सशक्तीकरण	4.	स्थिरता

इस प्रकार मानव विकास के तीन क्षेत्र मुख्य रूप से स्वास्थ्य शिक्षा आए एवं मानक यह किसी भी इंसान की जन्म से भ्रूण अवस्था एवं मृत्यु पर्यंत विकास का अध्ययन एवं निर्धन के लिए मानव विकास के क्रमिक

परिवर्तन में से एक हैं।

(घ) मानव विकास में धर्म का योगदान :

मानव विकास में धर्म का भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है अर्थात विज्ञान का जितना एकदम महत्वपूर्ण होता है। उतना ही धर्म की भूमिका भी जरूरी है। अर्थात यूं कहना गलत ना होगा कि धर्म और विज्ञान मानव विकास में एक दूसरे के संपूरक होते हैं। विज्ञान सिद्धांत एवं साक्ष्यप पर आधारित प्रमाण खोजना है परंतु धर्म मान्यताओं एवं परंपराओं पर आधारित विश्वसनीय प्रमाण को बोध कराता है और विकास के इस दौर में विज्ञान एवं धर्म दोनों एक सहजीविता की भूमिका दर्शाते हुए मानव विकास में अपनी भूमिका प्रस्तुत करते रहते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलने वाली एक ऐसी समाज का विकास करता है। जिसमें विभिन्नताएं एवं विकास का मुख्य बिंदुओं को दर्शाया गया है :–

1. धर्म और विज्ञान के बीच संबंध में ऐसी चर्चाएँ शामिल हैं जो प्राकृतिक दुनिया, इतिहास, दर्शन और धर्मशास्त्र के अध्ययन को आपस में जोड़ती हैं। भले ही प्राचीन और मध्ययुगीन दुनिया में "विज्ञान" या "धर्म" की आधुनिक समझ से मिलती–जुलती अवधारणाएँ नहीं थीं,[1] इस विषय पर आधुनिक विचारों के कुछ तत्व पूरे इतिहास में दोहराए जाते हैं। जोड़ी–संरचित वाक्यांश "धर्म और विज्ञान" और "विज्ञान और धर्म" पहली बार 19वीं शताब्दी के दौरान साहित्य में उभरे।[2, 3,] यह पूर्ववर्ती कुछ शताब्दियों में विशिष्ट अवधारणाओं के रूप में "विज्ञान" ("प्राकृतिक दर्शन" के अध्ययन से) और "धर्म" के शोधन के साथ मेल खाता है– आंशिक रूप से विज्ञान के व्यावसायीकरण, प्रोटेस्टेंट सुधार के कारण, उपनिवेशीकरण, और वैश्वीकरण [4, 5, 6,] तब से विज्ञान और धर्म के बीच संबंध को "संघर्ष", "सद्भाव", "जटिलता", और "पारस्परिक स्वतंत्रता" के संदर्भ में चित्रित किया गया है।

2. गॉड द जियोमीटर– बाइबिल नैतिकता का गॉथिक अग्रभाग, ईश्वर के निर्माण के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। फ्रांस, 13वीं सदी के मध्य में विज्ञान और धर्म दोनों जटिल सामाजिक और सांस्कृतिक प्रयास हैं जो विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न हो सकते हैं और समय के साथ बदल सकते हैं। [7, 8, 9,] वैज्ञानिक क्रांति तक अधिकांश वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचार धार्मिक परंपराओं द्वारा संगठित समाजों द्वारा हासिल किए गए थे। प्राचीन बुतपरस्त, इस्लामी और ईसाई विद्वानों ने वैज्ञानिक पद्धति के व्यक्तिगत तत्वों की शुरुआत की। रोजरबेकन, जिन्हें अक्सर वैज्ञानिक पद्धति को औपचारिक रूप देने का श्रेय दिया जाता है, एक फ्रांसिस्कन तपस्वी थे [10], और प्रकृति का अध्ययन करने वाले मध्ययुगीन ईसाई प्राकृतिक स्पष्टीकरण पर जोर देते थे। [11,] कन्फ्यूशियस विचार, चाहे प्रकृति में धार्मिक हो या गैर–धार्मिक, समय के साथ विज्ञान के बारे में अलग–अलग दृष्टिकोण रखता है। 21वीं सदी के कई बौद्ध विज्ञान को अपनी मान्यताओं के पूरक के रूप में देखते हैं, हालांकि ऐसे बौद्ध आधुनिकतावाद की दार्शनिक अखंडता को चुनौती दी गई है। [12,] जबकि प्राचीन भारतीयों और यूनानियों द्वारा भौतिक संसार का वायु, पृथ्वी, अग्नि और जल में वर्गीकरण अधिक आध्यात्मिक था, और एनाक्सागोरस जैसी हस्तियों ने ग्रीक देवताओं के कुछ लोकप्रिय विचारों पर सवाल उठाया, मध्ययुगीन मध्य पूर्वी विद्वानों ने अनुभवजन्य रूप से सामग्रियों को वर्गीकृत किया। [13,]

3. यूरोप में वैज्ञानिक क्रांति और ज्ञानोदय के युग से जुड़ी 17वीं सदी की शुरुआत में गैलीलियो प्रकरण जैसी घटनाओं ने जॉनविलियमड्रेपर जैसे विद्वानों को एक संघर्ष थीसिस (लगभग 1874) प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया, जो सुझाव देता है कि धर्म और विज्ञान रहे हैं। पूरे इतिहास में पद्धतिगत, तथ्यात्मक और राजनीतिक रूप

से संघर्ष में। कुछ समकालीन दार्शनिक और वैज्ञानिक, जैसे रिचर्डडॉकिन्स, लॉरेंसक्रॉस, पीटरएटकिंस और डोनाल्डप्रोथेरो इस थीसिस की सदस्यता लेते हैं; हालाँकि, स्टीफ़नशापिन जैसे इतिहासकारों का दावा है कि "विज्ञान के इतिहासकारों द्वारा इस तरह का दृष्टिकोण अपनाए हुए बहुत लंबा समय हो गया है।"[14,]

4. हिप्पो के ऑगस्टीन से लेकर थॉमस एक्विनास से लेकर फ्रांसिस्कोअयाला, केनेथआर. मिलर और फ्रांसिसकोलिन्स तक, पूरे इतिहास में कई वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों ने धर्म और विज्ञान के बीच अनुकूलता या परस्पर निर्भरता देखी है। जीवविज्ञानी स्टीफन जेगोल्ड ने धर्म और विज्ञान को " गैर–अतिव्यापी मैजिस्टेरिया" माना, जो ज्ञान के मौलिक रूप होते हैं।

संदर्भ :–

संपादन करना :

1. हैरिसन, पीटर (2015)। विज्ञान और धर्म के क्षेत्र। शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 3. आईएसबीएन 9780226184517. 22 मई 2019 को लिया गया। 'विज्ञान' और 'धर्म' की अवधारणाएँ इतनी परिचित हैं, और पश्चिमी संस्कृति के केंद्र में वे गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ हैं जिन्हें आमतौर पर 'धार्मिक' और 'वैज्ञानिक' कहा जाता है, इसलिए यह मान लेना स्वाभाविक है कि वे इसकी स्थायी विशेषताएं रही हैं। पश्चिम का सांस्कृतिक परिदृश्य. लेकिन यह दृष्टिकोण गलत है...., 'विज्ञान' और 'धर्म' अपेक्षाकृत हाल के सिक्कों की अवधारणाएं हैं।

2. रॉबर्ट्स, जॉन (2011)। "10. विज्ञान और धर्म"। शैंक में, माइकल; नंबर्स, रोनाल्ड; हैरिसन, पीटर (सं.). प्रकृति के साथ कुश्ती : शकुन से विज्ञान तक। शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पीपी. 254, 258, 259, 260. आईएसबीएन 978–0226317830. वास्तव में, उन्नीसवीं सदी के मध्य से पहले, "विज्ञान और धर्म" का नाम वस्तुतः अस्तित्वहीन था।" वास्तव में, उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत में उस चीज़ का निर्माण हुआ जिसे एक टिप्पणीकार ने "संपूर्ण पुस्तकालय" कहा था। धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित करना। उस अनुमान की पुष्टि आंकड़े 10.1 और 10.2 में मौजूद डेटा से होती है, जो बताता है कि 1850 से पहले "विज्ञान और धर्म" को संबोधित करने वाली किताबों और लेखों की एक धारा के रूप में जो शुरू हुआ वह 1870 के दशक में एक धारा बन गया। (चित्र 10.1 और 10.2 देखें)

3. हैरिसन, पीटर (2015)। विज्ञान और धर्म के क्षेत्र। शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 171. आईएसबीएन 9780226184517. लोगों ने पहली बार उस सटीक शब्दावली का उपयोग करते हुए विज्ञान और धर्म के बारे में कब बोलना शुरू किया? जैसा कि अब स्पष्ट होना चाहिए, यह उन्नीसवीं सदी से पहले नहीं हो सकता था। जब हम अंग्रेजी प्रकाशनों में "विज्ञान और धर्म" या "धर्म और विज्ञान" के संयोजन की वास्तविक घटनाओं के लिए लिखित कार्यों से परामर्श करते हैं, तो हमें वही पता चलता है (चित्र 14 देखें)।

4. हैरिसन, पीटर (2015)। विज्ञान और धर्म के क्षेत्र। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. आईएसबीएन 978–0–226–18448–7.

5. नोंगब्री, ब्रेंट (2013)। धर्म से पहले : एक आधुनिक अवधारणा का इतिहास। येल यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978–0–300–15416–0.

6. काहान, डेविड, एड। (2003)। प्राकृतिक दर्शन से विज्ञान तक : उन्नीसवीं सदी के विज्ञान का इतिहास

लिखना। शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. आईएसबीएन 978–0–226–08928–7.
7. स्टेनमार्क, मिकेल (2004)। विज्ञान और धर्म का संबंध कैसे बनाएं : एक बहुआयामी मॉडल । ग्रैंडरैपिड्स, मिशिगन : डब्ल्यूबीएर्डमैन्सपब। कंपनी पी. 45. आईएसबीएन 978–0–8028–2823–1. यह स्वीकार करते हुए कि विज्ञान और धर्म अनिवार्य रूप से सामाजिक प्रथाएं हैं जो हमेशा कुछ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थितियों में रहने वाले लोगों द्वारा की जाती हैं, हमें इस तथ्य के प्रति सचेत करना चाहिए कि धर्म और विज्ञान समय के साथ बदलते हैं।
8. रॉबर्ट्स, जॉन (2011)। "10. विज्ञान और धर्म"। शैंक में, माइकल; नंबर्स, रोनाल्ड; हैरिसन, पीटर (सं.). प्रकृति के साथ कुश्ती : शकुन से विज्ञान तक। शिकागो : शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. आईएसबीएन 978–0226317830.
9. लिंडबर्ग, डेविड सी. (2007)। "1. यूनानियों से पहले का विज्ञान (यहाँ विज्ञान में परिवर्तन पर)"। पश्चिमी विज्ञान की शुरुआत : दार्शनिक, धार्मिक और संस्थागत संदर्भ में यूरोपीय वैज्ञानिक परंपरा, प्रागितिहास से 1450 ई. तक (दूसरा संस्करण)। शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पृ. 2–3. आईएसबीएन 978–0226482057.
10. क्लेग, ब्रायन. "द फर्स्टसाइंटिस्ट : ए लाइफ ऑफ रोजरबेकन"। कैरोल और ग्राफ पब्लिशर्स, एनवाई, 2003
11. रोनाल्डनंबर्स (2011)। "ईश्वर के बिना विज्ञान : प्राकृतिक कानून और ईसाई विश्वास"। गॉर्डन में, ब्रूस; डेम्ब्स्की, विलियम (संस्करण)। प्रकृति की प्रकृति : विज्ञान में प्रकृतिवाद की भूमिका की जांच। आईएसआई पुस्तकें. पी। 63. आईएसबीएन 9781935191285. आधुनिक विज्ञान के जन्म और उन्नीसवीं सदी में "वैज्ञानिकों" के प्रकट होने से बहुत पहले, पश्चिम में प्रकृति का अध्ययन प्राकृतिक दार्शनिकों के रूप में जाने जाने वाले ईसाई विद्वानों द्वारा किया जाता था, से अलग–अलग रूपों और जीवन के पहलुओं को संबोधित करता है। विज्ञान के कुछ इतिहासकार और गणितज्ञ, जिनमें जॉनलेनोक्स, थॉमस बेरी और ब्रायनस्विम शामिल हैं, विज्ञान और धर्म के बीच एक अंतर्संबंध का प्रस्ताव करते हैं, जबकि इयानबारबोर जैसे अन्य लोगों का मानना है कि समानताएं भी हैं। वैज्ञानिक तथ्यों की सार्वजनिक स्वीकृति कभी–कभी संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे धार्मिक विश्वासों से प्रभावित हो सकती है, जहां कुछ लोग प्राकृतिक चयन द्वारा विकास की अवधारणा को अस्वीकार करते हैं, खासकर मनुष्यों के संबंध में। फिर भी, अमेरिकन नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज ने लिखा है कि "विकास के साक्ष्य धार्मिक आस्था के साथ पूरी तरह से संगत हो सकते हैं", 15, यह दृष्टिकोण कई धार्मिक संप्रदायों द्वारा समर्थित है।[16]

उमा बंजारे, शोधार्थी जीव–विज्ञान, नामांकन नं. 001क्ठज्18क्ज्005
ब्याख्याता– शा.उ.मा.वि. देवगढ़
वि.ख.– तमनार, जिला –रायगढ़, पिन. नं. 496111 (छ.ग.)
ईमेल आईडी –umabanjare@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 170-173

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नवरात्री सण : भारतीय सामाजिक, धार्मिक संस्कृती आणि विज्ञान

डॉ. उमा उत्तम पाटील

इतिहास विभाग प्रमुख, श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अॅण्ड सायन्स कॉलेज, माळवाडी कोतोली।

प्रस्तावना :–

भारत देश हा सण आणि उत्सवांची भूमी आहे। भारतात विविध धर्माचे परंपरेचे लोक एकत्र राहतात। भारतात साजरे केले जाणारे विविध सण व उत्सवांची संस्कृती आणि परंपरेचे प्रतिबिंब दर्शवितात। तसे पाहिले तर बरेच भारतीय सण आणि उत्सव महत्वाचे आहेत। वर्षभरात हे सण आणि उत्सव होत असतात। तसे ऑक्टोबर ते जानेवारी दरम्यानच्या काळात हे सण जास्त प्रमाणात साजरे होताना दिसून येतात। भारत हा असा देश आहे जिथे सर्वधर्म आणि समाज त्यांच्या परंपरेनुसार उत्सव साजरे केले जातात। भारतीय सण आणि उत्सव असे आहेत की, ते बौद्धिक, धार्मीक आणि सामाजिक, दृष्ट्या महत्वाचे आहेत। भारतात काही सण आणि उत्सवांना शासकीय सुट्ट्या देखील असतात। ज्यामुळे आपल्याला देशभरात सहलीची योजना करण्याची संधी मिळते।

भारतात वेगवेगळ्या परंपरा आहेत, परंपरेनुसार सण – उत्सव साजरे केले जातात। उत्सव म्हणजे भरपूर आनंद आणि उत्साह होय। तो आनंदाचा सण, उत्सव, दिवस वेगवेगळ्या पद्धती ने साजरा केला जातो। अशा या भारतीय संस्कृतीत येणारा प्रत्येक सण, उत्सव हा आपल्या शरीरा सोबतच मनाचे सुद्धा आरोग्य जपत असल्याचे दिसून येते। भारत देश हा प्राचीन काळापासून कृषीप्रधान असल्याने सर्व सण उत्सवांची रचना ही बदलत्या ऋतूप्रमाणे केली जात असल्याचे दिसते। उन्हाळा, पावसाळा व हिवाळा या बदलणाऱ्या ऋतूचक्राप्रमाणे जर आपण आपल्या आहार सुद्धा बदल केले जातात। अर्थात चत्या प्रमाणे आपले आरोग्य ही जपले जाते। त्याच पद्धती ने भारतीय सणांची रचना केला आहे।

उद्दिष्टे :–

1. भारतीय सण–उत्सवाचा अर्थ जावून घेणे।
2. भारतीय सण–उत्सवाचा समाजावरती होणाऱ्या सकारात्मक परिणांमाचे अभ्यास करणे।
3. भारतीय सण–उत्सवाचा कुटुंबातील लोकांनवर होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास करणे।
4. नवरात्रीसण उत्सावाचास्त्रियांच्या प्रमुख भूमीका काय आहेतहे जाणून घेणे।
5. नवरात्रीसण–उत्सवामध्ये व्यक्तीचे मानसिकव शारीरिक दृष्ट्या होणाऱ्या बदलाचे अध्ययन करणे।

संशोधन पद्धती :–

प्रस्तुत शोध निंबधासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा वापर करण्यात आलेला आहे। प्रस्तुत शोध निंबधासाठी प्राथमिक, दुय्यम स्त्रोत आधारित असून त्यासाठी मुलाखती, पुस्तके, ग्रंथ, वृत्तपत्रे, वेबसाईट इ चा वापर करण्यात आलेला आहे।

विषय मांडणी :

आपले काही सण उत्सव हे चंद्रावर, सूर्यावर अवलंबून असतात। पंचागात सुद्धा योग, तिथी, वार, नक्षत्र याला अनुसरुनच वर्षातील सर्व दिवस सुनिश्चित केले जातात। आपल्या मराठी महिन्यात एकूण तीस तिथी असतात पैकी पंधरा शुक्ल म्हणजेच शुद्ध पक्षातील तर उर्वरित पंधरा या शुक्ल म्हणजेच कृष्ण पक्षातील म्हणजेच वद्य असतात। प्रत्येक सणांमध्ये तिथी पुण्यप्रगतिथी म्हणजेच प्रत्येक तिथीचे स्वतःचे असे एक महत्त्व आहे। उदा. वर्ष प्रतिपदा म्हणजेच गुढीपाडवा, चैत्र शुद्ध नवमी म्हणजेच रामनवमी, वैशाख शुद्ध तृतीया म्हणजेच, अक्षय तृतीया, श्रावण शुद्ध पंचमी म्हणजेच नाग पंचमी, भाद्रपद शुद्ध चतुर्थी म्हणजेच गणेश चतुर्थी, अश्विन शुद्ध प्रतिपदा म्हणजे नवरात्री उत्सव, अश्विन शुद्ध दशमी म्हणजेच विजयादशमी, अश्विन वदय त्रयोदशीपासून ते कार्तिक शुद्ध द्वितेयपर्यंत म्हणजे पाच दिवस दिवाळी सण साजरा केला जातो इ। सण – उत्सवांना धार्मिक महत्व आहे।

पण आज आपण वैज्ञानिक दृष्टिकोनातूनही सण उत्सवाचे उद्देश आपण पाहत आहे। सण उत्सव मानसिक व शारिरीक आरोग्य चांगले राखण्यासाठी मदत करतात। उत्सव हे माणसाला दुःख विसरायला लावून त्यांच्या जीवनात आनंद निर्माण करतात। उत्सवाच्या निमित्ताने आप्तेष्ट मित्रमंडळी एकत्र येतात। सुसंवाद साधला जातो। सण, उत्सव हे स्वतः आनंदाने जगा आणि इतरांच्या जीवनात आनंद निर्माण करा असा संदेश देतात। सण – उत्सव हे आपले सामाजिक आणि सांस्कृतिक जीवन आनंदाने उत्साहाने जगण्यास मदत करतात। यातून विविध श्रेणीतील लोकांची विविध संस्कृतीशी ओळख होते।

सण हा एक असाधारण कार्यक्रम आहे। जो एखादया समुदायाद्वारेसाजरा केला जातो। त्या समुदायाच्याकाही वैशिष्टयपूर्ण पैलू किंवा पैलूंवर आणि त्याच्या धर्म किंवा संस्कृतीवर केंद्रींत असतो। भारतातील मुख्य सणांमध्ये दिवाळी, दसरा, होळी, राखी पौर्णिमा, नवरात्री, गुरु पौर्णिमा, गुढीपाडवा, नागपंचमी, गणेश चतुर्थी, शिवजयंती इत्यादींचा समावेश होता। भारत देश हा एक बहुसांस्कृतिक देश असल्याने भारतामध्ये हे सर्व सण मोठ्या उत्साहात साजरे केलेजातात। हे भारतीयसण उत्सव हे आपल्या समाजातील लोकांच्या विविध संस्कृतीशी जोडण्यास मदत करते।

सण जेव्हा आपल्या प्रियजनांसोबत साजरे केले जातात। तेव्हा आपले सामाजिक आणि सांस्कृतिक जीवन वाढण्यास मदत करतात। कारण आपल्याला विविध श्रेणीतील लोकांच्या विविध संस्कृतीशी ओळख होते। भारतीय सण लोकांना एकत्र आणतात। सण देखील आपलीसंस्कृती आणि धर्म स्वीकारल्यास मदत करतात। जीवनातील एकसुरीपणा तोडण्यासाठी तीखूपउपयुक्त आहेत। शिवाय, लोक वर्षभर सणांची वाट पाहत असतात। नवीनलोकांनाभेटण्याचा सण हा एक उत्तम मार्ग आहे।

नवरात्रीसण :–

नवरात्रीचे महत्व आपल्याला देवीच्या विविध रूपांची आराधना करताना मनामध्ये भक्तिभाव उभारून आला

पाहिजे। अशा प्रकारे लोकांच्या मनात होणारी म्हणून विकारांची भावना नष्ट करण्याच्या भावनेतून देवीची पूजा व चरणी विलीन होण्यासाठी घटस्थापना करण्यात येते।

नवरात्री उत्सवात कोणत्याही प्रकारचा ताण तणाव व्यक्तींच्या मनात किंवा डोक्यावर चेहर्‍यावर दिसून येत नाही। त्यामुळे नवरात्रीच्या काळात आनंदी उत्साहाचे वातावरण निर्माण होण्यासाठी नवरात्री उत्सव महत्त्वाचा आहे। ज्या शक्तीचे सामर्थ्याचे दर्शन देवीने दिले तशी शक्ती सामर्थ्य आपल्याला स्वतः मध्ये निर्माण करण्यासाठी या पवित्र नवरात्रीचा उत्सवाचामहत्त्वाचा फायदा असतो। नवरात्री उत्सवामध्ये देवी हे एक स्त्रीचीच रूप आहे।

त्यामुळे समाजामध्ये स्त्रीयांवर होणार्‍या अत्याचारांना आळा बसण्यासाठी म्हणजेच त्यांची पूजा झाल्यामुळे लोकांच्या मनात स्त्रियांबद्दल आदर निर्माण होतो व नवरात्रीचे दिवसांमध्ये मुलींची पूजा केली जाते। हाही एक महत्वाचा फायदा आपल्याला दिसून येतो। बर्‍याच ठिकाणी मुली जन्माला येण्या अगोदरच त्यांची भ्रूणहत्या केली जाते। त्यामुळे मुलीं जन्माला येऊ द्या। असाही संदेश आपल्याला नवरात्री उत्सवातून मिळतो। मुलगी किंवा स्त्री हे एक देवीचे स्वरूप आहे। असे म्हणून नवरात्री उत्सव साजरा केला जात असावा असाउद्देश आहे।

नवरात्रीचेमहत्व :-

नवरात्रीहा सण फार प्राचीन काळापासून चालत आलेला आहे। प्रारंभिक तो एक कृषीविषयक उत्सव होता। पावसाळ्यात पेरलेले पहिले पीक घरात आल्यावर शेतकरी हा उत्सव साजरा करीत असे। नवरात्रीत घटस्थापनेच्या दिवशी घराखालच्यास्थंडिलावर नऊ धान्याची पेरणी करतात व दसर्‍याच्या दिवशी ते धान्याचे वाढलेले अंकुर उपटून देवाला वाहतात। ही प्रथा या सणाची कृषीविषयक स्वरूप प्राप्त करते। पुढे या सणाला धार्मिक महत्त्व प्राप्त झाले।

नवीन घर बांधले असेल तर, घरात लग्न झाले असेल तर, एखाद्या व्यक्तीच्या मनासारखी घटना घडली असेल तर इच्छा पूर्ण झाली असेल तर, नोकरी लागली असेल तर, मुलगा झाला असेल तर इत्यादी बाबी नवसपूर्तीसाठी नवरात्री उपवास केला जातो। अतिशय भक्तिभावाने आपल्या कुलदैवतेच्या देवळात बसून हा उपवास केला जातो। नवरात्रीच्या काळात किर्तन, भजन देवळात केले जाते संपूर्ण वातावरण धार्मिक असते। खजूर, दूध, दही, फळे यासारखे पदार्थ उपवासाला खाल्ले जातात। अगदी सकस आणि पौष्टिक आहार घेतला जातो या दृष्टिकोनातून शरीराला विश्रांती मिळते। अतिशय आनंदाने आणि धार्मिक वृत्तीने हा सण सर्व भारतामध्ये साजरा केला जातो।

सारांश :-

सण उत्सवांना धार्मिक महत्त्व असल्याचं सांगण्यात येतं। पण आज आपण वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून सण उत्सवांचे महत्त्व आपण जाणत आहे। सण उत्सव मानसिक व शारीरिक आरोग्य चांगले राखण्यासाठी मदत करतात। बदलत्या ऋतूप्रमाणे आहारात बदल केला की शरीराचं आरोग्य चांगलं राहतेनऊ दिवसांमध्ये उपवास करणारे संतुलित व सात्विक आहार घेतात। उत्सव हे माणसाला दुःख विसरायला लावून त्याच्या जीवनातील आनंद निर्माण करतात। उत्सवाच्या निमित्ताने पाहुणे मित्रमंडळी एकत्र येतात यामुळे सुसंवाद साधला जातो सण उत्सव हे स्वतःच्या आनंदाने जगा आणि इतरांच्या जीवनात आनंद निर्माण करा। औषधी उपयुक्त वनस्पतींची लागवड करा, पशुपक्षी, डोंगर, नद्यांना जपा, घर परिसर स्वच्छ ठेवा असा संदेश देतात।

संदर्भ सूची :–

1. प्रा. मधु जाधव भारतीय सण आणि उत्सव, जाने, 2006
2. प्रकाशक : डॉ. ही. डी नांदवडेकर भारतातील प्रवास आणि पर्यटनाचा।
3. इतिहास ,.के्/ unishivaji.ac.in
4. डॉ. भाग्यश्री कुलकर्णी भारतीय सण उत्सव, रिया पब्लिकेशन ऑगस्ट 2016
5. आक्काताई मोरार जी पाटील, कमल कृष्णा तलव्हटे मुलाखत 19 ऑक्टोबर 2023
6. महाराष्ट्र टाइम्स 28 सप्टेंबर 2022
7. सकाळ 11 ऑक्टोबर 2023
8. " history" www.spmell.com hi.wikipedia.org
9. hi.Wikipedia.org.
10. https://mannaajhe.blogspot.com
11. https://www.bookganga.com
12. https://www.marathimol.com

ई–मेल – uma.patil124@gmail.com

फोन : 7875572740

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 174-177
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता

डॉ. वंदना प्र. पाटील
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्रीपतराव चौगुले आट्‌र्स अंड सायन्स कॉलेज, कोतोली, तह. पन्हाला, जिला– कोल्हापुर–416230

शोध सार :–

भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। भारतीय संस्कृति और परम्परा अपनी एक अलग पहचान और अनूठापन लेकर पूरे विश्व में जानी जाती है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। मानव जीवन में भारतीय संस्कृति का विशेष स्थान रहा है। संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। उन समस्त संस्कारों का बोध होता है। जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति अपनी वैज्ञानिकता के कारण आदिकाल से आज तक अजर–अमर बनी हुई है।

मूल शब्द :– भारतीय, संस्कृति, विज्ञान, परम्परा, रीति रिवाज, त्योंहार।

भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता :–

संस्कृति किसी समाज में व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के में मार्गदर्शक होता है। संस्कृत शब्द ‘कृ’ (करना) धातु से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं प्रकृति, संस्कृति और विकृति। ‘प्रकृति’ मूल स्थिति, उसमें निर्माण संस्कृति और उसका बिगड़ा रूप विकृति है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये ‘कल्चर’ शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के ‘कल्ट या कल्टस’ से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संस्कृति शब्द का अर्थ है ‘उत्तम या सुधरी हुई स्थिति’।

भारत एक संस्कृति संपन्न देश है। जहाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृति एवं परम्पराएं हैं। जो इस विश्व के अन्य देशों की तुलना में एक अलग पहचान देती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति मानते हैं। भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदार, समन्वयवादी सशक्त एवं जीवंत रही हैं जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्‌भुत समन्वय पाया जाता है। भारत की आध्यात्मिकता के बारे

में कहा जाता है 'भारत के इतिहास में वैज्ञानिकों या दार्शनिकों का धार्मिकता के साथ कभी संघर्ष हुआ हो ऐसा कहीं नहीं मिलता। दर्शन ही हमारे विज्ञान है, और वे ही धर्म के मूल हैं। धर्मशास्त्र प्रवक्ताओं ने ही इसीलिए दार्शनिक विषयों को ग्रंथों में स्थान दिया है।'[1] वैसे देखा जाए तो मानव के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है। इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से उतरती है। यूनानी, पार्शियन, शक आदि विदेशी जातियों के हमले, मुगलों और अंग्रेजी साम्राज्यों के आघातों के बीच भी यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई। परंतु अपनी स्वभावगत गुण वैशिष्टे के कारण और अधिक समृद्ध हुई।

संस्कृति प्रकृति प्रदत्त नहीं होती। वह सामाजिक है मानव समाज द्वारा उसे ग्रहण करता है। संस्कृति परम्परा से चलती आयी है। हमारे पूर्वजों से हम बहुत–सी बातें सिखते हैं। वर्तमान काल में मानव बदलते समय तथा समाज की स्थिति के अनुसार उसमें बदलाव करता है, जो अच्छा है उसे स्वीकारता है और जो अनावश्यक है उसे छोड़ देते हैं। इस प्रकार संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। उस संस्कृति को संरक्षित रखा जाता है। संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएं, पर्व, जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित है। इनके माध्यम से सामाजिक व्यवहार की विशिष्टताओं का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान किये जाते हैं। इस आदान प्रदान में ही संस्कृति का अस्तित्व निहित होता है।

भारतीय संस्कृति समाज की मांग के अनुसार कुछ अंश में विकसित और रूपांतरित होती रही है। हमें भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम काल से सुदृढ़ होने की बात का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, प्राचीन मान्यताओं तथा ऐतिहासिक, पौराणिक, आध्यात्मिक मान्यताओं पर नजर डालें तो पता लगता है कि हमारी संस्कृति में कहीं न कहीं आज भी इसकी पैठ ज्यों की त्यों बनी हुई है। हम देखते हैं प्राचीन काल से प्रकृति की पूजा, जंगल एवं वृक्ष की पूजा आदि हमारे संस्कृति के अंग बन गए हैं जो आज भी उसी रूप में पूरे देश में व्याप्त है। तमाम पारंपारिक पूजा पाठ आज भी हमारे समाज तथा संस्कृति की पहचान बने हुए हैं। देव पूजा, वृक्ष पूजा, प्रकृति पूजा, पशु पूजा, नदी पूजा, गाय पूजा तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता यह सब हमारे संस्कृति की रीढ़ है जोकि हजारों वर्ष से मान्यताएं एवं परम्परा के आधार पर आज भी जारी है।

हिन्दू धर्म को इस संसार का सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक धर्म माना जाता है। प्राचीन काल में शिक्षा का प्रचार प्रसार न होने के कारण हिन्दू धर्म में ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा धर्म से जोड़कर परम्पराओं और मान्यताओं में बाँधने का प्रयास किया गया। इस धर्म की नीव वैज्ञानिकता पर ही आधारित है। धार्मिक, परम्पराएं और मान्यताओं को वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाता है तो वह खरी उतरती है। इससे पता चलता है कि हिन्दू धर्म पूरी तरह से वैज्ञानिक है। अनेक त्योंहार, पर्व तथा धार्मिक उत्सव विविध पद्धति से पूजापाठ करके, खाने के विविध पदार्थ बनवाकर मनाए जाते हैं। उन त्योहारों के पीछे कोई धार्मिक अंधश्रद्धा नहीं है। बल्कि मानव ने मानव के आरोग्य की दृष्टि से मौसम के बदलते रूप के अनुसार त्योंहारों का स्वरूप निश्चित किया है। उन सभी के पीछे वैज्ञानिक महत्त्व है। हमारे बुजुर्ग प्रातः उठकर अपने दोंनो हाथों की हथेलियाँ को देखते हैं और उनसे ईश्वर का दर्शन करते हैं। धरती पर पैर रखने से पहले धरती को माँ मानकर प्रणाम करते हैं। क्योंकि जो धरती माँ धन–धान्य से परिपूर्ण करती है, हमारा पालन–पोषण करती है उसी पर हम पैर रखते हैं, इसलिए धरती पर पैर रखने से पहले उसे प्रणाम करते हैं।

प्राचीन भारत में शारीरिक विकास के लिये व्यायाम, नियम, प्राणायाम, आसन आदि के द्वारा शरीर को पुष्ट किया जाता था। लोग दीर्घायुषी होते थे। सूर्य नमस्कार की परंपरा तो प्राचीन काल से चलती आई है। इस प्रथा में रोज सुबह जल्दी उठकर नदी में स्नान करके सूर्य देव को जल अर्पण किया जाता है और हाथ जोड़कर नमस्कार किया जाता है साथ ही मन्त्र उच्चार भी किए जाते हैं। इसमें जो जल अर्पण करते हैं तो सूर्य की किरणे पानी से होकर सीधे हमारी आँखों पर पड़ती है जो हमारी आँखों के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। इस परम्परा से हमारे शरीर को लाभ होता है। ऋषि मुनियों ने सूर्य नमस्कार के 12 आसन प्रकार बताये हैं। जिनका प्राचीन भारतीय योग प्रथा में महत्वपूर्ण स्थान है हर रोज सूर्य नमस्कार करने से शरीर की मांसपेशियाँ मजबूत बनती है। मानसिक स्थिति को स्थिर करने में मदद करता है, तनाव को कम करता है। रक्तचाप की बिमारी नियंत्रित होती है। पाचन क्षमता बढती है। हृदय स्वास्थ्य में सुधार होता है। एकाग्रता बढ़ती है।

प्राचीन काल से समाज में सूर्यग्रहण को अशुभ माना जाता है और सूर्यग्रहण के समय वृद्ध, छोटे बच्चे, बीमार व्यक्ति तथा गर्भवती महिला आदि को घर से बाहर न निकलने की परम्परा है। परंतु इसके पीछे कोई शुभ–अशुभ की बात नहीं है बल्कि वैज्ञानिक कारण है परंतु उस समय के लोग विज्ञान को नहीं मानेगें इसलिए उस घटना को अशुभ माना गया। इसका वैज्ञानिक कारण है यह है कि सूर्यग्रहण के समय सूर्य से बहुत ही हानिकारक किरणें निकलती है जो हमारे शरीर पर विपरीत परिणाम करती है। जिससे हमारे शरीर को नुकसान पहुंचता है।

हिन्दू धर्म में गाय को माता के रूप में मानने की एक महत्त्वपूर्ण परम्परा है। परंतु इसके पीछे भी वैज्ञानिक कारण है गाय के दूध, गोबर एवं मूत्र औषधि है। गाय के दूध में अनेक पौष्टिक गुण होते हैं, जमींन पर गोबर और मूत्र का लेप देने से जमीन पर होने वाले कीटक का नाश होता है। उसी प्रकार गाय के गोबर और मूत्र से विविध रोगों पर औषध भी बनवाएं जाते हैं।

प्राचीन काल से सुबह के समय घर की स्त्रियों द्वारा तुलसी पूजन की परम्परा है। तुलसी का पौधा अधिक मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ता है और आसपास की हवा शुद्ध करता है। तुलसी में आयुर्वेदिक औषधि गुण दिखाई देते हैं। तुलसी के पत्ते शरीर के हर रोग के लिए उपयुक्त होते हैं। तुलसी पूजन की तरह पीपल की पूजा करने की भी परम्परा संस्कृति में दिखाई देती है। पीपल मानव जीवन के लिए उपयुक्त है और उसे प्रकृति में रखना आवश्यक है इस बात को जानकर पूर्वजों ने पीपल के वृक्ष को तोड़ने से बचाने के लिए उसमें भूत प्रेत होने की बात कहीं है ताकि उस डर से लोग पीपल की पूजा करें और उसे मत तोड़े। पीपल का वृक्ष दिन रात ऑक्सीजन छोड़ता है और पर्यावरण शुद्ध रखता है।

भारतीय रीति रिवाजों के अनुसार हिन्दू धर्म में विवाह विधि को अत्यंत महत्त्व है उस विधि में हर स्त्री को सोलह श्रृंगार किए जाते हैं। उन सोलह श्रृंगारों में केवल धार्मिकता नहीं है बल्कि उसमें वैज्ञानिकता है। स्त्री के शरीर पर जहाँ सोलह अलंकार परिधान किए जाते है वह सोलह जगह पर अनेक पॉइंट एक्यूप्रेशर के पॉइंट होते हैं। वह उस स्त्री के निरोगी आरोग्य के लिय उपयुक्त होते हैं। वह सोलह अलंकार सोना तथा चांदी के बनवाए जाते हैं। सोना और चांदी में होने वाले रासायनिक गुण शरीर के अनावश्यक घटक को दूर करते हैं। सिंदूर, बिंदी, काजल, नथ, मांग टिका, कर्णफूल, गले के गहने, बाजूबंद, अंगूठी, चुडियाँ, मेहंदी, कमरबंद, पायल, बिछिया, गजरा, हल्दी स्नान ये सोलह श्रृंगार हैं जो स्त्री के दिमाग, हृदय, गर्भाशय, किडनी, रक्तचाप, फुफुस, पेट, कमर

दर्द आदि को कार्यरत रखते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में होने वाले रीति रिवाज और परंपरा के पीछे वैज्ञानिक कारण है। परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों के बाद भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है। भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुसार समाज के हर क्षेत्र में खानपान से लेकर रहन–सहन, वेशभूषा व रीति–रिवाज़ों में विभिन्नता दिखाई देती है। आज विश्व में भारतीय संस्कृति को अपनाने की होड़ दिखाई दे रही है और भारतीय लोग अपनी संस्कृति का महत्त्व भुलकर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं। परिणामस्वरूप आज समाज में हर व्यक्ति में आरोग्य की समस्या बढने लगी है, आयुमान कम होता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. चतुर्वेदी गिरिधर शर्मा : वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति, प्रकाशक : बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद् पटना, व्दितीय संस्करण 2000.
2. मुले गुणाकार – भारत : इतिहास, संस्कृति और विज्ञान, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन 2013
3. सम्पादक कोरे सुलभा : यूनियन सृजन : भारतीय संस्कृति एवं परम्परा विशेषांक, अप्रैल–जून 2019

दूरभाष नंबर : 9822791771

ई मेल – patilvandanap@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha April 2024
ISSN : 2395-7115 Page No. : 178-182
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृति और विज्ञान

डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाधव

म.ह. शिंदे महाविद्यालय, तिसंगी, तहसील : गगनबावडा, जिला : कोल्हापुर (महा.)

प्रस्तावना :–

संस्कृति याने जीवन जीने की पद्धति उसमें रीति–परंपरा, आचार–विचार, खानपान, वेशभूषा, परिवेश आदि का समावेश होता है। प्रत्येक समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। वर्तमान युग में परिवर्तन प्रक्रिया के कारण समाज का स्वरूप बदल रहा है। संपूर्ण विश्व की एक समूह के रूप में विकसित हो रहा है।

संस्कृति की तरह विज्ञान भी मनुष्य जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विज्ञान याने विशेष ज्ञान। विज्ञान हमारे चारों तरफ घटित घटनाओं का अवलोकन करके, विश्लेषण करके, तथ्यों को समझने का प्रयत्न करता है। अगर हम संस्कृति का अध्ययन करते हैं, तो उसमें सामाजिक विज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक विज्ञान में समाज तथा मनुष्य की क्रियाकलापों का अध्ययन होता है। विज्ञान नए–नए आविष्कार के से मनुष्य का जीवन अधिक से अधिक आरामदायी होता है।

भारतीय संस्कृति और विज्ञान को अगर हम देखें तो दोनों का गहरा संबंध दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति ने विज्ञान और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। भारतीय संस्कृति में विज्ञान झलकता है, जैसे योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, खगोल प्रकृति में छिपे तत्वों को खोजकर मानवी जीवन को संतुलित करने का प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। मनुष्य के मन में आशा का संचार करती है। मनुष्य के पास संस्कृति नहीं होती तो मनुष्य कितनी भी वैज्ञानिक प्रगति करें वह उपयोगी साबित नहीं हो सकती थी। मानव जीवन की नींव ही संस्कृति है।

संस्कृति याने समाज का जीवन जीने का तरीका। संस्कृति का कोशगत अर्थ– 'संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, समाजवट, सभ्यता, चौबीस वर्णों वर्णो की संज्ञा।'

मानव और मानवेतर प्राणियों के बीच संस्कृति के आधार पर ही भेद किया जा सकता है। भूख, भय, निद्रा, मैथुन आदि प्राथमिक आवश्यकताओं की दृष्टि से दोनों में समानता होती है। परंतु मनुष्य ने अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के संबंध में कुछ नियम निर्धारित किए हैं। विशिष्ट आचरण निश्चित किया है। उसके अनुसार या उस पद्धति से वह जीवन जीता है, उसे हम संस्कृति कहते हैं।

संस्कृति की परिभाषा :–

'किसी समाज या समूह के जीवन का तरीका ही संस्कृति है। जिसमें उस समूह के सभी भौतिक व भौतिक उत्पाद शामिल है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित होते हैं।

संस्कृति मानवी समाज का अभिन्न अंग है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में इसका संक्रमण होता है। समाज में प्रथा–परंपरा, नैतिक मूल्य, धार्मिक संस्कार, आचार–विचार आदि चीजों का संक्रमण संस्कृति द्वारा होता है। जिसके कारण दया, क्षमा, प्रेम, करुणा, शांति आदि मूल्यों से मूल्याधिष्टित समाज का निर्माण होता है।

संस्कृति की तरह विज्ञान भी मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है। विज्ञान याने सिर्फ जानकारी का संकलन नहीं, वैज्ञानिक दृष्टि से वह क्रिया सही साबित होनी चाहिए। विज्ञान में प्रयोग का बड़ा महत्व है। प्रयोग याने नियंत्रित स्थिति में किया हुआ निरीक्षण है। विज्ञान में सामाजिक विज्ञान भी महत्वपूर्ण है। जिसमें मनुष्य के सामाजिक वर्तन का अध्ययन होता है।

विज्ञान की परिभाषा :–

"Science may be defined as a body of scientifically organized factual knowledge collected by means of the scientific method-" (विज्ञान को वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से एकत्र किए गए वैज्ञानिक रूप से संगठित तथ्यात्मक अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।)

विज्ञान मनुष्य को उपहार के रूप में प्राप्त हुआ है। विज्ञान से समाज की जीवन में बदलाव होता है, पर सिर्फ विज्ञान के बल पर हम आदर्श जीवनयापन नहीं कर। समाज के लिए केवल भौतिक समृद्धि मायने नहीं रखती। विज्ञान और संस्कृति दोनों एक सिक्के के दो पहलू है। इसलिए लोकतांत्रिक माहौल बनाए रखने के लिए व्यक्ति के आंतरिक विकास की भी आवश्यकता होती। जो भारतीय संस्कृति के आधार पर बन पाएगी। विज्ञान और संस्कृति दोनों को एक दूसरे के सहायक रूप में अपनाना चाहिए। विज्ञान निष्ठा लोकतंत्र सशक्त समाज संस्कृति के बल पर ही बनेगा। भारतीय संस्कृति जाति, धर्म, संप्रदाय सभी सीमाओं से परे है। जिसमें प्रेम और सहचर या साहचर्य भावना महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम की भावना ओत–प्रोत भरी है। इस संबंध में मंगलदेव शास्त्री लिखते हैं, 'सामाजिक संबंधों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले उन आदर्शों की समष्टि को ही संस्कृति समझना चाहिए।'

भारतीय संस्कृति मानवता की दृष्टि सबसे श्रेष्ठ है। साथ ही वैज्ञानिक कसौटी पर भी भारतीय संस्कृति खरी उतरी है। अपनी वैज्ञानिकता के कारण है वह अजरामार बन गई है। भारतीय संस्कृति में जो परंपराएं है, वह वैज्ञानिक महत्व रखती है, जैसे हाथ जोड़कर नमस्कार करना जिससे सामने वाले व्यक्ति के मन में सकारात्मक उत्पन्न होती है। साथ ही हाथ जोड़ने से उंगलियों को एक्वाप्रेशर होता है। जिसे अपना एक वैज्ञानिक महत्व है। हाथ जोड़ने की परंपरा कोरोना कल में बहुत ही लाभकारी साबित हुई। हाथ मिलाने से जंतु संसर्ग होने की संभावना नहीं होती। दूसरी जो परंपरा है, वह माथे पर भवों के बीच तिलक लगाना, जिससे एकाग्रता बढ़ती है। चेहरे की मांसपेशियों में रक्त का संचार सही होता है। हमारे संस्कृति में सुबह उठकर नदी के किनारे जाकर सूर्य को अर्ध्य देने की परंपरा थी। इस प्रकार के नमस्कार से मन को शांति मिलती है साथ ही विज्ञान की दृष्टि से देखें, तो पानी से टकराकर सूर्य की सुबह की किरणें आंखों में पडने से आंखों की बीमारियां नहीं होती। साथ ही 'डी' विटामिन या जीवनसत्व से हड्डियों में मजबूती आ जाती है। भारत में स्त्रियां सुबह जल्दी उठकर तुलसी को पानी देती थी, जिससे उनको भी शुद्ध हवा मिलती थी।

प्राचीन कल से भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा करने की परंपरा है। वृक्षों में देवी देवताएं बसते हैं, ऐसी भारतीय लोगों की श्रद्धा है। वृक्षों की पूजा जल चढ़कर की जाती थी, जिसमें वृक्षों को जल मिलकर

पर्यावरण का संरक्षण होता था और प्रकृति के साथ एक प्रकार का सामंजस्य स्थापित होता था। अपनी संस्कृति में जैसे हर त्यौहार में पेड़ पौधों का अनन्य साधारण महत्व दिखाई देता है प्रत्येक त्यौहार में पेड़ पौधों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है। जिससे आत्मिक शांति मिलती है। जिन वृक्षों की पूजा की जाती है वह मनुष्य जीवन में एक वैज्ञानिक महत्व भी रखता है। जैसे गुढीपाड़वा के त्यौहार पर कड़वी नीम खाई जाती है, जिससे पित्त प्रवृत्ति का शमन होता है। साथ ही खून की शुद्धि होती है। अक्षय तृतीया के दिन पलाश के पत्तों पर देवता को भोग रखा जाता है, जिससे कफ पित्त कम होता है। साथ ही पलाश के पत्ते प्यास को भी काम करते हैं। गणेश चतुर्थी के त्यौहार में दूर्वा, गुड़हल गणेश जी को अर्पित किए जाते हैं, जो अनेक औषधि गुणों से युक्त है। इसी त्यौहार पर, द्रोणपुष्पी जैसी औषधि वनस्पतियों का उपयोग किया जाता है। यह सारी वनस्पतियां होमिओपैथी दवाइयों में इस्तेमाल होती है। सर्पदंश, त्वचारोग तथा खांसी में लाभकारी है। दूर्वा–चंदन शरीर को ठंडक देते हैं। दशहरे के दिन कठमुली की पत्तियों का पास–पड़ोस में आदान–प्रदान किया जाता है। यह फंगल संक्रमण में गुणकारी है।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों के साथ–साथ पशु पक्षियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्राणियों के प्रति संवेदना जगाई जाती है। प्राणियों के मदद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है। नाग पंचमी के त्यौहार पर नाग की पूजा करके कृतन्यता ज्ञापन किया जाता है। नाग खेती के लिए उपद्रवी चूहों तथा कीड़े–मकोड़ों को खा जाते है। इससे किसान को मदद मिलती है। बैलों की पूजा की जाती है, बैल खेती के लिए उपयोगी होने के कारण उसके प्रति कृतज्ञता भाव दिखाया जाता है। गाय तो भारतीय संस्कृति में पूजनीय मनी जाती है। गाय में तैंतीस करोड़ देवताएं वास करते हैं, ऐसी भारतीय लोगों की श्रद्धा है। गाय से दूध भी मिलता है और वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो गोमूत्र तथा गोबर से घर में कीड़े–मकोड़े नहीं आते।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों ,पशु पक्षियों साथ–साथ उत्सव या त्योहार का भी बड़ा महत्व है। मनुष्य जीवन की एकसरता तथा शुष्कता भरे जीवन में मन को आनंद प्राप्ति एवं हर्ष और उल्लास के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है। उसके लिए उत्सव तथा त्यौहारों का आयोजन किया जाता है। भारतीय लोग त्यौहार प्रिय है। त्योहारों का सांस्कृतिक महत्व भी है। त्यौहारों पर बनाए जाने वाले व्यंजनों में भी विज्ञान झलकता है। संक्रांति में तिलगुड़ या गुड़ की टिकिया बांटी जाती है, इसके पीछे भी विज्ञान है। जनवरी महीने में वातावरण में ठंडक होती है और शरीर में वायु का प्रकोप बढ़ता है। तिल और गुड़ दोनों वायुनाशक होते हैं। हर त्यौहार में बनाए जाने वाले व्यंजनों में शरीर के लिए उपयोगी विज्ञान नजर आता है। महाराष्ट्र के प्रत्येक त्यौहार के लिए पूरनपोली यह लोकप्रिय व्यंजन बनाया जाता है, जिसमें गेहूं का आटा, चनादाल, गुड, इलायची होती है, इससे पोटेशियम बढ़ता है और अनिमिया दूर होता है। इससे प्राप्त जीवनसत्व और खनिजों के कारण हड्डियां मजबूत होती है। गणेश जी के लिए भोग के रूप में जो मोदक चढ़ाए जाते हैं, वह मीठे होने के कारण हमारी थकान या कमजोरी कम होती है।

भारतीय संस्कृति में जन्म से मृत्यु तक अनेक परंपराएं होती हैं, जैसे विवाह में मेहंदी तथा हल्दी लगाना महत्वपूर्ण परंपरा है मेहंदी में औषधि गुण होते हैं। हल्दी तो अनेक गुणों से युक्त है, जिससे चेहरा निखरता है। हल्दी अनेक सौंदर्य प्रसाधनों में इसका उपयोग होता है।

योग तो भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है विश्व को मिली देन है। योग का महत्व आज विज्ञान के

द्वारा भी सिद्ध हुआ है। योग और प्राणायाम के कारण शरीर और आत्मा के बीच संतुलन निर्माण होता है। जिससे आत्मिक शांति मिलती है और व्यक्ति बीमारियों से दूर रहता है। विश्व अब शरीर और आत्मा के संतुलन के लिए योगको अपनाने लगे है। 21 जून को आंतरराष्ट्रीय योग दिन मनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में विज्ञान के साथ–साथ मनोविज्ञान का भी बड़ा महत्व है, क्योंकि हमारी संस्कृति में सामूहिकता की प्रवृत्ति है। अपने परिवार के साथ–साथ पास–पड़ोसी तथा अन्य लोगों के साथ आत्मीय संबंध रखा जाता है। अकेले नहीं तो मिल बांटकर जीने की हमारी परंपरा। एक तीन सात लोगों में बाँटकर खाने की अपनी संस्कृति है, इसके पीछे भी बहुत बड़ा मनोविज्ञान है, दूसरों को देकर मिल–बाँटकर खाने से जो सुख –समाधान, खुशी प्राप्त होती है, वह मनुष्य के नकारात्मकता का प्रतिरोध करती है और सकारात्मक फैलती है। इसलिए भारतीय संस्कृति में अन्नदान, वस्त्रदान, द्रव्यदान जैसे दानों को बड़ा महत्व है। वर्तमान समय में अगर हम नेत्रदान, देहदान को संस्कृति से जोड़कर भारतीय संस्कृति में चार चाँद लगा सकते है। निस्वार्थ भाव से सेवा करने से बड़ा आत्मिक समाधान मिलता है। जो मनुष्य को जोड़ कर रखता है।

भारतीय संस्कृति में सिर्फ अपने लिए जीना पशुता जैसा माना है। खुद के साथ दूसरों को भी जीने देना मानव धर्म माना जाता है। जो भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है। भारतीय संस्कृति में दया, क्षमा, प्रेम, करुणा, शांति आदि मूल्यों को अन्य साधारण महत्व है। वर्तमान युग की बात करें तो आज भौतिक रूप से बहुत कुछ बदला है। विज्ञान ने तो पिछले 200 वर्षों में गति से मनुष्य जीवन में परिवर्तन किया है। लेकिन विज्ञान तटस्थ होता है। कभी–कभी यह तानाशाही के हाथों में एक हथियार बन सकता है। लोकतंत्र में रचनात्मकता रूप में विज्ञान को अपनाया जाए, तो उसका उपयोग समाज हित के लिए हो सकता है। संस्कृति और विज्ञान दोनों को एक साथ चल के समाज हित के लिए इसका विचार होना चाहिए। इसीलिए आज भारतीय संस्कृति की सबसे ज्यादा जरूरत है, क्योंकि भारतीय संस्कृति पहले दूसरों का विचार करना सिखाती है। सिर्फ अपने लिए जीना पशुता माना है। दूसरों के लिए जीना मानव धर्म माना है।

निष्कर्ष :–

भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता, समन्वयवादिता, सेवा, उदारता, त्याग आदि मौलिक तत्व है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना लेकर भारतीय संस्कृति चलती है। पर्यावरण, योग संस्कृति अभिन्न हिस्सा है। समूह जीवन, सदाचार, सहिष्णुता अध्यात्म आदि गुणों से युक्त है भारतीय संस्कृति में विज्ञान भी झलकता है। इसलिए इतने सालों बाद भी अपनी वैज्ञानिकता के कारण अजरामर बन गई है। वैज्ञानिक कसौटी पर भारतीय संस्कृति खरी उतरी है। भारतीय त्यौहार हो या जन्म से मृत्यु तक निभायी जाने वाली परंपराओं में विज्ञान का प्रतिबिंब दिखाई देता है। उसमे हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए वैज्ञानिक निरीक्षण और खोज नजर आते है। प्रत्येक त्योहारों में रंगोली, बंदनवार, फूलों की सजावट की जाती है। इससे हमारे उत्साह में वृद्धि होती है। सकारात्मक बढ़ती है, सिर्फ उत्सव मनाना यह भारतीय संस्कृति का उद्देश्य नहीं है, तो उसके पीछे होने वाले वैज्ञानिक दृष्टिगोचर होती है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में चार चांद लग जाते है। भारतीय संस्कृति की खानपान की चीजों को देखने के बाद समझ में आता है, कितना सोच विचार कर इन चीजों का निर्माण किया होगा। पिज्झा, बर्गर, ब्रेड की तुलना में भारतीय आहार निश्चित ही शुद्ध सात्विक है। जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी है। साथ ही वृक्षों की पूजा, पशु–पक्षियों की पूजा इससे दूसरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की भारतीय लोगों की भावना

दृष्टिगोचर होती है। जिसका अपना मनोवैज्ञानिक का महत्व होता है। भारतीय आयुर्वेद, योग आदि तो विश्व के लिए उपहार के रूप में मिला है। अगर भारतीय वास्तुशास्त्र का अध्ययन करें तो उसमें विज्ञान झलकता है। जो मंदिर भारत में बनाए गए है, उसमें प्राकृतिक ऊर्जा का सही उपयोग किया है। उसी के साथ–साथ जल संरक्षण, जल सिंचाई, स्थायी जल प्रबंधन के अनुकरणीय उपाय भी भारतीय संस्कृति में विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. संपा. गो. प. नेने, श्रीपाद जोशी बृहत हिंदी–मराठी शब्दकोश (महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे द्वितीय सं. 1993) पृ. 908
2. राम अहूजा, मुकेश आहुजा, समाजशास्त्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन, जयपुर सं. 2008 पृ. 247
3. Basantani-K.T. Science, Scientific Method Technological Development, Sheth Publishers Bombay 1980
4. डॉ. मंगलदेव शास्त्री, भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा), पृ. 4

मो. 9421282561

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 183-191

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Basic function of Mechanics reveals the meaning of human life

Shri Vilas Shamrao Patil

Assistant Professor, Department of Physics,

Yashwantrao Chavan Warana Mahavidyalaya, Warananagar, Tal-Panhala, Dist- Kolhapur.

Abstract :-

It is not only sufficient food, safe shelter, and clean water with which the global system cannot supply several billions of people around the world. Significant roles, which would fill people's lives with purpose and meaning are also in dramatic short supply. What we know at present about the emerging quantum universe is not very promising. As a matter of fact, in this respect it makes it even more difficult for people to find their place, their role, their identity in a world that has become more and more incomprehensible. The loss of their traditional fixed points of orientation, the growing uncertainty of their lives in an infinite and incomprehensible universe, may drain their intellectual and emotional energies and break the dynamismof human communities. People who feel that their lives are pointless and meaningless would, and will, be less able to respond to the challenges of the 21st century. To explore the possibilities of how an emerging new civilization might generate significant roles and meaningful lives for people may become one of the primary tasks of the social, human and natural sciences in the coming decades, if they are able and willing to cooperate. As we have seen in this paper, there have been important attempts in this field. Scientists like Whitehead, Jeans, Hoyle, Pauli, Penrose, Davies and others made serious efforts to establish (possible and impossible) links between the quantum universe and humankind, and, in some cases, even the meaning of human life.

Their attempts have been the first important steps to decode the hidden message a quantum universe may have for humankind. But in spite of all these efforts, the quantum universe is still far from becoming a protective framework withinwhich human beings can feel at home in the world,enjoying relative safety and feeling theirlives have significance and meaning.

Key Words : Quantum Mechanics, Meaning of human Life.

Introduction :-

Living in a vast, infinite, unknown universe, human communities have ever surrounded themselves with spheres of symbols : myths and religions, knowledge and illusions, values and the seductive beauty of the arts, i.e., with a brilliant construct: civilization. Within the "bubble" of their civilization, they could find a certain degree of safety, freedom, and dignity and could cherish the hope, or the illusion, that their lives had significance and meaning.[1] For a certain period of time every civilization we know had the power to answer the everydayand the ultimate questions of human life; but after reaching their zenith, they were all doomedto decline. The "bubble" burst and people were left alone and unprotected in a chaotic orempty universe void of meaning.There were communities that perished in the crisis, or were absorbed by another civilization.There were others that became involved in a "defiant creation of meaning"[2], in the construction of "a shield against terror", in the "enterprise of building [again] a humanly meaningfulworld" for themselves.[3]. At present, there seems to be a turn in our modern age, and a threat that the "bubble" ofmodernity will burst. The most sensitive minds of our civilization felt the first signs of this decadencealready in the second half of the 19th century, starting with Baudelaire and Nietzsche,and then, in the 20th century this experience overwhelmed some of the best minds in theWest.[4] The situation seems to be critical. Outstanding scholars and leading scientists have spoken of "the living death of modern material civilization",[5] "the crisis of human existence itself', [6] "the loss of transcendence",[7]"a historic crisis"[8]8 the "abyss of darkness"[9]a "nightmare ofmeaninglessness"[10]Even Bertrand Russell, one of the most rational and sober minds of the 20th century was shocked by "the loneliness of humanity amid hostile forces" in an infinite, frightening universe, in a "cavern of darkness" and described human life – as "a long march through the night"[11]. The loss of meaning, the "modern soul's distress"[12], felt with increasing intensity also by hundredsof millions of people around the world, may become one of the most dramatic experiences, and one of the major problems to be dealt with, in the 21st century. It may grow into atleast as serious a problem as the much discussed economic, ecological or security problems.[13] It may, however, hit both the developed and developing societies indifferent forms.[14] This means that to explore the possibilities of how to construct a new framework within whichhuman beings will again find safety and feel that their lives have significance and meaning willand should be one of the great challenges to the social, human and natural sciences in thecoming decades.[15] So far so good. But what has quantum mechanics got to do with all this? It has got a lot.

More Difficulties :-

The question is how a new framework, a new civilization might emerge,what would it look like? How will concepts of Good and Evil, Justice and Injustice,Truth and Beauty be inflated with

meaning; how will the main principles of human behavior take shape; how will people again be able to face mutability and death; how and where willthey discover the sources of the meaning in their lives?It is difficult to answer these questions. It was not easy to answer them in the early centuries or when the age of modernity emerged, but it promises to be exceptionallydifficult now when what will probably be called the "quantum universe" slowly takes shape.Why would it be more difficult now than it was before?In earlier ages the cosmic visions that surrounded human communities were in close and directcontact with peoples' lives. The magic cosmos of early tribal life was full of friendly andhostile spirits, ghosts, and demons who could be more or less managed with the help of traditionalrites and ceremonies.

For everyday people an easy, but not necessarily expedient, solution is just to ignore the problem and live at the very center of the traditional, illusionary – Ptolemaic – universe. On theother hand, people can try to find their place, and meaning of their lives, within the newquantum universe. There is an amazing and feverish proliferation of blogs, YouTube posts,Facebook debates, popular conferences where participants try to find clues within quantummechanics that would permit them to suppose that human life has a place and meaning evenin the quantum universe.[16]

Linking between the equations of quantum physics and the problems of human life :-

Physics and the problems of human lifeScientists, scholars, philosophers, and theologians, too, had to respond to this challenge. Thevariety of their responses is fascinating, although all their hypotheses and theories taken togetherare only the first attempts at establishing links between the equations of quantumphysics and the problems of human life. They are still far from building a "humanly meaningfulworld" within the quantum universe. However, surveying some of their efforts may help coordinatefuture research work in this field.

a. Dismissal : The meeting of quantum mechanics and the meaning of human life could seem to be a surrealist encounter for a physicist or cosmologist, like that of "a sewing machine and an umbrella on the operating table?" – at least if they had read the famous lines in the 6th Canto of Les chants de Maldoror (1869) of the French poet, Lautréamont. In any case, most of them have declined to deal with the question of a hypothetical contact between the realms of quantum mechanics and the meaning of human life.[17]

b. Science War : There is the excuse that the so-called "Science War" (that raged in the second half of the 20th century between the natural sciences, on the one hand, and traditional philosophical interpretations of the world, on the other) turned out to be more or less futile.

c. Neutrality : The flag of neutrality could also be waved and claimed that being physicists and cosmologists, their only business was to discover the laws of the universe and had nothing to do with

such “soft variables” as the meaning of human life. They needed to focus on their scientific work and ignore the philosophical implications of quantum mechanics.

d. Slipping out of the dilemma : A good example of how one can fend off the question and fill the gap between dead and living matter, sciences and human destiny, is the final, poetic rather than scientific conclusion of Dawkins’s famous book, The God Delusion:“But couldn’t it be – he asks — that God clutters up a gap that we would be better off filling withsomething else? Science perhaps? Art? Human friendship? Love of this life in thereal world...?”[18]

e. Split consciousness : If none of these strategies work, scientists can still take refuge in developing a split consciousness, being, on the one hand, a scholar investigating the universe withstrict rationality and, on the other hand, being a mortal human being trying to find the meaningof life in the community, and ultimately in the universe.The famous physicist, Hilary Putnam, is an outstanding example. In the autobiographical introductionto one of his books (2008), he admits he is made up of two distinct parts: “a religiouspart and a purely philosophical part, but I had not truly reconciled them. I simply kept thesetwo parts of myself separate.”[19]

Building a Bridges between quantum mechanics and the problems of human life :

Despite the enormous difficulties, there are many physicists, cosmologists and biologists, onthe one hand, and philosophers, theologians, scholars, on the other, who try to build bridgesbetween hard sciences (quantum mechanics) and the problems of human life anddestiny.[20] These attempts vary a great deal in their scholarly level but are full of ideas that maylater be developed into genuine scientific paradigms.

a. Discovery, Knowledge, Eureka : The discovery of the hidden harmony of mathematical laws of the universe has been a fascinating adventure, an overwhelming experience for many scientists. It filled their lives with significance and (the illusion) of meaning.[21] Einstein speaks, with almost religious awe, of the “great and eternal mysteries” of the universe, the discovery of which gives one “inner freedom and safety”.[22] Wolfgang Pauli is convinced that nuclear physics proves the existence of a “cosmic harmony”.[23].According to Nobel Prize laureate StevenWeinberg “effort to understand the universe isone of the very few things that lifts human life a little above the level of farce, and gives it someof the grace of tragedy”.[24] According to another laureate, Jean Monod (1971: 180), “truth isa transcendental value, something beyond us, and thus the search for it may satisfy the profoundhuman striving for something beyond what is already present and given.”Throughout his famous book, The Elegant Universe (1999), Brian Greene’s argument is strictlyscientific but at the end of the book, in the last paragraph, he suddenly switches over to a fewconfession-like philosophical statements. He asks the question why we, humans, are here inthis universe.

Although this “why” refers only to the physical causes of the emergence of the universe and of human life, and not to any “purpose” or “meaning” of human life, the efforts of scientists to answer this question provides a role for the human being and “enriches thesoul”. In conclusion, Greene sings the “Ode to Science” and to the human mind’s gloriousprogress.[25]

b. **Cosmic order :** The amazing power of the human mind to discover the hidden order of the universe may fill our souls with the feeling, or illusion, that we, humans, are at home in this universe.[26] In the same way, mathematical, physical, and cosmic laws of quantum mechanics lend themselves to a (questionable) comparison with Plato’s eternal Forms or Ideas.[27] This relationship may suggest that our lives are governed by the same laws as the universe.

The contact is established : we are at home in this universe even if the meaning of our lives remains beyond our understanding.

c. **Cosmic consciousness :** There are significant numbers of great scientists (Pauli, Schrödinger, Heisenberg, Eddington, Jeans, Hoyle, Paul Davies, and others) who believe that there is, ormay be, a “cosmic mind” behind/beyond the physical universe. They argue that only the existenceof a cosmic consciousness can explain a universe ruled by the brilliance of mathematicallaws. “In some sense man is a microcosm of the universe; therefore, what man is, is a clue tothe universe. We are enfolded in the universe.”[28] The controversy about the existence or nonexistenceof an “intelligent design” behind the empirical world is still going on.[29]

d. **Human consciousness :** Consciousness may be the major link between humankind and the universe. For centuries, the character of this relationship has been one of the most discussed issues in philosophy without ever having reached a conclusion. There is a growing conviction today (though not shared by many scientists) that quantum mechanics may bring about a breakthrough in the study of this relationship and in the discovery of hitherto unknown specific laws governing the human mind.[30] The questions to be answered are how can we understand the outside world, and how is it possible that the mathematical equations discovered or constructed by the human mind are able to reflect the working of the universe?[31]

e. **Simplicity and beauty :** Einstein, Planck, Greene and several of their colleagues found peace and joy in the simplicity and beauty of the cosmic constellation of mathematical/physical laws.[32] This amazing simplicity and beauty does not mean that humankind has any significance in the universe, or that the personal human life has meaning. But, to a certain degree, it may alleviate the anxiety of people (mainly scientists) of being alone in a cold and indifferent universe devoid of any message or meaning for humankind.

f. **God :** The concept of God is a plausible link between quantum physics and human life. If

quantum physics does not exclude, or even supports, the hypothesis of the existence of God, then there is a fair chance that human lives may have purpose and meaning. The traditional conceptof the God of Judaism, Christianity and Islam ignores the possibility that God may have createda universe in which humans may exist but their existence is insignificant and their lives haveno meaning. A great number of theologians, philosophers and even scientists have tried toshow that divine acts and laws, on the one hand, and the laws of quantum mechanics, on theother, mesh smoothly and beautifully.[33] And there are even scholars who contend that quantumphysics opens a better road to God than traditional religions, although scientists whoreject any such possibility are in the majority. And there are those, who leave this questionopen: Phil Dowe (2005: 183) writes:"So, from the perspective of physics, is it possible that God brings about the events that quantummechanics deems to be the result of chance? There are two possible answers to this question– either it is possible or it is not."

g. The God of the Gaps : The relationship of God with the world has been discussed for thousands of years. The question to answer is how an eternal God, and a pure spirit, can interact with a temporal and material world. Several theologians have argued that God is able to bridge the gap.[34] One of the staple answers has been that God is omnipotent and so He can suspend the causality and the natural order of things and interfere with secular processes. There are scholars who assume that chance and probability may be the realm of a God, whomay have created the universe by "tossing the dice," although the majority of physicists and cosmologists strictly reject "... theories of physical uncertainty."

h. The experimenting God : Reading Genesis (maybe reading it in the wrong way), one might gain the impression that God was uncertain during the process of Creation. He stopped each evening, and only when he saw that what He had created "was good", did he continue the next day, as if he did not know what would result from what He had done.One of the leading process theologians, Charles Hartshorne, argues that in the continuous process of creation God is "groping through cosmic processes towards an uncertain self-fulfillment."

There may be a vague resemblance between this primordial uncertainty and the probabilistic processes of the quantum universe.53

i. God beyond God : In contemporary theology, the mythical figure of a personal God has been deconstructed. In the vision of a Paul Tillich or John Caputo, God exists in the mysterious realm of the unknown, in a realm beyond human comprehension. It is a transcendental power, spirit, thought, phenomenon, a mystery, a secret. These existentialist or postmodern scholars are on the quest for a God beyond God, for a divinity beyond the comprehension of the human mind. Their radical doubt, breaking taboos and questioning the unknown, is not very far from the uncompromising investigation of the unknown by natural scientists, who, themselves also struggle with nagging doubts.

j. **Non-causality :** The publication of Heisenberg's uncertainty principle gave a slightly more scientific underpinning to this argument by stating that in the sub-nuclear realm causality may not work, or – interacting with the principle of probability – it does work in a different way than in the macro-world. [35] Further discussions of, and uncertainty about, the validity of the principle of causality in quantum physics has freed philosophers and theologians from the cage of the strict causal determinism of classical physics. A world of uncaused, random events may be full of hidden, yet unknown possibilities for the human being and even for the emergence of free will and a meaningful human life.[36]

k. **Theory of everything :** There are philosophers who argue that a possible Theory of Everything must reconcile, unify, comprise not only the laws of the theory of general relativity, the theory of gravity, and the laws of quantum mechanics but also those of the realm of human (or cosmic) consciousness, i.e., an ultimate equation which the human mind can understand andhandle. This would make an extremely strong link between the quantum universe and the humanmind, even if it did not mean that individual human lives have meaning.

Conclusions :-

As we have seen in this paper, there have been important attempts in this field. Scientists like Whitehead, Jeans, Hoyle, Pauli, Penrose, Davies and others made serious efforts to establish(possible and impossible) links between the quantum universe and humankind, and, in somecases, even the meaning of human life. Their attempts have been the first important steps todecode the hidden message a quantum universe may have for humankind. But in spite of allthese efforts, the quantum universe is still far from becoming a protective framework withinwhich human beings can feel at home in the world, enjoying relative safety and feeling theirlives have significance and meaning.This is a major social and human problem. Why? Because losing purpose and meaning, oneloses also one of the main motivating forces in one's life. Adding up millions of meaninglesslives, whole societies might lose their momentum and, as a consequence, seriously underperform,let alone the fact that the meaninglessness of one's life may, and already has become amajor source of mental suffering. There are many economic, social, and cultural causes behind the decreasing ability of traditionalwestern civilization to create a cosmic home for its citizens. The advance of quantummechanics is only one among them but, nevertheless, it would be a grave mistake not to payincreasing attention to its potential role in this field.

The problem is that scholars outside the natural sciences do not really understand what quantummechanics tells them about the secrets of the universe. The only way to solve this dilemma would be a close and systematic cooperation between physicists, cosmologists, philosophers,

theologians, cultural anthropologists, psychologists, historians of ideas, artists, andothers. Closing a smoldering "science war", a genuine dialogue should be started in whichparticipants try to understand one another's language and way of thinking.

References :-

1. See for instance the ideas of Max Scheler, Ernst Cassirer, Géza Roheim, Mircea Eliade, Clifford Geertz, ErnestBecker, Eric Voegelin, Franz Borkenau, Peter Berger and others. See also Schlagel (1985), Henry (2012).
2. Becker (1973: 4-5, 7).
3. Becker (1973: 22-24).
4. Let me mention only Spengler, Sorokin, Toynbee, Freud, Kafka, Jaspers, Heidegger, Sartre, Gadamer, Musil,Russell, Monod, Kuhn, Löwith, Derrida, Foucault, Rorty, Sloterdijk, Cioran, Gide, Camus, O'Neill, Beckett, Tillich,aputo, and others.
5. T. S. Eliot (1934: 60).
6. Jaspers (1965 [1932]: 76).
7. Camus (1971 [1951]).
8. Hobsbawm (1994: 584).
9. Monod (1971: 170).
10. Berger (1990 [1967]: 22
11. Russell (1948: 56, 57, 59, 60, 61).
12. Davies (1992: 170-971).
13. In the last few decades economists have discovered the increasing importance of the "human factor".See for instance the emergence of "social economics",.
14. Miyanaga (1991), Inglehart (1997, 2010), Ames et al. (1998), Beck (1999), Lee et al. (1999),
15. A rich scholarly literature illustrates the importance of the meaning-of-life question. For a quick introductionsee the following collections of essays: Sanders- Cheney (1980).
16. Here are a few characteristic blog and YouTube titles: "Philosophy of Quantum Mechanics" –
17. From among the hundreds of scientists who reject any possibility for cooperation between the two realms,let me quote only a few outstanding names: Bertrand Russell (1929a, 1948).
18. Dawkins 2006: 388. For a detailed discussion of the question see Egan 2009.
19. See also Putnam 1965, 2005.
20. See for instance Alfred N. Whitehead (1920, 1933 a and b), Theodosius Dobzhansky (1954, 1967), Freeman Dyson (1979
21. Wheeler and Ford (1998).
22. Einstein (1955).

23 Fischer (2004).

24. See Weinberg's answer in Moorhead (1988: 155).
25. Greene (1999).
26. Among many other works see Wheeler (1994), Close (2011).
27. Whitehead (1920, 1933 a and b).
28. David Bohm https://www.brainyquote.com/search_results.html?q=David+Bohm.
29. See, for instance, Moreland (1994), Dawkins (1994), Dennett (1995), Brockman (2006)
30. Wolf (1981, 1996), Penrose (1989, 1994), Wilson (1990), Zohar and Marshall (1990), and Kuttner (2011), Mensky (2011), Loewenstein (2013).
31. See for instance, the famous debate between Jean-Pierre Changeux and Alain Connes (1999
32. Heisenberg (1971), Penrose (1989), Henneaux et al. (2009), Mlodinow (2011).
33. Schindler (1986), Grenz and Olson (1992), Tipler (1994), Ross, H. (2000, 2010),
35. See, for instance, Lindorff and Fierz (2004).
36. Eddington (1928, 1929), Zohar and Marshall (1990), Maudlin (2011), Chiao et al. (2011), Rosenblum and Kuttner (2011), Stump and Padgett (2012).

Email- vspkodoli2201@gmail.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 192-198

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Long tradition of protecting, worshipping the nature and legal control of 'Dharma' for the protection the environment in ancient days in India

Smt. Manisha Vilasrao Patil

Librarian, Shripatrao Chougule Arts and Science College Malwadi-Kotoli,
Tal-Panhala, Dist- Kolhapur.

Abstract :-

The Cultural and religious heritage of India show a deep concern for the protection and preservation of environment. Dharma in India was considered as highest principles of laws in ancient days in India. Dharma provided various rules and regulations for proper human conducts. Every individual, was under the obligation to act according to Dharma. In India the concern for environment was from the ancient status time and the environment i.e. the nature was given by the god. Number of saintsand Mahatmasprovided concern towards protection, conservation of environment with protecting forests, animals and birds.

As said by the saint Tukaram "trees are the friends of human being and they are relative which shows a concern to words environment".

No religion justifies the destructive attitude of modern man which has developed towards his environment. Dharma in different language and with different symbols give the message of conservation of environment. All religions treat nature as a God given gift, some even stating that God is present in the manifestations of nature. In ancient India and during Vedic and kingship age not only the common people but also the rulers and kings followed the ethical norms laid down by great Santas and tried to create an example for others for the protection of the environment and the matters related thereto. India has inherited a high culture of tolerance, non-violence, equity and compassion for nature, animals, objects and as a part of daily life and is synthesised with religion.

So all about the role of dharma an Indian traditions in protection of environment are discussed in this paper.

Introduction - Indian Tradition : Dharma and Environment :-

In primitive age of human civilization, the man was in the state of nature. India has a long tradition of protecting and worshiping the nature. Dharma is commonly pertaining to the spiritual domain while the science and technology ae viewed as systems pertaining to the material domain. The ecological crisis in the ultimate analyse is can lead to the under mining of very basis of material existence. No religion justifies the destructive attitude of modern man which has developed towards his environment. In different language and with different symbols, all religions treat nature God given gift, some even stating that God isomni present in the manifestations of nature. In ancient India and during Vedic and kingship agenotonly the common people but also the rulers and kings followed the ethical norms laid down by great santas and tried to create an example for others for the protection of the environment and the matters related thereto. India has inherited a high culture of tolerance, non-violence, equityand compassion for nature, animates, objects and as a part of daily life and is synthesised with religion. It is further evidently clear that, religious teaching, the social and political norms and economic policies treated man as a part of nature not as moulder to it.

Therefore, interdependent, co-operative living and close associationwith other components of environment is the real basis of human life. It became as acred duty of human-being homo-sapiens to behaverationally and protect the nature if he wants to survive. Inview of World Religious position, most of it protect the environment by way preventing abuse and exploitation of nature which was used by the people forimmediategainfun just, immoral and unethical way. World religious beliefs provides a unique set ofmorals, values, guidelines for the human beings to observe, preserve the environment and environment related issues. For that sake religious conduct imparted the fear complex in the mind soft he people and provides sanction, offerstifferpenaltiessuchas fear of hell. All these beliefs attracted towards you should do respect and honour God's creation, although it is found that in the age of information, communication and technology there legion of the globe not suffice to protect and preserve the environment. Only the scared complex relating to vanish of earth due to global warming and climate change it may impossible to the human being to resting earth planet easily.

Importance of environment according to Indian Tradition :-

Air, water, Land are the representative samples of natural environment and if we try to disturb nature or natural environment in excess, it disturbs and damages us. This thought is not of the recent origin. The need for the protection of environment or to preserve the environment was recognizably the peoples of ancient time. They tried to protect the environment by giving it religious and the cultural aspect and on basis of dharma.

Dharma :-

It was the 'dharma' of each individual in the society to protect the nature. In Sanskrit the word for law is dharma thus, dharma means anything that was binding on human being to be done. Thus, human being were govern the concept of dharma".

1.1.1 Environment Protection and Ancient India :-

The concern for environment protection in India can be traced back to the period between 321 to 300 B.C. The ancient Indian Law on environment protection is found In "KautilyasArthashstra' It was the Dharmaof every individual in a society to protect the nature. The people worshiped the objects and nature. The trees, water, land and animals gained an important position in the ancient times. The cultural and religious heritage of India show a deep concern for the protection and preservation of the environment.

2. Role of Dharma In Environment Protection :-

Since Vedic time the main moto of social life was to live in harmony with nature. Sages, saints and great teachers of India lived in forests, mediated and expressed themselves in the form of Vedas, Upanishad, Smites and Dharmas. The literature of olden times preaches in one form or the other a worshipful attitude towards plants, trees, Mother earth (Bhu Mata), air (Vayudev), water (Jal deva), and animals (PraniMatru) and to keep a benevolent attitude towards them. It was regarded a sacred duty of every person to protect them.

India is a land of rites and rituals (Sanskar and Niti). Almost all major religions of the world are represented in India. All these religions realized the realities of mankind with nature. All religions regulated the conduct of mankind in such a manner which was conducive to nature and not adverse to nature. We can see the concern about the environment protection in every religion in the form of their rites and rituals.

2.1 Hinduism and environment protection :-

The Hindu religion provided a respect for natural environment, harmony and conservation. It instructed man to show respect for the presence of divinity in nature. Therefore, trees, animals, cow, hills, mountains, rivers are worshiped as symbols of reverence to these representatives' samples of Nature they beloved that where the God was living in that all.

A. Indian literature like Vedas, Upanishads etc :-

A Hindu religious shastra called the Vedas, Upanishads, smites, Purana, which contain the social and normal codes, Ramayana, Mahabharata, Geeta, are the literature including stories, social and moral codes and political rules lays down that the following were the general guiding principles to be observed by all in their daily life like,Non-violence, Truth, Respect and Love for other living

organisms including trees became the basic rule in religions. Dharma contains the laws for environmental protection. Hindus treat all other species just like their own children. Several Hindu Gods and Goddesses have animals and birds as the signs of transportations. Similarly some of the names and trees are associated with Gods and Goddesses.

1) Respect the Nature
2) Keep, harmony with nature.
3) Protect natural environment.
4) utilize natural resources only to satisfy the need of People
5) beloved the nature
6) Pray to nature to give the good quality
7) improve the nature

B. Trees and plant :-

Trees and plants have been regarded as indispensable in the life of human beings. They have been considered as good and protectors from evil, with a concept of god living in them. Trees and plants are considered as the symbol of various gods and goodness. Following are the some of the names of trees associated with gods and godesses,

Sr.No.	Tree Name	Associated Gods and Goddesses
1.	Lotus	Laxmi (Goodness of wealth)
2.	Vat (Banyan)	Brahma (Creator of Universe)
3.	Ashoka	Buddha
4.	Kadamb	Krishna
5.	Palasa	Bramhma, Gandharva
6.	Neem	Stale, Manilas
7.	Fig	Vishnu, Radar
8.	Mango	Laxmi, Goverdhan
9.	Pipal	Vishnu, Krishna

On the day of Savitri Vat pornima all the womens are making the puja of treeVat. This include with the pray to tee, offer the water, flowers, prasad of sweets and mangaos, Thus trees are worshiped as a Devata with prayers, offerings of water, flower, sweets and make the rotation around the tree of the vat, all the women whole day make the upvasa (not take water and eat) anything in full day. On the Mahashivratri person offer flowers and bel leaves to the Shiva, other hand tulshi to vitthal, Davana to Jotiba, Haraligrass to Ganpati, Rui to Hanumanata.

C. Concern about animals and Birds :-

Killing of animals is against basic rule of Hindu way of life i.eAhimsa (non violence), therefore, having deep faith in the doctrine of non-violence, it was felt that Gods grace can be had by not killing his creatures. And killing of mute animals and birds is a sin.

Several Hindu Gods and Godesses have animals and birds as their transformation vehicals. Some of them associated with Hindu gods and godesses are-

Sr.No.	Name of Animal/ Bird Name	Associated Gods and Goddesses
1.	Lion	Durga
2.	Wild goose	Brahma
3.	Elephant	Inra,Ganesh
4.	Rat	Ganesh
5.	Bull	Shiva
6.	Swan	Saraswathi
7.	Vishnu	Eagle
8.	Dog	Dattatray
9.	Peacock	Saraswathi

3.0 Buddhism and Environment Protection :-

The basic features of Buddhism are simplicity and ahimsa or non violence. Both these principles of Buddhism are of great importance in the conservation and protection of natural environment. The principle of simplicity teaches us that man should not became greedy to earn more and more in the shortest time by exploiting the natural wealth and leaving nothing for the future generation. Thus, the first principle of Buddhism lie simplicity is based on sustainability which is also the crying need of the present times. The other basic principle of Buddhism is non violence teaches us that we should not kill animals. It shows love for fauna and flora. In Buddhism we also find emphasis on tree plantation and preservation.

4.0 Jainism and environment protection :-

The basic trust of the Jainism is on the minimum destruction of living and non living resources for the benefit of man. People following Jainism also believe in the principle of simplicity i.e to meet their minimum needs without over exploiting the nature and natural wealth. Thus, the Jainism is also based on the principle which is in close with nature and help in protecting and preserving the nature.

5.0 Muslimism and Environment Protection :-

As humans, we are keepers of all creation, including soil, air, water, animals and trees. A major

objective of Islamic teachings and Prophet (Peace Be Upon Him) traditions is to build and maintain a healthy and clean environment which is devoid of any source of pollution and misuse.

The Holy Quran declares that everything is created from water, Thus, there is a significance of purity of water. Allah is considered to be the owner of land and making man the trustee or guardian, where as other living creatures are considered to be the beneficiaries. In Islam there is close harmony between man and nature.

6.0 Christians and environment Protection :-

Christians are realia in water, as a sign of purification. In fact, in almost all religions a common thread is the sacred quality of water. The message of Pope at UN s conference on the Human environment held at Stockholm in June 1972, make it amply clear that there to close link between, Christianity and environment and the thrust is for sustainable development So today we should not exploit the natural resources in such a way that nothing is left for next generations.

7.0 Sikh and environmental protection :-

Sikh religion is comparatively of recent origin The concern for environment is evident from the fact that it considers every creature to be the incarnation of God and hence conservation and preservation are essential principles, Guru Granth Sahib Ji, also emphasizes that, "the human being are composed of five basic elements of nature i.e. earth, air, water fire and sky.

Thus also relationship between nature and mankind was been recognized.

8.0 In general, at historical age each Dharma have universal guiding principles to be observed which can be as under :-

1. Respect nature
2. Life of human being is dependent on various components of nature.
3. Keep harmony with nature.
4. Protect natural environment
5. Utilise natural resources only to satisfy the need of the people.
6. There is presence of God in all living and non-living objects of the nature.
7. Destruction of nature means destruction of mankind or to make angry to God.
8. Air, water, land, sky, animals are the creation of God

The mankind is the part of nature and his life depend on the uninterrupted functioning of natural system which gives the supply of energy and nutrients. Which is essential for every life support system. Man must live in harmony with nature which nourishes him and provides all basics of human life.

Conclusion :

Thus, in the ancient times water, animals and plants mostly attracted a favourable attention of each member of the Society. It was the religion which controlled the activities of every individuals. The Dharma of environment was to sustain and ensure progress and welfare of all. The inner urge of the individuals to follow the set horns of the society, motivated them to allow the natural state The most important and noteworthy development of this period was that each individual knew his duty to protect the environment and he tried to act accordingly. Thus, it is seen that from ancient time in Indian tradition all religions are tried to conserve and protect the environment.

References :-

1. AarminRosencranz, et al, (eds.), Environmental Law and Policy in Indian, (2000), Oxford
2. R. B. Singh & Suresh Misra, Environmental Law in India (1996), Concept Publishing, New Delhi.
3. Kailash Thakur, Environment Protection Law and Policy in India (1997), Deep & Deep publications, New Delhi. 40
4. Richard L. Riversz, et.al. (eds.), Environment Law, the economy and other Sustainable Development (2000), Cambridge
5. Christopher D. Stone, Should Trees Have Standing and other Essays on Law, Morals and the Environment (1996), Oceana
6. Leelakrishnan, P et. al. (eds.), Law and Environment (1990), Eastern, Lucknow
7. Leelakrishnan, P, The Environmental Law in India (1999), Butterworths – India
8. Department of Science and Technology, Government of India Report of the Committee for Recommending Legislative Measures and Administrative Machinery for Ensuring Environmental protection (1980) (Tiwari Committee Report).
9. Indian Journal of Public Administration, Special Number on Environment and Administration, July – September 1988, Vol. XXXV, No. 3, pp. 353 - 801
10. Center for Science and Environment, The State of Indian's Environment 1982, The State of India's Environment 1984 – 1985 and The State of Indian Environment 1999 – 2000
11. World Commission on Environment and Development, Our Common Future (1987), Oxford.
12. Maneka Gandhi et. all Animal Laws of India (2001)
13. Iyer V R Krishna, Environment Pollution and the Law
14. Lal's Commentaries on Water and Air Pollution and Environment Protection Laws
15. Pal Chandra, Environmental Pollution and Development, ed 1999
16. Malaviya, Environment Pollution and its Control under International Law
17. The Environment (Protection) Act 1986 and Rules 1986

email-mvpkodoli305@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 199-203
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Buddhism and Mental Health

Shri. Jagdish Appassheb Sardesai
Head, Department of Psychology,
ShripatraoChougule Arts and Science College, Malwadi – Kotoli Tal. Panhala, Dist. Kolhapur

"Believe nothing, no matter where you read it, or who said it, no matter if I have said it, unless it agrees with your own reason and your own common sense." —The Buddha

Globalization is a major cause and it creates mental health problems among the human beings. Mental illnesses are emerging from the problems such as anxiety, stress, competition, rising unemployment, social and family problems, and sexual problems. This has led to an increase in suicides and violence. Social and personal life is facing many obstacles in day-to-day life.

According to the WHO Report (2022), before the pandemic, an estimated 193 million people (2 471 cases per 100 000 population) had major depressive disorder; and 298 million people (3 825 cases per 100 000 population) had anxiety disorders in 2020. After adjusting for the COVID-19 pandemic, initial estimates show a jump to 246 million (3 153 cases per 100 000 population) for major depressive disorder and 374 million (4 802 per 100 000 population) for anxiety disorders.

According to Mental Health Foundation, Anxiety is a type of fear usually associated with the thought of a threat or something going wrong in the future, but it can also arise from something happening right now.

Younger people are more likely to have some form of anxiety :

- In 2021, those aged 16 to 29 years were most likely to have some form of anxiety (28% likely)
- This decreased steadily through the age groups, and the least likely group was those aged 70 and over (5% likely)
- More women report experiencing high levels of anxiety than men:
- In 2022/23, an average of 37.1% of women and 29.9% of men reported high levels of anxiety 2
- Compared to data from 2012 to 2015, this has increased significantly from 21.8% of women and 18.3% of men reporting high levels of anxiety.

There was an increase in people reporting high levels of anxiety during the COVID-19 pandemic, but anxiety levels have begun to decrease since then :

- 19.8% reported high levels of anxiety during 2018/19
- This increased to 24.2% during 2020/21
- But anxiety levels decreased the following year, with 22.5% reporting high levels of anxiety during 2021/22

Of those experiencing anxiety, more people report experiencing 'low' or 'very low' levels of anxiety than those reporting 'medium' or 'high' levels :

- From July to September 2022, 59.4% experienced 'low' or 'very low' levels
- Whereas 40.5% of people experienced 'medium' or 'high' levels of anxiety.

Depression :-

In the year of 2013, depression is supposed to the second leading cause of years lived with a disability worldwide, behind lower back pain. In 26 countries, depression was the primary driver of disability.

In 2014, 19.7% of people in the UK aged 16 and over showed symptoms of anxiety or depression - a 1.5% increase from 2013. This percentage was higher among females (22.5%) than males (16.8%).

We approach mental health from a life-course perspective since mental health is something that starts in infancy.

20% of adolescents may experience a mental health problem in any given year.

- 50% of mental health problems are established by age 14 and 75% by age 24.
- 10% of children and young people (aged 5 to 16 years) have a clinically diagnosable mental problem. yet 70% of children and adolescents who experience mental health problems have not had appropriate interventions at a sufficiently early age.
- Suicide and self-harm are not mental health problems but are linked with mental distress.
- In the UK in 2020, 6248 people took their own lives: 5224 in England and Wales, 805 in Scotland and 219 in Northern Ireland.
- Men and women aged 45 to 49 have the highest suicide rates in England and Wales.

There has been an increase in the number of young people falling prey to addictions such as drugs and alcohol. There is fierce competition in various sectors. The rate of violence against women has increased. Prevalence of disorders among adolescents is on the rise.

The need for psychiatrists in modern times should be greatly increased to deal with such problems. At the same time, Buddhist philosophy is needed to reduce the severity of such problems.

Therefore, research on topics such as Buddhist philosophy and mental illness is necessary today. We have tried to research this with such noble intentions.

Buddhist philosophy and way of life have now been energized by concepts such as 'mindfulness'. Buddhist philosophy seems to be being used in the psychiatric system. Buddhist philosophy talks about improving peace of mind and concentration.

In 1979, John Cabot Zinn used a "Mindfulness" system to reduce the severity of stress. "Mindfulness is about accepting what is happening in the mind and in the mind without any judgment by focusing on purpose in the present.

In Buddhist philosophy, there is a tendency to accept the present and strive to alleviate suffering. Gautama Buddha has described the Ashtanga way to relieve suffering. The world is feeling the need for ideas like 'The world doesn't want war, we need Buddha'. There were many restrictions on survival during the corona period. During this period, the importance of mental health along with physical health has been highlighted.

IPH's motto is 'Strong Mind for All', which is due to increasing stress at the social and personal level, frustration and frustration caused by the competitive era, insecurity and loneliness arising from lack of harmony, as well as ignorance and misconceptions about mental health. Buddha was a great psychologist. In Pali literature, this scientist has made a scientific analysis of the mind and behavior 2500 years ago.

Objectives :

1) To explain the classical and scientific nature of Buddhist philosophy.
2) To define the nature of Mental Health.
3) To show the correlation between mental health and the philosophy of Buddhism.
4) To explain the personal and social values of Buddhism.

Assumptions :

1) Buddhist philosophy is classical and scientific.
2) There is a positive correlation between Mental Health and Buddhist Philosophy.
3) Mental Health requires personal and social value.

Buddha philosophy :

It's a long time ago in BC. The Dhammachakra was changed and Buddhism was founded in the sixth century by Tathagata Gautama Buddha. The first Dhamma to travel from its origin to the rest of the globe was Buddhism. This Dhamma is scientific, humanist, egalitarian, and atheistic. Buddha bestowed upon humanity ideals such as liberty, parity, unity, kindness, camaraderie, and knowledge.

It is known around the world as a dhamma that supports modern science and human values.

Many humanists and scientists around the world have followed Buddhism. Lord Buddha has described trisharana, four Aryasatys, ashtanga paths and panchsheels for the teaching and practice of Dhamma. Lord Gautama Buddha says that human life is full of sorrow. Suffering comes from craving (lust, desire, attachment, passion). So, we have to control our cravings.

"The basic Buddhist teaching is compassion and compassion for other people," Demers said. In Buddhism, all people are equal. Buddhist expert Jason Hewinger explained in an interview with The Vagina Health Center that Buddhism makes people feel as unified as waves in the ocean. In Buddhist scriptures, Buddha is referred to as 'The Great Healer' or 'The Great Physician'. Gautama Buddha told four Aryan truths.

Mental health :

Sigmund Freud is known as the father of psychology. For them, being normal is just a poetic idea, meaning that no one on earth is mentally fully capable. According to the World Health Organization, 4 in 10 people need a psychiatrist's advice. (Inside the Mind, Dr. Milind Potdar)

Due to the current changed lifestyle, the problems of stress, fear, depression, anxiety, anxiety have reached every household. If you look at stress and mental illness, many problems can be avoided in time.

Mental health is an integral part of our general health and well-being and a basic human right. Having good mental health means we are better able to connect, function, cope and thrive. Mental health exists on a complex continuum, with experiences ranging from an optimal state of well-being to debilitating states of great suffering and emotional pain. People with mental health conditions are more likely to experience lower levels of mental well-being, but this is not always or necessarily the case.

Mental health and stress have become a very important part of all of our daily lives. Along with increasing stress, increasing mental depression/ anxiety, suicide and increasing addiction are becoming a rapidly increasing problem not only in India but across the world.

With the increasing use of mobile and social media, we are faced with the newly created challenge of mobile, mobile game addiction. We experience these stressors in different forms at different stages of age, such as the increasing expectations of parents from young children, the pressure of teenagers to choose the right career, the stress of marriage relationships, the stress of working, and the problems of loneliness that come later in old age.

At a time when mental stress and mental illness are on the rise in society, the number of people who treat it in our country is woefully inadequate. We are faced with the dangerous reality of the so-called spiritual fathers and fathers filling the void created by the increasing mental illness on

the one hand and the very low number of healers on the other (Emotional first aid at home, Dr. Hamid Dabholkar).

Rational thinking is needed to maintain good mental health. These thoughts are in Buddhist dhamma, which urges living in the present, which create positive emotions such as truth, non-violence, compassion, wisdom, etc.

Conclusion :-

According to this study, there is a link between mental health and Buddhist philosophy. Buddhism offers methods for easing pain. Improving mental health in this way helps lessen pain in life. People should strive to follow the Ashtangika path in order to find happiness in life. The path to our own and humanity's well-being lies in the treatments that the Buddha mentioned. Buddhism's primary practice is meditation. Mental focus is aided by meditation. Meditating fosters an open, clear mind and a connection to reality.

References :-

1. Edo Shonin and William Van Gordan and Mark D. Griffiths, (2014) 'The Emerging Role of Buddhism in Clinical Psychology: Toward Effective Integration' Psychology of Religion and Spirituality, Vol. 6, No. 2, 123-137
2. De Silva, P. (2005), An Introduction to Buddhist Psychology, 4th Edition, New York: Palgrave Macmillan
3. Kabat-Zinn, J. (1994). Wherever You Go, There You Are: Mindfulness Meditation in Everyday Life. Hachette Books.
4. Kabat-Zinn, J. (2005). Coming to Our Senses: Healing Ourselves and the World Through Mindfulness. Hyperion.
5. Pradeep Chakkarath, Buddist Psychology, University of Bochum, Bochum, Germany.
6. Caroline Brazier, A Buddist Perspective on Mental Health
7. Dr. Rajendra Barve (2024) Mindfulness, Rohan Publication, Pune 8. Dr. Milind Potdar, ManachyaAntarangat, ManovikasPrakashan, Pune.

Mobile No. – 9011619899

Email- jagdishsardesai@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 204-209
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Indian Culture and Tradition : A Unique Treasure House of Knowledge

Dr. Homesh Rani Gaur
Assistant Professor, Amrapali University, Haldwani] Nainital, Uttarakhand.

Ancient culture and civilization have been the roots of our traditional knowledge system. The term 'culture' has changed in recent decades partially owing to the instruments developed by UNESCO. The cultural heritage does not end at monuments and specific objects but also includes traditions or living expressions inherited from our ancestors and passed on to our descendants, such as oral traditions ,performing arts, social practices, rituals, festive events, knowledge and practices concerning nature and the universe or the knowledge and skills to produce traditional crafts. This knowledge is valuable not only to those who depend on it in their daily lives, but to modern industry and agriculture as well. Several widely used products such as plant-based medicines, health products and cosmetics are derived from traditional knowledge. Traditional knowledge makes a significant contribution to sustainable development.

Key words : Legendary, Rejuvenation, heritage, Harappa civilization, Eternal, Relevance.

The real cultural heritage and traditions of India implies whatever the past or history has bestowed to us. Indian cultural heritage and traditions make us feel proud of its Veda, Ayurveda, Music, Dance, painting ,architecture, Monument, Yoga , Pranayama, Vedic Mathematics ,Gita, Food, Family relation, Social customs, Unity in Diversity, Sanskrit, Life Skills, Living styles, Health knowledge etc. The notion of "cultural heritage" in the Indian traditions does not imply a tension between the past and the present but instead the capacity for continuous renewal and rejuvenation. It has to be considered as a living entity.Raymond Williams suggests that culture can be understood at three levels .First it refers to the intellectual, spiritual and aesthetic development of an individual, group or society. Second, to capture a range of intellectual and artistic activities and their products (film, art and theatre). In this usage culture is more or less synonymous with the "Arts ". Third, culture also designate the way of life, activities, beliefs and customs of a people, group or society.

Ancient culture and civilization have been the roots of our traditional knowledgesystem. There

is hardly any culture in the world that is varied and unique as of India. There is much in our culture which needs to be transmitted to our future generations.From the early we have to peep back to Indus Valley and Vedic civilization consisting of uncountable gems and pearls of knowledge which have been preservedand adopted by our modern age also. Both the civilizations are the prime source of traditional knowledge system.People, during Indus Valley Civilization could evolve such a developed sense of sanitation that is exemplary. To the Harappan civilization, flooding was not a curse to be damned.They has methodology to benefit from the flooding They were able to see the blessing in the floodIt boasts of the manner in which the houses used to be constructed, roads and pavements were made . Inspired with this civilization modern cities arebeing planned and developed in similar pattern till date.

Vedic era is regarded as the "golden age" having significant effect on Indian culture and intellectual history. Vedas are said to be apoususheya hence their authorship cannot be attributed to any human .They are thought to be revelations to seers at the start of cyclic creation. Rigveda ,Yajurved , Samveda, and Atharvaveda together with their six organs – Shiksha (Science of pronunciation), Chhandas (Vedic meters), Vyakarana (Grammar), Nirukta (Etymology of vedic terms) ,Kalp-Sutra (procedure of rites and rituals) and Jyotisha (astronomy) were considered to be taught in Gurukuls in India. Francois Voltaire, French eminent writer uttered after studying Vedas that vedas are the most precious gift for which the West had even been indebted to the East. The UNESCO has also ushered a program called "Memory of the World" for protecting significant landmarks of humanity from collective amnesia. Rigveda was inscribed in the 'Memory of the world' register in 2007. It is time to recognize Vedas as a heritage of humanity beyond religious and geographical affiliations. India Inc. can play role in fostering this cultural sustainability.

In ancient times people were well aware that not only a healthy environmentis essential to lead a healthy life but healthy habits are also to be developed. One of such habits is the practice of Yoga. People believed in the practice of Yoga. In course of time it was developed elaborately and many works were written on the yoga and the most famous is that of Maharishi Patanjali.Patanjali Yoga Darshana suggested eight methods to achieve the physical and spiritual sides of life .These eight methods are Yama or abstention, Niyama or observance, Asanaor posture, Pranayama or regulation of breath, Pratyahara or withdrawal of the senses,Dhyana or fixed attention and Samadhi or concentration. Modern Medical science believes that roots of many diseases are not only physical abnormalities but mental stress,tension and anxiety. There are many yogic exercises which are helpful to reduce stress and in curing various types of diseases. Today large number of institutions and universities have been set up to teach and practice Yoga.

Another healthy ritual adopted by the ancient people was taking regular bathevery day. Good bathroom in a dwelling house at Mohenjodaro indicates that daily bath was an important aspect of life at that time. Ancient people used to simply stand under the falling water. The modern people have also followed this practice in life .Rivers are also given prime importance and are considered life line for all living beings existing on the earth.Preserving and making our sacred rivers pollution free is not only an environmental obligation but also a part of our tradition and values. The Aryans could have great insight to see the role of various natural elements for the sustainability of life on Earth. They concluded that the earth is collection of the five elements of nature,Earth,Water,Fire,Sky and Air .They knew very well if harm caused to the nature elements,life itself will have negative impact of it. Nature as an identity to be worshipped: Since ages we have been worshipping trees,animals, mountains,rivers and air. On looking the pattern of life during the Vedic period it becomes clear that the importance was given to the forests and natural resources. The life period of man was divided into four stages namely Brahamacharya which was spent in Gurukul away from home or cities near the forest or in lap of nature.After completing second stage i.e.Grahasthashram he was again directed to forest (van) for the later two stages known as Vanprastha and Sanyas in search of 'Moksha.' In this way three- fourth life was spent in forest and it was the moral duty of man to protect and conserve the forest.

Our culture has always taught us to love nature and remain in harmony with environment. In Vedas, Puranas, Upanishads, Bhagwad Gita and much ancient literature special emphasis has been given directly or indirectly on the importance of traditions and cultural aspects which we should apply in our daily social life. We have been worshipping various plants and trees just to give the message toprotect them For instance Tulsi plant is worshipped in almost every home. We can discern our mothers and sisters praying peepal tree, banana tree, Banyan tree etc. There is a belief when a kind of thread known as kalaawa is wrapped and tied to plant,it becomes pious and nobody can chop it down. Perhaps this type of tricks were followed to save trees and respect plants.

Yogis and rishis of Vedic period, knew very well the importance of natural elements and realized that it was their duty to disseminate the knowledge and importance of natural heritage to common people and future generations but it was difficult to explain the scientific importance of these natural elements to all so they associated these elements to the customs, beliefs and traditions and people could imbibe the importance of these natural heritage in their day-to-day life.

Sun, river, mountains, trees and animals got the status of God and are worshipped since immemorial times. Many people start their day with 'Surya Namaskar' paying respect to Sun. Yoga including several breathing exercises give importance to fresh air in life. Several plants and trees

including Peepal, Banyan, and Tulsi are considered sacred and are worshipped. "Vat Savitri Puja" performed by the married women is also the way to preach the people how to take care of trees and plants as they are directly or indirectly associated with our long life. Leaves of Tulsi are used in many rituals. Neem and Mango trees are also planted by people near houses These plants and trees not only liberate much of oxygen, purify the air but have great medicinal value. Today we can realize well that our customs and beliefs have scientific reasons behind them.

There is a wonderful legacy of Indian culture to worship animals which is practiced in several forms.Some animals have been associated with God's and Goddesses as their vehicle: e.g.Shiva's vehicle is the Nandi or the Bull,Durga's vehicle is lion, Vishnu rides on Garud, Kartikey on peacock and Ganesh on rat. These beliefs and customs teach us that images of gods and goddesses are incomplete without these animals .It makes clear our existence on the earth is incomplete without the existence of these animals.So we need to take care of every living creatures on the earth.

There is a growing appreciation of the value of cultural heritage and traditional knowledge.This knowledge is valuable not only to those who depend on it in their daily lives, but to modern industry and agriculture as well. Several widely used products such as plant-based medicines, health products and cosmetics are derived from traditional knowledge. Traditional knowledge makes a significant contribution to sustainable development.

The Eternal Relevance of Sanskrit Language :-

For ages Sanskrit has been the language of documentation in our land,lauded as the longest continuing civilization of the world.Sages and seers, poets and philosophers, scholars and scientists have preserved their wisdom, in all its purity, in Sanskrit. Vedas, Upanishads,Ramayana, Mahabharata,Bhagvad Gita and Dharma –Shastras and the others most astounding contributions to the world of science, philosophy, arts and literature etc. In the words of Dr.Rick Briggs, a researcher for NASA, says in an article that Sanskrit grammarians have already found a way of solving what is perhaps the most important problem in computer science -natural language understanding and machine translation." In fact, several concepts which are fundamental to theoretical computer science, atpresent, have their origin in the work of Maharishi Panini, a Sanskrit Grammarian who gave a comprehensive and scientific theory of phonetics, phonology and morphology. Currently, the Indian Defence Ministry is developing secret codes using Sanskrit and applying 'The Panini Methodology'. Sanskrit consists of immensely beneficial insights into our rich cultural, literary and scientific heritage guiding us to a glorious future.

Ayurveda - Tradition to Trend :-

The three epochal works (Charak-Samhita, Sushruta-Samhita and Ashtanga -hridaya), referred

to as the Big Three jewels of Ayurvedic literature. It concerns with good health and diseases-preventing life style in present scenario.Sushruta's work,the Sushruta Samhita has been updated for current knowledge by the great Mahayana Buddhist scholar Nagarjuna and Chandradutta in the .Later authors of Sushruta Samhita also added to the contents, apart from surgery as Intestinal Surgery, Bladder Stone Removal, Plastic surgery of the nose etc. The ancient type of Plastic Surgery of the nose is still popular as Indian Rhinoplasty.There are so many such evidences. Our honorable scientists are making their best efforts to bring main traditionsback.

According to a World Health Organization (WHO) report there are about 400 families of flowering medicinal plants of which 315 families of plats occur in India .It proves that India with its knowledge system and the material base, has the potential to assume leadership in the pharmaceutical industry in India.

Protection of Traditional knowledge :

Traditions are knowledge in practice but over a period of time, the practice has been divorced from the knowledge thattransformed the practicesinto vogue. A simple tradition can be mentioned here for reference that "Rangoli" in front of the house ensures cleaning the house and provides food for insects like ants. But currently rice and turmeric powder are substituted with inedible powder or a plastic sheet is pasted in front of the house. Conscious competence of the people has been replaced by Conscious incompetence.

We are hardly aware of our scientific heritage because it is lacked in documentation. Whatever was done in ancient, couldneither be recorded nor coded. It is truethat the history of our glorious ancient India is a history of years of culture and progress. We need to develop understanding for the authenticity of material and science behind such traditions.Protection and preservation of cultural heritage and traditions is interalia, a constitutional obligation. This is solemn obligation we owe to ourselves and future generations. India is the only country in the world with a legislature on mandatory CSR (Corporate Social Responsibility). The biggest corporations in the country are obligated to spend two percent of their net profits under CSR. According toCompany Act 2013 CSR efforts can contribute to the protection of cultural legacy of India.

There is an opportunity for corporate to step in and ensure the continuity of the sacred traditions. UNESCO's classification of Intangible Cultural Heritage offers a roadmap for identifying and prioritizing preservation attempts. By aligning CSR initiatives with UNESCO recognized cultural practices. Now is the time to leverage the resources to safeguard priceless heritage and traditions of India for the welfare of humanity butpreservation and protection of cultural heritage is not the domain of one or two but is a collective enterprise. There are four deserving shoulders for this purpose are-

legislature, executive, judiciary and above all common men.

References :-

1. Dr. Rick Briggs, Knowledge ; Representation in Sanskrit and Artificial Intelligence, AI Magazine, Vol 6, 1985, p.32-39.

2- Dr.Fred Travis, International Journal of Neuroscience, 2001, vol.109, issue 1-2 p.71, ISSN 0020-7454.

3. The Hindu (30/1/2006), In an interview with Ms Anne Perry, The THAI Touch.

4. The Hindu (4/7/2002>, UPatent for Indian innovation.

5. http://www.ifoam.org/Briefing_Neem.pdf

6. Pride of India, A glimpse into India's scientific heritage, Chamu Krishna Shastri Samskrita Bharti, ISBN 81-87276-27-4, Aug.2009

7. The Times of India (02/3/2024), Mantrafor India Inc: CSR Funds For Vedic Chanting.

8. https://www.sciencedirect.com

9. https://heritagesciencejournal.springeropen

10. ich.unesco.org.

Email- homeshgaur@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 210-214
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

SCIENTIFIC REASONS BEHIND THE HINDU TRADITIONS

Shri. Harichand Sugriv Shirsat
Assist. Prof., Shripatrao Chougule Arts and Science College, Malwadi-Kotoli

Abstract :-

When the whole world is suffering from the corona virus disease during that time western countries adopted Indian traditions and social manners. Especially,washing hands, feet's before entering house, drink water without sipping and avoiding shaking hands, etc. Each of them tagged with our tradition. These are social manners where Indian people are following from the ancient time. The Indian customs and manners have rich identity and have scientific reasons.There is having scientific reasoning behind the Indian social manners and customs. These rules are following by Indian peoplelike greeting each other with their palm joined together in front of the chest. It is one of the etiquette and symbolizes to give respect to all living being. When we say 'Namaste' or 'Namaskara' which means to bend down when we bend down in front our parents, elders, older siblings or respective person. It shows that we overcome on our ego. It is directly reflected through his/her utterances.

The present paper is an honest attempt to evaluate and observe women's adornment a wearing ornaments on their body in the scientific perspectives. India has the glorious and superior past history. It can be realised through performing pujas and wearing ornaments by men and women on a specially occasions or celebrations. There is a scientific truth hidden in it. There is need to understandsome basic scientific principles behind it.e.g. Indian women wear Mehandi on their hands especially at the time of wedding ceremony and functions .The scientific truth behind that she feels relaxation during the time of ceremony. Indian women are waringKumkum of their forehead,vermilion, natni (the nose ring)-mangalasutras, bangle tilak or bindiyan the anklet, etc.It has scientific base under the beneath of it. Most of the time Indian food system is also plays significant role that can be analysed in a point of scientific perspectives. Each aspects will be explicitly discussed in this paper .With the help of present research paper,the scientific reasoning's are judged behind each one of the ornaments wearied by women in India.

Key words - Indian culture, customs, wearing ornaments, human Chakras, Indian food culture etc.

Introduction to the Study :-

Indian tradition of the Chakras is that the human body is the powerhouse of energy called 'Chakras'. When we asleep this part stops to generating energy hence we are inactive for some time. At time of waking up the energy is restart in human body.Therefore, we wash our face and take a bath so that we energies these Chakras. According to Ayurveda, it is believed that diseases related to eyes occur when we have unhygienic feet so that Indian follow a tradition of leaving their footwear outside house and wash their hands, feet's before entering the house that the negative energies warded off when we wash our hands, feet's and body with cool water. These traditions are followed by Indians which is based on the scientific truth. The main point is that western people are also adapting it day by day. There is the list given below regarding Indian women adornment following things which are based on the science.

1. Importance of applying Mehandi in the perspective of scientific reasoning :-

At the time of mirage, the bride applies Mehandi on her hands and feet not just for decoration but for getting pleasure.This practise has been going on in the country since a long ago. It is not just a means of dressing which gives a beautiful colour to the hands and feet. It has many medicinesproperties. It helpsbridekeepingcooling effects, relaxing the nerve endings. It prevents headaches and stress and protects the hands from viral infections. It is already mentioned in the science of Ayurveda.

2. Wearnig Bindi or Kumkum and Tilak by Indian people :-

The tradition of Hindu religion that both men and women put a Tilak or Bindiyan his or her forehead. It applies on the centre on the eyebrows which a central part of the whole body, a major nerves point is fixed there. Traditionally sandalwood and red kumkum, Tilakor ash from yagya are used from various religious people in a different colour and ways. Mostly people don't an idea behind it. The scientific truth is that when it can apply we remove stress and strain lime.There is another scientific benefit of wearing metal mercury. The particular spotbetween the eyebrows are believed to retain positive energy in human body, control on various imbalance problems of hormone which creates positive hormone. Using Kumkum and turmeric's are good for human health to feel peace of mind.

3. Use of Vermilion :-

It is applied between the heirs on the forehand by newly married women for sign of her married life indicative of the women entry in to house life from her life as a daughter. The vermilion is applied serves as a medicinal importance that is women's body is controlled it cools the body and makes the

body feel relaxed when the genus damages the genitals, pollute the blood and body then the mercury helps in destroying it.

4. Wearnig Natni (the nose ring) :-

Natni is a symbol of mirage.It is an integral part of traditional bridal Jewellery. According to Ayurveda, it has significancethat piercing of the nose is associated with female reproductive organs. It is believed that a woman who is pierced on the left side experienceslees pain during childbirth and less pain during menstruation. It also helps regulate breath and protect nasalproblem and relief from cough.

5. Wearing Mangalasutras the identity of a married woman :

which is warn as a symbol of Mangalsutras keeping the women happy for life, but science behind it is that mangalsutras is a warn above the heart with the hollow side faring the body So that positive energy creates in the body with proper blood d circulations . The gold wire destroys the distressing vibrations present within unreal through it energy the black beads sock up all negative vibration. It is not just tradition but has scientific benefit.

6. Wearing Bangles in hand by Indian married women :-

Bangle is a circular form of ornamental that is worm in hands by the women. It is symbolof luck and prosperity for married women, who undergo many changes in her life. The scientific reasoning behind that the diseases isdiagnosed by the pulse beat of the wrist when women wearbangles.The certain friction of beagles increases the blood circulation level.

7. Wearing Bichiya by Indian married women (Toering) :-

In the Ramayana, there is mention of Sita throwing her jewellery in the forest at the time of SitaHarana which has a bichiya (Toering).It is worn in the second toe of both the foot. The Vedas and Ayurveda texts discussed in details of what health properties. It has especial meaning by wearing it. There is mention about the treatment of gynaecological problems.The second toes of the ring connect to the woman's uterus and keeps it strong and connect with heart and the blood flow regular and regulates the menstrual cycle.

8. Wearing The Anklet by Indian Woman :-

The anklet a piece of favourite jewellery worn by Indian women who are made of silver,worn for the adornment at the feet. It has walking produces sound, has many qualities, such as protection again swelling, curing information of the heel regarding blood circulation.

9. Importance of the Indian food culture :-

Indian foodetiquette is one of me important needs & every living organism. Besides being a physical speciality of the Indian food culture, different type of dishes are prepared in every state of

and the method of serving them.Starting with spicy food attractive our digestive juices and ensures that the digestion process goes on smoothly. In the and sweet is taken to be at the end because sweets reduces digestive power. Regular turmeric helps to control cholesterol, blood pressure and reduces that risk of heart diseases. There are so many food ingredients which are used in various Indian dishes that help our body to be healthy. In the ancient time to tillthe date the food is served in banana leaves sitting on the floor. It is not just a symbol of our culture on the floor. It has a benefit for health. That protects us from many diseases. In Indian culture, Pan (betel leaves) which means Paarna in the Sanskrit language.According to science betel leaves are inhabited by varies deities. It has been help cooling the mouth, betel leaves has vital role in Ayurveda and medicinal properties such as reducing diabetes, stop weakness of the veins, constipation, etc.

Conclusion :-

At the heart of Indian culture lays its numerous religious including Hinduism, Islam, Christianity, Sikhism, Buddhism and Jainism. These religious coexist harmonious enriching the cultural landscape with varied philosophies rituals and festivals such as Diwali, Eid, Christianity, etc. India has culture and that has become our identity. Today India has powerful and multicultural society as it absorbed many cultures. All the oldest traditions are very important to know our cultural values which is very significant and having proper scientific base. It has very rich culture but in modern era people have to need practises of it.

The real purpose of the customs followed in our daily lives. It is our duty to pass on this heritage culture strengthens our roots while science gives the sky to fly religious belief when analysed scientifically, help in brining tradition and science closer. We are living in an eve of the scientific revaluation. Science is involved in raising money power and material comfort for man. There are so many tensions, disputes are increasing rapidly so that there should be. It is also interesting to note that in Hindu culture, pregnant women are often given glass bangles to wear on their times. Some rituals like Puja remind us of god on a daily basis such as fasting meditation discipline our life for spiritual progress. Religious ceremonies help us focus the mind on spiritual aspirations. The Hindu culture and customs are based on the scientific truth not just as traditional or rules. It has scientific authenticity and base of reality not superstations.

References :-

1. 'The Meaning of Life' by Dhanajay Gurgaon @ Haryana Indian Harmony between scientific Processes.
2. The Underlying Scientific Basis of Indian Traditions and Practiced, Article of the Month- April-2022, exotic India.

3. www.wikipedia.com
4. www.study.com.
5. PV Hemalathe Scientific Reasons Behind Women Traditions in India "A Brief Survey/ Review, International Journal of Humanities, the Social Sciences and Education (IJHSSE) volume 4 Issue 4 April 2017.
6. Sinha S. (2014) Ornaments in Medieval. Bengali Literature: An Image of Contemporary Society International Journal of innovative Research and Development.

Official Address-
Shripatrao Chougule Arts and Science College, Malwadi-Kotoli, Tal- Panhala ,Dist-Kolhapur –(Maharashtra)
Residential Address –
RS No-1488/3.Plot -6,Unit No-2,Narshinha Colony, Phlewadi Kolhapur, Maharastra-416010
Email.Id -harichandshirsat@gmail com, Mob.No- 9822975083

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2024 Page No. : 215-221
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Superstitious Beliefs : In the context of social, Psychological and Religious revolution

Dr. Gayatriba A. Sodha
Lecturer of Psychology Department, Kutch University, Bhuj- Kutch. (Guj.)

ABSTRACT :

Most superstition from the past have been proven by science as unnecessary, ineffective or just plain silly but are still practiced by normal intelligent people today. Every country has its own localized take on superstitions. This research reviews on the context of social, Psychological and Religious revolution in Indian society in 21st century. The present studies were conducted to determine the main effect of Superstitious Beliefs: In the context of Social, Psychological and Religious revolution of 120 male or female of urban or rural areas of kutch district. Data was collected with the help of "Superstition Scale" developed by L. N. Dubey (Jabalpur) and B. M. Dixit (Agra) SS-DD Hindi version the sample was taken by stratified random method. The major finding of the study was that. The collected data was statically analyzed with the help of 't' test. The data obtained was analyzed statistically and the study revealed that, There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the urban or rural people (t = 0.50). There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the male or female (t = 0.00). There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the male or female of urban areas (t = 0.02). There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the male or female rural areas (t = 0.02).

Introduction :-

Superstition, belief, half-belief, or practice for which there appears to be no rational substance. Those who use the term imply that they have certain knowledge or superior evidence for their own scientific, philosophical, or religious convictions. An ambiguous word, it probably cannot be used except subjectively. With this qualification in mind, superstitions may be classified roughly as religious, cultural, and personal.

Definitions of the term vary, but they commonly describe superstitions as irrational beliefs at odds with scientific knowledge of the world. Stuart Vyse proposes that a superstition's "presumed

mechanism of action is inconsistent with our understanding of the physical world", with Jane Risen adding that these beliefs are not merely scientifically wrong but impossible. Similarly, Lysann Damisch defines superstition as "irrational beliefs that an object, action, or circumstance that is not logically related to a course of events influences its outcome."

This study is an attempt to find out whether superstitious beliefs still play a crucial role in the belief pattern of urban and rural male and females and to find out up to which extent prevalence of these superstitions affects their lives.

Religious aspect of Superstition :-

Superstition refers to any belief or practice that is caused by supernatural causality, and which contradicts modern science. Superstitious beliefs and practices often vary from one person to another or from one culture to another.

Common superstitions in India today include a black cat crossing the road being bad luck, cutting fingernails/toenails at night being bad luck, a crow calling meaning that guests are arriving, drinking milk after eating fish causing skin diseases, and itchy palms signaling the arrival of money.

Overview Aspect of Every religious system tends to accumulate superstitions as peripheral beliefs—a Christian, for example, may believe that in time of trouble he will be guided by the Bible if he opens it at random and reads the text that first strikes his eye. Often one person's religion is another one's superstition: the Roman emperor Constantine referred to some non-Christian practices as superstition; the Roman historian Tacitus called Christianity a pernicious superstition; Roman Catholic veneration of relics, images, and the saints is dismissed as superstitious by many Protestants; Christians regard many Hindu practices as superstitious; and adherents of all "higher" religions may consider Australian Aboriginal peoples' relation to their totem superstitious. Finally, all religious beliefs and practices may seem superstitious to the person without religion.

Social and Cultural aspect of Superstition :-

Superstitions that belong to a cultural tradition (in some cases inseparable from religious superstition) are enormous in their variety. Many persons, in nearly all times, have held, seriously or half-seriously, irrational beliefs concerning methods of warding off ill or bringing good, foretelling the future, and healing or preventing sickness or accident. A few specific folk traditions, such as belief in the evil eye or in the efficacy of amulets, have been found in most periods of history and in most parts of the world. Others may be limited to one country, region, or village, to one family, or to one social or vocational group.

Superstitions are usually attributed to lack of education; however, this has not always been the case in India, as there are many educated people with beliefs considered superstitious by the public.

Superstitious beliefs and practices vary from one region to another, ranging from harmless practices such as lemon-and-chili totems in order to ward off the evil eye, to harmful acts like witch-burning.[Finally, people develop Personal superstitions: a schoolboy writes a good examination paper with a certain pen, and from then on that pen is lucky; a horseplayer may be convinced that gray horses run well for him.

Superstition has been deeply influential in history. Even in so-called modern times, in a day when objective evidence is highly valued, there are few people who would not, if pressed, admit to cherishing secretly one or two irrational beliefs or superstitions.

Psychological aspect of Superstition :-

Why do people engage in superstitious behavior? Research studies investigating why people believe in superstitions reveal that for many people, superstitions can reduce anxiety and promote a positive mental attitude. When we are unsure of an outcome, we may find ways to control it even if it's only in our minds. Holding superstitious beliefs in a time when the fruits of science are all around us seems somewhat paradoxical, so why do people believe? 'The psychology of superstition' considers the prevalence and demographics of superstitious belief. Research shows that belief in luck is correlated with belief in superstition and that they correlate with a number of personality dimensions and traits that are, in most cases, not particularly desirable, such as stress, anxiety, seeking control, pessimism, and depression. How do people learn superstitions and what sustains their superstitious behaviour? The great majority of common superstitions are relatively inexpensive and harmless and they may help reduce anxiety and provide a welcome illusion of control.

Psychologist Stuart Vyse has pointed out that until about 2010, "most researchers assumed superstitions were irrational and focused their attentions on discovering why people were superstitious." Vyse went on to describe studies that looked at the relationship between performance and superstitious rituals. Preliminary work has indicated that such rituals can reduce stress and thereby improve performance, but, Vyse has said, "...not because they are superstitious but because they are rituals.... So there is no real magic, but there is a bit of calming magic in performing a ritualistic sequence before attempting a high-pressure activity.... Any old ritual will do.

After the years of rapid scientific progress that followed the Enlightenment, the label 'superstitious', with rare exceptions, was now applied to unscientific beliefs that defied reason. Despite the growing dominance of scientific reasoning, superstition, pseudoscience, and magical thinking did not go away. 'Superstitions in the modern world' first considers 19th-century spiritualism, a social movement that kept supernatural beliefs alive before science became a more mature enterprise. It then turns to the kinds of popular superstitions that survive today from lucky and unlucky numbers

and colors to certain objects and behaviors and discusses their origins. It also looks at t some more elaborate systems of superstition.

Objective of the study :-

1. To study the Superstitious Beliefs of urban or rural people.
2. To study the Superstitious Beliefs of male or female.

Methodology :-

A. Variables :

Variable of this study

1. Independent Variable –
- Gender (Male – Female)
- Residential Area (Urban – Rural)

B. Dependent Variable –

Received data on "Superstition Scale"

Hypothesis :-

1. There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the urban or rural people.
2. There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the male or female.

Sample :-

Table : 1

Table showing the selected people included in the sample

Gender	**Residential Area**	
	Urban	Rural
Male	30	30
Female	30	30

A sample of 120 People was kutch district on the basis of stratified random sampling technique, out of which 30 male and female were taken from Urban area and 30 male and female were taken from Rural area of kutch district.

Tools :-

The following tools were used to collect data from the respondent in the present research.

- **Personal information sheet :-**

A Personal data sheet was used to collect information related to personal characteristics of people such as gender and residential area.

- **Superstition Scale :-**

Original Hindi version of Superstition "Scale" used for data collection which developed by L. N. Dubey (Jabalpur) and B. M. Dixit (Agra) SS-DD. Reliability was found 0.85 by Spearman Brown Formula and 0.84 by Kuder- Richardson Formula or validity was found 0.73 correlation with Radical-conservative Attitude scale.

Procedure :-

The Scale of Superstition inventory has 40 statements. Each sentence has 3 alternative answers. The subject has to select only one answer. The answer showing higher degree towards superstition should be awarded 3 marks, answer showing lower degree should be awarded 2 marks and the answer showing zero degree of superstition should be awarded 1 mark.

Degree of the answers for different statements can be seen from the manual. In the end after editing all the scores the result can be seen from the next table.

Statistical Analysis :

Mean, Standard Deviation and 't' value were calculated.

Result :-

Table 1

Showing 't' valu and mean differences between Superstitious Beliefs of urban and rural people.

Group	N	Mean	S. D	't' Value	Level of Significance
Urban	60	62.62	1556.15	0.50	N. S.
Rural	60	52.55	847.67		

* *N.S. = Not Significant*

Table 2

Showing 't' value and mean differences between Superstitious Beliefs of male or female.

Grroup	N	Mean	S. D	't' Value	Level of Significance
Male	60	57.53	575.66	0.09	N. S.
Female	60	33.7	1901.42		

* N.S. = Not Significant

Discussion :-

According the result sheet of the study among Superstitious Beliefs of 120 Male or Female of urban or rural areas. The present study shows that there is no difference in superstition between men and women living in rural and urban areas. In the present study 't' test was used for statistical analysis of the data obtained. In which the value of Cal 't' is found (0.50) while the value of Table 't' is

found at 0.05 level (1.98) and 0.01 level (2.62). As an interpretation we can conclude that at 0.05 level of significance Cal 't' is less than tablet ‘t’. Therefore, the difference stated between the two views is found to be inconsequential. That is, there is no real difference between the two groups, so the null hypothesis presented here is accepted. by result showed that there is no significant deference between people living in rural and urban areas because the term superstition refers to the tendency to characterize one's behavior with irrational and mysterious fears or to claim special rights to supernatural powers. Superstitious persons are generally known as ignorant. Who do not have any kind of education whereas in the modern age awareness about education has reached a high level in rural and urban areas. Due to which people have become aware and removed the old customary concepts.

The results of the present study show that there is no difference in superstition between men and women. The‘t’ test was used for statistical analysis of the data obtained in the present research in which the value of Cal 't' is found to be (0.09) while the value of Table ‘t’ is at 0.05 level (2.00) and 0.01 level. (2.66) is found. In the form of interpretation we can conclude that Cal 't' is less than tablet ‘t’ in the table at 0.05 level of significance. Therefore, the difference stated between the two views is found to be inconsequential. That is, there is no true difference between the two groups, so the null hypothesis presented here is accepted.

Conclusion :-

1. There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the urban or rural people.
2. There is no significant difference between Superstitious Beliefs among the male or female.

References :-

1. Agarwal Sumit, Jia He, & Haoming Liu, et.al. Superstition and Asset Markets: 2014.
2. "Can having milk and fish together give you white patches on skin? Science has the answer". The Times of India. 20 August 2019. Retrieved 3 September 2020.
3. Census of India, 1971: A. Town directory. B. Special survey report on selected towns. (i) Town study of Bhongir. (ii) Town study of Kakinanda. C. Special survey reports on selected villages. 1. Panchalamarri. 2. Unagatla. Registrar General and Census Commissioner of India. 1972. p. 199. It is believed that if a crow cries at the house or if any utensil slips out of hands while scourging, relatives would arrive.
4. Dalisay, Juan. Towards Maharlika: A Vision for a New Philippines. Soranomics. Both India and Maharlika have the superstition of not sweeping in the evening, that itchy palms bring money, and that wearing certain rings and stones can bring fortune.
5. Dale B. Martin. Inventing Superstition: From the Hippocratic’s to the Christians. Harvard University Press: 2001, p. 11.

6. Damisch, Lysann; Stoberock, Barbara; Mussweiler, Thomas (1 July 2010). "Keep Your Fingers Crossed!: How Superstition Improves Performance". Psychological Science. 21 (7): 1014–1020. doi:10.1177/0956797610372631. ISSN 0956-7976. PMID 20511389. S2CID 8862493.
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Superstition
8. https://doi.org/10.1093/actrade/9780198819257.003.0004
9. The Telegraph. The God busters":27 May 2012
10. "Indian superstitions and the theories behind them: Not to be missed". India Today. 12 September 2015. Retrieved 23 August 2020. black cat crosses our path and like a dead statue, we stop and wait for someone else to pass first.
11. Joanne O'Sullivan. Book of Superstitious Stuff.; Charlesbridge Publishing: 2010, p. 119
12. N. Jayapalan. Problems of Indian Education. Atlantic Publishers & Dist.: 2001, p. 155.
13. Risen, Jane L. (2016). "Believing what we do not believe: Acquiescence to superstitious beliefs and other powerful intuitions". Psychological Review. 123 (2): 182–207. doi:10.1037/rev0000017. PMID 26479707. S2CID 14384232.
14. "Superstition #15 Cutting Fingernails at Night". Dartmouth College. 15 November 2017. Retrieved 3 March 2024.
15. Superstition in the modern world, Stuart Vyse Published, January 2020
16. "The God busters". The Telegraph. India. 27 May 2012. Archived from the original on 30 May 2012. Retrieved 13 September 2013.
17. Tosyali, Furkan; Aktas, Busra (1 December 2021). "Does training analytical thinking decrease superstitious beliefs? Relationship between analytical thinking, intrinsic religiosity, and superstitious beliefs". Personality and Individual Differences. 183: 111122. doi:10.1016/j.paid.2021.111122. ISSN 0191-8869. S2CID 237658088.
18. Vyse, Stuart (2020). Superstition: A Very Short Introduction. Oxford University Press. ISBN 978-0198819257.
19. World Health Organization. Disease and Injury Regional Estimates Geneva: 2004 [Last accessed on 2009 May 22]; Available from: http://www. who.int/healthinfo/global burden disease/estimates regional/en/ index.

dha Gayatriba A Brahma sevak samaj vadi, navavas, madhapar, bhuj, kutch Pin. 370020 Mo no. 7567388387
* Dr. Gayatriba A. Sodha, Lecturer of Psychology Department, Kutch University, Bhuj- Kutch. (Guj.).
Superstitious Beliefs: In the context of social, Psychological and Religious revolution
Dr. Gayatriba A. Sodha, Lecturer of Psychology Department, Kutch University, Bhuj- Kutch. (Guj.)

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115